प्रथम एवरेस्ट विजेता

एडमंड हिलेरी

प्रथम एवरेस्ट विजेता
एडमंड हिलेरी

संदीप कुमार

ज्ञान विज्ञान एजूकेयर

प्रकाशक • **ज्ञान विज्ञान एजूकेयर**
3639, प्रथम तल
नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • 2022
मूल्य • तीन सौ पचास रुपए
मुद्रक • आर-टेक ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Pratham Everest Vijeta EDMUND HILLARY
by Shri Sandeep Kumar ₹ 350.00
Published by **GYAN VIGYAN EDUCARE**
3639 Netaji Subhash Marg, Darya Ganj, New Delhi-110002
ISBN 978-93-84344-30-6

भूमिका

विश्व के सर्वोच्च पर्वत शिखर पर सबसे पहले कदम रखनेवाले सर एडमंड हिलेरी के अंदर इस साहसिक कार्य का जज्बा कूट-कूटकर भरा था, लेकिन इस उपलब्धि को हासिल करने के बाद भी उनका स्वभाव बहुत सहज और सरल था। सर एडमंड हिलेरी ने 29 मई, 1953 को केवल 33 साल की आयु में नेपाल के पर्वतारोही शेरपा तेनजिंग नोर्गे के साथ माउंट एवरेस्ट पर पहली बार कदम रखा था।

माउंट एवरेस्ट के शिखर पर पहुँचनेवाली महिला बछेंद्री पाल का कहना है कि इतनी बड़ी उपलब्धि हासिल करने के बाद भी सर एडमंड हिलेरी हमेशा सहज और आम लोगों की तरह ही रहे।

सर हिलेरी से अपनी कुछ मुलाकातों का उल्लेख करते हुए बछेंद्री पाल ने कहा, ''एक बार हम हिमालय महोत्सव में भाग लेने हांगकांग पहुँचे थे। सर हिलेरी भी वहाँ आए थे। वे वीआईपी गलियारे में बैठने के बजाय आम लोगों के बीच में ही रहे और बहुत सहजता से हम सभी से मिल रहे थे।''

न्यूजीलैंड में 20 जुलाई, 1919 को जनमे सर हिलेरी को स्कूल के दिनों से पर्वतारोहण का शौक था। उन्होंने एवरेस्ट यात्रा के बाद हिमालय ट्रस्ट के माध्यम से नेपाल के शेरपा लोगों के लिए कई सहायता-कार्य भी किए। उन्होंने 1956, 1960, 1961, 1963 और 1965 में भी हिमालय की अन्य चोटियों पर पर्वतारोहण किया था।

सर हिलेरी 1958 में कॉमनवेल्थ ट्रांस अंटार्कटिक एक्सपिडीशन के तहत दक्षिणी ध्रुव गए थे। वे 1985 में नील आर्मस्ट्रांग के साथ एक छोटे विमान से उत्तरी ध्रुव भी गए थे। इस तरह वे दोनों ध्रुवों और माउंट एवरेस्ट के शिखर पर पहुँचनेवाले पहले व्यक्ति थे।

भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया था। हिलेरी को 1985 में भारत में न्यूजीलैंड का उच्चायुक्त नियुक्त किया गया था। नेपाल सहित कई अन्य देशों ने भी उन्हें अपने राष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित किया। वे बँगलादेश में न्यूजीलैंड के

उच्चायुक्त और नेपाल में राजदूत भी रहे।

माउंट एवरेस्ट जैसा ऊँचा हौसला रखनेवाले इस पर्वतारोही का 11 जनवरी, 2008 को न्यूजीलैंड के ऑकलैंड में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया।

इस पुस्तक में सर एडमंड हिलेरी की रोमांचक जीवन-कथा का वर्णन किया गया है।

अनुक्रम

	भूमिका	*5*
1.	एवरेस्ट की कथा	9
2.	आरंभिक चरण	36
3.	युवा पर्वतारोही	41
4.	सबसे ऊँचा शिखर	51
5.	एवरेस्ट पर विजय	63
6.	एवरेस्ट विजय के बाद	76
7.	हिम क्षेत्र में	87
8.	बादलों के गाँव में स्कूल	91
9.	बड़ा साहब	103
10.	सागर से गगन तक	112
11.	अंतिम चरण	124
12.	सर एडमंड हिलेरी के अनमोल विचार	141
13.	सर एडमंड हिलेरी से साक्षात्कार	146
14.	पर्वतारोहण क्यों किया जाता है ?	151
15.	पर्वतारोहण संबंधी प्रचलित शब्द	154

16. पर्वतारोहण से संबंधित शब्दावली 156

17. तेनजिंग नोर्गे : एक परिचय 162

18. सर एडमंड हिलेरी के जीवन का घटनाक्रम 180

संदर्भ ग्रंथ *184*

एवरेस्ट की कथा

उर्दू के प्रसिद्ध कवि इकबाल ने लिखा है—

ऐ हिमालय, ऐ फसीले-किश्वरे-हिंदोस्ताँ,
चूमता है तेरी पेशानी को झुककर आसमाँ!

(भारतभूमि की प्राचीर हिमालय! आकाश झुककर तेरा माथा चूम रहा है।)

कवियों ने हिमालय की महिमा गाई है, ऋषि-मुनियों ने वहाँ जाकर तपस्या की है, लेकिन आज के युग में उसके पुजारियों की श्रेणी में पर्वतारोहियों ने भी अपना नाम लिखाया है। हिमालय के उत्तुंग शिखर का नाम 'एवरेस्ट' क्यों पड़ा? क्या इसका कोई

भारतीय नाम नहीं? नेपाल में इसे 'सगरमाता' (विश्व जननी) और तिब्बत में 'चोमूमूलुंगमा' कहकर पुकारते हैं। भारत के प्राचीन इतिहास में हिमालय की अन्य चोटियों की चर्चा तो आई है, जैसे कैलास, जहाँ शिव का निवास माना जाता है, गौरीशंकर और कंचनजंघा आदि, लेकिन एक अलग चोटी के रूप में एवरेस्ट का नहीं।

वास्तविकता तो यह है कि उन्नीसवीं सदी के मध्य तक लोगों को मालूम ही नहीं था कि हिमालय संसार का सबसे महान् पर्वत है और उसकी एक चोटी दुनिया की सबसे ऊँची चोटी है।

सदा बर्फ से ढकी, 100 किलोमीटर से भी अधिक तेज चलनेवाली चीखती हवाओं से घिरी इस चोटी की खोज 1849 से 1855 तक की गई, इसकी ठीक-ठीक भौगोलिक स्थिति और ऊँचाई का निर्धारण किया गया और इसका नाम (तब तक भू-सर्वेक्षण विभाग इसे XV की संज्ञा देता था।) सर्वेक्षण विभाग के अध्यक्ष सर जॉर्ज एवरेस्ट के नाम पर रखा गया।

मानव पहली बार 1953 में एवरेस्ट पर कदम रखने में सफल हुआ। ब्रिटेन के लॉर्ड हंट के नेतृत्व में भेजे गए पर्वतारोहण दल के एडमंड हिलेरी, जिन्हें बाद में सर की पदवी से विभूषित किया गया और भारतीय शेरपा तेनजिंग सबसे पहले पर्वतारोही थे, जिन्हें चोटी पर पहुँचने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

बहुत कम लोगों को पता है कि संसार के सबसे ऊँचे और प्रसिद्ध शिखर का यह नाम कैसे पड़ा? 1849 से 1855 तक भारत के भू-सर्वेक्षण विभाग ने नेपाल में हिमालय की चोटियों का सर्वेक्षण किया। उस समय किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि इन्हीं में से एक चोटी सबसे ऊँची है, उस समय माउंट एवरेस्ट के सामने एक और चोटी, जो ऊँचाई में कम थी, एवरेस्ट को छिपाए हुए थी।

उस समय यह धारणा थी कि कंचनजंघा संसार की सबसे ऊँची चोटी है। जिन चोटियों का सर्वेक्षण किया गया, उनके स्थानीय नाम-पते न होने के कारण सर्वेक्षण करनेवालों ने उन्हें रोमन संख्याएँ दे दीं। एवरेस्ट और गौरीशंकर की संख्या क्रमानुसार XV और XX थीं।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में पहाड़ों की चोटियों की ऊँचाई का पता लगाने की विधियाँ भी विकसित नहीं थीं। सच तो यह है कि ऊँचाइयों का अनुमान ठीक-ठीक लगाना ही किसी को नहीं आता था। वैज्ञानिक वातावरण के दबाव आदि की खोज कर रहे थे, जिसकी ऊँचाई का निर्धारण करने का बहुत अधिक महत्त्व है। 1855 के अंत में जब हिसाब-किताब लगाकर अंतिम घोषणा की गई तो पता चला कि चोटी XV की ऊँचाई 29002 फीट है। कई बार यह ऊँचाई 29,141 फीट भी बताई जाती थी, परंतु इसे कभी स्वीकार नहीं किया गया। उस समय यह घोषणा की गई कि यह चोटी

संसार की सबसे ऊँची चोटी है। इसकी ऊँचाई का अनुमान वैज्ञानिक दृष्टि से ठीक स्वीकार किया गया।

यह चोटी नेपाल और तिब्बत की सीमा पर अक्षांश 27°57।"16 और देशांश 86°55। 40" पर स्थित है। उच्चतम शिखर पर यह पर्वतमाला चूने के पत्थर की बनी है, जिसका रूप अब बदल चुका है। चोटी का सबसे ऊँचा बिंदु भूरे रंग के पत्थर का है और 30 डिग्री पर उत्तर की ओर ढलान है।

यह अनुमान लगाया गया है कि यह पत्थर दो या तीन करोड़ साल पुराना है। चोटी के पास हलके भूरे रंग की एक चौड़ी पट्टी है, जिसे 'येलो बैंड' की संज्ञा दी गई है। यह चोटी की जड़ में चारों ओर फैला हुआ है। एवरेस्ट की चोटी से पत्थरों के जो टुकड़े लाए गए हैं, उनका विश्लेषण किया गया है।

विश्लेषण के परिणामस्वरूप यह बात निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुकी है कि किसी समय यह चोटी पानी में डूबी हुई थी। हिमालय के अध्ययन से यह भी पता चला है कि भूमि की कठोर तह का दबाव उत्तर और दक्षिण की ओर से बराबर पड़ रहा है और इस कारण इस पर्वतमाला की चोटियाँ अधिक ऊँची होती जा रही हैं। यही कारण है कि पिछले बीस हजार वर्ष में इस पर्वतमाला की ऊँचाई 2,000 मीटर बढ़ गई है। यह देखा गया है कि इन शिखरों की ऊँचाई प्रत्येक दस वर्ष में एक मीटर बढ़ जाती है। पिछले सौ वर्ष में एवरेस्ट की ऊँचाई लगभग आठ मीटर बढ़ चुकी है।

जब यह पता चल गया कि संसार की सबसे ऊँची चोटी यही है, तो उसके लिए उपयुक्त नाम की खोज की गई। लगभग दस वर्ष तक इस प्रश्न पर वाद-विवाद चलता रहा। इस अवधि में महासर्वेक्षक ने उन सभी स्थानीय नामों पर विचार किया, जो इस चोटी को दिए जा सकते थे; परंतु किसी भी नाम को स्वीकार नहीं किया गया।

उस समय कर्नल एंड्रयू वॉ भारत के महासर्वेक्षक थे और उन्होंने अपने सहयोगी कर्नल हेनरी लुथियर और आकलन करनेवाले मुख्य अधिकारी राधानाथ सिकदार के परामर्श से इस चोटी का नाम अपने पूर्वाधिकारी सर जॉर्ज एवरेस्ट के नाम पर रखने का निर्णय किया, जिन्होंने भारत के भू-सर्वेक्षण में बहुत योगदान दिया था। त्रिभुजीय सर्वेक्षण की विधि का प्रयोग करनेवालों में उनका प्रमुख स्थान है और वे प्रत्येक सर्वेक्षण के परिणामों को ठीक-ठीक आकलित करने में विश्वास रखते थे।

ब्रिटेन की रॉयल भौगोलिक सोसाइटी ने इस नाम को स्वीकार कर लिया। कर्नल एंड्रयू वॉ ने मार्च 1856 में उप-महासर्वेक्षक कर्नल लूथियर को लिखा—

> ''मेरे सम्मानित पूर्वाधिकारी कर्नल जॉर्ज एवरेस्ट ने मुझे यह सिखाया है कि मैं प्रत्येक भौगोलिक स्थिति को उसका ठीक-ठीक स्थानीय या राष्ट्रीय नाम दूँ। परंतु यह चोटी, जो कि संसार की संभवत:

सबसे ऊँची चोटी है, बिना किसी नाम के है। कम-से-कम हमें उसका पता नहीं, इस बात की भी संभावना नहीं कि जब तक हमें नेपाल में जाकर बर्फ से ढकी इस चोटी के पास तक पहुँचने की अनुमति नहीं मिलती, हम इसका स्थानीय नाम जान सकें। जब तक यह नहीं हो जाता, तब तक मेरा यह कर्तव्य है कि मैं इस महान् शिखर को कोई नाम दूँ, जिससे भूगोल-शास्त्री इसे जान सकें और यह सारे संसार में प्रसिद्ध हो। अपने सम्मानित पूर्वाधिकारी और अपने विभाग के सभी सदस्यों की इच्छानुसार तथा भौगोलिक अनुसंधान के महान् स्तंभ की स्मृति को स्थायी बनाने के लिए मैंने यह फैसला किया है कि इस महान् शिखर का नाम 'माउंट एवरेस्ट' रखूँ।''

पॉ ने माउंट शब्द का प्रयोग एक स्पष्ट चोटी के लिए किया है, पर्वतमाला के लिए नहीं। एवरेस्ट को बदलकर अगले वर्ष उसका नाम 'माउंट एवरेस्ट' कर दिया गया। परंतु ऐसी बात नहीं कि सबसे ऊँचे शिखर के नामकरण पर कोई आपत्ति न की गई हो। नेपाल में स्थित एक पूर्व राजनीतिक अधिकारी ब्रॉचन हॉजसन ने, जो कि भाषाविद् और वैज्ञानिक थे, यह कहा कि जिस चोटी की खोज का दावा किया गया है, वह 'देवधुंग' या 'मैराथन' के अतिरिक्त और कोई नहीं, जिनकी चर्चा नेपाल के पुराने साहित्य में की गई है।

पॉ ने इस बात की जाँच करने में काफी समय लगाया और बाद में एशियाटिक सोसाइटी को लिखा—''लगता है कि ये नाम कुटीघाट के पास की चोटियों के हैं, लेकिन उस घाट की स्थिति अनिश्चित है, इसलिए हमें अपने निर्णय में फेर-बदल नहीं करना चाहिए। जो साक्ष्य दिया गया है, उससे केवल यह पता चलता है कि कोई ऐसी चोटी है, जिसे 'बैरवा' या 'देवधुंग' कहा जाता है और वह काठमांडु के पूर्व में स्थिति है। ऐसी कई चोटियाँ हैं। हमारे पास कोई ऐसा साक्ष्य नहीं, जिससे इस दावे की पुष्टि की जा सके।''

गौरीशंकर नाम पर भी काफी विवाद हुआ। तीन जर्मन भाई एडोल्फ, हर्मन और रॉबर्ट बन शिलागिनविट तिब्बत, सिक्किम और मध्य एशिया में वैज्ञानिक खोज के काम में लगे हुए थे (बाद में कारागार में एडोल्फ की हत्या कर दी गई)। वे 1855 और 1857 के बीच तिब्बत और सिक्किम में रहे। उन्होंने सिक्किम से सर्वेक्षण करने के बाद यह घोषणा की कि नेपाल में एवरेस्ट को 'गौरीशंकर' कहा जाता है और तिब्बत में 'चिनगोपानारी'।

इससे बड़ी सनसनी फैल गई। लंदन की रॉयल ज्यॉग्राफिकल सोसाइटी ने इन

जर्मन वैज्ञानिकों का समर्थन किया और भारत के भू-सर्वेक्षण विभाग से असहमति प्रकट की। यह कारण था कि 1900 तक जो मानचित्र प्रकाशित हुए, उनमें संसार की सबसे ऊँची चोटी का नाम 'गौरीशंकर' दिखाया गया है।

बाद में भारत के सर्वेक्षण विभाग ने जर्मनों द्वारा तैयार किए गए मानचित्रों और सर्वेक्षण के परिणामों की खोजबीन की तो पता चला कि ये लोग जिन स्थानों से सर्वेक्षण कर रहे थे, वहाँ से माउंट एवरेस्ट दिखाई ही नहीं देता। फलूत से उन्होंने मकालू नाम की चोटी देखी थी और पोलिया से गौरीशंकर। उस स्थान से एवरेस्ट इन दो चोटियों की अपेक्षा कम ऊँची दिखाई देती है और इसलिए उसकी ओर इन लोगों का ध्यान नहीं गया।

लगभग आधी शताब्दी तक गौरीशंकर नाम ही चलता रहा। 1903 में कैप्टन वुड नेपाल गए और उन्होंने दो स्थानों से सर्वेक्षण करके यह सिद्ध किया कि एवरेस्ट और गौरीशंकर दो अलग-अलग चोटियाँ हैं, जिनके बीच 36 मील की दूरी है।

1906 और 1908 के बीच तिब्बत में सर स्वेन हैडिन ने खोज का काम किया और उनका ग्रंथ प्रकाशित हुआ तो कई रोचक बातें मालूम हुईं। उन्होंने लिखा—

> ''1852 में अंग्रेज सर्वेक्षण कर्ताओं ने जो खोज की है, मैं उन्हें उससे वंचित नहीं करना चाहता, परंतु उन तथ्यों पर प्रकाश डालने के लिए विवश हूँ, जिन्हें भुला दिया गया है। 1821 में कर्नल हावर्ड-बरी के नेतृत्व में जो अभियान भेजा गया था, उसे यह पता चला कि तिब्बत निवासी माउंट एवरेस्ट को 'चोमोलुंगमा' कहकर पुकारते हैं। ल्हासा से तिब्बत के जिला अधिकारियों को यह आदेश दिया गया कि अंग्रेज पर्वतारोही चो-मो-लुंग-मा नाम की चोटी तक जाना चाहते हैं। तिब्बती भाषा का यह शुद्ध नाम विभिन्न वर्तनी में उन मानचित्रों पर मिलता है, जो 1717 में पीकिंग में फ्रांस के जैस्विट पादरियों ने स्थानीय जानकारी के आधार पर तैयार किए थे। 1733 में दानवील ने पेरिस में ये मानचित्र प्रकाशित किए। यदि इस दो नामों में कोई सादृश्य है तो वह केवल इतना कि सुनने में दोनों एक से लगते हैं। लेकिन यहाँ पर यह बात उल्लेखनीय है कि अंग्रेजों के नए मानचित्रों और पुराने फ्रांसीसी मानचित्रों में इन दोनों की भौगोलिक स्थिति एक सी दिखाई गई है। आधुनिक मानचित्रों में माउंट एवरेस्ट का अक्षांश 27°59 और दावनील के मानचित्र में चोमोलुंगमा का अक्षांश 27°20 दिखाया गया है। फेरों के पूर्व में आधुनिक मानचित्रों रेखांश 104°55 और दावनील के मानचित्र में 103°50 है। आकलन में इतनी शुद्धता देखकर आश्चर्य होता है, विशेषकर इसलिए कि पीकिंग में जो हिसाब-किताब लगाया गया था, वह अठारहवीं

शताब्दी के प्रारंभ में था।''

इस बारे में भू-सर्वेक्षण विभाग के सर सिडनी बरर्ड ने लिखा है—

''हैडिन ने दानवील के मानचित्र में दिखाई गई पर्वतमाला चोमोलुंगमा और आधुनिक भूगोल के माउंट एवरेस्ट को एक ही प्रमाणित करने के लिए जो साक्ष्य प्रस्तुत किया है, वह बड़ा रोचक है और हमें उसकी खोज के लिए उनका आभारी होना चाहिए। परंतु मेरा दृष्टिकोण कुछ मामलों में उनसे भिन्न है और मैं उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए उनके निष्कर्षों का विश्लेषण करना चाहता हूँ। हैडिन ने अपने ग्रंथों में दो मुख्य निष्कर्ष निकाले हैं। पहला यह कि 1852 में अंग्रेजों ने संसार की सबसे ऊँची चोटी की खोज का दावा किया, परंतु वह तो 119 वर्ष पूर्व बनाए गए फ्रांसीसी मानचित्रों में दिखाई गई थी। और दूसरा यह कि माउंट एवरेस्ट का वास्तविक तिब्बती नाम चोमोलुंगमा है, जिसे अंग्रेज बीसवीं शताब्दी तक मालूम नहीं कर सके। परंतु यह 190 वर्ष पहले पीकिंग में जैस्विट पादरियों को मालूम था। हमें तटस्थ होकर इन निष्कर्षों पर विचार करना चाहिए, क्योंकि संसार की सबसे बड़ी चोटी के संदर्भ में संकीर्ण राष्ट्रीयता की भावना का परित्याग ही उचित है।''

सर स्वैन हैडिन की पुस्तक की समीक्षा करते हुए सर सिडनी ने लिखा—

''माउंट एवरेस्ट में जो दिलचस्पी दिखाई जा रही है, वह केवल उसकी ऊँचाई के कारण है। लामाओं और जैस्विट पादरियों ने यह पता लगाया कि इस सारे क्षेत्र में पर्वतमालाएँ हैं और चोटियाँ भी, परंतु उनके मानचित्रों से पता चलता है कि उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं था कि वहाँ पर असाधारण ऊँचाईवाली कोई चोटी भी है। सच तो यह है कि उन्हें माउंट एवरेस्ट के बारे में उतना ही पता था, जितना कि तिब्बत निवासियों को। 1849 तक माउंट एवरेस्ट के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उस वर्ष में भारत के मैदानों से थ्योडोलाइट नामक उपकरण से उसका सर्वेक्षण किया गया। तब तक संसार में कोई भी यह नहीं जानता था कि सबसे ऊँची चोटी यही है।''

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि माउंट एवरेस्ट की खोज किसने की? एक दंतकथा बहुत प्रचलित हो गई है और एवरेस्ट संबंधी कई पुस्तकों में उसका उल्लेख है। परंतु दुर्भाग्यवश वह सच नहीं है। कहा जाता है कि मुख्य आकलनकर्ता राधानाथ सिकदार महासर्वेक्षण के कमरे में दौड़े-दौड़े आए और बोले, ''श्रीमान, मैंने संसार की सबसे ऊँची चोटी का पता लगाया है।'' बरर्ड ने अपनी पुस्तक में इसका अच्छी तरह खंडन किया है

और यह सिद्ध किया है कि उस समय यह बात कही ही नहीं जा सकती थी।

राधानाथ सिकदार उस समय विभाग के कलकत्ता स्थित कार्यालय में थे। उनकी नियुक्ति 1849 में हुई थी और वे वहीं रहे। एवरेस्ट की ऊँचाई का आकलन करने में उनका कोई हाथ नहीं था। सिकदार बड़े योग्य व्यक्ति थे, जिन्होंने सर जॉर्ज एवरेस्ट के अधीन काम किया और भूरि-भूरि प्रशंसा पाई। वे तीस रुपए महीने के वेतन पर विभाग में आए थे और मुख्य आकलन कर्ता के पद पर पहुँचे। यह काफी बड़ी सफलता थी।

सन् 1950 में जब भारत को स्वतंत्र हुए अधिक समय नहीं हुआ था, वाद-विवाद प्रारंभ हो गया और एक समय बंगाल निवासियों ने प्रधानमंत्री नेहरू पर इस बात के लिए दबाव डाला कि माउंट एवरेस्ट का नाम बदलकर माउंट सिकदार रख दिया जाए। क्योंकि यह कहा गया है कि संसार की सबसे बड़ी चोटी की खोज में सिकदार का योगदान सर जॉर्ज एवरेस्ट के योगदान से कहीं अधिक था। इस प्रश्न पर भारत की संसद् में भी चर्चा हुई, परंतु उसका कोई परिणाम नहीं निकला। पहली बात तो यह है कि एवरेस्ट की ऊँचाई के संबंध में जो सर्वेक्षण किया गया था, उसके आकलन में सिकदार का कोई योगदान नहीं था और दूसरी यह कि आकलन कर्ता को खोज करनेवाला नहीं कहा जा सकता।

भू-सर्वेक्षण विभाग के रिकॉर्ड के अनुसार— ''हिमालय पर्वतमाला की मुख्य चोटियों (जिसमें माउंट एवरेस्ट भी आती है) की भौगोलिक स्थिति और उनकी ऊँचाइयों के निर्धारण में काम करनेवाले मिस्टर हैनेस थे। उन्होंने इस समय माउंट एवरेस्ट को देखा, जब वह उत्तर-पूर्वी अक्षांशों का निर्धारण कर रहे थे। मि. आर्मस्ट्रांग भी उन व्यक्तियों में से थे, जिन्होंने माउंट एवरेस्ट को देखा।''

एवरेस्ट के क्षेत्र में इस चोटी के पाँच तिब्बती नाम प्रचलित हैं—चोम कंकर (जिसका उल्लेख 1904 में कर्नल वेडन और शरतचंद्र दास ने किया है), छोलुंगबू (जिसका उल्लेख 1907 में सर्वेक्षक ऋथा सिंह ने किया है), चोमो लुंगयो (जिसका उल्लेख 1909 में जनरल ब्रूस ने किया है,) चोमो डरी (1921 में कर्नल हावर्ड वरी ने इसका उल्लेख किया) और चोमो लुंगमा इसका उल्लेख भी 1921 में कर्नल हावर्ड बरी ने किया।''

चोमो संस्कृत के शब्द गौरी (देवी) का तिब्बती पर्याय है। तिब्बत निवासी एवरेस्ट को 'चोमो लुंगमा' और नेपाल निवासी 'सगरमाता' कहते हैं। ल्हासा में तिब्बत के अधिकारी माउंट एवरेस्ट को चा-मो-लुंगमा कहते थे। ल्हासा में ब्रिटेन के प्रतिनिधि सर जॉर्ज बेल को माउंट एवरेस्ट के पहले अभियान का अनुमति-पत्र मिला। उन्होंने लिखा है—

''जब दलाई लामा ने मेरे ल्हासा पहुँचने के एक या दो सप्ताह बाद माउंट एवरेस्ट अभियान की अनुमति दी तो उन्होंने एक कागज मुझे दिया, जिस पर तिब्बती

भाषा में लिखा था—महान्शीन (बर्फ) के पाँच भंडारों के पश्चिम (जो कि चट्टानोंवाली घाटी के विहार के समीप श्वेत काँच दुर्ग के अधिकार-क्षेत्र में है) में दक्षिणी जिला है, जहाँ पक्षी रखे जाते हैं (लो-चा-मा-लुंग)। उसके बाद ल्हासा में दलाई लामा के एक निजी सचिव ने, जो अत्यधिक विद्वान् और मेधावी व्यक्ति था और मेरे दल के साथ था, मुझे बताया कि चा-मा-लुंग चा-जी-मा-लुंग-पा का संक्षिप्त रूप है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—'वह जिला, जहाँ पक्षी पाले जाते हैं।' उसने मुझे बताया कि सन् 650 से 800 तक तिब्बत के राजाओं के काल में इस जिले के राजा के खर्च से बहुत से पक्षियों को दाना-पानी दिया जाता था। चा-मा-लुंग में 'लुंग' शब्द का अर्थ है—ऐसा जिला, जिसमें घाटी या घाटियाँ हों, परंतु बहुधा इसका अर्थ घाटी ही होता है। इसका प्रयोग किसी चोटी या पहाड़ की चोटी पर बने पक्षियों के संरक्षण स्थल के लिए नहीं किया जा सकता। सच तो यह है कि चा-मा-लुंग, जो कि चा-जी-या-लुंग-पा का संक्षिप्त रूप है, किसी पर्वत का नाम हो ही नहीं सकता। और फिर दलाईलामा या उनके निजी सचिव ने इस शब्द का प्रयोग उस अर्थ में नहीं किया। मैंने कभी चोमो-लुंग या चोमो-लुंगमा शब्द नहीं सुने।

''इस बात की संभावना अधिक है कि लोग चा-मो- को बदलकर चो-मो कर देंगे, क्योंकि चो-मो पर्वतों के नाम में आता है। जैसे कि चो-मो-ल्हा-टी या चोमो लंगकर। 'चो' का अर्थ है—'देवताओं के श्रेष्ठ' और 'चोमो' उसका स्त्रीलिंग है। दलाई लामा ने जो कागज मुझे दिया था, उसमें स्पष्ट रूप से 'चा' लिखा था, 'चो' नहीं। माउंट एवरेस्ट के मानचित्र सर सिडनी बरर्ड ने तैयार किए हैं। उनमें से एक मानचित्र लामा के सर्वेक्षण की नकल है और दूसरा आधुनिक मानचित्र की, दोनों की तुलना की जाए तो यह पता चलता है कि लामा के मानचित्र में कई गलतियाँ हैं। कैलाश पर्वत की स्थिति में 85 मील की गलती है।

''सर बरर्ड का कहना था कि ऐसी गलती से तो माउंट एवरेस्ट शिखर से खिसककर भारत के मैदानों में आ सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि लामा के मानचित्र नदियों पर आधारित हैं और उनमें नदियों का रास्ता दिखाया गया है। आधुनिक मानचित्र में भी वही नदियाँ दिखाई गई हैं। दोनों मानचित्र एक जैसे लगते हैं, क्योंकि दोनों में नदियों के स्रोत एक जैसे हैं। इसलिए हम यह मान सकते हैं कि माउंट एवरेस्ट की खोज किसी एक व्यक्ति ने नहीं की, बल्कि इसमें दो व्यक्तियों का हाथ है। और इस खोज का श्रेय भू-सर्वेक्षण विभाग को मिलना चाहिए।''

सर जॉर्ज एवरेस्ट

सर जॉर्ज एवरेस्ट का जन्म 4 जुलाई, 1790 को इंग्लैंड के ग्रीनिच में हुआ था। उनके पिता ग्रीनिच और चेल्सिया अस्पतालों के वकील थे और जॉर्ज उनके दूसरे बेटे

थे। जॉर्ज एवरेस्ट बड़े मेधावी विद्यार्थी थे और 1806 में ईस्ट इंडिया कंपनी की नौकरी में भारत आए। बाद में वे बंगाल के तोपखाने में भरती हो गए।

कुछ वर्ष बाद वे जावा के गवर्नर सर स्टैमफोर्ड रैफल्स के कहने पर इस द्वीप का सर्वेक्षण करने के लिए गए। 1818 में भारत लौटे और भारत के सर्वेक्षण विभाग में काम करने लगे। कुछ वर्ष काम करने के बाद वे थोड़े दिनों के लिए इंग्लैंड गए, ताकि सर्वेक्षण के नए उपकरण अपने सामने बनवाकर यहाँ लाएँ। भारत लौटकर वे कलकत्ता में रहे और सर्वेक्षण दलों के उपकरणों के कारखाने का संगठन करते रहे।

सन् 1830 में वे भारत के महासर्वेक्षक नियुक्त हुए और उन्होंने महान् त्रिमितीय सर्वेक्षण किया। 1832 में वे मसूरी आए और मध्य हिमालय से पाँच सौ मीटर महान् चाप गए। वहाँ उन्होंने एक मकान खरीद लिया, जो अगले दस वर्ष तक उनका ग्रीष्मकाल का कार्यालय बना रहा।

यद्यपि सर जॉर्ज को मुख्य रूप से महान् चाप में रुचि रही, वे मद्रास और बंबई में सर्वेक्षणों के लिए जिम्मेदार रहे। 1834 में उन्होंने देहरादून और आगरा को आधार रेखा मानकर महान् चाप पर कार्य प्रारंभ किया। उसी वर्ष वे केदार कांता और चौर नाम के पर्वतों में गए। उन्होंने बर्फ से ढकी चोटियों का सर्वेक्षण किया और उनके स्कैच बनाए।

उन्होंने सर्दी-गरमी की परवाह न करते हुए अपना काम जारी रखा। कठोर परिश्रम और लंबी यात्राओं के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। एक बार फरवरी में उनके कूल्हे की हड्डी सूज गई, जिसके कारण चलना-फिरना भी मुश्किल हो गया।

''आश्चर्य की बात है,'' उन्होंने लिखा, ''कि सैकड़ों जोंकें लगवाई गईं, कई दिन तक दिन-रात सिंकाई की गई, सिंगियाँ लगाकर लहू निकाला गया और उसके बाद जाकर मुझे आराम मिला। फरवरी के अंत में मैं उठकर चलने-फिरने लगा।''

जॉर्ज एवरेस्ट रॉयल सोसाइटी के सदस्य बनाए गए। सोसाइटी ने उनके काम की भूरि-भूरि प्रशंसा की, क्योंकि ''वे दूर-दूर तक घने जंगलों में घूमते-फिरते रहे, जहाँ शेर या चीतों से भी अधिक खतरनाक टाइफस ज्वर के कीटाणु थे, जिसके कारण वे स्वयं और उनके सभी साथी बीमार पड़ गए। कई महीने तक वे इतने दुर्बल थे कि जब वे थ्योडोलाहट यंत्र की सहायता से सर्वेक्षण करते थे तो दो व्यक्ति उन्हें सहारा देकर खड़ा रखते थे। वे उस यंत्र का पेच भी स्वयं नहीं घुमा सकते थे।''वे इतने अथक थे कि उनके साथी उन्हें एवरेस्ट की बजाय 'नेवर रेस्ट' (जो कभी आराम न करें) कहा करते थे।''

सन् 1838 में जॉर्ज एवरेस्ट लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर पहुँचे और उनका वेतन 1700 रुपए से बढ़कर 2000 रुपए प्रति माह हो गया।

एक बार एवरेस्ट ग्वालियर जा रहे थे, लेकिन जब देखा कि कोई उनके स्वागत के लिए नहीं आया तो उन्होंने राज्य में घुसने से इनकार कर दिया। क्रोध में आकर उन्होंने

रेजीडेंट को कई पत्र लिखे, लेकिन रेजीडेंट ने हस्तक्षेप करने से इनकार किया। इसपर उन्होंने नियमों की अवहेलना करके सीधे दरबार को एक चिट्ठी लिखी, जिसके लिए ब्रिटिश सरकार ने उनकी भर्त्सना की।

सन् 1843 में वे महासर्वेक्षक के पद से मुक्त हुए और उनका स्थान पॉ ने किया, जिन्होंने 1836 में महान् चाप के संबंध में उनके साथ सहयोग किया था। वे 1844 में इंग्लैंड लौट गए, जहाँ उन्होंने अपने दूसरे महान् चाप संबंधी ग्रंथ की तैयारी शुरू की, जो 1847 में प्रकाशित हुआ।

इंग्लैंड लौटने के तुरंत बाद एवरेस्ट ने टामस विंड की पुत्री ऐमा से विवाह किया। उनके छह बच्चे हुए, परंतु दुर्भाग्यवश उनमें से कोई भी जीवित नहीं बचा। सेवानिवृत्त होने पर एवरेस्ट को 'सर' की उपाधि की पेशकश की गई, परंतु उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया।

सन् 1861 में फिर उन्हें यह उपाधि दी गई तो उन्होंने संभवत: अपने मित्रों के कहने-सुनने पर उसे स्वीकार कर लिया। उनका एक अन्य ग्रंथ 1859 में प्रकाशित हुआ तो भूमि पर यात्रा करनेवालों के लिए अक्षांशों के पर्यवेक्षण और उपकरण के संबंध में है। उनकी मृत्यु 1866 में हुई।

आरंभिक अभियान

एवरेस्ट चोटी एक तिकोने सूची स्तंभ (पिरामिड) जैसी है, जिसकी दक्षिण, उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्व की मेंड़ें उसके तीन पहलू हैं। दूसरे महायुद्ध से पहले सभी अभियान उत्तर-पूर्व मेंड़ से होकर जाते थे, जो चोटी से नॉर्थ पोल तक आती है और उसके बाद फिर ऊपर को उठकर उत्तरी चोटी से जा मिलती है।

सन् 1893 में पहली बार जनरल ब्रूस (जो उस समय कप्तान थे) और सर फ्रांसिस पंगहस्वैंड ने यह सुझाव दिया कि एक अभियान माउंट एवरेस्ट भेजा जाए। परंतु यह योजना कार्यरूप में परिणत नहीं हो पाई। उस समय तक ब्रिटेन के अधिकारी तिब्बत या नेपाल की सरकारों को इस बात के लिए तैयार नहीं कर पाए थे कि वे पर्वतारोहियों को अपने क्षेत्रों में आने की अनुमति दें।

वर्ष 1905 में भारत के वायसराय लॉर्ड कर्जन ने तिब्बत में प्रवेश पाने का भरसक प्रयत्न किया, परंतु उन्हें सफलता नहीं मिली। 1913 में भारतीय सेना के युवा कप्तान जे.पी.एल. नोएल भेष बदलकर तिब्बत में दाखिल हुए और एवरेस्ट से कुछ ही दूर रह गए। मार्च 1919 में उन्होंने रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी के सामने एक निबंध पढ़ा, जिसमें उन्होंने अपनी यात्रा का वर्णन किया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि पूर्ण रूप से लैस एक अभियान एवरेस्ट क्षेत्र का सर्वेक्षण करने के लिए भेजा जाए। सोसाइटी और अल्पाइन क्लब, दोनों ने इस सुझाव को तुरंत स्वीकार कर लिया।

दिसंबर 1920 के अंत में सर चार्ल्स बेल, जो उन दिनों विशेष काम से ल्हासा गए हुए थे, ब्रिटिश सरकार के माउंट एवरेस्ट के अभियान के लिए तिब्बत में प्रवेश की अनुमति प्राप्त करने में सफल हुए। अभियान का संगठन करने की तैयारियाँ तुरंत शुरू कर दी गईं और लेफ्टिनेंट कर्नल हावर्ड बरी को उसका नेता चुना गया।

इस दल में पर्वतारोही, एक सर्जन और भू-सर्वेक्षण विभाग का एक दल था। यह दल पूरी तरह से टोह लगाने के लिए संगठित किया था और इसका चोटी तक पहुँचने का कोई इरादा नहीं था। मुख्य उद्देश्य केवल यह था कि उस क्षेत्र की खोज की जाए, ताकि यह पता चल सके कि चोटी तक पहुँचने का कौन सा रास्ता है।

इसके साथ ही इस क्षेत्र का पूरा सर्वेक्षण करने का कार्यक्रम बनाया गया। यह अभियान रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी और एल्पाइन क्लब के तत्त्वावधान में संगठित किया गया। इन दोनों संगठनों ने माउंट एवरेस्ट समिति का गठन किया। अभियान में एच. टेबर्न, डॉ. ए.एम. कैलेस, जी.एल. मेलोरी, जी.एच. बुलेक और डॉ. ए.एफ.आर. बोलास्टन थे।

सर्वेक्षण विभाग के दल में मेजर एच.टी. मोर्सहैड, मेजर ई.ओ. छोकर, सर्वेक्षणकर्ता लालवीर सिंह, गूजर सिंह, तोराबाज खान और फोटोग्राफर अब्दुल जलील थे। उनके अतिरिक्त भूगर्भशास्त्री डॉ. ए.एम. हैरन थे।

ग्यारह सदस्यों और सोलह खलासियों तथा नौकरों का यह दल 13 मई, 1921 को दार्जिलिंग से रवाना हुआ। इनके पास सौ खच्चर थे। दुर्भाग्यवश अभियान के डॉ. कैलेस की मृत्यु हो गई और एक अन्य सदस्य को बीमार होने के कारण लौटना पड़ा। दल शेकर जाकर रुका, जो कि धान के खेतों भरे मैदान पर फूमचू के पाँच मील उत्तर में स्थित एक छोटा सा नगर है। नगर का नाम वहाँ के बौद्ध विहार शेकर चोटे के नाम पर पड़ा है, जो कि एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है। विहार की सफेद दीवारें एक के ऊपर एक स्थित हैं और यह वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। चाँदनी में सफेद दीवारें ऐसे

चमकती हैं, मानो वे पारदर्शी हों और अंदर का प्रकाश छन-छनकर बाहर आ रहा हो। उस बीहड़ क्षेत्र में जब लामा अपने शंख और ढोल बजाकर प्रार्थना करते थे तो यह विहार और भी भव्य लगता था।

पोंग घाटी से निकलकर अभियान तिलंगली गाँव पहुँचा। ये लोग अलग-अलग छह सप्ताह तक वहाँ रहे। इन्होंने एवरेस्ट तक उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम की ओर से जानेवाले रास्तों के क्षेत्र का पूरा सर्वेक्षण किया। इस अवधि में मौसम खराब रहा और बाहर काम करने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा। मेलरी और बुलक कर्ता घाटी में टोह लगाते रहे और रोंगबक घाटी का सर्वेक्षण मेजर हीलर ने किया। जब मौसम ठीक हो गया तो अग्रिम कैंप कर्ता घाटी में स्थापित किया गया। पहला कैंप 20,000 फीट की ऊँचाई पर बनाया गया और दूसरा कर्ता ग्लेशियर पर 22,000 फीट की ऊँचाई पर। इस काम में मेलरी का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा और वे कुछ ही समय में बहुत प्रसिद्ध एवरेस्ट आरोही माने गए। इस अभियान में वे लोका नामक ऊँचे दर्रे तक पहुँचे, जहाँ से उन्हें वह घाटी दिखाई दी, जिसका नाम बाद में 'पश्चिमी कूम' पड़ा।

दूसरे महायुद्ध के बाद सभी अभियान इसी घाटी में से होकर चोटी की ओर गए। 'कूल' वेल्स की भाषा का शब्द है और 'मेजरी' चूँकि वेल्ल में पहाड़ियों पर चढ़ा करता था, उसने इसी नाम से उस घाटी को पुकारा। मेलरी और उसका साथी नॉर्थ पोल पर 23,000 फीट की ऊँचाई पर पहुँचे। उसके ऊपर उत्तर-पूर्वी मेंड़ की चट्टानें हैं, जिनके बारे में उनका विचार था कि उनपर चढ़ा जा सकता है, परंतु उस समय उनके पास ऐसे उपकरण नहीं थे, जिनकी सहायता से चट्टानों को पार किया जा सके।

उस समय मौसम बिगड़ गया और बड़ी तेज हवा चलने लगी। दल के कई सदस्यों पर ऊँचाइयों का कुप्रभाव पड़ने लगा और वे लोग नीचे लौट आए। यह दल 16 अक्तूबर को दार्जिलिंग वापस लौट आया। इस अभियान में पर्वतारोहण और क्षेत्र के सर्वेक्षण दल ने महत्त्वपूर्ण काम किया है, मेलरी ने अपनी पुस्तक 'मैन अगेंस्ट एवरेस्ट' में लिखा है—

''कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है (किसी चोटी तक पहुँचने में सफल होने के लिए) सबसे अधिक एक बात की आवश्यकता है। पर्वतारोहियों को बहुत सी रुकावटों का सामना करना पड़ता है और कई बातें उनके लिए बाधक सिद्ध हो सकती हैं। यदि परिवहन की व्यवस्था असफल हो जाए तो यह उनके लिए घातक सिद्ध हो सकती है। यदि पहाड़ पर नई बर्फ पड़ी हो तो उसमें से निकलकर आगे जाना असंभव हो सकता है। तूफान आ जाए तो बलिष्ठ-से-बलिष्ठ पर्वतारोही को लौटना पड़ सकता है। यदि किसी का बूट थोड़ा तंग हो तो उस व्यक्ति का पैर घायल हो सकता है और संभव है कि ऐसी दशा में सारे दल को लौटना पड़ जाए।

''पर्वतारोहियों के लिए सफलता की सबसे बड़ी कुंजी सौभाग्य मात्र है और

पर्वतारोहियों का सबसे बड़ा सौभाग्य यह हो सकता है कि माउंट एवरेस्ट उन पर कृपा करे तथा कुछ समय के लिए अपनी भीषणता भुला दे। हमें यह याद रखना चाहिए कि सबसे बड़ी चोटी तक पहुँचने का प्रयत्न करने से पहले दस बार सोचेगा और इन कठिनाइयों की कल्पना करके काँप उठेगा।''

1922 का अभियान

एवरेस्ट के इतिहास में सन् 1922 का वर्ष महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उसमें पहली बार ब्रिटेन ने चोटी तक पहुँचने के लिए पूर्ण रूप से सुसज्जित अभियान का कार्यक्रम बनाया। इस अभियान के नेता छप्पन वर्षीय ब्रिगेडियर-जनरल चार्ल्स ब्रुस थे। इसके सदस्य थे—मेलरी, मेजर मोर्सहैड, कर्नल ई.टी. स्ट्रक, लेफ्टिनेंट कर्नल ई.एफ. नार्टन, डॉ. टी हावर्ड समरवेल, कैप्टन जाफ्रे ब्रूसा, जो ब्रिगेडियर ब्रूस के चचेरे भाई थे, कैप्टन जॉर्ज फ्रिंच और कैप्टन जॉन नोएल।

तेरह अंग्रेजों, सोलह नेपालियों, सौ तिब्बती पोर्टरों और तीन सौ से अधिक ठोरों का यह दल मार्च में दार्जिलिंग से चला। इसे ढाई सौ मील की यात्रा करके चोटी के आधार क्षेत्र तक पहुँचना था। ब्रिगेडियर जनरल ब्रूस ने सन् 1922 में अपनी पुस्तक 'दि एसॉल्ट ऑफ माउंट एवरेस्ट' में लिखा—

''1922 के अभियान का उद्देश्य वास्तव में यह था कि चोटी तक पहुँचने का प्रयत्न किया जाए, परंतु कोई भी महान् पर्वत पहले प्रयत्न में पर्वतारोहियों के आगे नहीं झुका और इसलिए इस बात की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती कि एवरेस्ट पर चढ़ने की इतनी कठिन समस्या का समाधान पहले ही प्रयत्न में हो जाता।''

यह अभियान जगमग उसी रास्ते से गया, जिस रास्ते से 1921 का अभियान गया

था। अंतर केवल इतना था कि शेकर से टिंगरी जाने की बजाय ये लोग चार दिन चलकर रोंगबक पहुँच गए। उन्होंने रोंगबक विहार के पास ग्लेशियर पर सोलह हजार फीट की ऊँचाई पर अपना बेस कैंप बनाया। रोंगबक जामा जगन्माता एवरेस्ट की पूजा करते हैं। 'रोंगबक' का शाब्दिक अर्थ है—'ऊँचे कगारों या ढालू घाटियों की घाटी।' टोंगबल घाटी बहुत पवित्र मानी जाती है और वहाँ पर किसी भी पशु को काटने की अनुमति नहीं है।

यह अभियान पूर्व रोंगबक ग्लेशियर और नॉर्थ पोल होकर आगे पहुँचा। दस मई को इस दल के सबसे बलिष्ठ पर्वतारोही ही मेलरी और समरपेल बेस कैंप से चले तथा तीन दिन तक कठिन चढ़ाई के बाद नॉर्थ पोल पहुँच गए। वहाँ पर 23,000 फीट की ऊँचाई पर चार टेंट लगाकर कैंप स्थापित किया गया।

इस अभियान में पहली बार ऑक्सीजन का प्रयोग किया गया। तेईस हजार फीट से चोटी तक जानेवाले दल के सदस्य—मेजर मोर्सहैड, मेलरी, समरवेल और नार्टन-उत्तर-पूर्वी मेंड़ से होकर ऊपर को गए और उन्होंने 25,000 फीट की ऊँचाई पर अपना कैंप स्थापित किया। मौसम बिगड़ गया और बड़ी तेज हवा चलने लगी। रात के समय बहुत बर्फ पड़ी।

सभी खतरों और रात भर आराम न कर सकने के बावजूद अगले दिन प्रात: शिखर-दल आगे चल पड़ा। मेजर मोर्सहैड को रुकना पड़ा, क्योंकि उनकी तबीयत खराब हो गई थी। बाकी के सदस्य आगे चले। सत्ताईस हजार फीट पर पहुँचकर शिखर दल के तीन सदस्यों ने देखा कि मौसम बहुत खराब है तो उन्होंने लौटने का निर्णय लिया, क्योंकि मोर्सहैड कैंप में अकेले थे और इन लोगों को यह चिंता थी कि अगर उन्हें अकेला छोड़ा गया तो संभवत: वे सवेरे तक बचेंगे नहीं। नॉर्थ पोल पहुँचकर उन्होंने देखा कि उनके पास ईंधन नहीं है, इसलिए भूख मिटाने के लिए उन्हें ठंडे पेय ही पीने पड़े। इस परिस्थिति में वे जल्दी से नीचे कैंप तीन की ओर चले। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि मेजर मोर्सहैड को लकवा मार गया था।

दूसरे शिखर दल में जाफ्रे ब्रूस, जॉर्ज फिंच और शेरपा तेजवीर थे। ये लोग नीचे से चलकर 25,000

फीट पर पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपना कैंप स्थापित किया। पहली बार उन्होंने ऑक्सीजन का प्रयोग किया। वहाँ पर हवा बड़ी तेज चल रही थी। जो रुकने का नाम ही नहीं लेती थी। फिंच ने लिखा है—

''खुले में, अर्थात् तंबू के बाहर, तीन या चार मिनट से अधिक ठहरना असंभव था। तेज और हड्डियों को चीरती ठंडी हवा शरीर की सारी शक्ति खींच लिये जा रही थी।''

लगभग 26,000 फीट पर पहुँचकर तेजवीर गिर पड़ा और उसके लिए आगे जाना असंभव हो गया। फिंच और ब्रूस उसे छोड़कर आगे बढ़ गए। ऑक्सीजन के उपकरण ने काम करना बंद कर दिया, शीघ्र ही उन्होंने देखा कि ऑक्सीजन समाप्त हो गई है।

उस समय वे लगभग 27,000 फीट की ऊँचाई पर थे और बहुत बुरी तरह थक गए थे। किसी-न-किसी तरह वे 300 फीट और ऊपर गए और वहाँ पहुँचकर देखा कि अब और आगे बढ़ना उनके बस की बात नहीं है। उनका यहाँ तक पहुँच पाना बहुत बड़ी सफलता थी, क्योंकि तब तक कोई भी व्यक्ति इतनी ऊँचाई तक नहीं पहुँच पाया था।

फिर भी अभियान को संतोष नहीं हुआ और एक नया शिखर दल भेजा गया। इसमें मेलरी और समरवेल थे, जिनके साथ चौदह पोर्टर भी थे। जब वे चौथे कैंप से छह सौ फीट नीचे थे तो एक बर्फीली आँधी से उनका सामना हुआ। मेलरी और समरवेल बाल-बाल बच गए, लेकिन सात पोर्टर मारे गए और शेष को गहरे घाव लगे। इससे अभियान का मनोबल टूट गया और उन्होंने और प्रयत्न बंद कर दिए।

मेजरी ने अपनी पुस्तक 'एसॉल्ट ऑन माउंट एवरेस्ट' में लिखा है—

''कुछ क्षण तक तो मुझे ऐसा लगा कि मेरे लिए कोई खतरा नहीं है और मैं बर्फ के साथ ही नीचे फिसल गया। इतने में मेरी कमर में बँधा रस्सातन गया और मेरा नीचे जाना रुक गया। बर्फ की एक लहर सी मेरे ऊपर से निकल गई और मैं बर्फ में दब गया। मुझे ऐसा लगा कि अब खेल खत्म हो गया है। लेकिन मुझे अन्य पर्वतारोहियों के अनुभवों की याद आई, जिन्होंने यह कहा था कि बर्फ में दब जाओ तो ऐसे हाथ-पैर मारो, जैसे कि पानी में तैरते समय मारते हैं। मैंने अपने हाथ सिर से ऊपर उठा लिये और सीधे लेटकर तैरने लगा।

''बर्फ के नीचे—जब यह पता नहीं था कि मैं कहाँ हूँ और कहाँ नहीं, मुझे यह भी पता नहीं था कि मैं कितनी तेजी से फिसल रहा हूँ—मैं हाथ-पैर मारता रहा। कुछ सेकेंड के बाद मैंने देखा कि मेरी गति मंद हो गई है। मुझे अपने शरीर के चारों ओर दबाव बढ़ता हुआ मालूम हुआ। मैं सोच रहा था कि पता नहीं बर्फ का दबाव किस प्रकार मेरी पसलियाँ तोड़ डालेगा कि इतने में आँधी रुक गई।''

1924 का अभियान

सन् 1924 में ब्रिटेन के पर्वतारोही एक और अभियान लेकर एवरेस्ट की ओर गए। यह अभियान पर्वतारोहण के इतिहास में सबसे प्रसिद्ध है। इस दल में मेलरी, कर्नल नार्टन और कुछ नए पर्वतारोही थे। इसी अभियान में मेलरी के साथ ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का बी.ए. का एक छात्र एंड्रयू इर्विन, जो कि अभियान का सबसे कम आयु का सदस्य था, छह जून को चोटी के लिए चला था।

यह अंतिम शिखर दल था। यद्यपि मेलरी के साथ ओडेल को जाना चाहिए था, लेकिन मेलरी ने इर्विन को ही अपना साथी चुना, इर्विन आयु में सबसे कम और सबसे कम अनुभववाला पर्वतारोही था। सर्दी के कारण उसका गला सूख गया था, परंतु वह यंत्रों की मरम्मत करने में बड़ा कुशल था और इसी कारण मेलरी ने उसे अपना साथी चुना, जिससे कि यदि ऑक्सीजन का उपकरण बिगड़ जाए तो इर्विन उसकी मरम्मत कर सके। मेलरी के दृष्टिकोण से यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात थी।

मेलरी और इर्विन बड़ी कठिनाई से पाँचवें कैंप तक पहुँचे। उन्होंने पोर्टरों के हाथ एक चिट्ठी भेजी, जिसमें कहा गया था कि हवा तेज नहीं चल रही है और स्थिति आशाजनक है। सात जून को ये दोनों छठे कैंप के लिए चले और ओडेल पाँचवें कैंप में ही रहा। उस दिन स्थिति अत्यंत आशाजनक थी। ये लोग सही-सलामत छठे कैंप तक पहुँच गए और रात भर आराम करने के बाद अगले दिन छह बजे उठे। मौसम अच्छा था। हाँ, थोड़ी धुंध बनी हुई थी। ओडेल ने लिखा—

''जब धुंध छँटी तो मैंने देखा कि चोटी की ओर जानेवाली मेंड़ दिखाई दे रही है

और इतने में एवरेस्ट पर से भी धुंध का परदा हट गया।''' उस समय मेलरी और इर्विन जिस स्थान से जा रहे थे, उसमें कोई अधिक कठिनाई का अनुभव नहीं हो रहा था।''

जब ये लोग लगभग 28,000 फीट की ऊँचाई पर चोटी की मेंड़ पर थे तो अचानक धुंध में गायब हो गए और फिर कभी दिखाई नहीं दिए। ओडेल ने दल के अन्य सदस्यों के साथ दो-तीन दिन तक उनकी खोज की, लेकिन उन दोनों का कुछ पता नहीं चला। पूरे क्षेत्र की खोज करने के बाद अभियान के सदस्य बुरी तरह निराश हो गए। ओडेल अकेला ही छठे कैंप से ऊपर मेलरी और इर्विन को खोजने निकला, उसने अपनी पुस्तक 'फाइट फॉर एवरेस्ट', 1924 में लिखा है—

''एवरेस्ट का ऊपरी भाग संसार का सबसे सुदूर और अत्यंत बीहड़ तथा भीषण स्थान है। जब वातावरण में धुँधलका होता है और चोटी छिप जाती है तथा तूफानी हवाएँ उसके आसपास चीखती हैं, उस समय उसकी क्रूरता और भीषणता संभवत: सबसे अधिक उजागर हो जाती है। जब आप अपने मित्रों को खोजने निकले हों, उस समय इस प्रकार की भीषण परिस्थिति का सामना करना पड़े तो उसे क्रूर के अतिरिक्त और क्या संज्ञा दी जा सकती है?

''मैं लगभग दो घंटे तक इस बात की कोशिश करता रहा कि मुझे अपने मित्रों का कोई चिह्न मिले, परंतु मेरे सारे प्रयत्न असफल रहे और मैंने यह महसूस किया कि कटी-फटी चट्टानों के इस इतने बड़े और व्यापक बीहड़ में उनको खोजना असंभव है तथा शिखर की ओर अधिक व्यापक जाँच के लिए एक और दल संगठित करना पड़ेगा।

''उस समय भी मेरा विचार था और आज भी है कि उन पर चाहे जो भी मुसीबत आई हो, उत्तर-पूर्व अटेर की मेंड़ के समीप जाने पर उनका कोई-न-कोई निशान अवश्य मिलेगा। मैंने उस दिन उन्हें उसी मेंड़ पर चढ़ते हुए देखा था। और संभवत: उसी रास्ते से उन्हें लौटना था। उस समय की परिस्थितियों में जितना समय मेरे पास था, उसमें उनकी खोज करना असंभव था।''

ये लोग चोटी पर पहुँचने के बाद गायब हुए या उसके पहले या ऊपर जाते समय मारे गए या नीचे आते समय—ऐसे कई प्रश्न हैं, जिनके उत्तर कभी नहीं मिलेंगे। लेकिन ओडेल का विचार है कि उन्हें रास्ते में रात हो गई थी, इसीलिए वे सदा के लिए ओझल हो गए। परंतु यदि वे चोटी तक नहीं पहुँच पाए तो भी इसे असफलता नहीं कहा जा सकता। यदि यह असफलता है तो भी इसमें सफलता का पुट है। उन्होंने ऐसे दुर्दम्य साहस का परिचय दिया, जिससे पर्वतारोही सदा प्रेरणा प्राप्त करते रहेंगे।

इस अभियान के बाद 9 वर्ष तक तिब्बत में विदेशियों के आने पर प्रतिबंध लगा दिया गया और 1937 में ब्रिटेन के पर्वतारोहियों को तीसरा अभियान भेजने की अनुमति मिली।

सन् 1933 के अभियान के नेता एल्फ और हिमालय की पर्वतमालाओं के अनुभवी

पर्वतारोही ह्यू रटलैज थे। उनके दल में 14 अनुभवी पर्वतारोही थे, जिनमें से प्रमुख थे—फ्रैंक एस. स्मिथ, एरिक शिप्टन, जे.एल. लांगलैंड, विन हैरिस, लारेंस वेजर और ई. बर्नी। यह अभियान अप्रैल महीने के मध्य में दार्जिलिंग से चला और इन्होंने रोंगबक ग्लेशियर के पूर्व में 21,000 फीट की ऊँचाई पर अपना दूसरा कैंप स्थापित किया। मौसम बिगड़ गया और अभियान केवल चौथा कैंप स्थापित करने में सफल हुआ, इसके बाद मौसम में कुछ सुधार हुआ तो 29 मई को इस दल ने 27400 फीट पर अपना छठा कैंप स्थापित किया।

यह कैंप 1924 के मेलरी के छठे कैंप से 600 फीट अधिक ऊँचा था। मौसम बिगड़ा ही रहा और अभियान को शीघ्र ही नीचे आना पड़ा। लौटते समय उन्होंने मेलरी और इर्विन के छठे कैंप के अवशेष देखे, जिनमें एक मोमबत्ती, लालटेन और एक टॉर्च थी, जो उस समय भी जल रही थी। उस समय बड़े जोर का तूफान आ गया और उन्हें नीचे आने में अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। इस अभियान के सदस्यों ने एक आइस एक्स पड़ा देखा, जो बाद में मेलरी का निकला। यह मेंड़ के सबसे ऊँचे बिंदु से साठ फीट नीचे पड़ा था। अभियान को इसलिए लौटना पड़ा, चूँकि वर्षा का मौसम साधारण समय से जल्दी शुरू हो गया था और वर्षा ने सारी पर्वतमाला को अपनी चपेट में ले लिया था।

1935 का प्रयत्न, जब टोह लगाई गई

एरिक शिप्टन के नेतृत्व में सात व्यक्तियों का एक टोह लगानेवाला दल एवरेस्ट

की पश्चिमी दिशा और 'नयोनो री' पर्वतमाला का सर्वेक्षण करने के लिए भेजा गया। यह दल जुलाई के मध्य में पहाड़ पर चढ़ा और नॉर्थ पोल तक शिप्टन ने यह निर्णय किया कि चढ़ाई जारी रखी जाए, जिससे कि यह पता चल सके कि बारिश के मौसम में वहाँ पर क्या स्थिति होती है।

उसने सोचा, यदि परिस्थिति अनुकूल हुई तो अभियान चोटी तक पहुँचने की कोशिश करेगा। दुर्भाग्यवश मौसम बिगड़ा ही रहा और इस दल के सदस्यों को तीसरे कैंप पर लौटकर वहीं प्रतीक्षा करनी पड़ी। उसके बाद मौसम सुधरा ही नहीं। एक बहुत बड़ी एवलांश आ गई, जिसके कारण बर्फ की परिस्थिति बिलकुल ही बदल गई। इन लोगों ने सोचा कि कम ऊँचाइयों पर ही खोजबीन जारी रखें और ऊपर जाकर एवलांश का खतरा मोल न लें।

इसी अभियान के सदस्यों ने अपने दूसरे कैंप से कोई तीन सौ गज ऊपर एक शव पड़ा देखा। यह असल में मोरिस विलसन का था, जो एक वर्ष पहले अकेला ही माउंट एवरेस्ट तक पहुँचने की कोशिश में मारा गया था। विलसन को इस बात का दृढ़ विश्वास था कि योग साधना की सहायता से यदि वह तीन सप्ताह तक व्रत रखे तो ऊँचे शिखरों तक पहुँच सकता है। उसका विचार था कि ऐसा करने से उसके मस्तिष्क का आत्मा के साथ सीधा संबंध स्थापित हो जाएगा। उस परिस्थिति में सभी आत्मिक और शारीरिक दु:ख उसे छोड़ जाएँगे और उसमें इतनी अधिक शक्ति का संचार हो जाएगा कि वह बिना किसी कठिनाई के एवरेस्ट की चोटी तक पहुँच जाएगा।

विलसन पर्वतारोही नहीं था और उसका विचार था कि एक छोटे से विमान में उड़कर एवरेस्ट के क्षेत्र में जितनी ऊँचाई तक संभव हो, पहुँच जाए और वहाँ पर विमान को उतार दे। उसके बाद वह पैदल चलकर चोटी तक पहुँचना चाहता था। यह सोचकर उसने एक छोटा विमान खरीदा और उसमें बैठकर भारत के लिए चला, लेकिन उसे काहिरा हवाई अड्डे पर रोककर वापस भेज दिया गया।

बाद में वह दार्जिलिंग पहुँचने में सफल हो गया और शेरपाओं को बहुत सा धन देकर उन्हें इस बात के लिए तैयार कर लिया कि वे चोरी-छिपे उसे तिब्बत में ले जाएँ। वहाँ पर जाकर उसे यह कहना था कि वह 1933 के अभियान का सदस्य है और अभियान का पीछे छोड़ा हुआ सामान उठाने आया है। वह चावलों का माँड़ लेकर नॉर्थ पोल की ओर चला और अकेला ही दूसरे कैंप तक पहुँचने में सफल हो गया। कुछ समय तक आराम करने के बाद उसने अपने शेरपाओं की सहायता की और तीसरे कैंप पहुँचा, जहाँ पर उसे पुराने अभियानों का छोड़ा हुआ सामान मिला। उस भंडार में चॉकलेट, बिस्कुट और सार्डीन मछली के डिब्बे थे।

उसने पर्वतारोहण का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया और उसे यह भी पता नहीं था कि

आइस एक्स का प्रयोग किस तरह करना है, हालाँकि वह एक आइस एक्स अपने साथ लाया था। उसने आगे बढ़ने का भरसक प्रयत्न किया, परंतु मौसम और बर्फ ने उसे खदेड़ दिया। वह नॉर्थ पोल की ढलानों से आगे नहीं जा पाया। शिप्टन के दल ने बाद में एक फटे हुए तंबू में उसका शव पड़ा पाया। उसके पास उसकी डायरी थी, जिसमें उसने योग-साधना में अपने अटूट विश्वास का परिचय दिया था। विलसन रोंगबक से चलने से दो महीने के भीतर ही मारा गया। 1960 में चीन के अभियान ने विलसन का शव पड़ा देखा और उसकी फिल्म तैयार कर ली। बाद में यह फिल्म यूरोप में दिखाई गई।

1936 का अभियान

इस अभियान के नेता ह्यू रटलैज थे और सदस्य थे—शिप्टन, स्मिथ, विन हैरिस, विग्राम, वारन, गाविन और ओलीवरा; 1924 के बाद जितने अभियान गए, उनमें सबसे अच्छे पर्वतारोहियों का दल यही था। ये लोग मार्च में दार्जिलिंग से चले और अप्रैल तक इन्होंने तीसरा और चौथा कैंप स्थापित कर लिया। यह पहला अवसर था कि किसी अभियान के पास रेडियो संचार साधन थे। इन्हें दार्जिलिंग से मौसम के बारे में सारी जानकारी मिलती रहती थी। वर्षा का मौसम समय से पहले प्रारंभ हो गया था और इस कारण ऊँचाइयों पर मौसम बिगड़ गया था, लेकिन फिर भी ये लोग जून के पहले सप्ताह तक उसी क्षेत्र में रहे। इन्हें कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई। मौसम के लगातार खराब रहने के कारण कोई भी सदस्य 21000 फीट से ऊपर नहीं जा पाया।

1938 का अभियान

अब तक जितने अभियान भेजे गए थे, उनके सदस्यों की संख्या काफी अधिक होती थी, लेकिन अब यह फैसला किया गया कि कुछ चुने हुए पर्वतारोहियों का छोटा सा दल भेजा जाए, लेकिन अनुभवी शेरपाओं का दल उनके साथ जाए। इस दल में स्मिथ, वारन, ओलिबर, ओडेन और एक नया पर्वतारोही पीटर लायड थे। हैरल्ड टिलमेन भी इसी दल का सदस्य था।

18 मई को उन्होंने तीसरा कैंप स्थापित किया और 24 मई को नॉर्थ पोल पहुँच गए। मौसम बहुत खराब था, इस कारण सदस्यों को ऊपर जाने में अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। शिप्टन और स्मिथ पोर्टरों को लेकर नीचे की ओर आए, जिससे कि यह पता चल सके कि पश्चिम की ओर जाना संभव है या नहीं। दल के बाकी सदस्य चौथे कैंप तक पहुँच गए। टिलमेन और एक शेरपा ने पाँचवाँ कैंप स्थापित करने की कोशिश की; परंतु मौसम खराब होने के कारण 20,500 फीट से उन्हें लौटना पड़ा। पिछले अभियानों के समान इस अभियान को भी कोई सफलता नहीं मिली और ये लोग 27,200 फीट तक ही पहुँच पाए। इस अभियान के बाद दूसरा महायुद्ध प्रारंभ हो गया।

एवरेस्ट के एक क्षेत्र में पर्वतारोहण का कार्यकलाप बंद हो गया और एवरेस्ट पर शांति छा गई।

लेकिन 1947 में एवरेस्ट पर एक और अनधिकृत प्रयत्न किया गया। यह पर्वतारोही अर्क सी डैनमैन नाम का कनाडियायी था, जो दक्षिण अफ्रीका का निवासी बन गया था। 1947 में डैनमैन मोरिस विल्सन के समान बिना किसी प्रवेश-पत्र के और भेष बदलकर तिब्बत में पहुँचा। उसे अफ्रीका में पर्वतारोहण का थोड़ा अनुभव प्राप्त हो चुका था। उसका मनोबल बहुत अधिक ऊँचा था और वह बलिष्ठ होने के कारण कठिन-से-कठिन परिस्थिति का सामना कर सकता था। वह अपने साथ दो शेरपा ले गया था, जिसमें से एक तेनजिंग था, जो बाद में एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचा। इन लोगों के पास बहुत कम साज-सामान था और बर्फ की परिस्थितियाँ अनुकूल होने का लाभ उठाकर ये एवरेस्ट के दक्षिणी ढलान तक पहुँच गए।

उसके पास साज-सामान नहीं था, इसलिए शेरपाओं ने साथ जाने से इनकार कर दिया। इसके बावजूद डैनमैन आगे बढ़ता गया। उसके पास स्लीपिंग बैग तक नहीं था और उसे बहुत ठंड और तेज हवा के सामने झुकना पड़ा। विवश होकर उसने नीचे आने की ठान ली। ऐसा लगता है कि वह 23,000 फीट तक ही पहुँच पाया था। अपने लक्ष्य की प्राप्ति में असफल रहने के कारण डैनमैन बहुत निराश हुआ। बाद में उसने एक पुस्तक लिखी 'एलोन टू एवरेस्ट', जिसके कारण वह बहुत लोकप्रिय हो गया।

स्विट्जरलैंड का अभियान

दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटेन ने ल्हासा में अपने दूतावास के माध्यम से फिर से इस बात का प्रयत्न किया कि तिब्बत के अधिकारी ब्रिटेन के अभियान को एवरेस्ट तक जाने की अनुमति देंगे। उस समय चीनी कम्युनिस्ट सेनाएँ तिब्बत के प्रत्येक भाग में आ घुसी थीं और इस कारण स्थिति बिगड़ रही थी। परिणाम यह हुआ कि उत्तर के रास्ते से इस चोटी तक पहुँचने में किसी भी विदेशी अभियान का जाना अनिश्चित था। इस बीच नेपाल की सरकार ने अपने नियमों में ढील दे दी और नेपाल की ओर से हिमालय के क्षेत्र में चोटियों तक पहुँचनेवाले अभियानों और वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए जानेवाले दलों को अनुमति देनी प्रारंभ कर दी।

नेपाल की ओर से जो पहला विदेशी दल एवरेस्ट के क्षेत्र में गया, वह अमेरिका के दो व्यक्ति चार्ल्स ह्यूस्टन और बिल टिलमैन थे, जो 1950 की शरद ऋतु में वहाँ पहुँचे। उन्होंने खुंबू ग्लेशियर के आसपास के क्षेत्र की खोज की, परंतु उनके पास इतना समय नहीं था कि पश्चिमी कुम के नीचे आइस फाल का अध्ययन कर सकते। इन दोनों की खोज का निष्कर्ष यह था कि इस ओर से चोटी तक पहुँचने की संभावना लगभग नहीं के बराबर है। एरिक शिप्टन ने भी रिकॉर्ड और विमानों में लिये गए चित्रों

को देखकर यह निष्कर्ष निकाला था कि आइज पाल के रास्ते एवरेस्ट तक पहुँचने का रास्ता बनाने की कोई संभावना नहीं है। परंतु 1951 में टोह लगाने के लिए एक दल भेजा गया और उसने यह सिद्ध कर दिया कि ऐसी बात नहीं है।

पुरानी एवरेस्ट समिति का नाम बदलकर 'हिमालय समिति' रख दिया गया था और उसने 1951 में इस रास्ते से ब्रिटेन का एक अभियान भेजने की अनुमति माँगी, जो उसे दे दी गई। इस अभियान के नेता एरिक शिप्टन थे, जो अपने दल में अन्य सदस्यों—बिल मरे, माइकल वांड और टॉम बोर्डीलोन के साथ चीन से लौटे थे। यह दल 18 अगस्त को ब्रिटेन से चला था। नेपाल में न्यूजीलैंड के दो पर्वतारोही—एडमंड हिलेरी और अर्ल रिडिफोर्ड—उनसे आ मिले, ये दोनों भारत की चोटियों पर चढ़ने की चेष्टा कर रहे थे। यह दल जोगबनी (जो भारत का रेलवे स्टेशन है) के रास्ते नेपाल में प्रविष्ट हुआ और 22 सितंबर को नामचे बाजार पहुँचा। तीस सितंबर को उन्होंने ग्लेशियर की टोह लगानी प्रारंभ की और 20,000 फीट की ऊँचाई तक पहुँच गए। वहाँ से उन्हें पश्चिमी कूम की घाटी दिखाई पड़ी और उन्होंने यह महसूस किया कि इस घाटी में से होकर ल्होत्से के बाजू तक और वहाँ से दक्षिणी कोल तथा दक्षिणी चोटी से होकर एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचा जा सकता है।

तीन दिन तक बर्फ गिरती रही और ये लोग और ऊँचा नहीं पहँच पाए। ये नवंबर में लौटे, लेकिन जोगबनी पहुँचने की बजाय काठमांडू पहुँच गए। एवरेस्ट के रास्ते की टोह लगाने का जो काम इस दल ने किया था, उसमें दुनिया भर के पर्वतारोहियों ने दिलचस्पी दिखाई, क्योंकि यह पहला अवसर था, जब दक्षिण की ओर से चोटी तक पहुँचने का रास्ता दिखाई दिया था। इस अभियान ने हिममानव (चेती) के पैरों के निशान के चित्र खींचे थे। शिप्टन का कहना था कि हिममानव के पैरों के निशान चढ़ाई में काम आनेवाले बूटों के निशान की अपेक्षा लंबे हैं और तनिक चौड़े भी। इससे पता चलता था कि हिममानव के पैर की तीन चौड़ी-चौड़ी उँगलियाँ हैं और एक अँगूठा। हिममानव आज तक एक रहस्य बना हुआ है।

रास्ते की खोज के इस प्रयत्न का बड़ा महत्त्व है, और वह इस प्रकार कि इस दल द्वारा लाई गई जानकारी के आधार पर पर्वतारोहियों को यह विश्वास हो गया कि

एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचने का रास्ता है, भले ही उसमें कुछ खतरे हो सकते हैं और निराशा का मुँह देखना पड़ सकता है। इस दल को दृढ़विश्वास था कि यह रास्ता तिब्बत की ओर से पहुँचनेवाले रास्ते की अपेक्षा अधिक आसान दिखाई पड़ता है और संभवत: उसमें इतना खतरा भी नहीं है।

ब्रिटेन के पर्वतारोहियों को आशा थी कि वे 1952 में एवरेस्ट तक पहुँचने का प्रयास करेंगे, परंतु जब उन्हें यह पता चला कि स्विट्जरलैंड के एक दल को वहाँ जाने की अनुमति दे दी गई है तो उन्हें बड़ी निराशा हुई। लेकिन एक यह सुझाव दिया गया कि एरिक शिप्टन और डॉक्टर विस डुनांट के साझे नेतृत्व में एक अभियान भेजा जाए।

हिमालय समिति ने इस मिले-जुले अभियान को स्वीकृति नहीं दी, क्योंकि उसे यह डर था कि यह असफल रहेगा। ऐसा देखा गया है कि भिन्न-भिन्न देशों के पर्वतारोही आपस में मिल-जुलकर चढ़ाई नहीं करते, इसका कारण यह है कि एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचने के प्रयत्न में शरीर और मानसिक स्थितियों पर बहुत दबाव पड़ता है। एरिक शिप्टन इस प्रकार के मिले-जुले दलों के विरुद्ध थे।

1952 का स्विट्जरलैंड का अभियान

सन् 1949 में स्विट्जरलैंड के एल्फ अनुसंधान संगठन ने नेपाल सरकार से एवरेस्ट तक चढ़ाई करने की अनुमति माँगी, जो 1951 के अंत में दे दी गई और स्विस पर्वतारोहियों ने 1952 के लिए तैयारी प्रारंभ कर दी। पहले उनका यह विचार था कि ब्रिटेन और स्विट्जरलैंड के पर्वतारोहियों का मिला-जुला दल भेजा जाए, परंतु यह विचार छोड़ दिया गया।

कारण यह था कि यह दल बहुत बड़ा हो जाता और इसका प्रबंध करना कठिन हो

जाता। प्रशासन और प्रबंधन संबंधी मामलों में तालमेल रखने का समय नहीं था, जिसका कारण यह था कि स्विट्जरलैंड की तैयारी काफी आगे बढ़ चुकी थी। एक कारण यह भी था कि दोनों देशों के नेताओं के लिए मिल-जुलकर काम करना कठिन था।

स्विस दल के नेता विसडुनांट थे, जो पर्वतारोही भी थे और स्की भी करते थे। उनके साथ फ्लोरी, लैंबर्ट डिर्ल्ट और अन्य पर्वतारोही थे, ये लोग अप्रैल के प्रारंभ में काठमांडू से रवाना हुए। इस अभियान के पास ब्रिटेन के पर्वतारोहियों की अपेक्षा अधिक अच्छा साज-सामान था। उनके ऑक्सीजन के उपकरण कम वजन के थे और उन्हें उठाकर ले जाना आसान था। इस दल में तेनजिंग भी थे। इस अभियान ने अच्छी प्रगति की। इसका चौथा कैंप 21,150 फीट और पाँचवाँ 22,630 फीट पर था। मौसम बहुत अच्छा था और पहले शिखर दल में लैंबर्ट तथा तेनजिंग फ्लोरी और ओवर्ट को अपने साथ लेकर आगे चले। उन्होंने अपना छठा कैंप दक्षिणी कोल पर 25,840 फीट पर बनाया।

मौसम बहुत अच्छा था अैर ऐसा लग रहा था कि शिखर दल की सफलता संभव है। जैंबटे और तेनजिंग फ्लोरी और ओवर्ट को लेकर शिखर की ओर चले। उन्होंने 27,550 फीट तक अपना सातवाँ कैंप स्थापित किया। उन चारों के लिए शिखर तक पहुँचना संभव नहीं था और उन्हें यह फैसला करना था कि उनमें से कौन से शिखर की ओर जाएँगे। ओवर्ट ने इस बात पर बल दिया कि लैंबर्ट और तेनजिंग ही के शिखर तक पहुँचने की संभावना है और उन्हीं दो को चुना जाए। फ्लोरी भी ओबर्ट के फैसले से सहमत थे। देखा जाए तो इन दोनों ने बड़ा बलिदान किया, क्योंकि वे चोटी के समीप पहुँच गए थे और स्वयं भी शिखर तक पहुँच सकते थे।

फ्लोरी ने निर्णय की इस घड़ी का उल्लेख करते हुए लिखा है—''यह बड़ी महत्त्वपूर्ण घड़ी थी, जब साड़े सत्ताईस हजार फीट पर हम एक-दूसरे से बिछड़े। उस समय सबकी आँखें भर आईं। हमारे साथी इस बात को समझते थे कि हम दोनों शिखर तक पहुँचने का मौका उन्हें देकर कितना बलिदान कर रहे हैं। वे सिसकते हुए हमारे गले से लग गए। उस समय मैं सोच रहा था कि क्या यह अधिक ऊँचाई का प्रभाव है कि ये लोग इस प्रकार सिसक रहे हैं।''

28 मई को जब लैंबर्ट और तेनजिंग चोटी की ओर चले तो फ्लोरी और ओबर्ट चोटी या शिखर दल की ओर मुड़कर देखे बिना नीचे को चल दिए। लैंबर्ट और तेनजिंग धीरे-धीरे बड़ी सावधानी से ऊपर तक गए और उन्हें 28,210 फीट तक पहुँचने में अधिक कठिनाई नहीं हुई। तब तक कोई भी अन्य व्यक्ति इतनी ऊँचाई तक नहीं पहुँच पाया था, लेकिन अब उनके लिए और ऊपर जाना असंभव हो गया, क्योंकि वे थककर चूर हो गए थे।

उन्होंने भरसक प्रयत्न किया, लेकिन अधिक ऊपर नहीं जा सके। हताश होकर वे नीचे की ओर चले और 29 मई को पाँचवें कैंप तक पहुँच गए। दूसरा शिखर दल डिटर्ट के नेतृत्व में चोटी की ओर चला, लेकिन अधिक ऊँचाई के कारण इन लोगों की तबीयत भी खराब हो गई और इन्हें लौटना पड़ा। इस बारे में डिटर्ट ने लिखा है—

> ''जैसे-जैसे हम ऊपर बढ़ते गए, हमें साँस लेने में कठिनाई होने लगी; 25,600 फीट से आगे पहुँचकर हम रुक गए, क्योंकि हमें सदा के समान यह आशा थी कि तनिक आराम करने के बाद हमारी शक्ति लौट आएगी, लेकिन यह कोरी आशा मात्र थी। इतनी ऊँचाई पर पहुँचकर थकावट के कारण खोई हुई शक्ति लौटकर नहीं आती और प्रत्येक मिनट के बाद शरीर की शक्ति का ह्रास होता है। कोई व्यक्ति कितना ही हट्टा-कट्टा क्यों न हो, वहाँ पहुँचकर बलहीन हो जाता है।
>
> ''आप बैठ जाएँ तो तबीयत कुछ सुधर जाती है और आराम से साँस ले सकते हैं, परंतु जब आप खड़े होते हैं और अपना बोझा पीठ पर लादकर आगे चलते हैं तो यह देखकर बड़ी निराशा होती है कि आपकी शारीरिक शक्ति फिर वैसी ही हो गई है, जैसी कि वहाँ रुकने से पहले थी। उस समय आपको अपने सारे मनोबल का प्रयोग करके आगे कदम बढ़ाना पड़ता है और प्रत्येक कदम यातना भरा होता है।
>
> ''हम यंत्रवत् आगे बढ़ते गए। एक-एक कदम आगे बढ़ते थे और कठपुतलियों के समान हमारे पैर आगे पड़ रहे थे। एक भी कदम गलत पड़ जाता था, तनिक जोर लगाना पड़ता था तो थककर चूर हो जाते थे और वहीं रुकने पर विवश हो जाते थे। प्रत्येक कदम के लिए हमें सात या आठ बार जल्दी-जल्दी साँस लेनी पड़ती थी।''

इस शिखर दल को बहुत बड़ी निराशा का सामना करना पड़ा, विशेषकर इसलिए कि यह उस समय लौटने पर मजबूर हुआ, जब इसके सदस्य चोटी से सिर्फ आठ सौ फीट नीचे थे।

लैंबर्ट ने लिखा है—''एवरेस्ट पर जानेवाले प्रत्येक अभियान को तनिक अधिक जानकारी प्राप्त होती है, जिसके आधार पर भविष्य में चोटी तक पहुँचना संभव हो जाएगा और इस साल के अनुभव से हमने निश्चित रूप से कुछ बातें सीखीं। संभवत: सबसे अधिक रोचक निष्कर्ष यह है कि एवरेस्ट पर जानेवाले पर्वतारोहियों की आयु तीस से तैंतालीस वर्ष के बीच होनी चाहिए।

''हमने यह भी सीखा है कि अधिक समय तक किसी स्थान पर रहकर अपने शरीर को ऊँचाइयों के अनुकूल बनाने के क्या-क्या लाभ हैं। हमने पश्चिमी झूम की घाटी में

कई दिनों तक टोह लगाने का काम किया था और इसका लाभ यह हुआ कि लगभग छब्बीस हजार फीट तक की ऊँचाई पर भी अभियान के किसी सदस्य की तबीयत खराब नहीं हुई। कारण यह था कि सबका शरीर ऊँचाइयों के अनुकूल बन चुका था।

''लेकिन पश्चिमी झूम (22,630 फीट) पर बने पाँचवें कैंप और दक्षिणी कोल (25,840 फीट) पर बने छठे कैंप के बीच बहुत अधिक समय बीत जाने के कारण तनिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। ऊपर के कैंप तक एक दिन में तीन हजार फीट चढ़ाई करनी पड़ी और हम इतने थक गए थे कि उसके बाद चोटी तक पहुँचने में सफल होना संभव नहीं था। हमने यह सीखा कि इसी रास्ते से जाना हो तो इन दो कैंपों के बीच लगभग चौबीस हजार फीट की ऊँचाई तक एक और कैंप होना चाहिए, जिससे कि पर्वतारोही बिना अधिक थके चोटी तक पहुँचने का प्रयास कर सकें।''

1952 में वर्षाकाल के बाद भेजा गया अभियान

स्विस पर्वतारोही डॉक्टर जबरील शैवार्ले के नेतृत्व में एक और अभियान लेकर एवरेस्ट के क्षेत्र में पहुँचे। इस दल में लैंबर्ट, अर्नेस्ट रीस, गुस्टाव ग्रोस, आर्थर स्पोहेल, जीम ब्रीजियो और शेरपा तेनजिंग थे। दस सितंबर को यह दल 250 पोर्टरों सहित नामचे बाजार के लिए रवाना हुआ। रास्ते में दो पोर्टर सर्दी लगने से मर गए। इस दल ने अपना बेस कैंप दो अक्तूबर को और पाँचवाँ कैंप 26 अक्तूबर को स्थापित किया। अभियान को एक और दुर्दिन देखना पड़ा, जब युवा शेरपा मिंगमा डोई आइस फाल पर गिरकर मृत्यु को प्राप्त हुआ और तीन शेरपाओं की हड्डियाँ टूट गईं तथा उन्हें नीचे भेजना पड़ा।

अब इस क्षेत्र में बड़ी तेज हवा चलने लगी थी। लैंबर्ट टीस और तेनजिंग के सात शेरपाओं को साथ लेकर 19 नवंबर को आठवाँ कैंप स्थापित कर दिया गया। अब तक मौसम बहुत बिगड़ चुका था। ये लोग दो दिन तक मौसम के सुधरने की प्रतीक्षा करते रहे, लेकिन उसके बाद हताश होकर नीचे आए।

1952 में रूस का अभियान

इटली की एक एल्प्स संबंधी पत्रिका 'स्कार्पोन' ने यह समाचार प्रकाशित किया था कि 1952 की सर्दियों में रूसी पर्वतारोहियों के एक दल ने एवरेस्ट के शिखर तक पहुँचने की चेष्टा की। जब रूसियों को यह पता चला कि स्विस पर्वतारोहियों का दूसरा दल 1952 की सर्दी के मौसम में एवरेस्ट के लिए रवाना हो रहा है तो उन्होंने इस बात का भरसक प्रयत्न किया कि वे स्विस पर्वतारोहियों से पहले ही चोटी तक पहुँच जाएँ।

लंदन के समाचार 'टाइम्स' ने उन दिनों समाचार दिया था कि रूस के इस अभियान में पैंतीस अनुभवी पर्वतारोही और पाँच वैज्ञानिक थे। इन वैज्ञानिकों में प्रोफेसर

चांदोमनोव नामक भूगर्भशास्त्री और डॉक्टर दंगमुराव थे, जो कि अधिक ऊँचाई पर मानव शरीर की क्रियाओं के अध्ययन के विशेषज्ञ थे। अभियान 16 अक्तूबर को मास्को से रवाना हुआ। उसका नेता डॉक्टर पावेल डेटस्नोलियन था, जो आर्मीनिया का रहनेवाला था।

सेना के पाँच विमानों में इस अभियान का साज-सामान भरकर पहले तो नोवोसीवर्क्स पहुँचाया गया, उसके बाद इटकुत्स और अंत में ल्हासा। वहाँ से चोटी का रास्ता आशा से अधिक लंबा निकला और कहा जाता है कि इस अभियान ने एवरेस्ट के उत्तर में नासुलान पर अपना बेस कैंप बनाया। दल के सदस्य एक महीने बाद वहाँ से चले और 27 दिसंबर को असफल होकर लौटे। 26,800 फीट पर इस दल के छह सदस्य मारे गए। मरनेवालों में अभियान का नेता भी था, जो कि रूस का सर्वोत्तम पर्वतारोही माना जाता था। उसके अतिरिक्त काजिन्स्की, एलेक्जेंड्रोविच और लेनित्सोव भी मारे गए, जिन्हें काकेशस की चोटियों पर चढ़ने का अनुभव था। कहा जाता है कि अभियान का नेता अपने ट्रांसमीटर की सहायता से प्रति दिन मास्को से संपर्क बनाए हुए था और उसका अंतिम संदेश यह था कि शिखर दल ने 26,800 फीट पर आठवाँ कैंप स्थापित कर लिया है। संदेश में यह भी कहा गया था कि कभी सदस्य स्वस्थ हैं और आशा है कि यदि मौसम ठीक रहा तो वे अगले दो दिन में चोटी तक पहुँच जाएँगे।

इसके बाद संदेश आने बंद हो गए और रूस सरकार ने तुरंत इन पर्वतारोहियों की खोज करने का आदेश दिया। खोज करनेवाले दल अठारह दिन तक उस क्षेत्र में टोह लगाते रहे, लेकिन उन्हें इन व्यक्तियों का कुछ पता नहीं चला। उसके बाद सर्दी शुरू हो गई तो खोज का काम बंद कर दिया गया। अगले साल वसंत ऋतु में फिर खोज की गई, परंतु उन लोगों के शव नहीं मिले।

□

आरंभिक चरण

पहाड़ों की चढ़ाई के प्रति आकर्षित होने से काफी पहले एडमंड हिलेरी के मन में पुस्तकों के प्रति लगाव पैदा हो चुका था। बालक एडमंड को किताबें पढ़ना इतना पसंद था कि उसने अपनी बड़ी बहन जून से कह रखा था कि जब भी पिता रात के वक्त बच्चों की जाँच करने आएँ तो वह पहले ही उसे आगाह कर दे, ताकि किताब छिपाकर वह सोने का नाटक कर सके। इसके लिए एडमंड ने एक उपाय खोज निकाला था। उसने जून के कमरे से अपने कमरे तक एक धागा बिछा रखा था। वह पैर में धागे को बाँधकर किताब पढ़ने में जुट जाता था। पिता के आगमन की सूचना देने के लिए जून धागे को खींचती थी, बालक एडमंड बत्ती बुझाकर किताब छिपा देता था और सोने का

नाटक करता था। इस तरह पिता एडमंड के कमरे में आकर उसे सोते हुए देखते थे और संतुष्ट होकर लौट जाते थे।

साहित्य के प्रति ऐसे लगाव के कारण ही एडमंड की कल्पनाशीलता का अत्यधिक विकास होता गया था। बाद के वर्षों में उन्होंने बचपन के दिनों को याद करते हुए बताया था कि किस तरह पढ़ने की आदत के चलते उनके मन में कल्पनाशीलता का विकास हुआ था।

''वह ऐसा समय था, जब कल्पनालोक में विचरण करते हुए मैं स्वयं को सर्वाधिक शक्तिशाली समझता था। मैं घंटों कल्पनालोक में विचरण करता रहता था। मेरा मन उड़ता फिरता था। मैं अपनी तलवार से खलनायकों को खत्म करने और राजकुमारियों को अपने कब्जे में लेने के सपने देखता था। मैं अपने आप की कल्पना एक नायक के रूप में करता था।''

नायकत्व के ऐसे सपनों के बावजूद वास्तविक जीवन में बालक एडमंड को साहसिक कारनामों के लिए अवसर नहीं मिल रहा था। 20 जुलाई, 1919 को जनमे एडमंड हिलेरी के बचपन का ज्यादातर समय न्यूजीलैंड के कस्बे टुआकाउ में गुजरा था। यह एक छोटा देहाती क्षेत्र है, जो ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी समुद्र-तट पर स्थित है।

उनकी माता गरट्रूड एक स्कूल अध्यापिका थीं। उनके पिता पर्सिपाल एक साप्ताहिक समाचार-पत्र के चीफ रिपोर्टर, टाइप सेटर, प्रबंध संपादक और वितरक की भूमिकाएँ एक साथ निभाते थे। हिलेरी परिवार के छोटे से फार्म में स्थित एक शेड में छापाखाना था, जहाँ समाचार-पत्र को मुद्रित किया जाता था।

हालाँकि एडमंड अपने छोटे भाई रेक्स के साथ खेलते थे, लेकिन अपनी उम्र के हिसाब से वे छोटे, संकोची और संवेदनशील नजर आते थे। यही वजह थी कि शिक्षक जिम ने एक बार उन्हें गौर से देखने के बाद मुँह बनाते हुए कहा था, ''कैसे मासूम बच्चे को सीखने के लिए मेरे पास भेज दिया गया है।''

इस तरह के उपेक्षापूर्ण बरताव से बालक एडमंड का आहत होना स्वाभाविक था। वर्षों बाद उन्होंने बताया, ''मैं एक शरमीला लड़का था और मेरे भीतर हीनता ग्रंथि थी, जो आज भी किसी-न-किसी रूप में मौजूद है।''

इसके बावजूद बालक एडमंड के व्यक्तित्व में दृढ़संकल्प का भाव था, जिसने बाद में उन्हें दुनिया की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट पर चढ़ने में सहायता की। एडमंड के पिता अनुशासन को पसंद करते थे और एडमंड ने उन्हें याद करते हुए बताया भी कि वे सख्त मिजाज के इनसान थे। वैसे उनके पिता बच्चों के साथ मिलकर खेलने की चीजें बनाने में दिलचस्पी लेते थे और रोचक कहानियाँ सुनाते थे, लेकिन गलती करने पर बच्चों को एक कोने में ले जाकर पिटाई करने से भी नहीं हिचकिचाते थे। बाद में

एडमंड ने उन दिनों को याद करते हुए बताया—

''मुझे हमेशा लगता था कि मेरे पिता दंड देते हुए मुझसे यह सुनना चाहते थे कि मैंने गलती की है। मगर मुझे अपने स्वभाव की इस दृढ़ता पर गर्व महसूस होता है कि भले ही मैं सही होता था या गलत, मगर कभी भी अपनी गलती मानने के लिए तैयार नहीं होता था। मुझे लगता है कि बाद के वर्षों के मेरे अभियानों के साथ भी ऐसी ही दृढ़ता जुड़ी रही है।''

एडमंड के इस नजरिए की पुष्टि करते हुए उनकी बहन ने कहा, ''पिताजी का विरोध करते हुए एडमंड के स्वभाव में दृढ़ता का काफी हद तक विकास होता गया।''

इसके बावजूद एडमंड अपने माता-पिता से बहुत प्यार करते थे। उन्होंने अपने माता-पिता को मजबूत चरित्र के गुणों से संपन्न बताया। 1930 के दशक में आर्थिक मंदी का दौर शुरू हो गया था और एडमंड के पिता को गरीबों की दुर्दशा देखकर काफी तकलीफ होती थी। उनकी माता अपने तीनों बच्चों से खाना बरबाद नहीं करने की हिदायत देती थीं— ''इस बात को याद रखो कि एशिया में लाखों लोगों को भुखमरी का सामना करना पड़ रहा है।'' बाद के वर्षों में एडमंड ने कहा कि उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि एवरेस्ट को फतह करना नहीं है, बल्कि नेपाल के शेरपा लोगों की भलाई के लिए किए गए कार्यों को वे अपनी सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानते हैं।

शायद यह भी एक वजह थी कि माता अध्यापिका थीं, इसलिए स्कूल में एडमंड पढ़ाई में आगे रहते थे। अपनी माँ की देखरेख में एडमंड तुआकाउ प्राइमरी स्कूल के सर्वश्रेष्ठ छात्र बन गए थे और कम समय में ही उन्होंने कई ग्रेडों को पार कर लिया था। ग्यारह साल की उम्र में एडमंड ने ऑकलैंड के एक प्रतिष्ठित ग्रामर स्कूल की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। ऑकलैंड के स्कूल में पढ़ने के लिए वे रोज रेलगाड़ी में सवार होकर जाने लगे थे। आते-जाते दो-दो घंटे का समय लगता था। इस समय का उपयोग वे रोजाना एक पुस्तक पढ़ने में किया करते थे।

ग्रामर स्कूल के शुरुआती कुछ वर्ष एडमंड के लिए संघर्षपूर्ण रहे थे। वे उस स्कूल में सबसे कम उम्र के छात्र थे और वहाँ पाठ्यक्रम टुआकाउ के स्कूल की तुलना में अत्यंत कठिन था। फ्रेंच विषय में वे कमजोर थे और कई बार उसकी पढ़ाई के लिए मशक्कत करते हुए उन्हें आखिरी रेलगाड़ी छोड़ देनी पड़ती थी। सामाजिक दृष्टि से वे अलग तरह के प्राणी थे। बाद में उन्होंने बताया था, ''मेरा कहीं कोई दोस्त नहीं था।''

लेकिन किताबों की दुनिया में गुम रहनेवाले बालक एडमंड के जीवन में भी बदलाव आता गया। उनका कद बढ़ता गया। हर साल उनका कद पाँच इंच बढ़ रहा था। जब वे लंबे और शक्तिशाली हो गए तो उनका आत्मविश्वास भी मजबूत होता गया। जब सोलह साल के हुए, तब उनके जीवन में नाटकीय रूप से सुखद मोड़ आया। उन्होंने अपने जीवन के सच्चे विषय को पा लिया, जो बाहर का जगत् था।

यह बदलाव उस समय आया, जब वे अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के साथ ऑकलैंड से दक्षिण दिशा में स्थित माउंट राउपेहू के भ्रमण के लिए गए। इस समय तक एडमंड सेहतमंद युवा नजर आने लगे थे। उस लिहाज से वे एक आदर्श एथलीट नहीं लगते थे, जो किसी भी खेल में हिस्सा ले सकता हो, जिसकी निगाहें पैनी हों और जो हाथों का दक्षतापूर्वक उपयोग कर सकता हो। लेकिन पहाड़ी मार्ग पर बढ़ते हुए उन्हें यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि अपने सहपाठियों की तुलना में उनके भीतर ऊपर चढ़ने की शक्ति ज्यादा थी। उसके बारे में उन्होंने बाद में बताया—

> ''यह पहला अवसर था, जब मैंने बर्फ को देखा था, चूँकि ऑकलैंड में हम बर्फ देख नहीं सकते थे। दस दिनों तक मैं पहाड़ियों पर चढ़ता रहा और घूमता रहा। यह मेरे लिए उस समय जीवन का सबसे रोमांचक अनुभव था और मुझे लग रहा था कि मेरे मन में पहाड़ों के प्रति गहरा आकर्षण पनप रहा है। मुझे बर्फ और पर्वत चोटियों से प्रेम हो गया था। असल में यह मेरे जीवन का पहला वास्तविक एडवेंचर था।''

घर लौटकर एडमंड ने अपने माता-पिता और भाई-बहनों के सामने उत्साह के साथ माउंट राउपेहू भ्रमण का वर्णन किया। उन्होंने रोमांचक अनुभव विस्तारपूर्वक सुनाया। अपने जीवन का नया प्यार पा लेने के बाद एडमंड नए नायकों के साहसिक कारनामों में रुचि लेना शुरू कर दिया, जैसे अर्नेस्ट शैकलेटोन उन्हें लुभाने लगे, जिन्होंने अंटार्कटिका की खोज की थी और ध्रुवीय बर्फीली चट्टान से अपने जहाज 'इंडपोरेंस' के टकराने के बाद अपने बीस सहयोगियों को सुरक्षित लाने में सफल रहे थे।

एडमंड शैकलेटोन के बारे में कहते थे, ''वह जब भी प्रतिकूल परिस्थितियों में फँस जाते थे, जैसा कि वह अकसर फँसते थे, उस समय अपने साथियों को प्रेरित करने और संकट से सुरक्षित उबरने की उनमें विलक्षण विशेषता थी।''

नेतृत्व के ये ऐसे गुण थे, जिन्हें एडमंड स्वयं जीवन में बाद के वर्षों में अपनाने वाले थे। लेकिन हाईस्कूल में उनके व्यक्तित्व की खूबी अभी भी उभरकर सामने नहीं आ रही थी। शारीरिक विकास के चलते वे अपने सहपाठियों की तुलना में अधिक तगड़े नजर आने लगे थे, इसीलिए उन्हें स्कूल की आर्मी बटालियन के एक नंबर प्लाटून का सार्जेंट बना दिया गया था। लेकिन साथियों के साथ अभ्यास करते समय कई बार उन्हें घबराहट महसूस होती थी और वैसी स्थिति में वे गलत निर्देश दे बैठते थे। वैसे उनके

मातहत 'सिपाही' समझदार थे, जो उनके गलत निर्देश की ओर ध्यान न देकर सही दिशा में परेड को जारी रखते थे। बाद में एडमंड ने इस अनुभव के बारे में बताया था—

> ''कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो जन्मजात लीडर होते हैं, जो तेजी से सोच सकते हैं और सही घड़ी में, सही निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि मेरे जैसे लोग भी होते हैं, जिन्हें लीडर बनने के गुणों को आत्मसात् करना पड़ता है और यह मेरा पक्का विश्वास है कि ज्यादातर लोग प्रयास के जरिए सक्षम लीडर बन सकते हैं।''

एडमंड हिलेरी आर्कटिक खोजी अभियान के महान् युग में पैदा हुए थे। 1909 में काफी प्रयत्नों के बाद रॉबर्ट ई. पेरी उत्तरी ध्रुव तक पहुँचने में सफल हुए थे। 1911 में नॉर्वे के रोआल्ड एमुंडसन अपने चार साथियों के साथ दक्षिणी ध्रुव तक पहुँचने में सफल हो गए थे। आठ वर्षों के बाद 28 लोगों के दल के साथ अर्नेस्ट शैकलेटोन ने दक्षिणी ध्रुव तक पहुँचने में कामयाबी हासिल कर ली थी। एडमंड के दिलो-दिमाग पर एक ऐसे युग का स्वाभाविक रूप में गहरा प्रभाव पड़ा था।

स्कूल के अनुभवों से सीखते हुए एडमंड अपने व्यक्तित्व में नेतृत्व के गुणों को विकसित करने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन अभी भी वह समय नहीं आया था, जब वे अपने इन गुणों को कसौटी पर कस सकते थे। ऑकलैंड ग्रामर स्कूल से एडमंड ने जब ग्रेजुएट की पढ़ाई पूरी कर ली, तो वे स्विस आल्प्स या आर्कटिक के अभियान के लिए नहीं निकल पड़े। माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हुए उन्होंने एक विश्वविद्यालय में आगे की पढ़ाई जारी रखने के लिए दाखिला ले लिया।

□

युवा पर्वतारोही

प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद एडमंड को अनिश्चित भविष्य का सामना करना पड़ा। जैसा कि उन्होंने अपनी पुस्तक 'हाई एडवेंचर' में लिखा है, ''विश्वविद्यालय में मेरे दो वर्ष गुजारने के बाद मेरे माता-पिता इस नतीजे पर पहुँच गए कि मेरे लिए उच्च शिक्षा हासिल कर पाना संभव नहीं था।''

मेधावी और जिज्ञासु युवा होने के बावजूद भविष्य के अन्वेषक एडमंड जीवन के उस मुकाम पर अत्यंत बेचैन थे और उनके लिए ज्यामिति जैसे विषयों पर दिए गए अध्यापकों के व्याख्यानों को एकाग्रता के साथ सुनने का धैर्य नहीं था। कुछ साल पहले एडमंड के पिता ने 'टुआकाउ डिस्ट्रिक्ट न्यूज' की नौकरी छोड़ दी थी और पूरी तरह मधुमक्खी पालन करने में जुट गए थे। ज्यादा-से-ज्यादा समय प्रकृति के बीच गुजारने के उद्देश्य से एडमंड ने भी पिता के इस कार्य से जुड़ने का फैसला किया। यह अत्यंत ही कठिन और थका देनेवाला काम था। जैसा कि एडमंड ने इसके बारे में लिखा है—''इसके लिए जहाँ प्रतिकूल मौसम से लगातार लड़ना पड़ता था, वहीं जब 1600 मधुमक्खियाँ एक साथ उड़ना शुरू कर देती थीं तो दिमाग गरम हो जाता था।''

इसके बावजूद मधुमक्खी पालन करने के दौरान एडमंड को फुरसत की घड़ियाँ मिल जाती थीं। अपने परिवार के फार्म के चारों तरफ स्थित पहाड़ियों पर वे घूमते-फिरते थे।

1939 में न्यूजीलैंड द्वितीय विश्वयुद्ध में शामिल हो गया। उस समय एडमंड ने वायुसेना में शामिल होने का मन बना लिया था। हालाँकि बाद में उन्होंने मधुमक्खी पालन का अपना काम ही जारी रखने का फैसला किया। एडमंड की आंतरिक बेचैनी दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। निश्चित अवधि तक कठोर मेहनत करने के बाद एडमंड ने अपने पिता से छुट्टियाँ मनाने के लिए जाने की अनुमति ले ली थी।

घूमते हुए एडमंड न्यूजीलैंड के दक्षिणी आल्प्स क्षेत्र में स्थित मशहूर पर्यटन रिसॉर्ट 'द हर्मिटोज' पहुँच गए थे। एडमंड अपने साथी ब्रायन के साथ कार में सवार होकर जब पहाड़ियों की दिशा में आगे बढ़ रहे थे, तब पहाड़ियों का नजारा देखकर एडमंड काफी रोमांचित हो उठे थे। वहाँ पहुँचने के बाद एडमंड पर्वत शिखर पर बर्फ देखने के लिए ऊपर चढ़ने लगे थे। उन्होंने जितनी दूरी का अंदाजा लगाया था, असल में पर्वत शिखर की दूरी उससे भी अधिक थी। हलके जूते पहनकर चढ़ाई करने में भले ही उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था, मगर उन्होंने तब तक चढ़ना जारी रखा, जब तक कि शिखर के करीब नहीं पहुँच गए।

द हर्मिटेज की लॉबी में शाम के वक्त एडमंड पर्वतारोहण के अपने अनुभव को याद कर खुद को रोमांचित महसूस कर रहे थे। अचानक दो व्यक्तियों ने प्रवेश किया। कमरे में खामोशी फैल गई। एडमंड ने एक व्यक्ति को कहते हुए सुना, ''जब हम लोग आइस कैंप के पास पहुँचे तो मैं बुरी तरह थक गया था, मगर हैरी शेर की तरह चढ़ रहा था और वह मुझे घसीटकर चोटी तक लेकर गया।''

वर्षों बाद एडमंड को पता चला कि वे दोनों व्यक्ति हैरी स्टीवनसन और डॉग डिक, न्यूजीलैंड के मशहूर पर्वतारोही थे। उस दिन कमरे के एक कोने में खड़े एडमंड को यह सोचकर ईर्ष्या हुई थी कि उन्हें उस रोमांच से वंचित होना पड़ा था, जिसका आनंद दोनों पर्वतारोही उठा रहे थे। उसी समय एडमंड ने एक सहज-सरल, मगर जीवन की दिशा बदलनेवाला संकल्प लिया—वह पर्वतारोहण करते रहेंगे।

अगले दिन एडमंड अपने साथी के साथ माउंट ओलीवियर पर चढ़ने के लिए रवाना हो गए। उनका मार्गदर्शक, जो एक तोंदवाला अधेड़ व्यक्ति था, काफी धीमी गति से चढ़ाई कर रहा था। इस बात से असंतुष्ट होकर एडमंड स्वयं अपनी दिशा का निर्धारण करते हुए तेज गति से आगे चढ़ते गए थे। हवा के झोंकों का आनंद उठाते हुए एडमंड उन्मुक्तता का एहसास कर रहे थे।

हलका भोजन और पर्वतीय झील के ठंडे पानी में तैराकी करने के बाद उन्होंने तेजी से चढ़ाई शुरू कर दी थी। वे आसानी से बर्फ से ढकी चट्टानों पर चढ़ते जा रहे थे। शिखर करीब आने पर एक बार फिर एडमंड ने मार्गदर्शक की नसीहतों की तरफ ध्यान नहीं दिया और तेजी से शिखर पर पहुँच गए। जीवन में पहली बार वे किसी पर्वत

शिखर पर पहुँचे थे। इसके बाद भी उन्होंने कई बार अनूठे अंदाज में पर्वत शिखरों का सफर तय किया।

''अगले दिन मैं लौट आया,'' एडमंड ने लिखा है, ''मगर पर्वतों के प्रति मेरा प्यार मेरे साथ-साथ घर तक गया और फिर आनेवाले वर्षों में इसने मुझे जरा भी चैन से नहीं रहने दिया।''

पर्वतारोहण के प्रति दिनो दिन एडमंड की दीवानगी बढ़ती गई और प्रेरणा प्राप्त करने के लिए वह नए-नए नायकों की तलाश करने लगे। ऐसे ही एक नायक फ्रैंक स्मिथ थे, जो एवरेस्ट की उत्तरी दिशा में 28,000 फीट (8540 मीटर) की चढ़ाई कर चुके थे। दूसरे नायक ब्रिटिश पर्वतारोही एटीक शिपटोन थे, जो हिमालय की संभावनाओं की खोज करनेवाले पहले व्यक्ति थे।

एडमंड को नया कॅरिअर भी मिल गया। 1942 में तेईस साल की उम्र में एडमंड सेना में शामिल हो गए और न्यूजीलैंड वायु सेना में नौ निर्देशक के पद पर काम करने लगे। सेना की कठिन जीवनशैली उन्हें पसंद आ रही थी। फीजी और प्रशांत महासागर के सोलोमोन द्वीप पर रहते समय एडमंड को पहाड़ों पर चढ़ने, मछली पकड़ने और नई जगहों को देखने में आनंद आता था। एडमंड घड़ियाल के दक्ष शिकारी भी बन गए और एक बार उन्होंने 8 फीट (2.4 मीटर) लंबे घड़ियाल का शिकार किया।

जब 1945 में युद्ध समाप्त हो गया, तब एडमंड नए साहसिक अभियान शुरू करने के बारे में विचार करने लगे थे। एक साहसिक अभियान उनके लिए जोखिम भरा साबित हुआ। वे अपने मित्र के साथ मोटर-बोट की मरम्मत कर जब समुद्र में यात्रा कर रहे थे, तब उसका गैस-टैंक टूट गया और इंजन में जबरदस्त आग लग गई। बोट से पानी में छलाँग लगाने की कोशिश करते हुए एडमंड आग की लपटों की चपेट में आ

गए। किसी तरह एडमंड जख्मी हालत में अपने साथी के साथ 500 यार्ड की दूरी तक तैरते हुए किनारे तक पहुँचने में सफल हो गए। दो अमेरिकी नाविकों ने उन्हें तुरंत नौसेना के अस्पताल में पहुँचा दिया। जैसे ही एडमंड के घाव ठीक हुए, उन्होंने पर्वतारोहण का कौशल सीखने पर ध्यान केंद्रित कर दिया। अब तक वह कई छोटी-बड़ी पर्वत चोटियों तक चढ़ाई कर चुके थे, मगर उन्हें पर्वतारोहण की तकनीकी बारीकियों का पर्याप्त ज्ञान अभी भी प्राप्त नहीं हुआ था।

वर्ष 1947 में एडमंड का परिचय न्यूजीलैंड के मशहूर पर्वतारोही हैरी एपर्स से हुआ। अगले तीन सालों तक हैरी ने एडमंड को बर्फीले पहाड़ों पर चढ़ने के संबंध में तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया और फिर 1950 में एक पर्वतारोही मित्र जॉर्ज लोए ने एडमंड के दिल में वर्षों से पल रहे एक सपने को जगा दिया। एक दिन न्यूजीलैंड के एक ग्लेशियर पर चढ़ते हुए जॉर्ज ने अचानक कहा, ''एडमंड, क्या तुमने कभी हिमालय पर चढ़ाई करने के बारे में सोचा है?'' एडमंड को ऐसा लगा मानो किसी ने उनके दिल में झाँककर देख लिया हो। हिमालय पर चढ़ने का सपना उनके भीतर पनपने लगा था।

कुछ दिनों के बाद एडमंड को जॉर्ज लोए का पत्र मिला, जिसमें बताया गया था कि अर्लरिडीफोर्ड हिमालय अभियान की तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने एडमंड और जॉर्ज को साथ चलने के लिए बुलावा भेजा था।

लाल फीताशाही से काफी जूझते रहने के बाद 1951 के आरंभ में अर्ल रिडीफोर्ड को उत्तर-पश्चिम भारत में हिमालय के गढ़वाल क्षेत्र में न्यूजीलैंड का अभियान शुरू करने की इजाजत मिल गई थी। कलकत्ता के हिमालय क्लब ने उन्हें दो चोटियों पर चढ़ाई करने की सलाह दी थी, जिन पर अभी तक कोई पर्वतारोही दल नहीं पहुँचा था। उन चोटियों के नाम थे—नीलकंठ (6595 मीटर, 21640 फीट) और मुकुट पर्वत (7240 मीटर, 23,760 फीट)। इस अभियान के लिए बड़े पैमाने पर तैयारी करने की जरूरत थी। एडमंड रिडीफोर्ड के धैर्य को देखकर दंग रह गए थे।

''कई बार ऐसा लगता था कि यह अभियान कभी साकार नहीं हो सकता था, मगर रिडीफोर्ड किसी भी हालत में हौसला नहीं छोड़ते थे। उनके भीतर असीम जोश भरा हुआ था और उनमें संगठन की असाधारण क्षमता थी।''

टीम में चार पर्वतारोही थे और उन्होंने एक अनुभवी पर्वतारोही बिल बीवेन के साथ परीक्षण के तौर पर चढ़ाई का अभ्यास करने का फैसला किया। वे टासमान ग्लेशियर के कठिन मैक्सीमिलियन मेंड़ से होकर माउंट ऐली डे बेमाउंट तक चढ़ाई करना चाहते थे।

उस अनुभव को याद करते हुए एडमंड ने लिखा है—''ऊचाई और तंग दर्रों से गुजरते हुए हमें सत्तर पाउंड से ज्यादा सामग्री पीछे छोड़ देनी पड़ी, उत्तर-पश्चिमी आँधी

का सामना करना पड़ा और हमने बरतन ग्लेशियर पर बेस कैंप बनाया। मुझे दूसरे पर्वतारोहियों से काफी कुछ सीखने का अवसर मिला। एड कॉटर जहाँ विनोदी स्वभाव के थे, वहीं जॉर्ज में गजब का साहस था। अर्ल सूझबूझ के साथ हर कदम उठाना पसंद करते थे। एक दिन हम लोग मैसीमिलियन मेंड़ पर चढ़कर चोटी तक पहुँचने में सफल हो गए, जॉर्ज के साथ मैं पहली बार इतने ऊँचे शिखर पर पहुँचा था। चढ़ाई के दौरान जॉर्ज हमेशा शांत और संयत बने रहे थे।''

जिस दिन वे लोग चोटी पर पहुँचनेवाले थे, उसी दिन बिल बीवेन की तबीयत बिगड़ गई थी और उन्हें रुकना पड़ा था। 3 मई, 1951 को यह दल सैर-सपाटे के लिए सिडनी रवाना हो गया था। न्यूजीलैंड का हिमालय अभियान शुरू करने का वक्त आ गया था। मई महीने की तेज गरमी में उन्होंने रेलगाड़ी का सफर किया, वहीं अपना सारा सामान बस में लादकर पहुँचाया था। आखिरकार वे लोग 2000 मीटर की ऊँचाई पर स्थित प्रसिद्ध हिल स्टेशन रानीखेत पहुँच गए थे।

''हम लोग पाइन पेड़ों के जंगल से होकर मेंड़ की तरफ बढ़ रहे थे, जहाँ कई पर्वत थे—नंदा देवी, त्रिशूल और दूसरे कई पर्वत। हमारे मन में असीम जोश भरा हुआ था''पहली बार हिमालय का दर्शन कर मैं भावुक हो उठा था और मंत्रमुग्ध होकर चोटियों को निहारता रहा था।''

यह एक अविस्मरणीय अनुभव था। एटीक शिप्टन का कहना था कि किसी भी चढ़ाई से पहले पर्वतारोही के मन में पर्वत को लेकर प्रभावशाली छवि होनी चाहिए।

यहाँ उनकी मुलाकात शेरपा पासंग दावा लामा, थोनदुप, नीमा और तेनजिंग से पहली बार हुई और जल्द ही एक टीम का गठन कर लिया गया। बारह हफ्ते बाद एडमंड लोए रिडीफोर्ड और कॉटर पहाड़ से उतरते हुए रानीखेत तक वापस लौट आए थे। वे थके हुए थे और उनके कपड़े मैले हो चुके थे। इसके बावजूद वे स्वस्थ और संतुष्ट थे। उन्होंने शेरपाओं और पोर्टरों के साथ पर्वतारोहण की चुनौती का सामना करना सीख लिया था। ज्यादा ऊँचाई पर खुद को संतुलित रखने की विधियों का उन्होंने विकास किया था। इस दौरान 6000 मीटर तक की ऊँचाईवाली चोटियों तक पहुँचने में वे सफल हुए थे।

भीषण ठंड और कम रोशनी से जूझते हुए रिडीफोर्ड और कॉटर पहले से निर्धारित चोटी मुकुट पर्वत तक पहुँचने में सफल हुए थे। एडमंड और जॉर्ज के पैर बर्फ में जमने लगे थे और वे आगे नहीं बढ़ पाए थे। मौसम बिगड़ने के कारण उन्हें वापस लौटना पड़ा था। रिडीफोर्ड की तबीयत भी ठीक नहीं थी, मगर उनकी उपलब्धि ने साबित कर दिखाया था कि दृढ़ इच्छाशक्ति की मदद से शारीरिक कमजोरियों पर विजय पाई जा सकती है। एडमंड ने इस अभियान से काफी अनुभव प्राप्त किया था।

रानीखेत वापस लौटने पर पत्रों के ढेर में एक टेलीग्राम उनका इंतजार कर रहा था।

यह टेलीग्राम न्यूजीलैंड के गढ़वाल अभियान दल के नाम भेजा गया था। रोमांचक बात यह थी कि इसे इरीक शिप्टन ने भेजा था। शिप्टन तीन ब्रिटिश पर्वतारोहियों के साथ माउंट एवरेस्ट पर दक्षिण दिशा से चढ़ाई शुरू करनेवाले थे, उन्होंने लिखा था—

''आपमें से कोई भी दो व्यक्ति हमारे साथ चल सकते हैं। आपको स्वयं अनुमति लेनी होगी, अपने भोजन का प्रबंध करना होगा और हमारे पास स्वयं ही पहुँचना होगा।''

टेलीग्राम के प्रभाव का वर्णन करते हुए जॉर्ज लोए ने लिखा है—''हमें ऐसा लगा, मानो पर्वतारोहण के देवता ने हमें टेलीग्राम भेज दिया था।''

असल में न्यूजीलैंड अल्पाइन क्लब ने न्यूजीलैंड के प्राणि विज्ञान शास्त्री स्कॉट रसेल को इससे पहले एक टेलीग्राम भेजा था। रसेल पहले शिप्टन के साथ पर्वतारोहण कर चुके थे और ब्रिटिश हिमालयन कमेटी के सदस्य थे। एडमंड के पुराने मित्र रोलेंड एलीस के सुझाव पर क्लब के अध्यक्ष हैरी स्टीवंसन ने तार में लिखा था—''वर्तमान समय में गढ़वाल अभियान पर निकले न्यूजीलैंड के एक या उससे अधिक पर्वतारोहियों को अगले एवरेस्ट अभियान में शामिल करने पर विचार किया जाए, चूँकि वे लोग अत्यंत दक्ष पर्वतारोही हैं और अपने अनुभव के कारण उपयोगी साबित हो सकते हैं।''

कुछ सप्ताह पहले एडमंड ने भी इसी आशय का संदेश स्कॉट रसेल के पास उस समय भेजा था, जब किसी मित्र ने उन्हें शिप्टन की योजना के संबंध में अखबारी कतरन भेजी थी। इरीक शिप्टन ने बाद में कहा था कि अगर वे चारों पर्वतारोहियों को साथ ले जा सकते थे, तो उन्हें बेहद खुशी होती। लेकिन उनके संदेश ने दल के राहत भरे और सकारात्मक मिजाज को प्रभावित कर दिया था।

एडमंड सबके लिए स्वाभाविक पसंद थे, चूँकि वे सेहतमंद थे और हर परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार थे। वहीं एड कॉटर ने अभियान पर जाने से मना कर दिया। हालाँकि वे भी पूरी तरह चुस्त-दुरुस्त थे, मगर वे अधिक दिनों तक न्यूजीलैंड से दूर नहीं रहना चाहते थे। जॉर्ज लोए के मन में अर्ल रिडीफोर्ड की तुलना में ज्यादा जोश था, मगर रिडीफोर्ड आक्रामक पर्वतारोही थे। वे मुकुट पर्वत की चढ़ाई कर चुके थे। उन्होंने अभियान की सारी रूपरेखा बनाई थी और उनके पास पर्याप्त धन भी था। अंत में एडमंड और रिडीफोर्ड के नामों पर ही सहमति बनी। मगर इस तरह के चयन की नौबत आने से चारों प्रभावित हुए थे। बाद में एडमंड ने लिखा—''मुझे आज भी जॉर्ज के चेहरे पर शिकायत का वह भाव याद है, जो मैंने बस से रवाना होते समय उनके चेहरे पर देखा था।''

लोए ने स्वयं लिखा है—''एड कॉटर के साथ मैं ईर्ष्या, निराशा और व्यथा को महसूस कर रहा था। हम लोग मन मसोसकर न्यूजीलैंड वापस लौट आए थे।'' एडमंड के जीवन में होड़ में आगे बढ़ने का सिलसिला शुरू हो चुका था।

सन् 1951 के एवरेस्ट अभियान का सुझाव लंदन में हिमालय कमेटी को एक युवा ब्रिटिश पर्वतारोही एवं डॉक्टर माइकल वार्ड ने दिया था। यह मानसून के बाद का समय था और सीधे एवरेस्ट तक पहुँचने की योजना नहीं बनाई गई थी। शुरू में विचार किया गया था कि नेपाल की दक्षिणी दिशा से चोटी तक पहुँचने के लिए मार्ग की पड़ताल की जाए, चूँकि तिब्बत के रास्ते उत्तरी दिशा से शुरू किए गए कई अभियान असफल साबित हो चुके थे। इस दल के लिए शिप्टन, वार्ड, स्कॉटिश पर्वतारोही विल मूरे और टॉम बार्डिलन को चुना गया था। बार्डिलन लंबे कद के ताकतवर पर्वतारोही थे।

एडमंड और अर्ल रिडीफोर्ड बस में चढ़कर हिमालय की तरफ रवाना हुए थे। उन्होंने लखनऊ में यात्रा के लिए जरूरी सामान जुटाए थे और भारत–नेपाल सीमा पर जोगबनी पहुँचने के लिए किसी तरह ट्रेन पकड़ पाए थे।

''हम लोग दूसरी श्रेणी के एक डिब्बे में किसी तरह सवार हो गए थे, जिसमें दो भारतीय यात्री बदले में मौजूद थे। जब हमने टेंट, बैग, खाने के बक्से, किरासन के पीपे और अभियान के लिए आवश्यक सामग्री को डिब्बे में रखना शुरू किया तो दोनों यात्री घबरा उठे। हमने कुलियों की तरफ जल्दबाजी में पैसे फेंके और ट्रेन के झटके से हम लोग फर्श पर गिर पड़े।''

जब वे जोगबनी पहुँचे तो उन्होंने पाया कि शिप्टन पहले ही जा चुके थे। उन्होंने अपने पोर्टरों के साथ तेजी से उत्तर की तरफ बढ़ना शुरू किया। रास्ते में उन्हें बाढ़ से उफनती हुई नदियों को पार करना पड़ा। सारी कठिनाइयों से जूझते हुए वे 8 सितंबर को डिंगला गाँव पहुँच गए।

एरीक शिप्टन से मिलते समय एडमंड ने घबराहट महसूस की थी, चूँकि नायकों से

मिलना हमेशा घबराहट भरा अनुभव ही होता है। मगर शिप्टन के सहज व्यवहार को देखकर जल्द ही उनकी घबराहट दूर हो गई। ब्रिटिश नजरिए से वार्ड ने एडमंड और रिडीफोर्ड से पहली मुलाकात का वर्णन करते हुए लिखा था—''उनके सिर पर फ्लैपवाली सनहैट थी और पुराने जमाने की बर्फ काटनेवाली कुल्हाड़ी। उनका शरीर तगड़ा था, मगर कपड़ों में पैबंद लगे हुए थे। वे जिस तरह आसानी से पहाड़ पर चढ़ जाते थे और भात के साथ हरी सब्जियाँ चाव से खा लेते थे, उससे स्पष्ट था कि वे हिमालय क्षेत्र में सफर करने के लिए अभ्यस्त हो चुके थे।''

अभियान खत्म होने के बाद लंदन के अल्पाइन क्लब के मानद कोषाध्यक्ष ने एडमंड और रिडीफोर्ड को भोजन की मद में बढ़े हुए खर्च का भुगतान करने से इनकार कर दिया था, जिसमें सड़क किनारे चाय की दुकानों में अनगिनत प्याली चाय पीने का ब्योरा दर्ज था। कोषाध्यक्ष ने टिप्पणी की थी, ''जो जेंटलमैन होते हैं, वे अपनी चाय की प्याली का खर्च खुद उठाते हैं।'' इसका जवाब देते हुए उन्होंने कहा था, ''हम जेंटलमैन नहीं हैं, हम तो न्यूजीलैंड के रहनेवाले हैं।''

अभियान दल के सरदार आंग थारके और दूसरे शेरपाओं के बीच उस समय उत्साह नजर आने लगा, जब वे अपनी बस्तियों के करीब पहुँचने लगे। 22 सितंबर की दोपहर वे लोग नामचे बाजार (3440 मीटर, 12,200 फीट) पहुँचे। खुंबू क्षेत्र के पहाड़ों पर स्थित नामचे बाजार शेरपा गाँवों के लिए प्रमुख बाजार था।

उसके ऊपर दूध कोशी घाटी में चारों तरफ बर्फीली चोटियों से घिरा हुआ टेंगवोचे बौद्ध मठ है, जो शेरपा लोगों का प्रमुख आध्यात्मिक केंद्र है।

शिप्टन इस इलाके का दौरा करने के बारे में बीस साल से भी अधिक समय से सोचते रहे थे। ''यह एक प्रकार का मक्का (पवित्र स्थल) था, जो हिमालय अभियान का प्रमुख लक्ष्य था।''

एडमंड को ऐसा लगा मानो वह स्वर्ग में पहुँच गए हैं। पर्वत शिखरों को देखकर उन्हें यकीन नहीं हुआ कि कभी उनके ऊपर चढ़ पाना संभव हो सकेगा। वहीं टेंबगोचे मठ को देखकर उन्हें शांति और सुकून का भाव महसूस हुआ। अभियान दल की शेरपा लोगों ने अच्छी तरह आवभगत की। दल के सदस्यों ने अपने आपको खुशकिस्मत समझा कि सोलू खुंबू तक पहुँचनेवाले वे प्रथम यूरोपीय यात्रियों में से एक थे। उनका बेस कैंप खुंबू हिमप्रपात की सीमा से 600 मीटर (2000 फीट) नीचे था। शिप्टन ने जिसके बारे में लिखा है—''चारों तरफ बर्फ की दीवारें और मीनारें दिखाई दे रही थीं।''

दल के दूसरे सदस्य जब हिमप्रपात के निचले हिस्से का मुआयना करने के लिए चले गए, तब एडमंड और शिप्टन पास की पुमोरी चोटी के मेंड़ पर चढ़ गए। वहाँ से उन्होंने देखा कि पश्चिमी कूम के ग्लेशियर से एवरेस्ट के दक्षिणी कोल तक एक मार्ग

था। यह देखकर दोनों ही रोमांचित हो उठे थे। दो ऐसे व्यक्ति, जिनके नामों को इतिहास उस पर्वत के नाम के साथ सदा के लिए याद रखनेवाला था, एक साथ खड़े होकर उस मार्ग को देख रहे थे, जो शिखर पर ले जा सकता था।

मगर आगे बढ़ने के लिए सबसे पहले हिमप्रपात को पार करना जरूरी था, जो आसान काम नहीं था। दल के सदस्य हिमप्रपात के ऊपर तक पहुँच गए थे। हालाँकि कूम तक पहुँचने के रास्ते में कई बाधाएँ थीं, मगर उन्हें यकीन था कि उन बाधाओं को दूर किया जा सकता है। सबसे बड़ी समस्या सामान लादनेवाले शेरपाओं की सुरक्षा को लेकर थी। चारों तरफ बर्फ की अस्थिर मीनारें थीं।

बेस कैंप में लौटकर उन्होंने आगे की यात्रा के बारे में गहराई के साथ विचार-विमर्श किया। फिर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि समाधान ढूँढ़ने की कोशिश की जा सकती है। अभियान दल के सदस्यों ने अगले वर्ष 1952 में वहाँ लौटने का फैसला किया। हिमप्रपात से निपटने की रणनीति तय करते हुए अभियान दल दो भागों में बँटकर इलाके का जायजा लेने लगा। शिप्टन ने एडमंड को एवरेस्ट के दक्षिण-पूर्वी किनारे का मुआयना करने के लिए एक पखवाड़े की चढ़ाई के लिए आमंत्रित किया।

शिप्टन के व्यक्तित्व का एडमंड के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। एडमंड ने लिखा है—''वह किसी भी परिस्थिति में शांत और संयत बने रह सकते थे। उनके मन में सदैव जिज्ञासा बनी रहती थी कि परवर्ती पहाड़ कैसा होगा। और उनके भीतर सबसे बड़ी शक्ति यह थी कि वे पहाड़ की असुविधा, पीड़ा और प्रतिकूलता को महान् साहसिक अभियान में रूपांतरित कर सकते थे।''

ये ऐसी खूबियाँ थीं, जो जीवन में बाद के वर्षों में एडमंड के व्यक्तित्व में भी देखी गईं। एडमंड और रिडिफोर्ड को न्यूजीलैंड वापस पहुँचना था, दोनों पूर्व निर्धारित समय-सीमा से ज्यादा दिनों तक स्वदेश से बाहर रहे थे, इसीलिए दोनों सबको पीछे छोड़ते हुए तेजी से रवाना हो गए थे। वे एक दुर्गम दर्रे को पार करते हुए 17 नवंबर को काठमांडू पहुँचे। ब्रिटिश दूतावास में भले ही उनकी अच्छी तरह खातिरदारी की गई, मगर एक समाचार को सुनकर वे चिंतित हो उठे—स्विस पर्वतारोही दल को अगले वर्ष एवरेस्ट अभियान शुरू करने की इजाजत दी गई थी। ऐसा होने पर उनकी उम्मीदों पर पानी फिर सकता था।

लंदन में स्थित हिमालयन कमेटी इतनी जल्दी हिम्मत हारने के लिए तैयार नहीं थी। कमेटी ने 1953 में अभियान शुरू करने के लिए आवेदन किया और 1952 में एवरेस्ट से बत्तीस किलोमीटर दूर चो यू पर्वत शिखर (8190 मीटर, 26,870 फीट) की चढ़ाई करने की तैयारी शुरू कर दी।

कमेटी का मानना था कि अगर स्विस दल नाकाम हो जाता है तो ब्रिटिश दल के

पास पर्याप्त अनुभव होगा, जिसके सहारे एवरेस्ट अभियान को आगे बढ़ाया जा सकेगा। इसके साथ ही ऑक्सीजन उपकरण का सटीक परीक्षण भी किया जा सकेगा, जिसकी जरूरत ऊँचाई पर चढ़ने के लिए महसूस की जा रही थी।

एक बार फिर शिप्टन को नेता बनाया गया। एडमंड और अर्ल रिडीफोर्ड ने अपनी मेहनत, लगन, मानसिक एवं शारीरिक शक्ति, मार्ग की तलाश करते समय भारी सामान लादने की क्षमता के जरिए माइकल वार्ड को काफी प्रभावित किया था। वार्ड को लगता था कि न्यूजीलैंड के पर्वतारोही अन्य देशों के पर्वतारोहियों की तुलना में खास किस्म की शैली का इस्तेमाल करते हैं। शिप्टन भी माइकल वार्ड के इस विचार से सहमत थे। वह चो यू पर्वत के अभियान के लिए न्यूजीलैंड के एक तीसरे पर्वतारोही को भी अपने दल में शामिल करने के लिए तैयार हो गए थे।

एडमंड को इस बात से काफी खुशी हुई थी और उन्होंने हर्मिटेज में मौजूद जॉर्ज लोए को तार भेजकर संदेश दिया—''हिमालय यात्रा के लिए आ जाइए।'' असल में उन्हें चो यू चोटी पर पहुँचने में सफलता नहीं मिल पाई। अभियान को उस समय बीच में रोकना पड़ा, जब शिप्टन और बार्डिलोन ने चीन के कब्जेवाले तिब्बत से होकर आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। दल के सदस्य लौटकर नामचे बाजार पहुँच गए, जहाँ सभी सदस्यों को एकत्र होना था। पीठ पर चोट लगने के कारण अर्ल रिडीफोर्ड पहले ही नीचे उतर आए थे। वार्डिलोन, अलफेह ग्रेगरी, चार्ल्स इक्कीसवाँ और मनोवैज्ञानिक ग्रिफिथ पुघ तीन दलों में बँटकर चढ़ाई करते रहे थे और ऑक्सीजन उपकरण का परीक्षण करते रहे थे।

एडमंड और जॉर्ज ने इस दौरान सात चोटियों में गुजरते हुए 6000 मीटर की चढ़ाई की थी। उन्होंने तिब्बत में नूप ला दर्दे को पार किया था। एडमंड और जॉर्ज नामचे बाजार लौटकर आए, जहाँ उन्हें पता चला कि स्विस दल को एवरेस्ट तक पहुँचने में सफलता नहीं मिली है, मगर स्विस दल अगले साल फिर अभियान शुरू करने का इरादा रखता है।

□

सबसे ऊँचा शिखर

एडमंड ने लिखा है—''हम लोग 10 मार्च को काठमांडू के निचले हिस्से की तरफ रवाना हो गए। सत्रह दिनों तक हम लोग पहाड़ी पर चढ़ते-उतरते रहे और अनुकूल मौसम में नेपाल के ग्रामीण इलाकों की शोभा को निहारते रहे। हमने कई नदियों को तैरकर पार किया, कई तरह के व्यंजनों का लुत्फ उठाया और खुले आसमान के नीचे रातें गुजारीं। जब हम लोग थ्यांगबोचे मठ तक पहुँचे, तब तक हम लोग काफी बेतकल्लुफ हो चुके थे और हमेशा की तरह खुश थे। एक बार फिर ऊँचाई पर एवरेस्ट का नजारा देखना हमारे लिए रोमांचक अनुभव था और हम वहाँ पहुँचने के लिए बेताब हो उठे थे।''

न्यूजीलैंड लौटने के बाद जहाँ एडमंड टेक्स के साथ मधुमक्खी पालन करने में जुट गए थे, वहीं जॉर्ज हॉक्स बे में अध्यापन का आखिरी सत्र पूरा करने में जुट गए थे। उनके जेहन में हमेशा हिमालय कौंधता रहता था और अपनी बातचीत में वे अकसर एवरेस्ट का जिक्र किया करते थे।

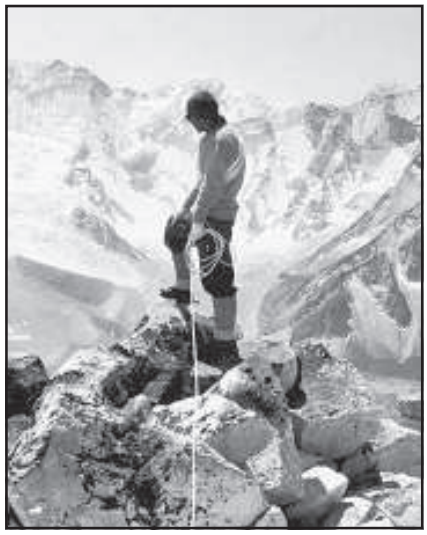

भले ही चो यू शिखर का अभियान कामयाब नहीं हुआ था, मगर एडमंड और जॉर्ज को पक्का विश्वास था कि 1953 के एवरेस्ट अभियान के लिए उन्हें जरूर चुना जाएगा। उन्होंने ऊँचाई पर दृढ़ता का परिचय दिया था और संकट की घड़ियों में भी उन्होंने अपने आत्मविश्वास को बनाए रखा था। उसकी दक्षता से इरीक शिप्टन और दूसरे ब्रिटिश पर्वतारोही अत्यंत प्रभावित थे।

न्यूजीलैंड पहुँचने से पहले एडमंड सिडनी में रुके थे, जहाँ लुइस रोज से उनका प्रेम संबंध चल रहा था। लुइस सिडनी में संगीत शिक्षा ग्रहण कर रही थी। एडमंड अकसर लुइस को पत्र लिखते थे, मगर अभी तक प्रेम निवेदन करने की हिम्मत जुटा नहीं पाए थे।

शनिवार, 11 अगस्त को ऑकलैंड में फ्लाइंग वोट पहुँचा, जिसके जरिए एडमंड के नाम इरीक शिप्टन का पत्र आया था। धड़कते दिल के साथ एडमंड ने पत्र को खोला—दोनों को अभियान में शामिल करने की सूचना भेजी गई थी। हैरी आयर्स को भी शामिल करने की बात लिखी गई थी। एडमंड ने उत्साहित होकर इसकी सूचना हैरी को खास अंदाज में दी। यात्रा की व्यवस्था का वर्णन करते हुए एडमंड ने हैरी को पत्र में लिखा था कि उन्हें किसी रकम की जरूरत होगी और काठमांडू के रात्रिभोजों में औपचारिक परिधानों की क्या उपयोगिता होगी। एडमंड ने लिखा—''जॉर्ज के साथ मैं भी चाहता हूँ कि तुम्हें कुछ तकनीकों की जानकारी दूँ, ताकि बर्फ काटने में तुम्हें किसी तरह की दिक्कत न हो। अगर तुम एक हाथ से बर्फ नहीं काट पाओगे तो हमारे लिए तुम्हारी कोई उपयोगिता नहीं होगी। मैं जानता हूँ कि बर्फ काटने के मामले में तुम्हें महारत हासिल है। जब हम लोग किसी कठिन बर्फीली चोटी को देखेंगे तो रास्ता बनाने के लिए तुम्हें ही बुलाएँगे।''

पत्र पर जॉर्ज लोए ने दस्तखत किए। न्यूजीलैंड अल्पाइन क्लब के मानद सचिव मुरेइलीस ने हैरी आयर्स को 'इस गौरवपूर्ण अवसर' के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ भेजीं। मगर लंदन में कई तरह की तब्दीलियाँ की जा रही थीं। आठ अभियानों और शिखर तक पहुँचने की पाँच कोशिशों के बाद, ब्रिटिश पर्वतारोही संस्था एवरेस्ट तक पहुँचने का श्रेय सबसे पहले हासिल करना चाहती थी। अब सबकुछ 1953 के अभियान पर निर्भर कर रहा था, अगर यह भी नाकाम हो जाएगा तो जरूर किसी दूसरे देश को चोटी तक पहुँचने में सफलता मिल जाएगी।

मई में रेमंड लेंबर्ट और तेनजिंग नोर्गे स्विस अभियान दल के साथ साउथ पोल से ऊपर तक चढ़ चुके थे और वसंत काल में वे फिर कोशिश करनेवाले थे। 9 वर्ष में चढ़ाई की कोशिश सिर्फ दो बार की जा सकती थी और 1954 के शरत काल की चढ़ाई के लिए फ्रांसीसी अभियान दल ने बुकिंग कर रखी थी। इरीक शिप्टन अभियान के लिए छोटे दल को पसंद करते थे और अपने साथ कम सामान ले जाना कामयाबी के लिए जरूरी समझते थे। वहीं हिमालयन कमेटी कह रही थी कि 1953 के अभियान को पिछले सभी अभियानों से अलग होना चाहिए। अत्याधुनिक उपकरणों से लैस पर्वतारोहियों के बड़े दल को शिखर पर चढ़ने के लिए भेजा जाना चाहिए।

कुछ हफ्ते के बाद इरीक शिप्टन का दूसरा खत एडमंड के पास आया। इसमें बुरी

खबर थी कि शिप्टन अभियान से अलग हो चुके हैं और अभियान के नेतृत्व की जिम्मेदारी जॉन हंट को सौंपी गई है। शिप्टन ने लिखा था—''मैं नहीं जानता कि इस तरह का फैसला क्यों लिया गया और यह सबकुछ मेरे लिए पीड़ादायक अनुभव रहा है··· मैं इस बात के लिए जी-जान से कोशिश करूँगा कि अभियान के साथ मेरा संबंध नहीं रह जाने पर भी तुम तीनों के चुनाव पर किसी तरह का प्रभाव न पड़े; मगर मैं यह भी जानता हूँ कि अंतिम निर्णय लेने का अधिकार हंट के पास है।''

एडमंड ने इस पत्र की एक प्रति हैरी आयर्स को भेजी। ''मैं काफी हताश हो गया था और मुझे लगने लगा था कि शिप्टन के बगैर हम लोग एवरेस्ट के ऊपर कभी पहुँच नहीं पाएँगे।''

नवंबर के आरंभ में ऐसा लगने, लगा मानो हैरी को अभियान से अलग किया जानेवाला था। एडमंड ने जॉन हंट को खत लिखकर अपने पुराने मित्र और पर्वतारोहण के गुरु हैरी आयर्स को अभियान में शामिल करने का अनुरोध किया। उन्होंने लिखा—''हैरी आयर्स न्यूजीलैंड के असाधारण पर्वतारोही हैं, उनकी गजब की तकनीकी दक्षता, निर्णय लेने की क्षमता और लक्ष्य के प्रति समर्पण ऐसे गुण हैं, जिसकी वजह से पर्वतारोही के रूप में उन्होंने प्रसिद्धि हासिल की है और हमारे देश में कोई भी उनकी बराबरी नहीं कर पाया है।''

एडमंड ने हैरी को लिखा, ''मैं पूरे मामले को लेकर हताशा महसूस कर रहा हूँ। यह सबकुछ हमारे लिए अप्रत्याशित था। शायद स्विस दल चोटी पर पहुँच जाएगा और हम लोग हाथ मलते रह जाएँगे।''

नवंबर मध्य तक एडमंड और जॉर्ज को अभियान में शामिल करने की बात पक्की हो गई। जॉन हंट सभी पर्वतारोहियों के साथ निजी तौर पर जान-पहचान करना चाहते थे। वे चाहते थे कि सभी लंदन में आकर अभियान की तैयारी में भागीदारी करें। दूसरे ब्रिटिश पर्वतारोहियों ने दृढ़ता के साथ एडमंड और जॉर्ज के नामों का समर्थन किया था, मगर हैरी के नाम पर सहमति नहीं बन पाई थी। हंट ने अपनी सहानुभूति और अफसोस जताकर हैरी को इसकी सूचना भेज दी थी। एडमंड ने हैरी को लिखा था—''वेस्ट कूम पर तुम्हें चढ़ते हुए नहीं देख पाना मेरे लिए अत्यंत दुःख की बात होगी।···मैं सिर्फ इतना कह सकता हूँ कि मुझे बेहद अफसोस है।'' एडमंड के लिए अभियान की ऐसी शुरुआत संदिग्ध किस्म की थी। उसी समय स्विस दल के अभियान की खबर आई। एक बार फिर तेनजिंग और लेंबार्ट काफी ऊँचाई तक चढ़ गए थे, मगर उन्हें पीछे लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। मार्ग तो था, मगर काफी मेहनत करने की जरूरत थी।

लंदन स्थित रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी के एक छोटे से दफ्तर में बैठकर जॉन हंट अभियान की रणनीति तैयार कर रहे थे। दिन-रात काम करते हुए जरूरी निर्देश दे

रहे थे। अगले छह महीनों में उनकी नेतृत्व क्षमता की परीक्षा होनेवाली थी और उनके संगठन सचिव चार्ल्स विली भी काफी मेहनत कर रहे थे। परिधान, टेंट और हर तरह के उपकरणों की जाँच की जा रही थी। खाद्य-पदार्थों को सावधानीपूर्वक चुना गया और पैक किया गया था। समूचे ब्रिटेन में कंपनियों और नागरिकों से दान के रूप में मिलनेवाली सामग्री को भारत भेजने की तैयारी की गई थी।

ऑक्सीजन उपकरण की अहमियत ज्यादा थी और टॉम बार्डिलोन की अगुवाई में सर्वस्वीकृत ओपन सर्किट सिस्टम के अलावा क्लोज्ड-सर्किट सिस्टम का परीक्षण और विकास किया जा रहा था। 1953 के एवरेस्ट अभियान दल के सारे सदस्य मार्च के पहले सप्ताह में काठमांडू स्थिति ब्रिटिश दूतावास में एकत्र हुए। इसके पहले उन्होंने बंबई से रेलगाड़ियों और लॉरियों में अभियान के लिए 473 पैकेज को भीषण गरमी में नेपाल की सीमा तक पहुँचाया था। टोप वे की सहायता से सामग्री को पहाड़ी क्षेत्र में पहुँचाया गया था।

जॉर्ज लाए मुख्य अभियान दल से बंबई में आकर मिले थे, वहीं जहाज में सवार होकर एडमंड बाद में कोलकाता पहुँचे थे, वैसे भी मधुमक्खी पालकों के लिए फरवरी का महीना काफी व्यस्त होता है, फिर विमान में सवार होकर वे काठमांडू पहुँच गए थे। ऊँचाई पर रहनेवाले बीस शेरपा पहाड़ से उतरकर अपने नए नियोक्ताओं से मिलने आए थे।

राजदूत सर क्रिस्टोफर समरहेज ने अपने परिवार के साथ अभियान दल का हार्दिक स्वागत किया। दूतावास के बगीचे में बक्सों, सामग्रियों, टेंटों के ढेर के बीच आखिरकार एडमंड की मुलाकात जॉन हंट से हो गई। शिप्टन की गैर-मौजूदगी से दुःखी होने के बावजूद एडमंड हंट से मिलकर अत्यंत प्रभावित हुए। यहीं उनकी मुलाकात तेनजिंग नोर्गे से हुई, जो अभियान दल के सरदार की भूमिका निभानेवाले थे। वे पिछले वर्ष दो बार एवरेस्ट पर चढ़ने की कोशिश कर चुके थे और दल में हिमालय क्षेत्र के सर्वाधिक अनुभवी पर्वतारोही थे।

किसी को पता नहीं था कि चोटी तक पहुँचने का अवसर किसे मिलनेवाला है। इस बात का निर्णय जॉन हंट को लेना था। पहले सभी को पर्वत के ऊपर चढ़ना था। काठमांडू से एडमंड ने जिम रोज को खत लिखा—''इस बार अपने अभियान दल के

सदस्यों से मिलकर मैं काफी प्रभावित हुआ हूँ और मुझे लगता है कि नतीजा भी बेहतर निकलेगा।''

काठमांडू से बीस किलोमीटर आगे बढ़ने के बाद भदगाँव में सड़क मार्ग समाप्त हो गया। आठ टन के उपकरणों को सैकड़ों भागों में विभाजित किया गया, ताकि आगे की यात्रा में उनको लादकर ले जाना संभव हो। 10 मार्च को पोर्टरों, पर्वतारोहियों और शेरपाओं ने 3876 मीटर (12,717 फीट) की ऊँचाई पर स्थित टेंगबोचे मठ तक पहुँचने के लिए चढ़ाई शुरू की। वे जिस पर्वतीय मार्ग से ऊपर बढ़ रहे थे, वहाँ चारों तरफ मनोरम प्राकृतिक दृश्य दिखाई दे रहा था। दो हफ्ते के बाद वे लोग एवरेस्ट के नीचे सोलू एवं खुंबू की घाटी तक पहुँचे। अभियान में शामिल शेरपाओं के परिजन खाद्य-पदार्थ के साथ साहबों का स्वागत करने के लिए आए। अपने आपको हिमालय की गोद में दोबारा पाकर एडमंड प्रफुल्लित हो उठे।

1953 का एवरेस्ट अभियान दल

कर्नल जॉन हंट, उम्र 42 वर्ष

अभियान दल के नेता। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान कमांडो माउंटेन एंड स्नो वारफेयर स्कूल में प्रमुख इंस्ट्रक्टर के रूप में (फ्रैंक स्मिथ के अधीन) काम किया। फिर चौथे इंडियन डिवीजन के इन्फेंट्री ब्रिगेड के कमांडर के रूप में मिस्र, इटली और ग्रीस में काम किया। हंट ने एवरेस्ट अभियान के लिए पर्वतारोहियों के नामों का चयन लंबी सूची पर काफी गौर करने के बाद किया था।

एक कुशल रणनीतिकार और नेतृत्व कला में पारंगत जॉन हंट अपनी टीम के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। एडमंड और तेनजिंग जब एवरेस्ट की चोटी की तरफ बढ़ रहे थे, तब हंट ऑक्सीजन और दूसरी सामग्री 8335 मीटर (27,350 फीट) की ऊँचाई तक पहुँचाने में मदद की थी। हंट ने अभियान के समापन के बाद ब्रिटेन लौटकर 'द एसकेंट ऑफ एवरेस्ट' नामक पुस्तक लिखी थी, जिसमें उन्होंने विस्तार से अभियान का वर्णन किया था। 1953 में सरकार ने उन्हें 'नाइट' की उपाधि दी। वह 1956 में सेना से सेवानिवृत्त हुए और आजीवन जनसेवा करते रहे। 1998 में लॉर्ड हंट का देहांत हो गया।

चार्ल्स इवांस : रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन्स के फेलो, उम्र 33 वर्ष

सहायक नेता। वेल्स में पर्वतारोहण सीखा था। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी कर बर्मा में तैनात हुए, फिर सर्जरी की पढ़ाई के साथ ही पर्वतारोहण भी सीखते रहे और अल्पाइन क्लब तथा हिमालयन कमेटी से जुड़े। 1952 में इरीक शिप्टन के साथ चो यू अभियान दल में शामिल हुए थे।

इवांस क्वार्टर मास्टर थे। बेस कैंप से ऊपर के कैंपों तक उपकरणों और सामग्री

को पहुँचाने के कार्य की निगरानी करते थे। वे टॉम बॉर्डिलोन के साथ सबसे पहले शिखर की तरफ बढ़े थे। क्लोज्ड सर्किट ऑक्सीजन उपकरण का इस्तेमाल करते हुए 26 मई, 1953 को एवरेस्ट के दक्षिणी छोर तक पहुँचे थे। यह अभियान की एक बड़ी उपलब्धि मानी गई थी। 1955 में इवांस के नेतृत्व में कंचनजंघा की चोटी (8586 मीटर, 28,169 फीट) तक पहुँचने का अभियान सफल हुआ। बाद में वे न्यूरोसर्जन बने। 1958 में 1984 तक इवांस यूनिवर्सिटी ऑफ वेल्स के प्रिंसिपल रहे। 1995 में उनका देहांत हो गया।

जॉर्ज बैंड, उम्र 24 साल

अभियान दल के सदस्य होने के साथ वायरलेस उपकरण के प्रभारी भी थे और भोजन मुहैया कराने में मदद करते रहे थे। चीनी और नीबू का शरबत पर्वतारोही काफी मात्रा में पी रहे थे। वे हँसमुख स्वभाव के व्यक्ति थे।

सन् 1955 में उन्होंने जो ब्राउन के साथ सबसे पहले विश्व के तीसरे सबसे ऊँचे शिखर कंचनजंघा पर चढ़ने का प्रयास किया था। बैंड तेल उद्योग में नौकरी करते थे और सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने कई बार हिमालय क्षेत्र की यात्राएँ कीं। उन्होंने पर्वतारोहण के अपने अनुभव के आधार पर 'एवरेस्ट : द ऑफिशियल हिस्टरी' नामक पुस्तक की रचना की, जो 2003 में अभियान की स्वर्ण जयंती के अवसर पर प्रकाशित की गई।

टॉम बॉर्डिलोन, उम्र 29 वर्ष

अभियान के ऑक्सीजन उपकरण के प्रभारी थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ग्रीस और मिस्र में काम कर चुके थे। फिर आपूर्ति मंत्रालय में फिजिसिस्ट के पद पर काम करते रहे। वे असाधारण पर्वतारोही थे। 1951 के एवरेस्ट अभियान और 1952 के चो यू अभियान में भी शामिल हो चुके थे।

टॉम बॉर्डिलोन ने अपने पिता डॉ. आर.बी. बॉर्डिलोन के साथ मिलकर क्लोज्ड-सर्किट ऑक्सीजन सिस्टम की खोज की थी। इसके कार्बन डाइऑक्साइड को अलग कर छोड़ी गई साँस को ऑक्सीजन में तब्दील किया जाता था। 1953 में यह विधि प्रयोग के आरंभिक स्तर पर ही थी।

बॉर्डिलोन चार्ल्स इवांस के साथ एक दिन में साउथ पोल से 900 मीटर की ऊँचाई तक चढ़ गए थे। एवरेस्ट के दक्षिणी छोर पर पहुँचनेवाले पहले पर्वतारोही थे। 1959 में बर्नीस ओवरलैंड की चढ़ाई करते समय टॉप बॉर्डिलोन हादसे में मारे गए थे।

अलफ्रेड ग्रेगरी, उम्र 39 वर्ष

अभियान के फोटोग्राफर थे। वे काठमांडू से आने और जाने की यात्रा के प्रभारी थे और पहाड़ से पत्र-व्यवहार को बहाल रखने की जिम्मेदारी भी उनके पास थी। ग्रेगरी

ब्लैक वाच रेजीमेंट के एक अधिकारी थे और द्वितीय-विश्वयुद्ध के दौरान उत्तरी अफ्रीका और इटली में कार्य कर चुके थे। लेक डिस्ट्रिक्ट और आल्प्स क्षेत्र में पर्वतारोहण करने का अनुभव उनके पास था। वह 1952 में चो यू अभियान दल के सदस्य थे। अल्फ्रेड ग्रेगरी की खींची गई श्वेत-श्याम तसवीरों ने एवरेस्ट अभियान को इतिहास में अमर बना दिया। उन्होंने टॉम स्टोबार्ट की मदद फिल्मांकन करने में की।

ग्रेगरी में काफी ऊर्जा थी और उन्होंने जॉर्ज लोए तथा आंग नीमा के साथ ऑक्सीजन की बोतलों और एक स्टोव को कैंप संख्या नौ तक 8500 मीटर (27,900 फीट) की ऊँचाई पर पहुँचाया था, जहाँ एडमंड और तेनजिंग ने 28 मई, 1953 की रात गुजारी थी। ग्रेगरी पूर्णकालिक फोटोग्राफर बन गए और हिमालय के कई अभियानों में भागीदारी करते रहे। 1993 में 'अलफ्रेड ग्रेगरीज एवरेस्ट' नामक उनकी पुस्तक प्रकाशित हुई। अब वे आस्ट्रेलिया में रहते हैं।

एडमंड हिलेरी, उम्र 33 वर्ष

पहाड़ पर बाईस प्राइमस स्टोवों की देखभाल करते थे। अभियान के लिए डुनेडिन की कंपनी आर्थर इलीस ऐंड कंपनी से डबल लेयर स्लीपिंग बैगों की व्यवस्था की थी। ऑकलैंड के एक मधुमक्खी पालक थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान आर एन जेड ए एफ में काम कर चुके थे। न्यूजीलैंड के आल्प्स क्षेत्र में पर्वतारोहण शुरू किया था और न्यूजीलैंड के अग्रणी पर्वतारोही बन गए थे।

सन् 1951 में न्यूजीलैंड के गढ़वाल अभियान दल के सदस्य थे। 1951 के एवरेस्ट अभियान और 1952 के चो यू अभियान में भी भागीदारी की थी। इरीक शिप्टन ने भविष्यवाणी की थी कि एडमंड एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचनेवाले प्रबल दावेदारों में से एक है। हंट ने उन्हें दृढ़ इच्छाशक्ति का धनी ऐसा व्यक्ति बताया था, जो अपनी असीम ऊर्जा की सहायता से कभी बाधाओं को बाँध सकता था। तेनजिंग नोर्गे के साथ वे 29 मई, 1953, शुक्रवार को सुबह 11.30 बजे माउंट एवरेस्ट पर पहुँच गए थे।

जॉर्ज लोए, उम्र 28 वर्ष

हाउक्स वे में ग्रामीण प्राथमिक स्कूल के शिक्षक। उन्हें न्यूजीलैंड के आल्प्स क्षेत्र में पर्वतारोहण करने का पर्याप्त अनुभव था और बर्फ पर चढ़ने में उन्हें महारत हासिल थी। वह 1951 में गढ़वाल हिमालय अभियान दल के सदस्य थे। इसी तरह 1952 के चो यू अभियान दल के भी सदस्य रह चुके थे। कठिन ल्होत्से फेस के पास रास्ता बनाकर जॉर्ज लोए ने एवरेस्ट अभियान में महत्त्वपूर्ण योगदान किया था। जॉन हंट ने जॉर्ज लोए के प्रदर्शन की तारीफ करते हुए उसे 'धैर्य और कौशल की शानदार उपलब्धि' बताया था। जॉर्ज लोए ग्रेगरी, आंग नीमा, एडमंड और तेनजिंग के साथ ऊँचाई पर चढ़ते

गए थे और कैंप संख्या 9 की स्थापना में योगदान किया था। जॉर्ज बैंड की तरह जॉर्ज लोए भी सभी को हँसाते रहते थे। जॉर्ज लोए ने 1957-58 में ट्रांस-अंटार्कटिक अभियान का फिल्मांकन किया था और बाद के वर्षों में दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में पर्वतारोहण करते रहे।

विलफ्रिड नोएस, उम्र 35 वर्ष

संक्षिप्त प्रशिक्षण प्राप्त कर बूटों की मरम्मत का काम करते थे। उनके पास कैंब्रिज विश्वविद्यालय की डिग्री थी और चार्टर हाउस में एक स्कूल शिक्षक थे, जहाँ जॉर्ज मेलोरी भी पढ़ाते थे। नोएस एक अग्रणी ब्रिटिश पर्वतारोही थे, जो द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान कश्मीर के एयरक्रू माउंटेन सेंटर में इंस्ट्रक्शन के तौर पर काम कर चुके थे तथा गढ़वाल और सिक्किम में भी पर्वतारोहण कर चुके थे।

नोएस शेरपाओं का नेतृत्व कर रहे थे और ल्होत्से फेस में मार्ग बनाने में उन्होंने अहम योगदान किया था। उन्होंने 21 मई को साउथ पोल तक का अंतिम मार्ग बनाया था और एक सप्ताह बाद साउथ पोल पहुँच गए थे। जॉर्ज लोए के साथ मिलकर एवरेस्ट की चोटी पर विजय-पताका लहराकर लौटे एडमंड और तेनजिंग का स्वागत किया।

नोएस ने अपनी पुस्तक 'साउथ पोल' में एवरेस्ट अभियान के अपने अनुभवों को व्यक्त किया है और उनकी कुछ कविताओं को भी शामिल किया है। अभियान के समापन के बाद वे पूर्णकालिक लेखक बन गए। 1962 में माउंट गारमो की चढ़ाई करते समय हादसे में उनकी मौत हो गई।

डॉ. ग्रिफिथ युग, उम्र 43 वर्ष

मनोविश्लेषक थे, जो दल के सदस्यों की सेहत और मानसिक दृढ़ता का ध्यान रखते थे। ब्रिटिश मेडिकल रिसर्च काउंसिल की तरफ से उन्हें अभियान में भेजा गया था। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान लेबनान के माउंटेन ऐंड स्नो वारफेयर ट्रेनिंग सेंटर के मनोचिकित्सक थे। वे 1952 के चो यू अभियान दल के सदस्य थे।

युग ने चार्ल्स हवांस के साथ मिलकर अभियान के लिए आहार सामग्री का चयन किया था। माइकल वार्ड के सहयोगी चिकित्सक की भूमिका भी निभाते रहे थे, उन्होंने पर्वतारोहियों के ऊपर कई तरह के प्रयोग भी किए थे। उनके प्रयोगों के कारण पर्वत की ऊँचाई पर मानव व्यवहार के संबंध में कई उपयोगी तथ्य उजागर हुए। उन्होंने इस दिशा में लगातार अपने अध्ययन को जारी रखा और 1960-61 में हिमालय साइंटिफिक ऐंड माउंटनियरिंग अभियान का नेतृत्व किया। उनका देहांत 1994 में हो गया।

टॉम स्टोबार्ट, उम्र 35 वर्ष

फिल्म कैमरामेन थे। उन्हें काउंट्रीमेन फिल्म्स की तरफ से प्रायोजित किया गया

था। वे प्राणि विज्ञान के स्नातक थे और आल्प्स, कार्याथियंस और हिमालय क्षेत्र में पर्वतारोहण करते रहे थे। उन्होंने 1949-52 के दौरान नॉर्वे-ब्रिटिश-स्वीडिश अंटार्कटिक अभियान का फिल्मांकन किया था। एवरेस्ट के ऊपर उन्होंने 16 मिलीमीटर कैमरों का इस्तेमाल किया और नियमित तापमान पर फिल्मों को सुरक्षित रखने के लिए बेस कैंप में उन्होंने बर्फ को खोदकर एक गुफा बनाई थी।

उनकी डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'द कांक्वेस्ट ऑफ एवरेस्ट' अक्तूबर 1953 में प्रदर्शित हुई। 1954 में इसे ब्रिटिश फिल्म अवार्ड से सम्मानित किया गया और दुनिया भर में इस फिल्म की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। टॉम स्टुआर्ट का देहांत 1980 में हो गया।

तेनजिंग नोर्गे, उम्र 39 वर्ष

अभियान दल के सरदार। अभियान के दौरान सभी शेरपाओं के नियंत्रक। पाँच एवरेस्ट अभियानों से जुड़े रहे थे और उनके पास पर्वतारोहण का व्यापक अनुभव था। 1938 में छठे कैंप तक फैंक स्मिथ और एच डब्ल्यू टिलमेन के साथ पहुँचने पर हिमालयन क्लब ने उन्हें टाइगर मेडल देकर सम्मानित किया था।

तेनजिंग 1951 में नंदा देवी के फ्रांसीसी अभियान में और मई 1952 में स्विस अभियान में शामिल हुए थे। रेमांड लेंबार्ट के साथ एवरेस्ट की चोटी की दिशा में उन्होंने 300 मीटर की चढ़ाई की थी।

जॉन हंट ने अपनी पुस्तक 'द एसकेंट ऑफ एवरेस्ट' में तेजनिंग की सराहना करते हुए उन्हें विश्व स्तर का पर्वतारोही बताया था। तेनजिंग अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह उत्साहपूर्वक करते थे। चढ़ाई करते समय वे प्रसन्न मुद्रा में रहते थे। अभियान के दौरान उनके चेहरे पर कभी थकान नहीं देखी गई, हमेशा जोश से भरे रहते थे। उनके कुशल नेतृत्व से प्रेरित होकर 22 मई को शेरपाओं ने साउथ पोल तक सामान पहुँचाने का कठिन काम पूरा किया था।

तेनजिंग एडमंड हिलेरी के साथ 29 मई, 1953 को माउंट एवरेस्ट पर पहुँच गए थे। तेनजिंग दार्जिलिंग में हिमालयन माउंटीनियरिंग इंस्टीट्यूट के निदेशक बने। तेनजिंग नोर्गे का देहांत 1986 में हो गया।

डॉ. माइकल वार्ड, उम्र 27 वर्ष

अभियान दल के चिकित्सक एवं अनुभवी पर्वतारोही। वार्ड के सुझाव पर ही 1951 में एवरेस्ट की दक्षिणी दिशा में टोही अभियान चलाया गया। वे स्वयं उस अभियान दल के सदस्य थे। उन्हें अभियान दल के सदस्यों का उपचार करने के लिए दल में शामिल किया गया था। मगर जरूरत पड़ने पर पर्वतारोही की भूमिका भी निभाते थे। उन्होंने शेरपाओं के कई दलों का नेतृत्व किया और सातवें कैंप की ऊँचाई तक चढ़ाई भी की।

पहाड़ की ऊँचाई पर अधिक दिनों तक रहने का पर्वतारोहियों को सिरदर्द, गले में खराश, सिर में चक्कर, भूख में कमी और अनिद्रा की शिकायत का सामना करना पड़ता है। अभियान दल की सहायता के लिए पर्याप्त मात्रा में दवाएँ उपलब्ध थीं और वार्ड दल के प्रत्येक सदस्य की सेहत का पूरा ध्यान रखते थे। वार्ड की पुस्तक 'एवरेस्ट : ए थाउजेंड ईयर्स ऑफ एक्सरलोरेशन' वर्ष 2003 में प्रकाशित हुई। माइकल वाडे का देहांत 2006 में हो गया।

माइकल वेस्टमस्कोट, उम्र 28 वर्ष

ढाँचागत उपकरणों और टेंट के प्रभारी। माइकल ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी माउंटीनियरिंग क्लब के पूर्व अध्यक्ष थे। उनके पास पर्वतारोहण का काफी अनुभव था। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय सेना के इंजीनियरों के साथ बर्मा में काम कर चुके थे। वेस्ट मस्कोट प्रत्येक कैंप में टेंटों का प्रबंधन करते थे और शेरपाओं को जरूरी निर्देश देते थे। जब मुख्य पर्वतारोही गण अग्रिम बेस तक पहुँच गए और चोटी तक पहुँचने की दो बार कोशिश की गई, तब दिन का तापमान बढ़ गया और वेस्टमस्कोट में तेजी से परिवर्तित हो रहे खुंबू हिमप्रपात के बीच मार्ग को खुला रखने के लिए मेहनत की। जहाँ पुराना मार्ग जोखिम भरा हो गया, वहाँ उन्होंने नए मार्ग की तलाश की।

30 मई, 1953 को उन्होंने जेम्स मौरीस के साथ मिलकर अभियान की कामयाबी का समाचार पहुँचाया था। उनके प्रयत्नों से दल के शेष सदस्यों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित हुई थी। वेस्ट मस्कोट शेल इंटरनेशनल के लिए कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करते रहे थे। बाद में उन्होंने दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में पर्वतारोहण किया था तथा अल्पाइन क्लब के अध्यक्ष बने थे।

मेजर चार्ल्स विली, उम्र 32 वर्ष

अभियान दल के संगठन सचिव और परिवहन अधिकारी। विली बचपन से ही ब्रिटेन में पर्वतारोहण का अभ्यास करते रहे तथा वह आल्प्स और हिमालय क्षेत्र में पर्वतारोहण कर चुके थे। वे 1939 में ब्रिटिश पेंथालोन चैंपियन बने थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उन्हें ज्यादातर समय युद्धबंदी के रूप में जापानी युद्ध शिविर में गुजारना पड़ा था। वे गोरखा ब्रिगेड के अधिकारी थे और धड़ल्ले से नेपाली बोल सकते थे। चार्ल्स विली को युद्ध कार्यालय से अभियान की तैयारी में मदद करने के लिए तैनात किया गया था। विली अभियान की तैयारी के विविध पहलुओं पर गहरी नजर रखते थे। उन्होंने पर्वतारोहियों के लिए खास किस्म के बूट-निर्माण में अहम भूमिका निभाई थी। टेंट, विंडप्रूफ परिधान, वायरलेस सेट, कुकर और ब्रिज उपकरण के चयन का काम उन्होंने सूझ-बूझ के साथ किया था।

विली अभियान दल के हौसले बुलंद रखने की पूरी कोशिश करते थे और अभियान को आगे बढ़ाने के लिए तत्परता से प्रयास करते थे। विली ऊँचाई तक पहुँचनेवाले शेरपाओं के दो दलों में से एक दल का नेतृत्व कर रहे थे। वह एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे के साथ सातवाँ कैंप स्थापित करने के लिए साउथ पोल तक चढ़ गए थे। अभियान के समापन के बाद भी उन्होंने पर्वतारोहण जारी रखा। सेना से सेवा निवृत्ति के बाद विली काफी वर्षों तक ब्रिटेन-नेपाल मेडिकल ट्रस्ट के साथ काम करते रहे। बाद में ब्रिटेन-नेपाल सोसाइटी के अध्यक्ष भी थे।

जेम्स मौरीस, उम्र 27

'द टाइम्स' के विशेष संवाददाता थे, जो अभियान दल में शामिल थे। मौरीस द्वितीय विश्वयुद्ध में सेना की नौकरी करने के बाद ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई कर चुके थे। 1951 में 'टाइम्स' की संपादकीय टीम में शामिल होने से पहले मौरीस इंग्लैंड और मिस्र में पत्रकार के रूप में काम कर चुके थे। मौरीस के पास पर्वतारोहण का कोई अनुभव नहीं था, इसके बावजूद अभियान की प्रगति के संबंध में शेष दुनिया को रिपोर्ट भेजने के लिए वे चौथे कैंप तक चढ़ाई करने में सफल हुए थे।

मौरीस अपनी रिपोर्ट 'टाइम्स' को भेजने के लिए पहाड़ में काठमांडू तक एक धावक की सहायता लेते थे। वह धावक 240 किलोमीटर की दूरी छह दिनों में तय करता था। जब एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे माउंट एवरेस्ट तक पहुँचकर नीचे उतरने लगे, तब मौरीस वेस्ट मस्कोट के साथ दौड़ते हुए पहाड़ से नीचे उतरे। उन्होंने अभियान की सफलता का समाचार 31 मई को नामचे बाजार से रेडियो के एक संक्षिप्त कूट संदेश के रूप में प्रसारित किया।

गहरी दिलचस्पी के बावजूद मीडिया को उनके कूट संदेश को समझना आसान काम नहीं था। इस संदेश को टाइम्स ने विशेष समाचार के रूप में प्रकाशित किया। मौरीस की पुस्तक 'कोरोनेशन एवरेस्ट' 1958 में प्रकाशित हुई। चालीस सालों तक पुरुष होकर भी स्वयं को स्त्री समझनेवाले मौरीस ने 1972 में अपना लिंग परिवर्तन करवाया। उनका नाम जेन मौरीस हो गया। लेखिका के रूप में जेन मौरीस ने काफी लोकप्रियता हासिल की।

□

एवरेस्ट पर विजय

ऊँचाई का अभ्यस्त बनते हुए टेंगबोचे, 29 मार्च, 1953 को ''हम घास भरे वनपथ में कैंप बनाकर रुके हुए हैं, जहाँ चारों तरफ चीड़ और रोडोडेनड्रोन के पेड़ हैं और कुछ गज की दूरी पर बौद्ध मठ स्थित हैं।'' एडमंड ने लिखा, ''सुबह में मैं टेंट से सिर बाहर निकालकर उत्तर में एवरेस्ट को देख सकता हूँ, जहाँ उसकी बर्फ का पिच्छक नुपत्से ल्हीत्से प्राचीर पर लटक रहा है। दाईं तरफ अमदाब्लाम की विलक्षण आकृति है। हर दिशा में विस्मयकारी पर्वत शिखर हैं। यह एक शानदार जगह है।''

उन्होंने लेंगबोचे मठ के मुख्य लामा से मुलाकात कर उपहार और भोजन का आदान-प्रदान किया। मुख्य लामा ने चोमोलुंगमा शिखर से अभियान दल की सुरक्षित वापसी के लिए प्रार्थना की। जॉन हंट ने अपनी पत्नी को पत्र में लिखा—''बुजुर्ग लामा ने हिममानव के बारे में दिलचस्प बातें कीं और इस तरह मेरे मन में उनके अस्तित्व को लेकर किसी तरह का संदेह नहीं रह गया।''

हंट की योजना में तीन हफ्ते की दशानुकूलन चढ़ाई शामिल थी, ताकि दल के

सदस्यों के शरीर को ऊँचाई पर कम मात्रा में मौजूद ऑक्सीजन के अनुकूल बनाया जा सके। वे लोग अलग-अलग समूहों में बँटकर टेंगबोचे के आसपास के कुछ शिखरों की तरफ बढ़ने लगे। एडमंड उस दल में थे, जिसमें चार्ल्स विली, माइकल वार्ड और विलफ्रीड नोरस थे, मगर शुरू में उन्हें पीछे रुकना पड़ा। उन्होंने लिखा है—''हमेशा की तरह आरंभ में मुझे बुखार हो गया और तबीयत बिगड़ गई। मैं अपने दल के साथ आगे नहीं बढ़ पाया। मगर कुछ दिनों में ही मेरी तबीयत तेजी से ठीक होती गई (शायद अब महसूस होने के कारण) और मैं अपने साथियों के पास पहुँच गया। इस अवधि में हमने कई यादगार चढ़ाइयाँ कीं और 20,100 फीट की ऊँचाई पर बर्फीली चोटी तक पहुँचे।''

सोलोमन द्वीप में वायु सेना की नौकरी करते समय एडमंड को मलेरिया हो गया था। बीच-बीच में उनका यह रोग उभर आता था और शायद इसीलिए उन्हें बुखार हो गया था। मगर शुरू से ही एक समर्पित पर्वतारोही होने के नाते एडमंड किसी भी तरह के जोखिम का सामना करने के लिए तैयार रहते थे। शिप्टन ने उनको 'विलक्षण साहसी व्यक्ति' बताया था। एडमंड हमेशा गतिशील रहना पसंद करते थे।

दूसरी दशानुकूलन चढ़ाई के लिए हंट ने लोए, बेंड और वेस्ट मस्कोट व शेरपाओं का नेतृत्व करने का दायित्व एडमंड को देते हुए खुंबू हिमप्रपात के नीचे बेस कैंप स्थापित करने के लिए कहा।

खुंबू हिमप्रपात 13-17 अप्रैल, 1953

जब बेस कैंप की स्थापना हो गई, तब असली अभियान की शुरुआत खुंबू हिमप्रपात से हुई, जो दक्षिण की तरफ से एवरेस्ट की तरफ बढ़ रहे पर्वतारोहियों के लिए अभी भी एक प्रमुख बाधा बना हुआ था। खुंबू हिमनदी एवरेस्ट और नुपत्से के बीच उतरती थी और फिर मुड़कर 600 मीटर नीचे की तरफ गिरती थी।

हिमनदी के आगे बढ़ने पर उसकी बाहरी परत चरमराती थी, चटकती और बिखरती थी। इस तरह जो हिम-मीनार निर्मित होती थी, वह उधर से गुजर रहे पर्वतारोहियों को लील सकती थी। एडमंड ने जिम रोज को पत्र में लिखा था—

''जब पहली बार मैंने इस हिमप्रपात को देखा तो मुझे घबराहट महसूस हुई। इसका स्वरूप 1951 की तुलना में हजारों गुना विकराल हो चुका था और इधर से आगे बढ़ने की कोई गुंजाइश नजर नहीं आ रही थी। मैंने इतने व्यापक रूप में हिम मीनार को पहले कभी नहीं देखा था। अगर ऐसा हिमप्रपात न्यूजीलैंड में होता तो शायद हम चढ़ाई करने का साहस नहीं जुटा पाते, मगर एवरेस्ट के साथ अच्छी बात यही है कि यहाँ हम कोशिश कर सकते हैं और बेहतर नतीजे की उम्मीद रख सकते हैं।''

उनकी जिम्मेदारी थी एक सुरक्षित मार्ग ढूँढ़ता और चिह्नित करना, ताकि शेरपा और अन्य पर्वतारोही चढ़ाई कर सकें। उन्हें रस्सी की सीढ़ियाँ लटकानी थीं, लटकते

हिम-मीनारों के हिस्सों को काटकर जगह बनानी थी। आखिरकार वे एक मार्ग बनाने में सफल हुए। एडमंड, बेंड, वेस्टमस्कोट और लोए ने हिमप्रपात के मध्य हिस्से से दूसरे कैंप तक का मार्ग बनाया और फिर ऊपर का मार्ग बनाया।

इस अनुभव के बारे में एडमंड ने लिखा—''मैं निजी तौर पर युद्ध स्तर पर काम कर रहा था और बर्फ काटनेवाली कुल्हाड़ी लेकर निरंतर वार करता रहा था। अगर हमें एक हफ्ते का समय दिया जाता तो हम हिमप्रपात को काटकर ऐसा मार्ग बना सकते थे, जिससे होकर कोई युवती भी आसानी से गुजर सकती थी।''

वेस्टर्न कूम 18 अप्रैल–2 मई 1953

वे लेक कैंप में विश्राम करने के लिए कुछ दिनों तक रुके, वहाँ परिवार के पत्रों और वीकली न्यूज की प्रतियाँ पाकर एडमंड को अपार खुशी हुई। उन्होंने अपने माता-पिता को लिखा—''मैं चट्टानों के पीछे बैठा हुआ हूँ··· मैं जब भी ऊपर की तरफ देखता हूँ, तेज हवाओं को एवरेस्ट और नुपत्से की बर्फ से टकराते हुए पाता हूँ। लगता है, वहाँ का परिवेश अत्यंत प्रतिकूल है। लेकिन अभी यह मौसम का शुरुआती दौर है, अगले महीने तक हालात काफी बदल जाएँगे। आप लोग अपना खयाल रखें और अपना हाल-चाल भेजते रहें। मैं जानना चाहता हूँ कि न्यूजीलैंड में दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट टीम ने कैसा प्रदर्शन किया।''

21 अप्रैल को शेरपाओं ने सामान को 6157 मीटर (20,200 फीट) की ऊँचाई पर स्थित तीसरे कैंप तक पहुँचाना शुरू कर दिया। वहाँ से आगे मार्ग अवरुद्ध था, चूँकि वेस्टर्न कूम की दैत्याकार बर्फ की सतहवाली खाई को मुँह फैलाए नीले हिम-दरार ने अवरुद्ध कर रखा था, इसे वे लोग 1951 में देख चुके थे।

स्विस दल ने 1952 में रस्सियों के सहारे इसे पार किया था, मगर हंट इसका ठोस समाधान चाहते थे। ब्रिटेन में चार्ल्स विली अल्युमिनियम के निर्मित सीढ़ी के सहारे खाई को पार करने का परीक्षण कर चुके थे। अभियान दल ने वैसी सीढ़ी के सहारे ही कूम को पार कर लिया। आज भी एवरेस्ट के दक्षिणी मार्ग में अल्युमिनियम की सीढ़ियों का इस्तेमाल किया जाता है।

26 अप्रैल को पहली बार एडमंड और तेनजिंग एक साथ रस्सी के सहारे चढ़े और रास्ता बनाते हुए स्विस दल के चौथे कैंप तक पहुँचे, जो 6462 मीटर (21,200 फीट) की ऊँचाई पर था। यह उनके लिए एडवांस बेस कैंप साबित होनेवाला था। उस दिन सूरज की गरमी ने कूम को सुलगती ज्वालामुखी में तब्दील कर दिया था। एवरेस्ट के बारे में एडमंड की पसंदीदा पुस्तक 'कैंप सिक्स' में फ्रैंक स्मिथ ने लिखा है कि हिमनदी से जो धूप प्रतिबिंबित होती है, वह आपके शरीर से सारी ऊर्जा निचोड़ लेती है। इसके बावजूद एडमंड और तेनजिंग ने बर्फ के बीच अपना रास्ता बनाया। उन्होंने स्विस दल के चौथे

कैंप में बिस्कुट, चीज बेकन आदि खाने की चीजें देखीं और उनका लुत्फ उठाया।

उस दिन अपराह्न में उन्होंने बेस कैंप तक कूम और हिमप्रताप के रास्ते लौटने का फैसला किया। जॉर्ज लोए कुछ शेरपाओं के साथ दूसरे कैंप में मौजूद थे और एडमंड ने रेडियो संदेश के जरिए पाँच बजे उसे मिलने का वादा किया था। ''यह तो कमाल की बात होगी,'' जॉर्ज ने जवाब दिया था। फिर दौड़ शुरू हो गई, दूसरे कैंप से एक घंटे में बेस कैंप तक जाना रिकॉर्ड बन सकता था।

हिमप्रपात के निचले इलाके को वे 'एटम बम क्षेत्र' कहकर पुकारते थे। वे वहाँ पहुँच गए थे। आखिरी हिम-दरार को सीढ़ी के सहारे पार करने की जगह एडमंड ने छलाँग लगा दी थी। वह दूसरी तरफ सुरक्षित पहुँच गए थे, मगर किनारे का हिस्सा टूट गया था, जिसे पकड़कर वे झूलने लगे थे। ''मैं सिर्फ इतना जानता था कि मुझे खुद को बर्फ में दफन होने से बचाना होगा। मैंने पाँव और कंधे को दीवारों से टिका दिया था। तभी तेनजिंग को धन्यवाद कहा तो वह मुसकराया था।''

बेस कैंप में पहुँचकर एडमंड ने जॉर्ज से 'हलो' कहा और सभी को बताया कि अगर तेनजिंग नहीं होते तो उस दिन उनकी जान जा सकती थी। इसके बाद दोनों नियमित रूप से चढ़ाई करने लगे। उनके बीच भाईचारा और सद्भाव बढ़ता गया। वे जानते थे कि अगर चोटी पर जाने के लिए उन्हें चुना गया तो उनका एक-दूसरे को अच्छी तरह समझना और एक-दूसरे पर भरोसा करना जरूरी है।

फ्रैंक स्मिथ लिख चुके थे कि अपरिचित व्यक्ति के साथ चोटी तक पहुँचने की कोशिश नाकाम साबित हो सकती थी। उनका मानना था कि अभियान दल को एक टीम की तरह काम करना चाहिए। सबको एक-दूसरे के निर्णय, सतर्कता और गतिशीलता पर भरोसा करना चाहिए।

28 अप्रैल को एडमंड ने माता-पिता के नाम खत में अभियान की प्रगति के बारे में लिखा—''मेरा समय बहुत अच्छा गुजर रहा है। तेनजिंग (मशहूर शेरपा) और मेरी जोड़ी को अभियान दल से सराहा जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि मैं सफल होऊँगा। वैसे भी सभी सदस्य जोश में हैं और हमारा दल काफी आशान्वित है।''

दुर्जेय ल्होत्से फेस, 2–15 मई, 1953

जब एडमंड और तेनजिंग बेस कैंप में विश्राम कर रहे थे, उस समय दूसरे पर्वतारोही और शेरपा वेस्टर्न लूम पर स्थित एडवांस बेस कैंप तक जरूरी सामान पहुँचा रहे थे। 2 मई को एडमंड ने हंट से अनुरोध किया कि उन्हें और तेनजिंग को ओपन-सर्किट ऑक्सीजन उपकरण का परीक्षण करने का मौका दिया जाए। वे बेस कैंप से तेजी के साथ एडवांस बेस कैंप तक चढ़ना चाहते थे और फिर उतरकर बेस कैंप तक आना चाहते थे। दोनों की उम्मीद थी कि उन्हें ही चोटी पर चढ़ने के लिए चुना जाना था, वैसे

भी तेनजिंग दो बार चोटी के करीब तक पहुँच चुके थे, इसीलिए वे हंट के सामने अपनी क्षमता का प्रदर्शन करना चाहते थे।

दोनों मुँह अँधेरे ही बेस कैंप से रवाना हुए और आश्चर्यजनक रूप से इसी दिन दोपहर तक वापस लौट आए। दोनों भले ही थक गए थे, मगर उन्हें साँस लेने में कोई परेशानी नहीं हो रही थी। एडमंड ने ऑक्सीजन उपकरण को 'कमाल की चीज' बताया था। दोनों ने 1200 मीटर की चढ़ाई महज चार घंटे में पूरी कर ली थी, जबकि सामान्य परिस्थितियों में यह चढ़ाई तीन दिनों में नौ घंटे गुजारकर पूरी की जाती थी। यह बड़ी उपलब्धि थी और ऑक्सीजन की उपयोगिता साबित हो गई थी।

जब जॉन हंट ने अभियान के अंतिम चरण के लिए प्रत्येक व्यक्ति के दायित्वों का निर्धारण किया, तब एडमंड और तेनजिंग की मेहनत का उन्होंने पूरा ध्यान रखा, अंतिम चरण में चोटी पर चढ़ने के लिए दो दलों को प्रयास करना था—पहला दल चार्ल्स इवांस और टॉम बोर्डिलोन का था, जो क्लोज्ड सर्किट ऑक्सीजन उपकरण का प्रयोग करनेवाले थे। दूसरा दल एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे का था, वे भी ओपन सर्किट ऑक्सीजन उपकरण का प्रयोग करनेवाले थे।

दूसरे पर्वतारोहियों को ल्होत्से फेस पर चढ़ना था और साउथ पोल तथा दक्षिणी मेंड़ की ऊँचाई पर कैंप की स्थापना करनी थी। एडवांस बेस कैंप से लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित ल्होत्से फंस बर्फ की एक खड़ी ढाल है, जिसकी ऊँचाई 1200 मीटर है, जो कूम के ऊपरी भाग को अवरुद्ध करती है। यह साउथ पोल नामक अवतल क्षेत्र के मार्ग के बीच में आता है, जहाँ अभियान दल को चोटी पर पहुँचने के लिए सारी सुविधाओं और सामान से लैस कैंप बनाता था।

हंट को उम्मीद थी कि कुछ ही दिनों में मार्ग तैयार हो जाएगा, मगर चढ़ाई और प्रतिकूल परिवेश के कारण पर्वतारोहियों की रफ्तार भी धीमी होती चली गई थी। क्लोज्ड सर्किट ऑक्सीजन उपकरण का परीक्षण करने के लिए इवांस और बोर्डिलोन ने ल्होत्से फेस का एक आरंभिक चक्कर लगाया था। 11 मई को बर्फीले क्षेत्र में मार्ग बनाने में दक्ष जॉर्ज लोए को हंट ने ल्होत्से से आगे की तरफ रास्ता बनाने के लिए भेजा था।

जॉर्ज लोए ने आंग नीमा के साथ रास्ता बनाने में जो सराहनीय भूमिका निभाई, उसकी वजह से दल का आगे बढ़ पाना संभव हुआ। एडमंड ने लिखा है—''जब मौसम बिलकुल प्रतिकूल था, तब इन दोनों ने काफी तकलीफ उठाते हुए काम किया। उन्होंने बर्फीली ढाल को काटते हुए खतरनाक स्थानों पर रस्सियाँ लटकाईं और अत्यंत ही दुर्गम रास्ते को इतना सुविधाजनक बना दिया, जिससे होकर सामान कैंप तक पहुँचाया जा सकता था।''

जिस समय रास्ता बनाने के लिए संघर्ष किया जा रहा था, उस समय एडमंड कूम

क्षेत्र में तीसरे कैंप से सामग्रियों को शेरपाओं के जरिए चौथे कैंप तक पहुँचाने में जुटे हुए थे। तब मौसम का मिजाज बुरी तरह बिगड़ गया था। अकसर हिमपात हो रहा था और मानसून जल्दी शुरू होने का संकेत दे रहा था। वैसा होने पर अभियान दल के लिए आगे बढ़ पाना मुमकिन नहीं हो सकता था। मानसून में हिमनदी पिघलने लगती है और बर्फ की आँधी तथा हिम-स्खलन बढ़ जाने से पर्वतारोहण कर पाना संभव नहीं होता।

15 मई को विलफ्रीड नोएस ल्होत्से फेस पहुँचे और आंग नीमा को विश्राम करने के लिए भेजकर जॉर्ज लोए के साथ रास्ता बनाने के काम में जुट गए। ऊँचाई और तीव्र हवा के चलते लोए भी बुरी तरह थक चुके थे। 7000 मीटर की ऊँचाई पर लगातार ग्यारह दिनों तक काम करना असाधारण बात थी और मनोचिकित्सक ग्रिफिथ पुघ को लोए की सेहत की चिंता सताने लगी थी।

जॉर्ज लोए वापस एडवांस बेस कैंप में आ गए, जहाँ तेनजिंग और विली सामान की आखरी खेप लेकर पहुँच चुके थे। वहाँ रसोइए थोनडुप को पाकर सभी को प्रसन्नता हुई।

आखिरकाल साउथ पोल, 21-22 मई, 1953

सबकी नजरें सातवें कैंप पर थीं, जो कूम से ही दिखाई दे रहा था। मगर वहाँ तक सामान पहुँचानेवाले ज्यादातर शेरपा पस्त हो चुके थे और नोएस के पास सामान लादकर कोल तक पहुँच पाने में असमर्थ थे। 21 मई की सुबह हंट ने केवल नोए और अनुलू को कैंप से बाहर निकलते हुए देखा। चार्ल्स विली कुछ और शेरपाओं को लेकर नीचे से आ रहे थे। मगर स्थिति निराशाजनक नजर आ रही थी। एडमंड हालात को भाँप गए। उन्होंने लिखा है—''मैं जॉन हंट के कैंप में गया और उनसे लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा कि वह मुझे और तेनजिंग को सातवें कैंप तक जाने दें, ताकि अगली सुबह सामान को ऊपर तक पहुँचाया जा सके। मुझे पूरा यकीन था कि हम दोनों साउथ पोल तक जाकर वापस आ सकते थे और चोटी पर चढ़ने के लिए चुस्त बने रह सकते थे।''

हंट को सहमत होना पड़ा, प्रत्येक पर्वतारोही किसी-न-किसी कार्य में जुटा था या ल्होत्से केस पर काम करने के बाद विश्राम कर रहा था। यह एक महत्त्वपूर्ण और सटीक निर्णय था। चूँकि तेनजिंग को अपने बीच पाकर शेरपाओं के मन में जोश पैदा हो गया था और वे आखिरी बार कोशिश करने के लिए तैयार हो गए थे।

22 मई की सुबह साढ़े आठ बजे जॉन हंट ने दो पर्वतारोहियों के साथ सत्रह शेरपाओं को सातवें कैंप से बाहर निकलते हुए देखा। पूरा काफिला खाने की सामग्री पैदल लादकर कोल की दिशा में बढ़ रहा था। अभियान शुरू हो चुका था।

शिखर पर पहुँचने का पहला प्रयत्न, 26 मई, 1953

लगभग 8000 मीटर (26000 फीट) की ऊँचाई पर स्थित साउथ पोल एक

ऊसर, बर्फीला, छितरी हुई रोड़ीवाला पठार है, जो एवरेस्ट और ल्होत्से के बीच स्थित है। वहाँ चलनेवाली प्रचंड बर्फीली हवा किसी को भी सहज रहने का मौका नहीं देती। चार्ल्स इवांस और टॉम बोर्डिलोन ने हंट, दा नामगियाल और आंग तेनसिंग की मदद से किसी तरह एक घंटे की मशक्कत के बाद दो टेंट लगाए थे। नीचे के इलाके में जो काम कुछ ही मिनटों में हो सकता था, उसे करने में एक घंटे का समय लग गया था। ऊँचाई से सभी बुरी तरह प्रभावित हो रहे थे। उन लोगों ने सारे कपड़े पहन लिये और स्लिपिंग बैग में घुस गए। पानी की कमी के खतरे के प्रति डॉक्टर ग्रिफिथ पुघ ने उन्हें आगाह किया था, इसलिए उन लोगों ने नीबू पानी, सूप, चाय और नारियल पानी एक-एक मग भरकर पिया।

अगले दिन सातवें कैंप को व्यवस्थित किया गया और ऑक्सीजन उपकरणों की अच्छी तरह जाँच की गई। 26 मई की सुबह जॉन हंट और दा नायगियाल खाद्य-पदार्थों को लादकर रवाना हो गए। दो दिन बाद ऊपर के कैंप पर एडमंड और तेनजिंग को उन चीजों की जरूरत पड़नेवाली थी। दोनों के पीछे-पीछे इवांस और बोर्डिलोन भी चढ़कर आए। हंट चाहते थे कि शिखर पर चढ़ने की कोशिश करनेवाला पहला दल दक्षिणी शिखर की ओर जाए, आगे की चढ़ाई की कठिनाइयों का अनुमान लगाए और हालात अनुकूल होने पर ही आगे की चढ़ाई जारी रखे। दोनों पर्वतारोही इस बात का ध्यान रखें कि ऑक्सीजन उपकरण ठीक रहने पर ही वे आगे बढ़ने का निर्णय लें।

जितना ऊँचा चढ़ना संभव हो सकता था, उतना ऊँचा चढ़ने के बाद जॉन हंट और दा नामगियाल ने अपना सामान 8300 मीटर (27,350 फीट) की ऊँचाई पर रख दिया और बुरी तरह पस्त होकर कोल तक वापस लौट आए। तब तक एडमंड और तेनजिंग एडवांस बेस कैंप से आ चुके थे। उन्होंने हंट और नामगियाल को ऑक्सीजन मुहैया कराया और गरम पेय बनाकर परोसा। जॉर्ज लोए और ग्रेगरी अपने साथ आंग नीमा, पेंबा और आंग टेंवा को लेकर आ गए, जो शिखर पर चढ़ने का प्रयत्न करनेवाले दूसरे दल की सहायता करनेवाले थे। सातवें कैंप में भीड़ बढ़ती जा रही थी।

दिन के शुरुआती हिस्से में इवांस और बोर्डिलोन एवरेस्ट के दक्षिण की ओर तेजी से बढ़ते हुए दिखाई पड़े और फिर नजरों से ओझल हो गए। अपराह्न 3.30 बजे तक वे दिखाई नहीं पड़े। फिर उन्हें कोहरे के बीच पस्त होकर लड़खड़ाते हुए आते देखा गया। वे दोनों अब तक के सभी पर्वतारोहियों की तुलना में सबसे ज्यादा ऊँचाई पर चढ़े थे, मगर न तो उनके पास पर्याप्त समय था, न ही पर्याप्त ऑक्सीजन बचा था कि वे चाटी पर पहुँचकर सुरक्षित वापस लौट सकते। जब दोनों लड़खड़ाते हुए टेंट के करीब पहुँचे तो एडमंड और तेनजिंग ने गरम सूप के साथ उनका स्वागत किया और इस दृश्य का जॉर्ज लोए ने फिल्मांकन किया। अभियान से संबंधित फिल्म में इस दृश्य ने नाटकीय

प्रभाव पैदा किया था। कोल के ऊपर बने टेंटों में कठिनाई से रात गुजारी गई। हवाएँ बेरहम थीं और तापमान शून्य से काफी नीचे था। वैसी हालत में सो पाना लगभग असंभव था।

एडमंड ने पिरामिडनुमा टेंट के मीटर के दृश्य का वर्णन करते हुए लिखा था— ''मैं शंकित होकर चारों तरफ देख रहा था। ग्रेग ठिठुरते हुए एयर मेट्रेस पर लेटा हुआ था''लोए भी एयर मेट्रेस पर सिकुड़कर किसी तरह रात गुजारने की कोशिश कर रहा था। उसके पास स्लीपिंग बैग और ऑक्सीजन की कुछ बोतलें थीं। पैर पर पैर चढ़ाकर बैठा तेनजिंग टेंट के भीतर सबसे अधिक सहज मुद्रा में दिखाई दे रहा था। उसने घुटनों के नीचे किरासन स्टोव जला रखा था, जिसकी तीन फीट ऊँची लपटें हवा में काँप रही थीं। वह उन लपटों की तरफ देख रहा था। मैं स्लीपिंग बैग में घुस गया था और लपटों की ओर देखने लगा था।''

असल में सभी बुरी तरह थक चुके थे। स्टोव ठीकठाक काम कर रहा था। भोजन के रूप में उन्होंने विस्क्रम, जेम, शहद, खजूर, चॉकलेट, चीज, डिब्बा बंद फल अैर सूप के साथ ही गरम नीबू पानी का सेवन किया था। अगले दिन हवा पहले की तरह तेजी से बह रही थी और चढ़ाई के लिए अनुकूल नहीं थी। मगर बुरी तरह थक चुके हंट, बोर्डिलोन और आंग टेंबा लड़खड़ाते हुए एडवांस बेस कैंप की ओर लौट गए थे। कोल और एडवांस कैंप के बीच किसी तरह का रेडियो संपर्क नहीं था और उन लोगों को बेस कैंप में बैठकर खबर की प्रतीक्षा करनी थी।

नौवें कैंप तक सामग्री को पहुँचाना, 28 मई, 1953

जॉर्ज लोए सबसे पहले अल्प ग्रेगरी और आंग नीमा के साथ बर्फ काटकर एडमंड और तेनजिंग के लिए रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े। पीछे-पीछे एडमंड और तेनजिंग बढ़ने लगे। सभी भारी सामान लादकर चल रहे थे और प्रति मिनट चार लीटर ऑक्सीजन का इस्तेमाल कर रहे थे। कपड़े के एक हलके बैग में एडमंड ने अपनी जरूरी चीजें रख ली थीं— एक स्लिपिंग बैग, एक एयर मैट्रेस, अतिरिक्त मोजे और दस्ताने, अंदरूनी मोजे, अतिरिक्त पुल ओवर, ऑक्सीजन सेट के लिए दो स्पेनर, सोते समय ऑक्सीजन ग्रहण करने के लिए दो मास्क और ट्यूब, एक पैंसिल और कागज, दो दियासलाई, चिपकनेवाला प्लास्टर, खजूर के दो पैकेट, दो टिन सार्डिन, आधा कोटन शहद, लेमन क्रिस्टम के कुछ पैकेट, तरल जरदालू के डिब्बे, अपना कैमरा और एक्सपोजर मीटर।

एडमंड ने लिखा है—''मेरा कपड़े का बैग सामान भरने के बाद काफी भारी हो गया था। मैं जानता था कि भयंकर ठंड के चलते ज्यादातर खाद्य-पदार्थ उपयोग में नहीं लाए जा सकते थे, इसके बावजूद उन चीजों को छोड़कर आगे बढ़ने की मेरी हिम्मत नहीं हुई थी। मैंने दो हलके सिलिंडरों को उलट-पलटकर अपने ऑक्सीजन उपकरण

की अच्छी तरह जाँच कर ली थी। उनके साथ मैंने अपने बैग को बाँध दिया था। मैंने इन चीजों को अच्छी तरह देखा था।''

450 मीटर की चढ़ाई करने के बाद वे उस स्थान पर पहुँच गए, जहाँ जॉन हंट और दा नामगियाल ने दो दिन पहले जरूरी सामानों को रख दिया था। एडमंड ने लिखा है—''वहाँ ऑक्सीजन बोतल, एक टेंट, खाद्य पदार्थ और किरासन आदि मौजूद थे, जो हमारे लिए ऊँचाई पर उपयोगी साबित होनेवाले थे। हम पर्वतश्रेणी पर बैठ गए और उन चीजों की तरफ देखने लगे, हम नहीं जानते थे कि उन चीजों को लादकर हम लोग ले जा पाएँगे या नहीं।''

कुछ देर विचार-विमर्श करने के बाद एडमंड इस बात पर सहमत हुए कि अगर जॉर्ज उनके लिए आगे का रास्ता बना देंगे तो वे 14.5 पाउंड वजनवाला मीड टेंट उठाकर ले जाएँगे। सभी ने थोड़ा-थोड़ा सामान उठाकर ले जाने का निश्चय किया। एडमंड ने लिखा है—''मैं नीचे झुक गया और धीरे-धीरे अपनी पीठ पर टेंट को उठा लिया। काफी कोशिश करने के बाद मैं तनकर खड़ा हो पाया। ऐसा लग रहा था, मानो मैं नीचे गिर पड़ूँगा। मैं न्यूजीलैंड में इसकी तुलना में कई गुना ज्यादा वजन उठा सकता था, मगर उतनी ऊँचाई पर यह काम कठिन हो गया था। हमारे सामने दूसरा कोई विकल्प नहीं था। 27,400 फीट की ऊँचाई पर इतना सामान उठाकर मैं किसी तरह आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था।''

इतनी ऊँचाई पर पंद्रह पाउंड (6.8 किलोग्राम) उठाकर चलना साहसिक कार्य था। वे धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए। उन्हें थकान महसूस हो रही थी। आखिरकार उन्हें एक समतल जगह मिल गई, जहाँ वे नौवाँ कैंप बना सकते थे। अब वे 8504 मीटर (27,900 फीट) की ऊँचाई पर थे।

अब सहायक दल वापस लौट रहा था। उनको विदा करते हुए एडमंड ने काफी मुश्किल से अपने जज्बातों को नियंत्रित किया था, वे तीनों लोग—उनके पुराने मित्र जॉर्ज, जुझारू फोटोग्राफर अल्फ ग्रेगोरी और खुश मिजाज आंग नीमा—उस सम्मिलित अभियान की शक्ति के प्रतीक थे, जिनके सहारे एडमंड और तेनजिंग इस अंतिम बिंदु तक पहुँच पाए थे।

एडमंड की जेब में एक क्रॉस था, जिसे जॉन हंट ने नीचे कोल पर उन्हें दिया था। एडमंड के कान में हंट की आवाज अभी भी गूँज रही थी, जिसमें उनके अभियान से जुड़े हजारों लोगों की उम्मीदों को व्यक्त किया गया था—''एडमंड, सबसे अहम बात सुरक्षित वापस लौटकर आना है; मगर मैं जानता हूँ कि अगर तुम कोशिश करोगे तो शिखर तक जरूर पहुँच जाओगे।''

एडमंड और तेनजिंग ने अपने साथियों को नीचे उतरते हुए देखा। इसके साथ ही

पर्वत श्रेणी पर एकाकीपन का एहसास और भी गहराता गया। अब जो भी करना था, उन दोनों को ही करना था।

नौवाँ कैंप, 28 मई, 1953

ऑक्सीजन का इस्तेमाल किए बिना, दस मिनट की मेहनत से उन्होंने सतह को बर्फ से मुक्त कर दिया और नीचे से जमी हुई रोड़ी की परत को भी हटा दिया। इस तरह वे दो मीटर लंबी व एक मीटर चौड़ी दो खुली जगहें तैयार करने में सफल हुए। एक जगह दूसरी जगह की तुलना में पंद्रह सेंटीमीटर ऊँची थी। फिर उन्होंने मीड टेंट को गाड़ दिया। ऑक्सीजन बोतलों के साथ रस्सी बाँधकर उन्हें बर्फ में गाड़ दिया गया और ऊपरी रस्सी को एक चट्टान से बाँधकर टेंट को सुरक्षित बनाया गया।

टेंट के नीचे ढाल मुड़कर चट्टानों तक जाती थी। तेनजिंग ने स्टोव जला लिया था, वहीं एडमंड ऑक्सीजन सेट की जाँच करने लगे थे। वह अलगे दिन के लिए जरूरी मात्रा का हिसाब लगा रहे थे। उनके पास प्रति मिनट चार लीटर इस्तेमाल करने लायक ऑक्सीजन उपलब्ध नहीं था। मगर बोझ हलका होने पर शायद प्रति मिनट तीन लीटर ऑक्सीजन से काम चलाया जा सकता था। सोने के लिए प्रति मिनट एक लीटर ऑक्सीजन खर्च होनेवाला था। इस तरह वे चार घंटे तक सो सकते थे।

टेंट के भीतर तेनजिंग ने चिकन-नूडल सूप तैयार किया। उन्होंने बिस्कुट और खजूर खाए और हमेशा की तरह गरम नीबू-पानी का सेवन किया। अंत में उन्होंने तरल जरदालू का सेवन किया। दोनों को उसका स्वाद बहुत पसंद था। तेनजिंग ने रात भर बूट पहनकर लेटने का फैसला किया और स्लिपिंग बैग के अंदर घुस गए। ठंड बहुत ज्यादा थी और कम सामान लादने की मजबूरी के चलते वे साउथ पोल से अपने सारे कपड़े लेकर नहीं आए थे। एडमंड ने बूट उतार दिए और ऊनी मोजे पहन लिये। उन्होंने स्लिपिंग बैग में घुसकर लेटने का फैसला किया, मगर पूरी तरह पाँव नहीं पसार पाए। उन्होंने पैरों को सिकोड़कर रखा।

यह आरामदायक रात नहीं थी। तेज आवाज के साथ हवा चल रही थी और एडमंड ने टेंट के एक छोर को यह सोचकर अपने नीचे दबा रखा था कि कहीं हवा के साथ टेंट उड़ न जाए। वह तेनजिंग को शांत मुद्रा में देखकर चकित थे। ऑक्सीजन की मदद से वे नौ से लेकर ग्यारह बजे तक सो पाए, फिर ठंड महसूस होने पर उनकी नींद टूट गई। गरम नीबू-पानी पीते हुए उन्होंने एक बजे तक का वक्त गुजारा। फिर ऑक्सीजन की मदद से दो घंटे सोए और तीन बजे जाग गए। चार बजे तक दोनों ठिठुरते रहे। फिर उन्होंने टेंट के बाहर देखा। माइनस 32 डिग्री तापमान था और यह एक खूबसूरत सुबह थी। तेनजिंग ने 5000 मीटर नीचे टेंग बोचे मठ की तरफ इशारा किया, जहाँ शायद उस समय बौद्ध-भिक्षु सुबह की प्रार्थना कर रहे थे। एडमंड ने लिखा है—''जैसा कि उन्होंने

वादा किया था, शायद वे ऊपर की तरफ देख रहे थे और हमारी भलाई के लिए प्रार्थना कर रहे थे।''

तेनजिंग ने स्टोव जला लिया। एडमंड ने ऑक्सीजन सेट पर जमी बर्फ को हटाते हुए उसकी जाँच की। ऑक्सीजन सेट बिलकुल ठीक थे, मगर उनके बूट जमकर ठोस बन गए थे। एडमंड ने लिखा है—''स्वाभाविक रूप से कोई कारगर उपाय करना जरूरी हो गया था, इसीलिए अपने घुटनों के बीच स्टोव रखकर मैं बूटों को पकाने लगा। जलते हुए चमड़े और रबड़ की गंध को सहन करते हुए मैंने बूटों को तब तक भूना, जब तक जमी हुई बर्फ पिघल नहीं गई। इस तरह बूटों का स्वरूप बिगड़ गया, मगर इतना जरूर था कि मैं उन्हें पहनकर चल सकता था।''

उनके पास जो भी कपड़े थे, उन्होंने पहन लिये—सूती बनियान, ऊनी अंतर्वस्त्र, ऊनी कमीज और पुल ओवर, पेंट और जैकेट, विंडप्रूफ समूचे शरीर पर, तीन जोड़े दस्ताने, स्नो गोगल्स। एडमंड ने जैकेट के अंदर अपना कोडक रेटीना कैमरा रखा था, जिसमें कलर फिल्म का नया रोल भरा हुआ था।

शिखर पर, 29 मई, 1953

दोनों लोग 6.30 बजे रवाना हो गए। ऑक्सीजन सेट को लटका लिया गया, रस्सी बाँध ली गई और बर्फ काटनेवाली कुल्हाड़ी को थाम लिया गया। तेनजिंग आगे-आगे चलने लगे, चूँकि बूटों की वजह से एडमंड को अभी भी चलने में दिक्कत हो रही थी। बीच-बीच में वे आगे-पीछे होकर चल रहे थे।

उन्हें 'पर्वतारोहियों के अभिशाप' टूटनेवाले भूपृष्ठ का सामना करना पड़ रहा था।

संतुलन बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हुए और एक-एक कदम बढ़ाते समय घबराहट महसूस करते हुए ऑक्सीजन की दो बोतलें पाकर उनका हौसला बढ़ गया था। उन बोतलों को इवांस और बोर्डिलोन छोड़कर गए थे। एडमंड को तसल्ली हुई कि लौटते समय उन्हें ऑक्सीजन की किल्लत नहीं होगी।

एक खड़ी ढाल पर सतह टूट गई और एडमंड फिसलकर एक मीटर नीचे चले गए। सतह फिसलकर नजरों से ओझल हो गई और एडमंड खड़े रह गए। इस अनुभव के बारे में एडमंड ने लिखा है—''मैं अपने अनुभव के आधार पर समझ गया कि वह एक खतरनाक ढाल थी। मगर इसी समय मैं अपने आपसे कह रहा था—एडमंड प्यारे, यह एवरेस्ट है, तुम्हें कुछ और लगन के साथ कोशिश करनी होगी। मैंने मुश्किल से अपनी घबराहट पर काबू पाया था।''

नौ बजे उन्होंने दक्षिणी शिखर से उस प्रमुख मेंड़ की तरफ देखा, जो चोटी तक जाती थी। इवांस और बोर्डिलोन ने उस मेंड़ तक पहुँचने की कठिनाई के बारे में बताया था और वह सचमुच प्रभावशाली दिखाई दे रही थी। एडमंड ने लिखा है—''इस मेंड़ के संकीर्ण शीर्ष पर पर्वत की चट्टानी सतह पर बर्फ की पतली परत थी, जो पूरब की ओर विस्तृत कंगनी बनकर खतरनाक अंदाज में लटक रही थी, जो किसी भी पर्वतारोही के गलत तरीके से कदम रखने पर टूटकर दस हजार फीट नीचे वांगशुंग हिमनदी में जाकर गिर सकती थी।''

दोनों शिला फलक को काटकर बैठ गए और तेनजिंग की पानी की बोतल से दोनों ने पानी पिया। एडमंड ने फिर एक बार ऑक्सीजन उपकरण की जाँच की। अब दूसरी बोतल का इस्तेमाल करने का वक्त आ गया था। वह मन-ही-मन ऑक्सीजन की खपत का हिसाब लगाते रहे थे। उन्होंने सोचा कि अगर जरूरत पड़ेगी तो लौटते समय प्रति मिनट दो लीटर ऑक्सीजन का ही इस्तेमाल करेंगे।

आगे उन्हें सख्त स्फटकीय हिमखंड नजर आया, जिनको काटकर रास्ता बनाया जा सकता था। एडमंड ने लिखा है—''यह एक चुनौतीपूर्ण काम था—एवरेस्ट शिखर की मेंड़, सख्त हिमखंड और कुल्हाड़ी के वार से निर्मित हो रहे रास्ते को देखकर इतनी ऊँचाई पर पहली बार मैंने इतना उत्साह महसूस किया।'' मगर उनके लिए दुर्जेय बाधा अभी भी बची हुई थी।

सन् 1951 में एवरेस्ट टोही अभियान के दौरान एडमंड ने लेंगबोचे मठ से दूरबीन के सहारे विशाल चट्टानी चबूतरे को देखा था। विमान से खींची गई तसवीरों में भी यह नजर आया था। मगर किसी को अंदाजा नहीं था कि वहाँ तक पहुँचने में कितनी कठिनाई हो सकती थी। इतनी ऊँचाई पर खड़ी चट्टान पर चढ़ना खतरनाक और जोखिम भरा काम था। जो काँटे वे लोग साथ लेकर आए थे, उनको बर्फ में तो टिकाया

जा सकता था, मगर चट्टानों में टिका पाना संभव नहीं था। शुरू में एडमंड को कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। फिर उन्होंने चट्टान की दाईं कगार पर एक संभावना देखी। उन्होंने लिखा है—''पूरब में प्रपाती पर्वतीय हिस्से में एक विशाल कंगनी थी। पर्वत के किनारे से बढ़ती हुई कंगनी की पकड़ चट्टान के पास टूट गई थी और चट्टान तथा हिम खंड के बीच एक वक्र दरार पैदा हो गई थी।''

अब कोशिश करके देखना था, मगर उससे पहले ऑक्सीजन की मात्रा का हिसाब लगाना भी जरूरी था। हिसाब करने के बाद एडमंड ने पाया कि साढ़े तीन घंटे का वक्त गुजारने लायक ऑक्सीजन उनके पास थी। तेनजिंग ने एक मजबूत खूँटी बनाई और एडमंड ने दरार की तरफ कदम बढ़ा दिया। उन्होंने लिखा है—''मैं दृढ़ता के साथ चट्टान के सामने खड़ा हो गया और एक काँटे को उसके पीछे हिमखंड में फँसा दिया। हिमखंड की तरफ पीछे झुककर मैं धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगा···लगातार मेरे जेहन में यह विचार कौंधता रहा था कि कहीं कंगनी टूट न जाए। मेरा दिल जोर-जोर से धड़क रहा था।''

आखिरकार वह शीर्ष पर पहुँच गए और उन्होंने राहत की साँस ली। रस्सी के माप से उन्हें पता चला कि बारह मीटर की दूरी उन्होंने तय की थी। सँभलने के बाद एडमंड ने झुककर तेनजिंग की तरफ हाथ हिलाया, जो ऊपर की तरफ चढ़ रहे थे। एडमंड ने लिखा है—''पूरे अभियान के दौरान पहली बार मैंने महसूस किया कि मैं चोटी पर पहुँच रहा था।''

मगर मेंड़ पर अभी भी रास्ता बनाकर आगे बढ़ना था। उन्हें पता नहीं चल रहा था कि चोटी कहाँ थी। दोनों अब थक गए थे और उनका आत्मविश्वास भी कमजोर होने लगा था। एडमंड ने लिखा है—''फिर मैं समझ गया कि हम चोटी के मुहाने तक पहुँच गए हैं। मेरे आगे मेंड़ झुककर कंगनीदार मोड़ में बदल गई थी।''

एडमंड को लग रहा था कि चोटी एक अस्थिर कंगनी के ऊपर होगी, मगर तेनजिंग की बनाई खूँटी के सहारे मेंड़ के ऊपर पहुँचकर उन्होंने एक ठोस गोलाकार बर्फ से आच्छादित गुंबद को दखा। वे चोटी पर पहुँच चुके थे।

□

एवरेस्ट विजय के बाद

एडमंड ने लिखा—''हमने ऐसा महसूस नहीं किया कि हमने एवरेस्ट पर विजय पा ली है, बल्कि हमें लगा कि हमने उसके अहंकार को चूर-चूर कर दिया है।''

एडमंड और तेनजिंग ने एवरेस्ट शिखर पर जो पंद्रह मिनट की अवधि गुजारी थी। वह उनके जीवन के लिए निर्णायक साबित हुई थी। अब स्वप्न के साकार होने के प्रभाव से वे कभी भी मुक्त होनेवाले नहीं थे। उन्होंने एवरेस्ट की चोटी पर क्या किया था? इसके बारे में दोनों ने सैकड़ों बार अपने अनुभव का वर्णन किया है। एडमंड तेनजिंग से हाथ मिलाना चाहते थे, जबकि तेनजिंग ने खुशी के मारे एडमंड को बाँहों में भर लिया था। एडमंड ने स्वीकार किया कि उन्होंने थोड़ी हिचकिचाहट महसूस की थी,

मगर इसमें कोई शक नहीं कि दोनों ने संतुष्टि के साथ एक-दूसरे की पीठ थपथपाई थी।

एडमंड ने अपना ऑक्सीजन सेट उतार लिया और जैकेट के अंदर से कैमरा निकालकर चोटी पर खड़े तेनजिंग की तसवीर खींचने लगे। तेनजिंग के हाथ में बर्फ काटनेवाली कुल्हाड़ी थी, झंडे लहरा रहे थे। फिर उन्होंने चोटी की तरफ आनेवाली सभी मेंड़ों की तसवीर खींची और अपने अगले लक्ष्य के बारे में सोचा था। मकालू तक पहुँचने के मार्ग पर विचार किया, जो एवरेस्ट के साथ जुड़ा हुआ एक शिखर है।

तेनजिंग ने प्रार्थना की थी और बर्फ के नीचे कुछ मिठाई और अपनी बेटी पेम-पेम की रंगीन पेंसिल गाड़ दी थी। जब एडमंड को जॉन हंट का दिया हुआ क्रॉस याद आया तो उन्होंने उसे तेनजिंग के बनाए गड्ढे के बगल में गाड़ दिया। एडमंड ने लिखा—''इसमें कोई शक नहीं कि अजीब चीजें एक-दूसरे के बगल में गाड़ी गईं। मगर ये चीजें इस बात की प्रतीक थीं कि पर्वत से मनुष्यों को आध्यात्मिक शक्ति और शांति मिलती है।''

दोनों बैठ गए और कैंडल मिंट केक बाँटकर खाया। उसका ठंडा स्वाद माहौल से बिलकुल मिलता-जुलता था। फिर उन्होंने हिमालय के विस्तृत क्षेत्र को गौर से देखा, बर्फीली चोटियों, घाटियों और मैदानों को क्षितिज से मिलते हुए देखा। यह एक गौरवपूर्ण दिन था। फिर उन्होंने ऑक्सीजन सेट लगाया, चेहरे पर मास्क को अच्छी तरह पहन लिया और चोटी से नीचे उतरने लगे। एडमंड ने पत्थर के कुछ टुकड़ों को बटोरकर जेब में रख लिया। वे उन टुकड़ों को घर ले जाना चाहते थे। यह एक थका देनेवाली यात्रा थी—चोटी से नीचे मेंड़ पर उतरते हुए, फिर चट्टानों पर उतरते हुए, फिर ऑक्सीजन बोतल लेने के लिए, जो बॉर्डिलोन और इवांस छोड़कर गए थे, दोनों छोटे कैंप में गरम पेय पीने के लिए रुके, फिर उन्होंने कदम बढ़ाना शुरू कर दिया। सावधानीपूर्वक वे नीचे की तरफ उतरते चले गए और साउथ पोल तक पहुँच गए।

साउथ पोल पर आठवाँ कैंप था। वह रात एडमंड ने एक टेंट के अंदर लोए और नोएस के साथ जश्न मनाते हुए गुजारी। गरम लेमोनेड पीते हुए और चोटी पर चढ़ने के अनुभव की बातें करते हुए एडमंड बहुत खुश थे। दूसरे टेंट में तेनजिंग और पासंग फुटार रुके हुए थे। अगले दिन वे एडवांस बेस की तरफ रवाना हो गए। वहाँ किसी को भी चढ़ाई के नतीजे की जानकारी नहीं थी और सभी अनिश्चय की स्थिति में थे। माहौल में तनाव घुला हुआ था।

दो बजे के बाद पाँच आकृतियाँ कूम से नीचे उतरती हुई दिखाई पड़ीं। उन आकृतियों को देखकर किसी खुशखबरी का संकेत नहीं मिल रहा था। जॉन हंट का दिल डूबने लगा। वे सभी जीवित थे, यह सोचकर उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया। मगर जब वे उनका स्वागत करने के लिए आगे बढ़े तो उनके पैर किसी तरह घिसट रहे थे। तभी जॉर्ज लोए ने बर्फ काटनेवाली कुल्हाड़ी को उठाकर विजयी होने का संकेत

दिया और जॉन हंट दौड़ पड़े। सबसे पहले वह एडमंड से लिपट गए, फिर उन्होंने तेजनिंग को गले लगा लिया। दोनों की पीठ थपथपाते हुए खुशी के मारे रोने लगे। बाद में जॉन हंट ने लिखा—''तनाव मुक्त होकर खुशी को महसूस करना कैसा हो सकता है, मैंने उस दिन पहली बार जाना था।''

जिस समय थके मगर पुलकित एडमंड और तेनजिंग को अभियान दल के सदस्य बधाई दे रहे थे, टॉम स्टोबार्ट इस यादगार लम्हे का फिल्मांकन करने में जुट गए थे। दल के सभी सदस्यों को इस बात का एहसास हो गया था कि वे एक विजेता दल के सदस्य बन गए थे। लगातार तरल पदार्थ का सेवन करने और ऑक्सीजन की आपूर्ति जारी रखने के कारण एडमंड और तेनजिंग अपने आपको स्वस्थ बनाए रख पाए थे। वहीं ग्रिफिथ पुघ और माइकल वार्ड ने मेडिकल सुविधाएँ मुहैया कर उनकी सहायता की थी।

जेम्स मौरीस 'द टाइम्स' को कूट रेडियो संदेश भेजने के लिए माइकल वेस्ट मस्कोट के साथ नीचे की तरफ दौड़ने लगे थे। पर्वतारोही जब बेस कैंप में लौटकर आए तो उन्होंने अपनी विजय की खबर रेडियो बीबीसी से सुनी। वे समझ गए कि इस खबर से पूरी दुनिया में हलचल मच गई थी। आरंभिक उल्लास के बाद सभी पर्वतारोहियों ने काठमांडू रवाना होने से पहले विश्राम किया। जॉर्ज लोए ने अपने परिवार को भेजे गए पत्र में इस अनुभव का वर्णन किया था—''इस तरह की कल्पना मत करो कि विजय उल्लास के साथ हम तेरह लोग उछलने लगे थे। अगर तुम इस समय बेस कैंप में होते तो देखते कि नौ साहब और लगभग पंद्रह शेरपा जख्मी हालत में टेंट में पड़े हुए हैं। सबकी आँखें धुँधली हो चुकी हैं और कपड़े मैले हो चुके हैं। एडमंड गहरी नींद में सो रहे हैं। चार्ल्स थके हुए हैं और सिगरेट पी रहे हैं। सभी आपस में धीमी आवाज में बातचीत कर रहे हैं। सभी बुरी तरह थक चुके हैं। दो दिन पहले तक हम लोग साउथ पोल पर थे और ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे तथा अब हवा के बगैर गुब्बारे की तरह हम लोग बेसुध होकर पड़े हैं।''

8000 मीटर से अधिक ऊपर तक चढ़ाई करने पर शरीर पर जो प्रभाव पड़ता है, उससे पूरी तरह उबरने में कई हफ्ते का समय लग सकता है। लेकिन एडमंड नींद से जागे और उन्होंने अपनी माँ के नाम एवं एयरोग्राम लिखा। (डाक पहुँचानेवाले धावक नियमित रूप से बेस कैंप में काठमांडू तक चिट्ठियाँ लेकर जाते थे।)

उन्होंने पत्र में विनम्रतापूर्वक लिखा—''प्यारी माँ, शायद मैंने दुनिया को ज्यादा खुशी नहीं दी है, मगर मैंने हिलेरी वंश के नाम को कुछ प्रसिद्ध बनाने का प्रयास जरूर किया है।'' पत्र के अंत में उन्होंने लिखा—''लौटकर तुम्हें ढेर सारे किस्से सुनाऊँगा। जॉन हंट हमें महारानी से मिलवाना चाहते हैं और दूसरे गण्यमान्य लोगों से भी हमें मिलवाया जाएगा···इसीलिए काफी मजा आना चाहिए, डैड को मेरा प्यार—एडमंड।''

तैंतीस वर्षीय एडमंड किसी उत्साही किशोर की तरह अपने विचारों को व्यक्त कर रहे थे। पर्सी और गर्ट्रूड की खुशी और पुत्र को लेकर गौरवबोध की केवल कल्पना की जा सकती है। एक और खत लुइस टोज के पास पहुँचा। एडमंड लुइस से प्यार करते थे, मगर खुलकर प्यार का इजहार कर पाने में हिचकिचाते थे। उन्हें किशोरावस्था से ही लगता था कि उनका व्यक्तित्व आकर्षक नहीं था। वहीं एवरेस्ट के लिए रवाना होने से पहले ही लुइस का झुकाव एडमंड के प्रति हो चुका था, मगर अभी भी एडमंड लुइस को लिखे खत में खुलकर अपने जज्बातों को व्यक्त नहीं कर पाए थे।

लुइस के पिता जिम को उन्होंने लिखा—''सारा शोर थम चुका है। सारी कठिन मेहनत पूरी हो गई है और अंततः हम चोटी पर कदम रखने में सफल हो गए हैं। अब हिमालय पर पर्वतारोहण सामान्य रूप में हो पाएगा और एवरेस्ट की चुनौती गुजरे दिनों की बात बन जाएगी।''

उन्होंने पिछले दस दिनों के पर्वतारोहण के अपने अनुभव का वर्णन किया और पूरी टीम के हौसले की सराहना की। उधर जॉन हंट की भविष्यवाणी सही साबित हो रही थी। एडमंड ने लिखा—

''हमने अभी-अभी रेडियो पर सुना है कि महारानी और विंस्टन चर्चिल ने हमारे नाम बधाई संदेश काठमांडू तक भेजा है और यह सुनकर हम लोग उत्साहित हो उठे हैं। न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री सिड हॉलेंड ने भी हमारी तारीफ की है।''

बाद के वर्षों में दक्षिणी मार्ग से एवेरस्ट पर चढ़नेवाले सभी पर्वतारोही महसूस करते रहे हैं कि वे एडमंड हिलेरी के कदमों का अनुसरण कर रहे हैं। उनका नाम हमेशा के लिए एवरेस्ट के साथ जुड़ गया और चोटी के पास खड़ी चट्टान को अब 'हिलेरी स्टेप' कहकर पुकारा जाता है। 1953 में चढ़ाई करते समय एडमंड स्वयं पूर्ववर्ती पर्वतारोहियों के कदमों के निशान के प्रति जागरूक बने हुए थे। चोटी पर पहुँचने की अपनी अनुभूति के बारे में एडमंड ने लिखा—''मुझे सबसे पहले राहत का भाव महसूस हुआ, मगर राहत के साथ ही संतोष का भाव भी मन में पैदा हुआ कि मैं खुश किस्मत हूँ, जो इतने सारे साहसी और समर्पित पर्वतारोहियों के सपने को पूरा कर पाया।''

युवा के रूप में एडमंड पर्वतारोहण संबंधी इरीक शिप्टन की पुस्तकों में डूबे रहते थे और 1933 के एवरेस्ट अभियान के बारे में लिखी गई फ्रैंक स्मिथ की पुस्तक 'कैंप सिक्स' को पढ़कर बेहद रोमांचित हो उठे थे। इसके बारे में उन्होंने लिखा—''ऐसा लग रहा था, मानो स्मिथ के साथ-साथ उत्तरी दिशा से मैं भी एवरेस्ट की तरफ कदम बढ़ाता जा रहा हूँ। मुझे याद नहीं कि किसी और पुस्तक ने मुझे इतना प्रभावित किया था, जितना स्मिथ की इस पुस्तक ने किया था। मैं स्मिथ का वर्णन पढ़कर बर्फीली हवा की चुभन को महसूस कर रहा था और ऊँचाई पर अपने दम को घुटता हुआ महसूस कर

रहा था। और जब 28000 फीट तक पहुँचकर स्मिथ वापस मुड़े तो इसे मैंने उनका पराभव नहीं, बल्कि विजय समझा।''

अभियान समापन के बाद मित्रों के सामने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एडमंड ने ऐसा ही संकेत दिया था कि उन्होंने दूसरे पर्वतारोहियों द्वारा शुरू किए गए कार्य को अंजाम तक पहुँचाया था। जब एडमंड और तेनजिंग चोटी से नीचे साउथ पोल तक लौटे, तब जॉर्ज लोए ने पूछा, ''कैसा महसूस हो रहा है, एडमंड?''

एडमंड ने मुसकराकर सहजता के साथ कहा, ''जॉर्ज, हमने गरामी का सिर नीचा कर दिया है।'' एडमंड के इस जवाब को अभियान दल के बाकी सदस्य मजाक में दोहराने लगे थे और एडमंड को चिंता होने लगी थी कि कहीं उनके जवाब का कोई गलत अर्थ न लगा लिया जाए। एडमंड ने सोचा था कि 'हरामी' शब्द को सुनकर उनके परिवारवाले नाराज हो सकते थे। मगर एडमंड के न चाहने पर भी उनकी कहानी के साथ यह वाक्य हमेशा के लिए जुड़ गया।

कई सालों के बाद जॉन हंट ने इस मसले पर टिप्पणी करते हुए कहा—''मुझे यह सुनकर कोई अचरज नहीं हुआ था, चूँकि एडमंड को किसी भी विषय पर मजाकिया लहजे में सीधे-साधे तरीके से अपनी राय जाहिर करने की आदत थी। मैंने सोचा था कि विजेता बनने के बाद वह दुनिया के नाम दार्शनिकता से भरपूर कोई गंभीर किस्म का संदेश भेजेगा, मगर उसने वैसा नहीं किया।''

विलफ्रीड नोएस ने बताया कि साउथ पोल के टेंट में एडमंड ने कहा था, ''एवरेस्ट विजय की सूचना पाकर क्या मेलोरी खुश नहीं होते!'' खुश तो फ्रैंक स्मिथ भी होते। खासतौर पर जब उन्हें पता चलता कि एवरेस्ट विजेताओं में एक शेरपा भी शामिल है। स्मिथ जानते थे कि एवरेस्ट विजय का प्रयत्न शेरपाओं के सहयोग के बिना सफल नहीं हो सकता था। शेरपाओं का साहस और सहयोग किसी भी अभियान दल के लिए जरूरी था। स्मिथ को उम्मीद थी कि जब एवरेस्ट पर जीत हासिल कर ली जाएगी तो पर्वतारोहण के इतिहास में शेरपाओं के योगदान को सुनहरे अक्षरों में दर्ज किया जाएगा।

अभियान दल नीचे उतरते हुए 4245 मीटर ऊँचाई पर स्थित शेरपाओं के गाँव फेरीचे तक पहुँच गया। अब दल के सदस्य बर्फीली चोटियों से दूर आ चुके थे। जॉर्ज बैंड ने लिखा है—''एक बार फिर पेड़ों, जंगलों, फूलों, घास और पानी के सोते को देखना सुखद था। गरमागरम चाय पीने का लुत्फ ही कुछ और था।''

पहाड़ की ऊँचाई पर अब तक पर्वतारोही जो चाय पीते रहे थे। वह अधिक गरम नहीं हो पाती थी। ब्रिटेन और न्यूजीलैंड के पर्वतारोहियों को मन मसोसकर ठंडी चाय पीनी पड़ती थी। सात हफ्ते तक उस विशाल पर्वत पर समय गुजारने के बाद वे सामान्य दिनचर्या के लिए तरसने लगे थे। वे घर का भोजन ग्रहण करना चाहते थे। परिवार को

लिखे गए खत में एडमंड ने लिखा था—''तुम लोग कल्पना नहीं कर सकते कि घर का खाना खाने के लिए मैं किस कदर छटपटा रहा हूँ।''

जॉर्ज लोए और एडमंड इस बात पर विचार कर रहे थे कि क्या उनके लौटने पर न्यूजीलैंड अल्पाइन क्लब शानदार दावत का आयोजन करेगा। दोनों को पक्का यकीन था कि जल्द ही वे सामान्य दिनचर्या की ओर लौट जानेवाले थे।

जब इरीक शिप्टन को अभियान की कामयाबी की सूचना मिली तो वह समझ गए कि विजेताओं का धूमधाम से स्वागत किया जाएगा। एक मित्र को लिखे खत में उन्होंने जहाँ अपनी पीड़ा का वर्णन किया। वहीं यह भी लिखा—''बेशक मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि वह एडमंड हिलेरी है, जिसने चोटी पर कदम रखा—वह एक शानदार पर्वतारोही और बेहतरीन इनसान है। मैं जानता हूँ कि वह ऐसे गिने-चुने लोगों में से एक है, जो प्रसिद्धि की आँधी का सामना करने की ताकत रखते हैं। इसी तरह शेरपाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए तेनजिंग से बेहतर कोई दूसरा आदमी हो ही नहीं सकता था।''

काठमांडू के पास पहुँचने पर अभियान दल का कोई भी सदस्य उस विवाद का सामना करने के लिए तैयार नहीं था, जो अभियान की सफलता के साथ पैदा हो गया था। वैसे नेपाल में इस खबर को सुनने के बाद लोग काफी खुश हुए थे। इसी तरह दार्जिलिंग में तेनजिंग के रहने के कारण भारत में भी खुशी की लहर फैल गई थी। सभी कह रहे थे कि तेनजिंग देवताओं के निवास-स्थान चोमोलुंगमा तक पहुँचने में सफल रहे थे। मगर पर्वतारोहियों का उल्लास उस समय गायब हो गया, जब संवाददाताओं ने उन्हें घेरकर पूछना शुरू कर दिया, ''सबसे पहले चोटी पर किसने कदम रखा?''

टॉम स्टोबार्ट ने बाद में लिखा—''हम पर्वतारोहियों के जेहन में कभी यह सवाल पूछने का विचार नहीं कौंधा था कि सबसे पहले चोटी पर कौन पहुँचा था। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था।''

एडमंड और तेनजिंग किसी प्रतिस्पर्धा में नहीं दौड़ रहे थे, दोनों सरियों के सहारे साथ-साथ चढ़े थे और एक-दूसरे के बिना उनका सफल होना संभव नहीं हो सकता था। दोनों को इस सवाल से कठिनाई महसूस हुई और जब एडमंड ने ऐसे बैनरों को देखा, जिसमें तेनजिंग को पहले चोटी पर पहुँचते हुए दरशाया गया था, तो उन्हें अपमान महसूस हुआ।

काठमांडू में वातावरण अधिक सकारात्मक था। जॉन हंट के साथ विचार-विमर्श करने के बाद एडमंड और तेनजिंग ने एक संयुक्त बयान जारी कर बताया कि दोनों 'लगभग साथ-साथ' एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचे थे। मगर समाचार पत्रों को इस बयान से संतुष्टि नहीं मिली थी और भारत में इस सवाल को बार-बार पूछा जा रहा था।

दो साल बाद 1955 में अपनी आत्मकथा में तेनजिंग ने इस प्रकार लिखा—''चोटी से कुछ नीचे हिलेरी के साथ मैं रुक गया। हमने ऊपर की तरफ देखा। फिर हम लोग बढ़ने लगे। जिस रस्सी से हमलोग बँधे हुए थे, वह तीस फीट लंबी थी, मगर उसके अधिकांश हिस्से को मैंने हाथ में पकड़कर रखा था, इसीलिए हम दोनों के बीच महज छह फीट का फासला था। मैं 'प्रथम' या 'द्वितीय' जैसी कोई बात नहीं सोच रहा था। मैंने अपने आपसे ऐसा नहीं कहा, 'वहाँ ऊपर एक सोने का सेब है। मुझे हिलेरी को एक तरफ धक्का देकर ऊपर की तरफ चढ़ जाना चाहिए।' हम धीरे-धीरे, स्थिर कदमों के साथ चोटी की तरफ बढ़ते गए और फिर हम लोग वहाँ पहुँच गए। हिलेरी चोटी पर सबसे पहले पहुँचे। मैं उनके पीछे वहाँ पहुँचा।''

लेकिन इंटरव्यू के दौरान दोनों ही विजेता इस सवाल को टाल देते थे। एडमंड का कहना था—''हमने एक साथ जिम्मेदारी, जोखिम और कामयाबी को साझा किया है। यह एक टीम का प्रयास था और इससे बढ़कर और कुछ महत्त्वपूर्ण नहीं हो सकता था।''

काठमांडू में उन्हें गरम पानी से नहाने, स्वादिष्ट भोजन करने और आरामदायक बिस्तर पर सोने का मौका मिला। उनका स्वागत करने के लिए लगातार दावतों का सिलसिला चलता रहा। यही सिलसिला कलकत्ता, दिल्ली और बुंबई में भी दोहराया गया। हवाई अड्डों पर उनका स्वागत करने के लिए भीड़ उमड़ रही थी और उनका स्वागत करने के लिए सरकारी कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा था।

तोहफों की बौछार शुरू हो रही थी। पुरस्कार और पदवियों का दौर शुरू हो गया। उन्हें भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से मिलने का भी मौका मिला, जिन्हें एडमंड ने 'असाधारण रूप से प्रभावशाली व्यक्तित्व' बताया।

तेनजिंग भी नेहरू से मिलकर अत्यंत प्रभावित हुए। तेनजिंग की पत्नी हामू और बेटियाँ उनके साथ गई थीं और दिल्ली में प्रधानमंत्री के निवास में ठहरी थीं।

'टाइम्स ऑफ इंडिया' के पत्रकार ने आंग हामू से पूछा कि क्या तेनजिंग के पास विशेष प्रकार के फेफड़े हैं। तो हामू ने जवाब दिया, ''सिर्फ विशेष प्रकार के फेफड़े ही क्यों? उनका सबकुछ विशेष है—फेफड़े, दिल और मुसकराहट, जहाँ तक दृढ़ता का सवाल है—मैंने ऐसी दृढ़ता भरी मुसकराहट कहीं और नहीं देखी है।''

बाद में नेहरू की तरफ से दिया गया 'नेहरू सूट' पहनकर तेनजिंग मुसकराते हुए लंदन के स्वागत समारोह में शामिल हुए थे। अभियान दल के दूसरे पर्वतारोही चकित, भौंचक थे। वे बीच-बीच में झुँझला उठते थे और अंतत: वे दोनों विजेताओं के सहायक की भूमिका निभाने लगे थे। ब्रिटिश सरकार ने एवरेस्ट अभियान के लिए अपना पूरा जोर लगा दिया था और ब्रिटिश इस पर्वत पर अपना 'दावा' जताना चाहते थे, इसके

लिए उन्होंने पर्याप्त धन खर्च किया था, शोध और योजना के जरिए मशक्कत की थी।

मगर एडमंड और तेनजिंग अलग-अलग देशों के सहज-सरल पर्वतारोही थे। दुनिया भर में लोग उनकी उपलब्धि से प्रभावित हुए थे। मशहूर पर्वतारोही विलफ्रीड नोएस ने लिखा था—

''शुरू से ही ऐसा आभास होने लगा था कि दोनों पर्वतारोही शिखर पर पहुँचने का संकल्प लेकर दृढ़ता के साथ चढ़ाई कर रहे थे।''

दो हफ्ते बाद जॉर्ज लोए ने, जो स्वयं ल्होत्से फंस के नायक थे, एडमंड के माता-पिता को रिजिंगो मठ से लिखे खत में बताया था—''आप दोनों को अपने पुत्र एडमंड पर गर्व महसूस हो रहा होगा। मैं भी गौरवान्वित हूँ। आपको आश्वस्त करना चाहता हूँ कि आपका गौरवबोध बिलकुल सही है। अभियान की पूरी अवधि में एडमंड हम सबके लिए मार्गदर्शक शक्ति की भूमिका निभाता रहा और हमें शुरू से ही महसूस होने लगा कि वह इस अभियान का विजेता बन सकता है। चोटी पर चढ़ने में कुछ दिन पहले की अवधि में उसने असाधारण तरीके से प्रयत्न को जारी रखा और मैं अपने आपको खुशकिस्मत समझता हूँ कि आखिरी दिन मैं उसके साथ था। मैं साउथ पोल के ऊपर चढ़कर उन दोनों के नीचे उतरने की राह देख रहा था। मैंने सोचा था कि वे पस्त हाल होकर वापस आएँगे, मगर वे थके होने के बावजूद खुशहाल बिल्लियों की तरह नीचे उतरकर आए थे।''

काठमांडू में एडमंड के माता-पिता के बधाई-संदेश का जवाब देते हुए जॉन हंट ने लिखा—''मैं अपनी तरफ से कहना चाहता हूँ। अभियान दल का नेता होने के नाते बताना चाहता हूँ कि पूरे अभियान के दौरान एडमंड ने असाधारण शक्ति का परिचय दिया। मैं शुरू से जानता था कि हमारे साथ एडमंड और तेनजिंग के रूप में विजेता जोड़ी मौजूद है। हम सबको उन दोनों को चोटी के करीब तक पहुँचने में सही तरीके से मदद करने की जरूरत थी।''

जॉन हंट कभी भी इन दोनों एवरेस्ट विजेताओं को भूलनेवाले नहीं थे। जहाँ तक अभियान दल के दूसरे सदस्यों का सवाल था, वे इस प्रसिद्धि की चमक-दमक से अपनी मरजी से दूर जा सकते थे। उन्होंने बाद के वर्षों में अलग-अलग क्षेत्रों में उपलब्धियाँ हासिल कीं और उन्होंने पर्वतारोहण के शौक को जारी रखा।

रेक्स हिलेरी जो मेहनती मधुमक्खी पालक थे, अपनी पत्नी जेनी की सहमति से घर को गिरवी रख दिया और विमान से उस समय लंदन पहुँच गए, जब एडमंड अभियान से वहाँ वापस लौटे थे। हवाई अड्डे पर जून अपने पति जिमी कार्लाइज के साथ एडमंड का स्वागत करने के लिए मौजूद थी। जब विमान से पर्वतारोहियों का दल बाहर निकला तो प्रेस फोटोग्राफरों और प्रशंसकों ने उन्हें घेर लिया। यहाँ तीनों हिलेरी

भाई-बहन की मुलाकात भी हो गई। स्वागत करने के लिए इरीक शिप्टन भी वहाँ मौजूद थे।

लंदन में एडमंड और जॉर्ज लोए अपने न्यूजीलैंड के पर्वतारोही साथी नोरमन और इनीड हार्डी के साथ रुके। नोरमन इंजीनियर के रूप में काम कर रहे थे, मगर उन्होंने रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी में एवरेस्ट अभियान की तैयारी में सहायता की थी, वहीं इनीड सेंट क्रिस्टोफर स्कूल में पढ़ाते थे। एडमंड और जॉर्ज ने पर्वतारोहण के बारे में उस स्कूल में एक व्याख्यान दिया। दोनों की बातों को सभी ने गौर से सुना। संवाददाता सम्मेलनों में एवरेस्ट विजेताओं की लोकप्रियता का आकलन मीडिया ने कर लिया था। ग्लासगो हेराल्ड के एक रिपोर्टर ने लिखा था—

''जब रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी ने माउंट एवरेस्ट पर व्याख्यानों की एक शृंखला की शुरुआत की तो स्पष्ट हो गया कि सर एडमंड हिलेरी भारी संख्या में श्रोताओं का ध्यान आकर्षित कर पाने की क्षमता रखते हैं। सर एडमंड आसान भाषा में अपना अनुभव बाँटते हैं, जैसा कि उन्होंने कहा, ''एवरेस्ट की चोटी बैठने के लिए अच्छी जगह है, जो किसी खास बिंदु पर मुड़ी हुई नहीं है। कम-से-कम वहाँ बैठकर कुछ खा पाए, जिससे पता चलता है कि यह नुकीली नहीं थी।''

रिपोर्टर ने लिखा कि अपने लंबे चेहरे और मुसकराहट के साथ स्कॉट या आइटिशमेन नजर आते थे।

अभियान दल के सारे सदस्यों और एडमंड के परिवार के सदस्यों को बकिंघम पैलेस में आमंत्रित किया गया। जहाँ हंट और एडमंड को नाइट हुड की उपाधि से सम्मानित किया गया। तेनजिंग नोर्गे को जॉर्ज मेडल से सम्मानित किया गया। सभी पर्वतारोहियों को विशेष सम्मान पदक प्रदान किए गए। शेरपाओं के लिए भी पदक दिए जाने की घोषणा की गई। चार्ल्स इवांस ने अगले वर्ष टेंगबोचे मठ में जाकर शेरपाओं के बीच ऐसे पदकों का वितरण किया।

एडमंड को एक प्रकाशक ने एवरेस्ट अनुभव पर पुस्तक लिखने के पाँच हजार पाउंड अग्रिम देने की पेशकश की, जो बहुत बड़ी रकम थी। अगस्त में एडमंड घर लौटनेवाले थे, फिर लंदन लौटकर रॉयल फेस्टीवल हॉल में छह व्याख्यान देनेवाले थे। इसके बाद पूरी दुनिया में भ्रमण करते हुए व्याख्यान देने थे।

माँ के नाम खत में एडमंड ने लिखा—''क्या जिंदगी हो गई है, माँ! रेक्स को यहाँ पाकर बहुत अच्छा लगा। साथ ही जून और जिम्मी से मिल पाना भी सुखद रहा। बच्चे बहुत प्यारे हैं और मेरी उनसे दोस्ती हो चुकी है।''

नार्वीच में स्थित जून और जिम्मी का घर काफी व्यस्त हो गया था। दोनों लंदन में आयोजित होनेवाले पर्वतारोहियों के स्वागत समारोह में शामिल होने के लिए कार

चलाकर जाते थे। जून ऐसे आयोजनों का विस्तृत विवरण लिखकर माँ के पास भेजती थी। एडमंड और जॉर्ज लोए तीन दिन शांतिपूर्वक व्यतीत करने की उम्मीद लेकर विमान से 5 अगस्त, 1953 को सिडनी पहुँचे। मगर वहाँ भी धूमधाम से उनका नागरिक अभिनंदन किया गया और पत्रकारों ने उनका पीछा करना नहीं छोड़ा। पत्रकारों का अनुमान था कि नाइटहुड से सम्मानित अविवाहित एवरेस्ट विजेता को निश्चित रूप से एक पत्नी की जरूरत थी। इसी तरह के सवाल एडमंड से पूछे जाते थे।

ऑकलैंड पहुँचने के बाद अपने पुराने मित्र जिम और फिल रोज के सामने एडमंड ने दिल की बात रखते हुए कहा कि वह लुइस से शादी करना चाहते थे। फिल ने जब यह बात लुइस को बताई तो वह शादी करने के लिए तैयार हो गई।

तीन हफ्ते तक एडमंड और जॉर्ज लोए न्यूजीलैंड में घूम-घूमकर व्याख्यान देते रहे। प्रत्येक स्थान पर भीड़ उमड़ पड़ती थी। न्यूजीलैंड के प्रत्येक नागरिक को उनके ऊपर गर्व महसूस हो रहा था। 3 सितंबर, 1953 को सर एडमंड हिलेरी और लुइस रोज की शादी डायोसेशन स्कूल के चैपल में हो गई। उस दिन लुइस का तेईसवाँ जन्म दिन था। जॉर्ज लोए शादी में विवाहित जोड़े के बेस्ट मेन बने थे। जब वे चर्च से बाहर निकले तो न्यूजीलैंड अल्पाइन क्लब के सदस्यों ने बर्फ काटनेवाली कुल्हाड़ियों से बनाए गए तोरण से उनका स्वागत किया।

चर्च के बाहर प्रेस फोटोग्राफर और आम नागरिक उनका अभिनंदन करने के लिए जुटे हुए थे। उन्हें सैकड़ों बधाई संदेश प्राप्त हुए। उनमें एक टेलीग्राम तेनजिंग नोर्गे का था। इसमें लिखा था—''सुखद विवाह के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। आप दोनों को ईश्वर दीर्घायु बनाए। आपका एवरेस्ट का साथी—तेनजिंग।''

लुइस से विवाह कर एडमंड काफी खुश हुए थे। उन्होंने बाद में लिखा—''मैं जल्द ही समझ गया कि मुझे खुशकिस्मती से इतनी नेक पत्नी मिली है। लुइस अत्यंत मिलनसार और प्यारी है। वह अपने स्वतंत्र विचार रखती है। उसे घूमना और दोस्तों के बीच रहना अच्छा लगता है।''

न्यूजीलैंड अल्पाइन क्लब ने नेपाल सरकार से माउंट एवरेस्ट से पूरब की दिशा में स्थित वरुण घाटी में 1954 में अभियान शुरू करने की इजाजत ले ली। एडमंड को अभियान का नेता बनाया गया। पहले एडमंड इस अभियान के लिए तैयार नहीं हुए। उनका तर्क था कि पिछले चार सालों से पर्वतारोहण के लिए उन्हें घर से दूर रहना पड़ रहा है और उनकी अनुपस्थिति में रेक्स को मधुमक्खी पालन के कार्य में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मगर अंतत: एडमंड अभियान के लिए निकल पड़े।

इस अभियान के आरंभ में ही एडमंड जख्मी हो गए। चार्ल्स इवांस ने उनका उपचार किया और धीरे-धीरे उनकी हालत में सुधार हुआ। दस दिन के बाद वे चलने-

फिरने लगे। असल में वे अपने दल के पर्वतारोही जिम मैकफलैन का बचाव करने की कोश्शि में घायल हो गए थे। जिम एक खाई में गिरकर बुरी तरह घायल हो गए थे। एडमंड उनको लेकर न्यूजीलैंड लौट गए थे।

जिम को कई महीने तक अस्पताल में रहना पड़ा। उनके दोनों पैर बेकार हो गए। एडमंड ने मकालू पर्वतीय क्षेत्र में जिम के साहसिक प्रयत्नों की सराहना करते हुए कहा—''उन्होंने एक इंजीनियर के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वाह किया। उन्होंने स्वयं की पहचान मजबूत इरादेवाले पर्वतारोही की बनाई। वे एक बहादुर आदमी थे।''

एडमंड के घायल होने की खबर पाकर दुनिया भर में लोग चिंतित हो उठे थे। मगर एडमंड स्वस्थ हो गए और उन्होंने अपनी गलतियों का विश्लेषण किया। उन्होंने लिखा—''मुझे तुरंत अपनी गलती का एहसास हो गया था। मैंने जाँघ या पैर से रस्सी बाँधने की जगह छाती में रस्सी बाँध ली थी। रस्सी मेरे सीने को दबाती जा रही थी और मेरा दम घुटता गया था।''

न्यूजीलैंड में एडमंड वापस लुइस के पास पहुँच गए, जो चार महीने से अपने माता-पिता के साथ रह रही थी। अब हिलेरी दंपती को एक घर की जरूरत थी। रोज परिवार ने उन्हें रेमुरा इलाके में जमीन बेचने की पेशकश की। यह जगह एडमंड के पैतृक घर से अधिक दूर नहीं थी। उनका नया घर भी बन गया था।

एडमंड जहाँ रेक्स के साथ मधुमक्खी पालन करने में जुट गए, वहीं अपनी पहली पुस्तक 'हाई एडवेंचर' भी लिखने लगे। जब यह पुस्तक छपी तो हाथोहाथ बिकने लगी। नया घर बनाने लायक पैसा जुटता चला गया। अब एडमंड की आर्थिक चिंता दूर होने लगी थी।

दिसंबर 1954 में लुइस ने प्रथम संतान पीटर को जन्म दिया। इस दौरान जब जापान से एडमंड को व्याख्यान के लिए बुलाया गया तो उन्होंने पारिवारिक व्यस्तता की दुहाई देकर जाने से मना कर दिया। लुइस इस बात को समझ चुकी थी कि एक सार्वजनिक हस्ती होने के नाते एडमंड का ज्यादातर वक्त घूमते हुए गुजरनेवाला था। लुइस ने अपने पति के कार्यों को आसान बनाने में मदद करने का संकल्प ले लिया था।

□

हिम क्षेत्र में

4 जनवरी, 1958 को सर एडमंड हिलेरी न्यूजीलैंड के अभियान दल के साथ दक्षिणी-ध्रुव पर पहुँचे। 1912 में स्कॉट के पहुँचने के बाद एडमंड वहाँ पहुँचनेवाले पहले व्यक्ति थे। इतना ही नहीं, मोटर परिवहन से ध्रुव तक पहुँचनेवाले भी वे पहले व्यक्ति थे।

इस दल ने कॉमनवेल्थ ट्रांस अंटार्कटिक एक्सपिडिशन के तहत ब्रिटिश दल के लिए खाद्य एवं ईंधन डिपो की स्थापना की थी और फिर दक्षिणी ध्रुव की तरफ रवाना हुआ था। यह एक कठिन यात्रा थी। बर्फीली हवा और खतरनाक हिमनदों को पार करने के बाद दल वहाँ तक पहुँच पाया था। इस घटना को एडमंड के दृढ़ निश्चय के लिए खास तौर याद किया जाता है, चूँकि उन्होंने यह यात्रा ट्रांस-अंटार्कटिक एक्सपिडिशन से इजाजत लिये बगैर ही की थी। उनकी यह यात्रा अभियान से जुड़ी न्यूजीलैंड की कमेटी के निर्देशों के भी विपरीत थी।

जुलाई 1955 में न्यूजीलैंड अभियान दल का नेता चुने जाने के एक महीने बाद ही एडमंड ने अभियान के कमांडर ब्रिटिश अन्वेषक डॉ. विवियन फुक्स के साथ दक्षिणी-ध्रुव तक जाने का सुझाव प्रस्तुत किया था। इस समय न तो फुक्स ने किसी तरह का एतराज किया, न ही अभियान में न्यूजीलैंड की भागीदारी का समन्वय करनेवाली रोस की

कमेटी ने कोई विरोध किया था।

मगर 1957 में कई फोन कॉल्स और टेलीग्राम संदेश के जरिए एडमंड को निर्देश दिया कि वे फुक्स की अनुमति के बगैर ध्रुव की तरफ जाने की कोशिश न करें। कमेटी ने एडमंड को बार-बार रोकने का प्रयास किया। एडमंड को हैरानी हुई, मगर उन्होंने अपनी गतिविधियों को जारी रखने के लिए कमेटी की अनुमति की जरूरत महसूस नहीं की। इसीलिए उन्होंने कमेटी के निर्देशों को अपनी राह में बाधक नहीं बनने दिया।

एडमंड ने अपनी आत्मकथा 'नथिंग वेंचर नथिंग विन' में लिखा है—''मैंने अपना प्रयत्न इस तरह जारी रखा, मानो कमेटी के साथ मेरा संदेशों का आदान-प्रदान कभी हुआ ही नहीं था। मैं समझ चुका था कि मेरे लिए किसी की सहयोगी भूमिका अहमियत नहीं रखती थी। जब हम लोग अपने दायित्व का पालन अच्छी तरह कर चुके थे। तब मैं समझ नहीं पा रहा था कि मुझे अपने स्तर पर साहसिक कदम उठाने से क्यों रोका जा रहा था?''

एडमंड के मन में ध्रुव तक पहुँचने का विचार उसी समय से था, जब 14 अक्तूबर 1957 को उनका दल स्कॉट बेस में आहार एवं ईंधन डिपो स्थापित करने के लिए रवाना हुआ था। नवंबर में जब दल डिपो 480 के पास पहुँचा, उस समय एडमंड को रोस की कमेटी का एक संदेश मिला। इस संदेश में बताया गया था कि कमेटी की बैठक आयोजित हुई थी, जिसमें निर्णय किया गया था कि लंदन से इजाजत मिलने के बाद कमेटी ध्रुव के अभियान का पूरा समर्थन करेगी। बाद में एडमंड ने दावा किया कि उन्होंने इस संदेश का गलत अर्थ लगा लिया था कि उन्हें अभियान जारी रखने की इजाजत मिल चुकी है।

डिपो 480 तक पहुँचने के बाद एडमंड ने कमेटी को सूचित किया कि वे आखिरी डिपो 700 की स्थापना करने के बाद दक्षिण की तरफ फुक्स की दिशा में रवाना होनेवाले थे। अगर फुक्स को अनेक वाहनों की जरूरत महसूस नहीं होगी तो वह उन वाहनों के जरिए दक्षिणी-ध्रुव तक पहुँचेंगे।

कमेटी ने उन्हें निर्देश दिया कि वे डिपो को छोड़कर कहीं नहीं जाएँ। दल डिपो 700 की तरफ पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बढ़ता रहा। जब दल 15 दिसंबर को वहाँ पहुँचा तो कमेटी का संदेश मिला कि फुक्स क्रिसमस और नववर्ष के आसपास ध्रुव तक पहुँचेंगे। जब डिपो के निर्माण का काम पूरा होने लगा, तब एडमंड ने कमेटी और फुक्स को संदेश भेजा कि वे हिमनदोंवाले अंचल में रास्ता बनाने के लिए दक्षिण की तरफ बढ़ना चाहते हैं।

20 दिसंबर को एडमंड, मूरे एलीस, पीटर मूलग्रियू, जिम बेट्स और डेटेक राइट दक्षिणी-ध्रुव की तरफ रवाना हो गए। उन्होंने 20 दिसंबर की रात 8.30 बजे यात्रा शुरू

की थी और जब 21 दिसंबर की सुबह 6 बजे वे रुके तो कमेटी का संदेश मिला कि उन्हें डिपो 700 में ही ठहरना चाहिए। एडमंड ने इस निर्देश की परवाह नहीं की, लेकिन उन्होंने फुक्स को सूचित कर दिया कि अगर फुक्स उन्हें टोकने की कोशिश करेंगे तो ध्रुव तक पहुँचने का दल का सपना अधूरा रह जाएगा।

24 दिसंबर को दल को फुक्स का क्रिसमस संदेश मिला, जिसमें उन्होंने ध्रुव तक पहुँचने के अभियान को जारी रखने की इजाजत दे दी थी। दक्षिण की दिशा में बढ़ते हुए एडमंड ने यात्रा की प्रगति की सूचना भेजी। फिर और आगे बढ़ने से पहले एक दिन रुके। 28 दिसंबर को अचानक फुक्स ने संदेश भेजा कि उन्हें ईंधन की किल्लत हो सकती है, इसीलिए एडमंड को ध्रुव तक पहुँचने का इरादा छोड़कर एक अन्य डिपो की स्थापना करनी चाहिए। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी।

एडमंड ने जवाब दिया कि एक और डिपो की स्थापना करने के लिए उनके पास पर्याप्त खाद्य-पदार्थ और ईंधन मौजूद नहीं है, न ही वे डिपो 700 तक वापस लौट सकते हैं और फुक्स के आगमन की राह देख सकते हैं। एडमंड ने डिपो 700 तक अतिरिक्त ईंधन पहुँचाने की व्यवस्था कर दी और अपनी यात्रा जारी रखी। 14 दिनों तक बर्फीली हवा और हिमनदों का सामना करते हुए अभियान दल आखिरकार 3 जनवरी, 1958 की रात 8 बजे दक्षिणी ध्रुव तक पहुँचने में सफल हो गया। वे लोग बुरी तरह थक चुके थे। स्कॉट बेस से रवाना होने के बाद उन्हें कुछ घंटों तक ही सोने की इजाजत मिल पाई थी।

उन्होंने ध्रुव तक पहुँचने का कूट संदेश भेज दिया और सो गए, उन्होंने यात्रा के अंतिम चरण को अगले दिन पूरा किया। वे दोपहर 12.30 बजे साउथ पोल स्टेशन तक पहुँच गए। जिस समय दक्षिण-ध्रुव पर पहुँचने की उपलब्धि के लिए दल को बधाई मिल रही थी, उस समय विदेश में मीडिया ने सवाल पूछना शुरू कर दिया था कि कहीं एडमंड के निर्णय की वजह से पूरे अभियान के लिए खतरा तो नहीं पैदा हो गया।

मीडिया में एडमंड और फुक्स के बीच मतभेद की खबरें भी प्रचारित हो रही थीं। लेकिन 20 जनवरी को जब दक्षिणी ध्रुव पर फुक्स और एडमंड की मुलाकात हुई तो दोनों के बीच किसी तरह का मतभेद नजर नहीं आया। फुक्स ने मिलते ही कहा, ''एडमंड, तुमसे मिलकर बहुत खुशी हो रही है।'' बाद में भी अभियान को सफल बनाने के लिए फुक्स ने एडमंड से मदद ली। 2003 में 'टाइम' पत्रिका को दिए गए साक्षात्कार में एडमंड ने अंटार्कटिका के अपने अनुभव की तुलना एवरेस्ट अभियान के साथ की।

एडमंड ने कहा—''नहीं, यह एवरेस्ट पर चढ़ाई की तरह मुश्किल काम नहीं था। दोनों में कई तरह की भिन्नताएँ थीं। बर्फ की समस्या एक जैसी थी, मगर एवरेस्ट जैसे ऊँचे पर्वत पर जान का जोखिम कहीं ज्यादा था, वहाँ बर्फीली आँधी का खतरा था या

पर्वत से नीचे गिर जाने या हिमनद में बह जाने का खतरा बना हुआ था। अंटार्कटिका में तापमान अत्यंत ठंडा था, काफी दूरी थी और यह लंबी यात्रा थी। दक्षिणी ध्रुव की यात्रा के दौरान हम लगातार तनाव झेल रहे थे। यह दीर्घकालीन तनाव था। पहाड़ के ऊपर थोड़े समय के लिए ही तनाव होता है।''

□

बादलों के गाँव में स्कूल

इंडियन अल्युमिनियम कंपनी की तरफ से बनाया गया घर बहुत छोटा था। उसका ढाँचा बक्से की तरह था। छत और दीवार का निर्माण अल्युमिनियम से ही किया गया था। छह वर्ग मीटर की दो कक्षाएँ थीं। यह घर आज भी अपनी जगह पर है। खुमजुंग के नीचे घाटी में बनाया गया यह सबसे छोटा घर है।

एडमंड ने लिखा है, ''छह दिनों तक हम जी-जान लगाकर काम करते रहे, पत्थर की बुनियाद बनाई गई और लकड़ी का फर्श बनाया गया, दीवारों का निर्माण किया गया, दरवाजों और खिड़कियों को जोड़ा गया, पूरे ढाँचे को बुनियाद के साथ जोड़ने का काम किया गया। असेंबली इंस्ट्रक्शन का ठीक से पालन नहीं कर पाने की वजह से हमारा काम अधिक कठिन हो गया।''

समुद्र तल ने 3800 मीटर की ऊँचाई पर खुमजुंग का स्कूल संभवत: दुनिया में सर्वाधिक ऊँचाई पर निर्मित स्कूल है। स्कूल निर्माण टीम में डेसमंड डॉयग, वाली रोमेनस, भानु बनर्जी और एडमंड शामिल थे। इसके अलावा खुमजुंग अैर कुंडे के ग्रामीण हर संभव सहायता करने के लिए मौजूद थे। साहबों को प्रतिदिन अलग-अलग परिवार में ठहराया जाता था और उनकी अच्छी तरह खातिरदारी की जाती थी। वे लोग (मदिरा) पीने के कारण सवेरे खुमारी भरी आँखों के साथ निर्माण कार्य करने के लिए पहुँचते थे। शेरपा लोगों से उनकी अंतरंगता बढ़ती गई।

खुंबू से होकर एक दशक से पर्वतारोहियों के कई दल गुजरते रहे थे, मगर ऐसा पहली बार हुआ, जब किसी पर्वतारोही दल ने शेरपा समुदाय की सहायता करने के लिए कदम उठाया; 11 जून 1961 को स्कूल का उद्घाटन एक ऐतिहासिक अवसर था।

मानसून की बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी, मगर बगैर किसी रुकावट के उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। एडमंड ने फीता काटा और फिर टेम दोरजी ने कक्षा का दरवाजा खोल दिया। उपस्थित लोग तालियाँ बजाने लगे। मठ के वाद्ययंत्र को जोर-जोर से बजाया गया। टेंगबोचे मठ के नए प्रधान लामा ने मंत्र जपते हुए नवनिर्मित स्कूल भवन में प्रवेश किया। उन्होंने दोनों कक्षाओं को आशीर्वाद दिया और नेपाल के राजा की तसवीर के ऊपर एक पवित्र धागा बाँध दिया।

इस अवसर पर लामाओं ने अनुष्ठान किया और कतार में खड़े होकर शेरपाओं ने आशीर्वाद लिया। अगली सुबह स्कूल बनानेवाली टीम मित्रों से विदा लेकर रवाना हो गई। जाने से पहले टीम ने स्कूल का दौरा किया, जहाँ टेम दोरजी बच्चों को पढ़ा रहे थे। चमकीली आँखोंवाले बच्चे लकड़ी की फर्श पर बैठकर खड़िया से स्लेट पर नेपाली वर्णमाला लिख रहे थे। बाहर भले ही बारिश हो रही थी, मगर कक्षा के अंदर किसी तरह की परेशानी महसूस नहीं हो रही थी।

टीम के सदस्य ऊपर की तरफ चढ़ते गए और गाँव के ऊपरी मेंड़ पर रुक गए। एडमंड ने लिखा है—''यहाँ से हम पीछे मुड़कर खुमजुंग के घरों को देख सकते थे। हमें आलू के खेत और गाँव का सारा दृश्य दिखाई दे रहा था। हमारे स्कूल के बच्चे बरामदे में खड़े होकर हमारी तरफ देखते हुए हाथ हिला रहे थे।''

एडमंड के ऑकलैंड स्थित घर में उस तसवीर को सँभालकर रखा गया है, जिसमें पैंतालीस बच्चे अपने नए शिक्षक के साथ स्कूल के बरामदे में मुसकराते हुए खड़े हैं। एडमंड अब नामचे बाजार की तरफ बढ़ते चले गए।

हालाँकि शेरपा लोगों के अनुरोध पर स्कूल का निर्माण किया गया था, मगर गाँव के बच्चों को अभी भी पारिवारिक दायित्वों में हाथ बँटाना पड़ रहा था। वे याक चराते थे, गाँव के ऊपरी हिस्से में स्थित झरने से पानी भरकर लाते थे, आलू की खेती में

माता-पिता के साथ हाथ बँटाते थे। ये बच्चे घरेलू कार्यों में काफी व्यस्त रहते थे, लेकिन इसके बावजूद रोज कई घंटे पैदल चलकर स्कूल पहुँचते थे।

ऐसे कई शेरपा थे, जो भविष्य में अपने बच्चों को कुली के रूप में काम करते हुए नहीं देखना चाहते थे। एडमंड को उम्मीद थी कि शिक्षा का प्रचार-प्रसार होने पर शेरपा लोगों की खेती में सुधार होगा और स्वास्थ्य के प्रति भी वे जागरूक हो पाएँगे। जब छोटे चेचक, मलेरिया और टीबी से होनेवाली मौतों को नियंत्रित किया जाएगा और स्त्रियाँ सुरक्षित प्रसव कर पाएँगी तो स्वाभाविक रूप से शेरपाओं की आबादी भी बढ़ेगी। अगर आबादी में वृद्धि होगी तो खाद्य-पदार्थों की माँग भी बढ़ती जाएगी। लोगों को नई विधियाँ सिखाना आसान बात नहीं है। जब तक लोग पढ़ना-लिखना सीख नहीं जाते, जब तक उनकी जीवनशैली में परिवर्तन कर पाना संभव नहीं है।

घाटी के दूसरे शेरपा समुदायों के बीच टेम दोरजी की योग्यता की प्रसिद्धि फैलती गई कि वे किस तरह बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखा रहे थे। स्कूल की प्रगति की सूचना एडमंड को न्यूजीलैंड में मिलती रही थी, वहीं दूसरे गाँवों के लोग भी उनसे स्कूल खोलने का अनुरोध करने लगे थे।

एडमंड के लिए इस तरह की स्थिति अप्रत्याशित और चुनौतीपूर्ण थी। एडमंड को किसी तरह राशि का प्रबंध करना था। उनके अमेरिकी प्रायोजक फील्ड इंटरप्राइजेज ने खुमजुंग स्कूल भवन के लिए निर्माण-सामग्री पहुँचाने और शिक्षक के वेतन मद में 9 हजार अमेरिकी डॉलर मुहैया करवाए थे। उस प्रतिष्ठान ने आगे भी मदद जारी रखने का वादा किया था। अपनी इस वित्तीय सहायता के बदले फील्ड इंटरप्राइजेज चाहता था कि एडमंड शिकागो लौटकर एक साल तक वर्ल्ड बुक इन्साइक्लोपीडिया के लिए व्याख्यान देने का काम करें।

एडमंड ने ऑकलैंड से शिकागो के प्रथम श्रेणी के टिकट को बदलकर समूचे परिवार के लिए इकोनॉमी क्लास का वर्ल्ड टूर का टिकट ले लिया। 1961 में नववर्ष की पूर्व संध्या पर समूचा हिलेरी परिवार शिकागो पहुँच गया। एक साथ घूमने के लिए निकलना सबके लिए प्रसन्नता की बात थी और लुइस ने इसे अपने जीवन का सर्वाधिक सुखद अनुभव बताया था।

एक साल तक बाहर रहने के अनुभव पर आधारित लुइस की पुस्तक 'कीप काम इफ यू कैन' में पारिवारिक जीवन का दिलचस्प वर्णन किया गया है। एडमंड को जहाँ घूमते हुए आनंद आता था, वहीं उनके भीतर गजब की संगठन क्षमता भी थी। बच्चों के साथ माता-पिता को बहुत खुशी मिल रही थी। पीटर सात वर्ष का था, वहीं सारा पाँच वर्ष की और बेलिंडा तीन वर्ष की थी।

यात्रा-वृत्तांत का वर्णन लुइस ने विस्तारपूर्वक इस पुस्तक में किया है। अमेरिकी

सुपर मार्केट के रोचक अनुभवों के बारे में लुइस ने पुस्तक में लिखा है। एक मशहूर आदमी की पत्नी होने के कारण उन्हें जिस तरह के अनुभवों से होकर गुजरना पड़ा, उसका वर्णन भी उन्होंने इस पुस्तक में किया है।

लुइस ने पुस्तक के शुरुआती अध्याय में पर्वतारोहियों से शादी करनेवाली पत्नियों के लिए कुछ सुझाव लिखे हैं—''अगर आप पर्वतारोही से शादी करना चाहती हैं तो पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लें, उसके बाद ही हामी भरें। क्या आप जाड़े या बारिश के दिनों में भी सवेरे पाँच बजे उठने के लिए तैयार हैं? क्या आप तीन छोटे-छोटे बच्चों के साथ दो महीने तक टेंट के अंदर गुजारा कर सकती हैं? क्या आप पति की अनुपस्थिति में लंबे समय तक अपने बूते रह सकती हैं? वैसे मैं आपको बताना चाहूँगी कि शादी के लिए हाँ कहते समय मुझे इन बातों को लेकर कोई परेशानी नहीं हुई थी। दस साल गुजर जाने के बाद मैं इस तरह की जीवन शैली की आदी हो चुकी हूँ। अब मैं जीवन की छोटी-मोटी समस्याओं का समाधान आसानी से ढूँढ़ लेती हूँ।''

अमेरिका में शुरुआती छह महीने की अवधि में एडमंड को हर सप्ताह शिकागो से बाहर जाना पड़ता था। उन्होंने 80 शहरों में 106 व्याख्यान दिए, वर्ल्ड बुक के 17000 कर्मचारियों से हाथ मिलाए और टीवी, रेडियो तथा प्रिंट मीडिया को अनगिनत इंटरव्यू दिए।

एडमंड के प्रदर्शन से फील्ड इंटरप्राइजेज को प्रसन्नता हुई। उसी साल की शुरुआत में एडमंड ने एक और महत्त्वपूर्ण कारोबारी रिश्ता कायम किया। सीयर्स रोबक ऐंड कंपनी ने उन्हें कैंप उपकरण के विशेषज्ञ के रूप में खेल परामर्शक मंडली में शामिल कर लिया। उनका यह संबंध पैंतीस साल से भी अधिक समय तक कायम रहा। यही वजह थी कि हिलेरी परिवार को रहने के लिए हमेशा उम्दा किस्म का टेंट मिल जाता था।

उत्पाद के परीक्षण की जिम्मेदारी को एडमंड गंभीरतापूर्वक स्वीकार करते थे। लुइस ने लिखा है कि एक बार हिमालय की यात्रा के दौरान सबेरे जागने पर उन्होंने टेंट के एक हिस्से को गायब पाया। बाद में पता चला कि एडमंड ने गुणवत्ता में सुधार की सलाह देते हुए टेंट के टुकड़े को काटकर सीयर्स रोबक के पास भेज दिया था।

जुलाई 1962 में हिलेरी दंपती सड़क मार्ग से पूरे अमेरिका की सैर पर निकले। वे सेन-फ्रांसिस्को से होकर अलास्का के रास्ते वापस शिकागो पहुँचनेवाले थे। यह महज पारिवारिक भ्रमण नहीं था, इसे अमेरिकी कृषि मंत्रालय की वन सेवा की संरक्षण शिक्षा शाखा के सहयोग से आयोजित किया गया था।

शाखा के प्रमुख डॉ. मैक्यू ब्रेनान अंटार्कटिका में समय गुजार चुके थे और भ्रमण में अपने परिवार को लेकर शामिल हुए थे। वे देश भर में वन सेवा कैंपों में रुकते थे।

एडमंड पार्कों को पर्यटकों के लिए उपयोगी बताते थे। अमेरिका विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए एडमंड की सहायता चाहता था, इसीलिए रास्ते में जगह-जगह रुककर उन्हें तसवीरें खिंचवानी पड़ती थीं और इंटरव्यू देने पड़ते थे। इस दौरान एडमंड सीचर्स रोबक कैंपिंग उपकरणों को भी प्रचारित कर रहे थे। उन्होंने कैंपर ट्रेलर को अपने वाहन के पीछे लटका लिया था।

इस भ्रमण के दौरान होनेवाली दिक्कतों पर लुइस ने लिखा था। पहले दिन ही उन्हें पता चला कि एक नक्शा गायब था। अगर आप एक मशहूर पर्वतारोही हैं तो आप कभी अपना रास्ता भूलने की गलती नहीं कर सकते, क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगे तो कोई भी आपको माफ नहीं करेगा।

सभी ने घुड़सवारी का आनंद उठाया। थक जाने के बावजूद एडमंड को कई इंटरव्यू देने पड़े। उन्होंने बाद में लिखा—''मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि इस तरह की बातें अखबारों में अगले दिन छपेगी। उन्होंने लिखा था—''उम्रदराज पर्वतारोही थका-हारा होने के बावजूद परिवार के साथ छुट्टी मनाने निकला है!''

एडमंड ने इस भ्रमण के बारे में वाशिंगटन में मौजूद जॉन क्लेडन को खत में लिखा था—''गरम रेगिस्तान में सड़क मार्ग से 460 मील की दूरी तय करने के बाद किसी को भी थकान का अनुभव हो सकता है, जबकि टी वी वाले एक-एक पल को कैमरे में कैद करते रहे। कल मैंने दो रेडियो स्टेशनों और तीन अखबारों को इंटरव्यू दिए। उस समय मैं आगे की यात्रा के लिए सामान भी बाँध रहा था। हमने आधा नाश्ता ही किया था और उन्होंने सवाल पूछना शुरू कर दिया।''

ऐसे हालात में जहाँ बीच-बीच में एडमंड नाराज हो उठते थे, वहीं लुइस को भी झुँझलाहट होने लगती थी। एडमंड ने बताया था कि भड़काए जाने पर लुइस काफी नाराज हो जाती थी। अगर दोनों में कोई झड़प होती भी थी तो जल्दी सुलह हो जाती थी।

एडमंड जब सीटी बजा रहे होते थे तो उनके परिवार के सदस्यों को उनकी खुशी का पता चल जाता था। वे रात में टेंट में बच्चों को अपनी माँ की तरह रोचक कहानियाँ सुनाया करते थे। बाद में एडमंड ने लिखा—''सारा श्रेय लुइस को दिया जाना चाहिए। वे हम लोगों को एक कामयाब टीम की तरह आगे लेकर जा रही थी।''

एडमंड हिमालय की परियोजनाओं पर भी गंभीरता के साथ पहल कर रहे थे। उन्होंने जॉन क्लेडन को पत्र लिखकर अनुरोध किया था कि वह नेपाल में कैंप उपकरणों, आहार, मेडिकल, निर्माण सामग्री, वस्त्र, रेडियो, फोटोग्राफिक सामग्री आदि पर लगनेवाले सीमा-शुल्क को हटाने के लिए प्रयत्न करें।

मई 1962 में न्यूयॉर्क टाइम्स ने रिपोर्ट प्रकाशित की कि एडमंड शेरपाओं की शिक्षा के लिए पंचवर्षीय योजना शुरू कर रहे हैं। वित्त जुटाने में एडमंड को सफलता मिलने लगी थी। विश्व बैंक इन्साइक्लोपीडिया 50 हजार डॉलर उपलब्ध कराने के लिए तैयार हो गया था। पाँच सालों तक स्कूलों का संचालन करने के लिए इतनी रकम पर्याप्त थी। उन्होंने शेरपाओं के बीच चिकित्सा सेवा शुरू करने के लिए अनुदान की माँग भी की थी।

हिमालय माउंटीनियरिंग इंस्टीट्यूट के स्नातक विद्यार्थियों के बीच पुरस्कार वितरित करने के लिए एडमंड को दार्जिलिंग बुलाया गया। वहाँ वे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ गए। तेनजिंग नोर्गे ने गर्मजोशी के साथ एवरेस्ट के सहचर का स्वागत किया। बाद में लुइस ने लिखा—''तेनजिंग कुरता पहने हुए थे और अत्यंत प्रभावशाली लग रहे थे।'' इस अवसर पर टेम दोर्जी अपने साथ तीन शिक्षकों-उम्मीदवारों को एडमंड से मिलवाने लाए थे। एडमंड को उन तीनों का इंटरव्यू लेना था। अगले साल बननेवाले स्कूलों में दो शिक्षकों को नियुक्त किया जाना था।

सन् 1963 में जैसे-जैसे शेरपा समुदाय के कल्याण के लिए एडमंड गहराई के साथ जुड़ते गए, वैसे-वैसे उनके मन में छोटे समुदायों के हित में काम करने का इरादा मजबूत होता गया। यही उनके जीवन का केंद्रबिंदु भी बननेवाला था। एडमंड ने लिखा है—''मैं काफी वर्षों से भारत, नेपाल और अन्य स्थानों पर विदेशी सहायता कर्यक्रमों को देखता रहा हूँ। जहाँ पर समस्या विकराल होती है, वहाँ बड़े पैमाने पर मदद मुहैया कराने की जरूरत होती है। ऐसे कार्यक्रमों से स्थानीय लोगों के मन में किसी तरह का भाईचारा पैदा नहीं होता। अकसर भ्रष्टाचार, भेदभाव और दूसरी बुराइयाँ ही सामने आती हैं। ऐसा लगता है कि भाईचारे की अहमियत को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया जाता है। अगर लोगों के हित में कोई काम किया गया है तो हम उनसे हमेशा कृतज्ञ बने रहने की उम्मीद नहीं कर सकते। लेन-देन का रिश्ता हमेशा संवेदनशील होता है और जोखिम भरा भी, और ज्यादातर सहायता कार्यक्रमों के साथ देनेवाले का स्वार्थ जुड़ा

रहता है। असली बात यही है कि पैसे के बल पर भाईचारे को कायम नहीं किया जा सकता। इसे तो मानवीय संबंधों के जरिए ही विकसित किया जा सकता है।''

अब कई दशकों तक एडमंड को वित्त प्रबंध की चिंता करनी थी, मगर 1963 से उनके साथ इस अभियान में लोग जुड़ने लगे थे—उनमें शेरपा थे और पर्यटक भी, जिनकी दक्षता, उत्साह, परिश्रम और प्रतिबद्धता से परियोजनाएँ साकार होने लगी थीं। न्यूजीलैंड, कनाडा और दूसरे देशों के पर्वतारोही, डॉक्टर, नर्सें, इंजीनियर, भवन-निर्माता और जोशीले स्वयंसेवक एडमंड की सहायता करने लगे थे। वे लोग स्कूलों का निर्माण, क्लीनिक का संचालन, पुलों की मरम्मत, स्कूलों में अध्यापन और योजनाओं के विविध कार्यों में मदद करने के लिए आ रहे थे।

वे लोग अपने-अपने समुदायों में चंदे जुटाते थे। उनमें से कई हर साल आने लगे थे और शेरपा मित्रों में उनके अंतरंग संबंध बन गए थे। वैसे मदद की इच्छा रखनेवाला हर व्यक्ति अपने सामान्य जीवन को छोड़कर नेपाल में एडमंड के साथ कई महीनों का वक्त गुजारने के लिए नहीं जा सकता था। वर्ल्ड बुक इन्साइक्लोपीडिया के 50 हजार कर्मचारी थे, जो एडमंड के व्याख्यानों को उनकी अमेरिका यात्रा के दौरान सुन चुके थे और जो उदारता के साथ वित्तीय सहायता प्रदान करते थे। एडमंड को उम्मीद थी कि स्कूलों का संचालन करने के लिए अगले तीन वर्षों तक पैसे की किल्लत नहीं होनेवाली है। एडमंड ने लिखा—''जो लोग अमेरिकी लोगों की उदारता का मजाक उड़ाते हुए कहते हैं कि उनके पास काफी पैसा है, वे आम अमरीकियों के बारे में ठीक से नहीं जानते। उनमें दूसरी कमजोरियाँ भले ही हो सकती हैं, मगर किसी कल्याणकारी उद्देश्य के प्रति उनके मन में हमदर्दी होती है और वित्तीय मदद करते हुए वे हिचकिचाते नहीं हैं।''

स्कूल की परियोजना के लिए वित्त जुटाना उनके लिए चुनौतीपूर्ण काम नहीं था। एडमंड इस क्षेत्र में काफी कुछ करना चाहते थे। वे थामी और पंगबोचे में नए स्कूल-भवनों का निर्माण करना चाहते थे। इन दोनों स्थानों तक खुमजुंग से दिन भर पैदल चलकर पहुँचा जा सकता था। वह केंद्र और खुमजुंग तक पेयजल आपूर्ति के लिए पाइप लाइन बिछाना चाहते थे और छह महीने तक चलनेवाले स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना करना चाहते थे।

डॉक्टर फिलिप हगटन और डॉक्टर माइक गिल चिकित्सकीय सेवा मुहैया कराने के साथ-साथ कार्यक्रम का फिल्मांकन सीयर्स रोबक के लिए कर रहे थे। उस कार्यक्रम का प्रसारण बीबीसी टीवी पर होनेवाला था और उम्मीद की जा रही थी कि उससे दूसरे लोग भी शेरपाओं की मदद के लिए आगे आनेवाले थे। निर्माण कार्य के साथ-साथ एडमंड अपने साथ आए पर्वतारोहियों को खुंबू गाँव के ऊपर दो ऐसी चोटियों पर भेजना

चाहते थे, जहाँ अभी तक कोई नहीं गया था। तावेचे (6367 मीटर 20888 फीट) और कंटेगा (6779 मीटर 22,240 फीट)।

उनके अभियान दल में न्यूजीलैंड के चार सदस्य—मूरे इलीस, माइक गिल, फिल हगटन और जिम विलसन शामिल थे। दो अमेरिकी पर्वतारोही टॉम फ्रॉस्ट और डेव डोरनेन और 1960 के अभियान के सितारे डेसमंड डॉयग और भानु बनर्जी भी अभियान में शामिल थे।

एडमंड चौनरीकर्का में एक हवाई पट्टी बनाने की संभावना पर विचार कर रहे थे। वहाँ तक खुमजुंग से दिन भर पैदल चलकर पहुँचा जा सकता था। उन्हें याद आया कि मिंगबो में अस्थायी हवाई पट्टी बनाने से काफी सहायता मिली थी। एडमंड ने एक अमेरिकी एयरलाइंस से इस अभियान के लिए एक विमान मुहैया करने का अनुरोध किया। मगर उनके अनुरोध को ठुकरा दिया गया।

12 मार्च, 1963 को 200 पोर्टरों के साथ सामान लादकर अभियान दल खुंबू की तरफ रवाना हुआ। दो सप्ताह बाद वे मेंड़ पर चढ़कर खुमजुंग तक पहुँच गए। स्कूल भवन को दमकते हुए पाकर एडमंड को अपार प्रसन्नता हुई। स्कूल का संचालन सही तरीके से किया जा रहा था। बच्चे नेपाली और अंग्रेजी पढ़ना-लिखना सीख गए थे—उनमें ऐसे बच्चे भी थे, जो पहले केवल शेरपा भाषा बोलना ही जानते थे।

मारक गिल ने बाद में बताया कि शुरू के कुछ संदेहवादियों ने कहा था कि यह स्कूल याक का तबेला बनकर रह जाएगा, मगर वैसा हुआ नहीं। चाक को स्कूल परिसर से दूर ही रखा जाता था। ग्रामीणों के मन में शिक्षा के प्रति गहरा लगाव पैदा हो गया था।

अभियान दल ने सीयर्स रोचक के नीले-पीले टेंट लगाए और काम शुरू करने के लिए तत्पर हो उठे। मगर सबसे पहले उन्हें छोटे चेचक से निपटना था, जो एक शेरपा पोर्टर से संक्रमण के कारण हो गई थी। वह पोर्टर पहले अमेरिकी अभियान दल के साथ काम करने के लिए काठमांडू गया था। वहीं उसे यह रोग हो गया। रास्ते में उसकी तबीयत काफी बिगड़ गई और दूसरे शेरपा पोर्टरों ने उसकी सहायता की। जब उसकी मौत हुई, उस समय उसके संपर्क में आनेवाले सभी पोर्टरों को यह रोग हो चुका था।

शेरपा लोग चिता में शव को जलाकर अंत्येष्टि करते हैं। मगर धुएँ में रोग के फैलने के डर से उन्होंने मृतक शेरपा के शव को नदी में बहा दिया। एडमंड के दल के पास कुछ टीके मौजूद थे, मगर उन्होंने बड़े पैमाने पर टीकाकरण अभियान चलाने के लिए अधिक मात्रा में टीके मँगवाए। एडमंड के दल ने टीकाकरण अभियान चलाया ओर शेरपाओं को टीका देने के लिए प्रशिक्षित किया। उन्होंने लोगों की सहायता करने के लिए आसपास के कई गाँवों की यात्रा की।

यह रोग महामारी की तरह फैला था और कम-से-कम पच्चीस लोगों की मौत हो

गई थी। एडमंड के दल ने सात हजार से अधिक लोगों को टीके दिए। बाद में एडमंड ने लिखा—''हमने जितने भी कार्यक्रम चलाए—स्कूल, जलापूर्ति, स्वास्थ्य केंद्र आदि, इनमें से टीकाकरण अभियान की सराहना सबसे ज्यादा की गई, जबकि यह अभियान मेरी मूल योजना का हिस्सा नहीं था।''

ऐसे कई गाँव हैं, जहाँ खुमजुंग से दिन भर पैदल चलकर पहुँचा जा सकता है। तीन महीने के अपने अभियान के दौरान एडमंड के दल के सदस्य इन सभी गाँवों में गए, स्थानीय लोगों से मुलाकात की, एक साथ कई कार्यक्रमों को जारी रखा और एक व्यस्त दिन में थामी में नाश्ते से पहले ही दो सौ लोगों को टीके लगाए।

मुरे इलीस को खुमजुंग स्कूल की छत की मरम्मत की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, जो हिमपात की वजह से क्षतिग्रस्त हो गई थी। फिर जलापूर्ति की व्यवस्था करनी थी। शेरपा गाँव आलू के खेतों के पास बसे हुए हैं और पानी लाने के लिए उन्हें कम-से-कम एक घंटे चढ़कर ऊपर जाना पड़ता था। महिलाएँ और बच्चे लकड़ी के बड़े पात्र लेकर निकटतम जलस्रोत के पास जाते थे और कम-से-कम चालीस किलो वजन उठाकर घर लौटते थे।

एडमंड ने पाइप लाइन बिछाकर जलापूर्ति की व्यवस्था बहाल करने में सहायता की। जलस्रोत के साथ पाइप को जोड़कर गाँववासियों तक पानी पहुँचाने की व्यवस्था की गई। अब एडमंड को पांगबोचे के लोगों से मिलना था, जिन्होंने स्कूल बनाने का अनुरोध किया था। स्कूल के लिए एक जगह की खोज करनी थी। फिर निर्माण सामग्री और स्थानीय श्रमिकों की व्यवस्था करनी थी। इसीलिए 1 अप्रैल को एडमंड डेसमंड डॉयग और मूरे इलीज के साथ रवाना हो गए। उस समय हिमपात हो रहा था और टेंगबोचे की तरफ जानेवाले पहाड़ी रास्ते पर वे सावधानीपूर्वक आगे बढ़ रहे थे। प्रमुख लामा की नई अतिथिशाला देखने के बाद वे पांगबोचे गाँव के बुजुर्गों से मिलने गए। एक स्थान एडमंड को पसंद नहीं आया, मगर दूसरा स्थान पसंद आ गया।

एडमंड ने उस प्रसंग को याद करते हुए लिखा है—''मैंने तय किया था कि जमीन खरीदकर मैं स्कूल-निर्माण के लिए वापस जमीन गाँव को दान कर दूँगा। बदले में गाँववासियों को आश्वस्त करना पड़ेगा कि वे लोग उस स्थान की घास-फूस साफ करेंगे। पत्थर और लकड़ी जुटाने में सहायता करेंगे। बढ़ई, मिस्त्री आदि की नियुक्ति हम लोग करेंगे। बुजुर्गों ने प्रसन्नतापूर्वक इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।'' सहयोग के इसी अंदाज में बाद में एडमंड ने कई योजनाओं को लागू किया।

कार्य की प्रगति तेजी से नहीं हो पा रही थी। श्रमिक कार्य के बदले आलू और याक की माँग कर रहे थे। हताश होकर एडमंड ने टवाचे पर चढ़ रहे मूरे इलीज, जिम विलसन, माइक गिक, डेव डोरनान और टॉम क्रॉस्ट को अपने पास बुला लिया। आखिरकार

स्कूल का निर्माण-कार्य पूरा हो गया। पत्थर की दीवारें बनाई गई थीं और लकड़ी से फर्श का निर्माण किया गया था। अल्युमिनियम की छत बनाई गई थी। खुंबू में यह अपने किस्म का पहला घर था। 29 अप्रैल को स्कूल का उद्घाटन किया गया और चौवन बच्चों को टेंगबोचे के प्रमुख लामा ने इस अवसर पर आशीर्वाद दिया।

एडमंड ने एक और घर किराए पर लेकर उसकी मरम्मत करवाई, जिसे नए शिक्षक का आवास बनाया गया। पड़ोसी गाँव फोर्टसे के बच्चों के लिए साप्ताहिक छात्रावास की व्यवस्था की गई। इस तरह एक और योजना सफलतापूर्वक पूरी हो चुकी थी। टावेचे अभियान शुरू करने से पहले जो बौद्ध अनुष्ठान आयोजित किया गया—यह वही चोटी थी, जो पंगबोचे के ऊपर थी और गाँववासी उसकी उपासना करते थे, उससे जिम विलसन काफी प्रभावित हुए, मगर यह अनुष्ठान उनके अभियान की सफलता के लिए नहीं, बल्कि उनकी सुरक्षित वापसी के लिए आयोजित किया गया था।

टावेचे को पंगबोचे गोंपा में एक नकाबधारी डरावनी आकृति के रूप में चित्रित किया गया है और एडमंड के शब्दों में—नकाबवाली आकृति जितनी डरावनी है, उसकी वास्तविकता उससे भी अधिक डरावनी है।'

इलीप, गेसान और विलसन के साथ आरंभिक चरण में एडमंड ने भी चढ़ाई की और 5180 मीटर (17000 फीट) की ऊँचाई तक पहुँच गए। विलसन ने बाद में बताया कि यह एक चुनौतीपूर्ण चढ़ाई थी। मकान के हादसे के बाद और बढ़ती उम्र के बावजूद एडमंड शारीरिक रूप से स्वस्थ बने हुए थे और अपने दल का नेतृत्व कर रहे थे।

स्कूल का उद्घाटन होने के बाद पर्वतारोही वापस टावेचे की चढ़ाई करने में जुट गए। सबसे पहले उन्हें एक मार्ग ढूँढ़ने के लिए जूझना पड़ा, जो प्रत्येक चढ़ाई के लिए आवश्यक होता है। ऊपर पहुँचकर उन्हें पता चला कि उस चोटी पर कदम रख पाना संभव नहीं है और ऐसी कोशिश करने पर जान जाने का खतरा है। उन्होंने लामा का दिया हुआ ध्वज वहाँ गाड़ दिया और अपने कैंप में लौट आए, उन्हें एक और स्कूल का निर्माण करना था।

इस नाकामी के बारे में माइक गिल ने कहा, ''मुझे तो लगता है कि यह अच्छा ही हुआ कि हमने इतनी खूबसूरत चोटी का उल्लंघन नहीं किया।''

20 मई तक थामी स्कूल का निर्माण लगभग पूरा हो गया। दो सप्ताह पहले ही बच्चों का नामांकन हो चुका था और शिक्षक फू सेटिंग और कालदेन ने खुले में ही बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया था। 26 मई को थामी और पंगबोचे से बच्चे और अभिभावक खुमजुंग में क्रीड़ा दिवस में भाग लेने के लिए एकत्र हुए। एक दिन पहले ही लुइस हिलेरी और एन विकसन काठमांडू से पैदल चलकर वहाँ पहुँच गई थीं।

उस दिन स्कूल परिसर में सैकड़ों शेरपा एकत्रित हुए। डेसमंड डॉयग ने धूमधाम

के साथ क्रीड़ा-समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर बत्तीस कार्यक्रम आयोजित हुए। इनमें कई तरह की दौड़ और अन्य प्रतिस्पर्धाएँ शामिल थीं। वयस्कों के लिए रस्सी खींचने की प्रतियोगिता आयोजित की गई।

बच्चों के लिए एक प्रतियोगिता में चपाती को शहद में डुबोकर धागे से लटकाकर रखा गया, जिसमें बच्चों को दौड़ते हुए चपाती को खाना था। बच्चों ने लगन और समर्पण के साथ प्रतियोगिता में भागीदारी की। पुरस्कार के रूप में सभी ने अपनी-अपनी तरफ से कुछ चीजें दीं। लुइस ने विजेताओं के बीच बालपेन, चाबी-छल्ले, कलर-पेंसिल, हेयर क्लिप, साबुन और रुपए का वितरण किया। रस्सी खींचने की प्रतियोगिता में शेरपाओं ने आखिर में साहबों को पराजित कर दिया था।

28 मई को थामी स्कूल का उद्घाटन लुइस हिलेरी और टेंगबोचे मठ के प्रमुख लामा ने किया। इससे पहले गाँव के ऊपर स्थित गोंपा में पूजा-अनुष्ठान का आयोजन किया गया। लुइस ने स्कूल के बारे में लिखा—''इसका डिजाइन कमाल का है, इसमें शेरपा, तिब्बती और पश्चिमी शैली का संगम देखा जा सकता है। सामने की दीवार लकड़ी से निर्मित है, जिसमें शेरपा शैली की खिड़कियाँ हैं।''

प्रमुख लामा ने नवनिर्मित स्कूल को आशीर्वाद दिया। उद्घाटन समारोह में आए 500 से अधिक लोग कतार में खड़े होकर प्रमुख लामा का आशीर्वाद लेने लगे। शिक्षक कालडेन को कतार में शामिल होते हुए संकोच हो रहा था, चूँकि उसने मिशनरी स्कूल में शिक्षा पाई थी और उसने ईसाई धर्म को अपना लिया था। लेकिन जब उसने एडमंड और उनके साथियों को कतार में शामिल होते देखा तो अंत में वह भी आशीर्वाद लेने के लिए कतार में खड़ा हो गया।

जिम विलसन ने कहा, ''एक पवित्र आदमी का आशीर्वाद मूल्यवान होता है, भले ही वह किसी भी धर्म का क्यों न हो।''

29 मई को एवरेस्ट विजय की दसवीं साल गिरह मनाई गई। एडमंड के कैंप प्रमुख जामा उपहार लेकर पहुँच गए। मिंगमा, डावा तेनजिंग और अनुजू ने वक्तव्य दिए। डेसमंड डॉयग ने एक केक सामने रखा, जिसके ऊपर झंडा था। एडमंड तारीख को भूल गए थे।

उस दिन पर्वतारोही दल कंटेगा की चोटी पर चढ़ने के लिए रवाना हो गया। यह चोटी टेंगबोचे के ऊपर थी और तब तक उसके ऊपर कोई नहीं गया था। माइक गिल, जिम विलसन, डेव डोरनेन और टॉम फ्रॉस्ट के साथ आंग टेंबा एवं चार अन्य दक्ष शेरपा रवाना हुए थे।

आठ दिनों तक चढ़ाई के बाद उन्हें खुमजुंग की तरफ से कोई संभावित मार्ग दिखाई नहीं पड़ा, इसीलिए वे 2750 मीटर नीचे उतरकर हिंखू घाटी पहुँचे और फिर

उस दिशा से चोटी की तरफ चढ़ना शुरू कर दिया। इस बार दल को चोटी तक पहुँचने में सफलता मिल गई। शिखर के पास गिल और विलसन हिमस्खलन के शिकार होते-होते बच गए, वहीं डेव डोरनेन चोटी के ऊपर चढ़ने में कामयाब हो गए। खुंबू इलाके को घेरनेवाली चार प्रमुख चोटियों में से एक चोटी तक पहुँचने में एडमंड के दल को सफलता मिल गई थी।

अभियान का लगभग समापन हो चुका था। अब लोगों से विदाई लेनी थी, चांग पीना था और स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाना था। टेंगबोचे में उन्हें स्वादिष्ट अमेरिकी भोजन परोसा गया। संभवत: एवरेस्ट अभियान पर आए अमेरिकी दल ने वहाँ इस तरह के भोजन का प्रचलन शुरू किया था।

कुंडे में स्थित मिंगमा के घर में मिंगमा की पत्नी ने एडमंड और उनके सहयोगियों के लिए तिब्बती भोजन तैयार किया था। खुंजो चुंबी से घर में नृत्य का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर अनुलू ने एक संक्षिप्त भाषण दिया—''हमने उनके अँधेरे को कम किया है, उनके जीवन की रक्षा की है और उनकी घरेलू समस्याओं को हल किया है। हमने गाँवों की सहायता की है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हमारे अभियान की सराहना की गई है।''

7 जून को रवाना होने से पहले वे आखिरी बार खुमजुंग स्कूल गए, जहाँ कक्षा की नेता आँग रीता ने विदाई भाषण दिया, जिसे सुनकर लुइस भावुक हो गई। जब बच्चे हाथ हिलाकर विदा करने लगे तो लुइस अपने आँसू रोक नहीं पाई।

फिक होगटन और माइक गिल स्वास्थ्य केंद्र चलाने के लिए खुमजुंग में तीन महीने के लिए रुक गए। वे खुमजुंग गोंपा के एक कमरे को क्लीनिक में तब्दील कर मरीजों का इलाज कर रहे थे। उन्हें वहाँ की आबादी में कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएँ नजर आ रही थीं, जिनका निदान करने के लिए ठोस कदम उठाए जाने की जरूरत थी।

□

बड़ा साहब

लुइस हेलरी ने एक प्रसंग के बारे में इस तरह लिखा है—

''बड़ा साहब, बड़ा साहब, आप खुंबू के लोगों के लिए मसीहा हैं।'' गाँव के मुखिया ने गीत गाने के लहजे में कहा। हम सभी हँसने लगे तो वह अपने वक्तव्य का प्रभाव पड़ते हुए देख हँसने लगा।

''कृपया बताइए, आप हमारी मदद करेंगे!'' उसने अनुरोध किया।

''आप ऐसे लोगों का दिल कैसे दुखा सकते हैं'' एडमंड ने जोर से कहा, ''ये लोग इतने खुशमिजाज हैं कि इनके किसी भी अनुरोध को ठुकरा पाना नामुमकिन है।''

शेरपा लोग एडमंड को 'बड़ा साहब' कहकर पुकारने लगे थे। 29 मई, 2003 को

काठमांडू के हयाज रिजेंसी होटल में सैकड़ों उत्साहित लोग एकत्रित हुए थे, जहाँ एवरेस्ट विजय का स्वर्ण जयंती समारोह मनाया जा रहा था। इस समारोह का आयोजन शेरपा की तरफ से किया गया था, जिसमें एडमंड अपनी पत्नी के साथ सम्मानित अतिथि के रूप में शामिल हुए थे।

हयात बॉलरूम में अतिथियों को 'एवरेस्ट विजय' के प्रतीकवाले रंग-बिरंगे परिधान वितरित किए जा रहे थे, मगर शेरपाओं के शानदार लिवास के सामने सब फीके नजर आ रहे थे। शेरपा पुरुषों ने लंबे तिब्बती कोट और चौड़ी टोपियाँ पहन रखी थीं। वहीं महिलाओं ने परंपरागत रेशमी 'इंगीस' पहनी और सोने के जेवरों के कारण उनका आकर्षक चेहरा दमक रहा था। इस अवसर पर कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए भाषण दिए गए, पुरस्कारों का वितरण किया गया और पचास से अधिक उम्र के शेरपाओं ने नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वे सभी शेरपा बड़ा साहब के दोस्त थे। शेरपा गीत-संगीत ने माहौल को रंगीन बना दिया था। फिर एडमंड ने एवरेस्ट की आकृतिवाला बड़ा केक काटा और अपना संक्षिप्त वक्तव्य प्रस्तुत किया। सभी बड़े ध्यान से उनके एक-एक शब्द को सुन रहे थे।

उन्होंने सभी वक्ताओं और नर्तकों को धन्यवाद दिया। वह तेनजिंग नोर्गे के पुत्र जामलिंग और पोते ताशी तेनजिंग नोर्गे से मिलकर बहुत खुश हुए। साथ ही एवरेस्ट विजय की स्वर्ण जयंती अपने प्रिय शेरपा दोस्तों के साथ मनाते हुए काफी खुश थे।

अपने जीवन में पीछे की ओर मुड़कर देखते हुए तिरासी वर्षीय एडमंड ने कहा, ''मैं कोई कट्टर धार्मिक व्यक्ति नहीं हूँ, मगर मैं बुद्ध के इस दर्शन पर यकीन करता हूँ कि प्रत्येक स्त्री या पुरुष को जीवन में अपने मार्ग का चुनाव स्वयं ही करना चाहिए। मैंने भी अपने मार्ग का चुनाव किया। मेरा मार्ग केवल रोमांचक चुनौतियों का सामना करना नहीं है, बल्कि शेरपा लोगों के साथ मिलकर उनके हित में काम करना भी है।''

उस शाम के कार्यक्रम में मौजूद कई मेहमान हिमालय ट्रस्ट के स्कूलों में पढ़ाई कर चुके थे, उनमें आंग रीता शेरपा भी थी, जिसने खुमजुंग स्कूल से पढ़ाई की थी और अब नेपाल में हिमालयन ट्रस्ट की प्रमुख प्रशासक बन चुकी थी।

सन् 1964 में एडमंड महसूस करने लगे थे कि शेरपा लोगों के कल्याण के लिए जो अभियान उन्होंने शुरू किया था, वह महज 'पंच वर्षीय अभियान' नहीं था। आगे का रास्ता स्पष्ट नहीं था। मगर प्रत्येक योजना और खुंबू की प्रत्येक यात्रा के साथ एडमंड और लुइस की अपने अभियान के प्रति प्रतिबद्धता भी बढ़ती चली गई थी।

वे दोनों ऐसी चुनौती को स्वीकार कर रहे थे, जिसकी राह में अनगिनत व्यावहारिक कठिनाइयाँ थीं। नेपाल और न्यूजीलैंड की भौगोलिक दूरी काफी अधिक थी। यात्रा करना और सामानों को पहुँचाना हमेशा खर्चीला काम साबित होनेवाला था और इसके

लिए काफी कम समय भी लगनेवाला था। एडमंड को हर साल काफी दिनों तक अपने घर से दूर रहना था, वहीं अभियान के लिए वित्त का प्रबंध करने की अहम जिम्मेदारी उनके ऊपर ही थी। धन जुटाने के लिए अधिक से अधिक यात्राएँ करने की जरूरत थी और सार्वजनिक कार्यक्रमों में भागीदारी करनी थी। दूसरी तरफ परिवार की देखभाल करना भी जरूरी था। लुइस के सक्रिय सहयोग के बिना एडमंड इस तरह की चुनौती का सामना नहीं कर सकते थे।

जिम रोज ने सलाह दी थी कि कुछ जागरूक समर्थकों के साथ एडमंड और लुइस को एक ट्रस्ट की स्थापना करनी चाहिए और उसी के जरिए परियोजनाओं को लागू किया जाना चाहिए। ऐसा करने पर जहाँ एडमंड के ऊपर दबाव घट सकता था, वहीं वित्त जुटाने के लिए उन्हें समय मिल सकता था, वहीं प्रायोजकों को भी ट्रस्ट से जुड़े लोगों की शख्सियत को देखकर तसल्ली मिल सकती थी। शुरू में इसे शेरपा ट्रस्ट बोर्ड के नाम से जाना गया।

ट्रस्ट के बारे में माइक गिल ने लिखा है, ''हिमालय ट्रस्ट के आधारभूत ढाँचे के तौर पर उनके साथ जानकार और अनुभवी मित्र-मंडली थी, जो समर्पित होकर काम कर रही थी।''

एडमंड ने लिखा है, ''मेरे साथ मैक्स पर्ल, माइक गिल, जिम विलसन और मूरी इलीस, पीटर और जून मूलग्रिपू, जॉन और डायना मैकीनोन, नोर्म एवं एनीड हर्डी, मेरा भाई रेक्स, नेवील वुडससन और दाली रोमानेस थे। इसके अलावा मेरा साथ लुइस दे रही थी, जो हिमालय से गहरा लगाव रखती थी।''

एडमंड के जीवन का एक ऐसा ढर्रा बन गया था, जो चार दशकों तक लगभग एक जैसा रहा था। हालाँकि बीच-बीच में गतिरोध उत्पन्न हुए थे और उन्हें निजी जिंदगी में क्षतियों का सामना करना पड़ा था। वित्त जुटाने के लिए वे जगह-जगह व्याख्यान देते रहते थे। इसके अलावा वे नियमित रूप से ऑस्ट्रेलिया का दौरा करते थे, जहाँ वे फील्ड इंटरप्राइजेज के ऑस्ट्रेलियाई अभियान से जुड़े थे। वे रिसर्च के लिए अमेरिका, न्यूजीलैंड और नेपाल में उपकरणों की जाँच करते थे और हर साल कई महीने का वक्त शेरपाओं के बीच हिमालय क्षेत्र में गुजारते थे। इसके अलावा वे प्रशांत महासागर, अंटार्कटिक और न्यूजीलैंड के इर्द-गिर्द कई अभियानों में शामिल होते रहे थे। बीच-बीच में फिल्में बनाते थे। इंटरव्यू देते थे और कई संगठनों में भागीदारी भी करते रहे थे। उन्हें लगातार थका देनेवाली यात्राएँ करनी पड़ती थीं।

नेपाल में शुरू किए जानेवाले प्रत्येक कार्यक्रम के लिए वित्त जुटाना पड़ता था, लोगों को आमंत्रित करना पड़ता था और किसी भी योजना को लागू करने में पहले नेपाल नरेश की इजाजत लेनी पड़ती थी। आपूर्ति, उपकरण, सामग्री आदि की तैयारी

करनी पड़ती थी। याक का प्रबंध करना पड़ता था और एक-एक पर बारीकी से नजर रखनी पड़ती थी।

पत्र-व्यवहार और कागजी कार्य एडमंड अपने घर में स्थित छोटे कार्यालय में अंशकालिक सचिव बेटी जोपलीन की सहायता में करते थे। न्यूजीलैंड, अमेरिका, कनाडा, नेपाल और अन्य देशों में मौजूद हितैषियों को सूचना भेजनी पड़ती थी। दूसरी तरफ आनेवाले पत्रों का ताँता कभी रुकने का नाम नहीं लेता था। इनमें उनसे भाषण देने के लिए या लेख लिखने के लिए कहा जाता था या किसी परोपकारी कार्य के लिए मदद का अनुरोध किया जाता था।

नेपाल में मिंगमा सेरींग एडमंड के दाएँ हाथ के रूप में काम करते थे। वह श्रमशक्ति, सामग्री एवं पोर्टरों का प्रबंधन करते थे और शेरपा शिष्टाचार के संबंध में परामर्श देते थे। वे अपनी पत्नी आंग डूली के साथ एडमंड एवं उनकी पत्नी की कुंडे में खातिरदारी करते थे। उन्होंने हिलेरी दंपती के लिए अपने घर में अलग से एक कक्ष का निर्माण किया था। हिमालय क्षेत्र के अनुभव के बारे में अपनी पुस्तकों में एडमंड और लुइस ने मिंगमा की कार्य-कुशलता तथा उदार हृदय की काफी सराहना की है।

न्यूजीलैंड में स्थित एडमंड के घर में सदैव अफरा-तफरी की स्थिति बनी रहती थी, चूँकि वहीं से विभिन्न परियोजनाओं के लिए सामान जुटाकर भेजने का काम किया जाता था। 1972 में लुइस ने क्लेडंस को एक पत्र में लिखा था—''हमने अभी-अभी 11 टन सामग्री नेपाल रवाना कर दी है। सारी सामग्री गैरेज में रखी थी और चारों तरफ सबकुछ अस्त-व्यस्त हो गया था।''

लेकिन एडमंड उस सबक को कभी नहीं भूले थे, जो उन्होंने युवा पर्वतारोही के तौर पर पर्वतारोहण अभियान की तैयारी करते समय सीखा था। वे स्वयं सारी सामग्री का मुआयना करते थे और प्रत्येक कार्य को सुनियोजित तरीके से संपन्न करवाने की कोशिश करते थे।

1964 में जब अस्पताल निर्माण का विचार एडमंड के जेहन में कौंध रहा था, वह नामचे बाजार, चौनरीकार्का और जुनबेसी में स्कूल बनाने, दो पुलों एवं एक हवाई पट्टी का निर्माण करवाने के लिए खुंबू लौट आए थे। अगर विमान के जरिए वह निर्माण सामग्री और उपकरण खुंबू तक ला सकते थे तो फिर सामान पहुँचाने में लगनेवाले पंद्रह दिन के समय को घटाकर तीन दिन किया जा सकता था और इस तरह तेजी से अस्पताल का निर्माण करवाया जा सकता था।

लुकला में 1150 फीट लंबी और 100 फीट चौड़ी हवाई पट्टी का निर्माण किया गया। इसके निर्माण के बाद भी सामग्रियों को लुकला से कुंडे पहुँचाने के लिए पोर्टरों को दो दिन का समय लग जाता था। रास्ते में कई स्थानों पर नदियों को पार करना पड़ता

था। इसके संबंध में एडमंड ने बाद में लिखा था—''1964 के पहले दस वर्षों में खुंबू क्षेत्र की पहाड़ी नदियों के जोखिम भरे पुलों पर अठारह स्त्री-पुरुषों की मौत हो चुकी थी। कुछ लोग नए पुलों का निर्माण करते समय मारे गए थे। कुछ पुराने पुलों के गिर जाने से मारे गए थे। हम पश्चिम शैली का सस्पेंशन पुल बनाने का खर्च उठाने की हालत में नहीं थे। हमने शेरपा शैली के लकड़ी के पुलों को स्टील वायर के सहारे निर्मित करने का निर्णय लिया था।''

अक्तूबर के मध्य में दो पुलों का निर्माण कार्य शुरू किया गया। बड़े पुल का निर्माण दूध कोशी नदी के ऊपर किया गया, जिसकी लंबाई तीस मीटर थी। दूसरा छोटा पुल भोटे कोसी नदी के ऊपर बनाया गया। दोनों नदियाँ नामचे पर्वत की तलहटी में आकर मिलती थीं और स्थानीय व्यापारियों को नामचे बाजार की साप्ताहिक हाट तक पहुँचने के लिए इन दोनों नदियों को पार करना पड़ता था। दिसंबर के शुरुआती हिस्से में दोनों पुलों का निर्माण पूरा हो गया और सैकड़ों लोगों की आवाज ही शुरू हो गई। टेंगबोचे मठ के प्रमुख लामा ने 7 दिसंबर को इन पुलों का औपचारिक रूप से उद्घाटन कर दिया।

एडमंड के लिए अस्पताल का निर्माण करना 'महानतम स्वप्न' था और मैक्स पर्ल ने इस स्वप्न को साकार करने का संकल्प ले लिया था। अक्तूबर 1966 तक सारी तैयारियाँ पूरी कर ली गई थीं। पहले बारह टन सामग्री काठमांडू पहुँचाई गई। वहाँ से छोटे विमान में सामग्री को लुकला हवाई पट्टी पर उतारा गया और फिर पोर्टरों की सहायता से खुमजुंग पहाड़ी के ऊपर पहुँचाया गया। जिस कुंडे गाँव में अस्पताल का निर्माण शुरू हो रहा था, वह 12700 फीट की ऊँचाई पर स्थित था। निर्माण कार्य से मैक्स का पूरा परिवार जुड़ गया था। दिसंबर में लुइस पर्ल अपनी तीन बेटियों—एन, लिन और सूजन को लेकर लुइस हिलेरी, पीटर, सारा और बेलिंडा के साथ नेपाल पहुँच गई थीं। वे अस्पताल के उद्घाटन समारोह में शामिल होना चाहती थीं।

लुइस ने अस्पताल की निर्माण प्रक्रिया के बारे में लिखा है—''शेरपा अस्पताल का निर्माण करने के लिए एक साल तक हम लोग धन जुटाते रहे। यह अवधि हमारे लिए कठिनाइयों से भरपूर थी। बीच में चिंता होती थी कि धन का प्रबंध नहीं होने पर क्या होगा? पर्याप्त धन नहीं जुटा पाने पर निर्माण कार्य कैसे पूरा किया जाएगा? या अगर हम लोगों से लिये गए चंदे को गँवा बैठे तो हमारा क्या होगा? धन का प्रबंध होने लगा था—पहले एक सांसद की पत्नी और बच्चों ने कुछ पाउंड दिए थे, फिर एक पेंशनधरी बुजुर्ग ने अपनी बचत का एक हिस्सा हमें दे दिया था। व्यावसायिक संस्थानों से कुल 4,500 पाउंड की सहायता प्राप्त हुई।

''निर्णायक मोड़ उस समय आया, जब ऑकलैंड प्रोविंशियल डिस्ट्रिक्ट के चालीस

लायंस क्लबों ने इस परियोजना की सहायता करने का फैसला किया। उन्होंने व्याख्यानमाला का आयोजन किया और टिकटों की ब्रिकी एडमंड, मैं और मैक्स रोज पाँच व्याख्यान देते हुए हजारों मीलों की दूरी का सफर तय करते रहे थे। लायंस क्लबों के प्रयत्न से 8,000 पाउंड की व्यवस्था हो सकी थी।

''न्यूजीलैंड के व्यावसायिक संस्थानों की तरफ से हजारों टन भवन-निर्माण सामग्री, खाद्य-पदार्थ, दवाएँ और उपकरण आदि चीजें मुहैया कराई गई थीं। शिकागो के वर्ल्ड बैंक इन्साइक्लोपीडिया और सियर्स रोबक ऐंड कंपनी ने उदारता के साथ हमारी सहायता की थी। इस तरह आप समझ सकते हैं कि अस्पताल के सपने को साकार करने के लिए हमें कितना जूझना पड़ा।

''मैं यह भी बताना चाहूँगी कि हमारे परिवार की यात्रा का खर्च हम लोग स्वयं उठा रहे थे। मुझे लगता है कि वित्त का प्रबंध करने के लिए मैक्स ने अपना सबकुछ गिरवी रख दिया था और एडमंड ने हमेशा की तरह दिन-रात मेहनत की थी। उन्होंने मुझसे कहा था—अगर तुम बच्चों के साथ हिमालय क्षेत्र में आना चाहती हो तो इसके बारे में पुस्तक लिखकर तुम्हें किराए का प्रबंध करना होगा।''

18 दिसंबर, 1966 को कुंडे अस्पताल का औपचारिक रूप से उद्घाटन किया गया। अस्पताल में जल्द ही आस-पास के मरीजों का उपचार शुरू हो गया। अभी कर्मचारियों और उपकरण सामग्री की व्यवस्था करने के लिए और भी वित्त जुटाने की जरूरत थी।

एडमंड के बच्चे नेपाल में समय गुजारना बेहद पसंद करते थे। भले ही वहाँ ऊँचाई पर चढ़ने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता था, मगर स्थानीय लोग गर्मजोशी के साथ उनका स्वागत करते थे और कई शेरपा लोगों के साथ उनकी अंतरंगता कायम हो गई थी। पीटर हिलेरी मिंगना और आंग डूली को 'शेरपा माता-पिता' कहकर पुकारते थे। बेलिंडा को आंग डूली से गहरा लगाव हो गया था, जो हाथ थामकर घुमाने के लिए उसे अपने साथ लेकर जाती थी।

सन् 1962 में जब हिलेरी दंपती दार्जिलिंग में तेनजिंग नोर्गे और उनके परिवार से मिलने गया था, उस समय एडमंड पीटर और सारा को लेकर साहसिक अभियान पर निकल पड़े थे। 3660 मीटर की ऊँचाई पर संकीर्ण रास्ते पर कार चलाते हुए वे रात में सिंगालिका मेंड़ पर कैंप लगाकर ठहर गए और स्लीपिंग बैग में बैठकर उन्होंने डिनर का लुत्फ उठाया। बाहर हिमपात होने के बावजूद उन्हें बहुत मजा आ रहा था। जब वे सुबह जागे तो चारों ओर बर्फ जमी हुई थी। ठंडा नाश्ता करने के बाद वे दो घंटे तक मेंड़ पर पैदल चले और फिर उन्हें माउंट एवरेस्ट का विलक्षण दृश्य दिखाई पड़ा। वापसी के वक्त पीटर और सारा को दो शेरपा पोर्टर कंधे पर उठाकर लाए थे। उन्होंने वापस आकर

लुइस और बेलिंडा को अपना रोमांचक अनुभव सुनाया था।

हिलेरी परिवार बीच-बीच में न्यूजीलैंड में भी छुट्टियाँ मनाता था। यह ऐसा परिवार नहीं था कि गरमी की छुट्टियों में चुपचाप घर के अंदर ही बैठा रहता। 1965 में एडमंड और लुइस ने साउथ आइलैंड में क्लूथा नदी के किनारे जमीन खरीदी। वे वहाँ क्रिसमस की छुट्टियाँ मनाने के लिए जाते थे। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जा रहे थे, एडमंड की लंबी अनुपस्थिति परिवार को अखरने लगी थी। अपने चयन के दिनों को याद करते हुए सारा हिलेरी ने कहा, ''हमारे परिवार के केंद्र में माँ थी। वह हमें समझाती थी और हमारा पूरा ध्यान रखती थी। पिताजी हमसे दूर रहते थे और बीच-बीच में हमें उनके साथ रहने का मौका भी मिलता था, मगर यह एक अलग किस्म का संबंध था।''

स्कूल की छुट्टियों में परिवार के सभी सदस्य एकत्र होते थे। 1971 में हिमालय क्षेत्र में हिलेरी परिवार एक साथ पहुँच गया था। लुइस ने लिखा है, ''मैंने महसूस किया है कि जब भी हम लोग ऊँचाई पर पहुँच जाते थे, तब हमारा हौसला भी बढ़ जाता था। नेपाल में पर्वतारोहण करना संगीत की स्वरलहरी जैसा अनुभव है, जिसे महसूस किया जा सकता है, मगर व्यक्त नहीं किया जा सकता।''

शेरपा लोगों के साथ अपने परिवार की अंतरंगता को लुइस अहम मानती थीं। ''इरदराज के इलाके में ग्रामीण लोग गिने-चुने व्यक्तियों पर ही पूरी तरह विश्वास कर पाते हैं। एक साथ कार्य करने से ही एकता की भावना का विकास कर पाना संभव है।''

एवरेस्ट विजय के समय एडमंड के सहचर रह चुके तेनजिंग नोर्गे अपनी पत्नी दाकू के साथ अगस्त 1971 में हिमालयन ट्रस्ट के अतिथि के रूप में न्यूजीलैंड के दौरे पर पहुँचे। वित्त का प्रबंध करने के लिए आयोजित किए जानेवाले कार्यक्रमों में तेनजिंग की उपस्थिति से लोग उदारतापूर्वक धन देने के लिए प्रेरित होते थे, लेकिन एडमंड चाहते थे कि तेनजिंग न्यूजीलैंड को भलीभाँति समझ सकें।

एडमंड नोर्गे दंपती को नौका की सवारी, जेट बोट की सवारी और स्कीइंग के लिए ले गए। प्रधानमंत्री के साथ उनकी मुलाकात करवाई। तेनजिंग ने लिखा है—''हम अकसर ऐसे लोगों के घरों में रुकते थे, जो पहले किसी-न-किसी अभियान में शेरपा लोगों के साथ रह चुके थे और हमें अपने घर जैसा वातावरण महसूस होता था।''

तेनजिंग ने ऑकलैंड स्थित एडमंड के घर को 'न्यूजीलैंड' के दूसरे घरों से अलग तिब्बती गौपा जैसा बताया। हर साल शेरपा समुदाय के लिए नई योजना तैयार करने के बाद एडमंड अपनी योजना की मंजूरी के लिए नेपाल सरकार को पत्र लिखते थे। एडमंड को उम्मीद थी कि नेपाल की सरकार स्कूलों का संचालन करने में मदद कर सकती है, चूँकि शेरपा गाँवों को सरकार की तरफ से कोई खास मदद नहीं मिल पा रही थी।

सन् 1964 में एडमंड ने नेपाल के युवराज को विमान से लुकला आकर चौनरी

कारका स्कूल का उद्घाटन करने का अनुरोध किया। राजा परिवार के किसी सदस्य ने पहली बार खुंबू का दौरा किया। इसके बाद हिमालय ट्रस्ट और सरकार के बीच तीन वर्षों का अनुबंध संभव हो पाया।

नियति का क्रूर मजाक

लुई और बेलिंडा हिलेरी की मौत 31 मार्च, 1975 को हो गई। दोनों काठमांडू से फपलू तक की विमान यात्रा पर रवाना हुई थीं, जहाँ एडमंड और रेक्स हिलेरी एक अस्पताल का निर्माण करवा रहे थे। मगर उनका छोटे आकार का विमान हवाई अड्डे से उड़ते समय ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान के विंग फ्लैप्स से एक लॉकिंग पिन उड़ान के समय नहीं खुल पाई थी। विमान में कुल पाँच व्यक्ति सवार थे, सभी मारे गए थे।

हिलेरी परिवार ने साल भर का समय नेपाल में गुजारने की योजना बनाई थी। उन्होंने एक घर किराए पर ले लिया था। बेलिंडा काठमांडू के स्कूल में दाखिला लेनेवाली थी और इस अवधि में उसने तथा लुईस ने नेपाली सीखने का निश्चय किया था। फिल और जिम रोज भी वहीं थे।

जिस दिन विमान हादसा हुआ, उस दिन पीटर हिलेरी एक मित्र के साथ भारत में यात्रा कर रहे थे और सारा हिलेरी ऑकलैंड में विश्वविद्यालय में लौटकर आई थी; उन्हें अपने पिता के साथ एक अपूरणीय क्षति का सामना करना पड़ा। पूरे परिवार का ताना-बाना बिखरकर रह गया था।

सारा न्यूजीलैंड से विमान में सवार होकर नेपाल पहुँची। ''मुझे याद है, मैं अपने पिता से मिलने के लिए बेचैन हो उठी थी। मुझे लग रहा था कि जैसे ही मैं पिताजी को देखूँगी, सबकुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन जब मैं विमान से उतरी तो वहाँ मौजूद लिज हावले ने मुझे आगाह किया कि पिताजी की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। फिर मैंने पिताजी को देखा, जो पूरी तरह टूट चुके थे।''

पीटर उस समय काठमांडू पहुँचनेवाले थे, उन्हें भारत में ढूँढ़ने में ही कई दिन लग गए थे। इस दौरान एडमंड ने न्यूजीलैंड के परिजनों और दोस्तों के नाम एक पत्र लिखा था, ''पाँच दिन हो चुके हैं, जब विमान हादसे में लुइस और बेलिंग का देहांत हो गया और अगर मैं अपनी पीड़ा आपके साथ बाँटने की कोशिश कर रहा हूँ तो उम्मीद है कि इस हिमाकत के लिए आप मुझे माफ करेंगे। जब विमान समय पर फपलू नहीं पहुँचा तो तबाही की आशंका में मेरा दिल काँप उठा; फिर जंब एक हेलीकॉप्टर पहुँचा तो मुझे आभास हो गया कि जरूर कोई अनहोनी हो चुकी है। लोग अत्यंत दयालु और मददगार हैं, वहीं फिल और जिम रोज की मदद मिल रही है। आप जानते हैं कि मेरे लिए लुइस की कितना ज्यादा अहमियत थी और बेलिंग कितनी प्यारी और खुश मिजाज लड़की थी। पीटर मूलग्रियू के साथ सारा के आने से मुझे काफी संबल प्राप्त भी हुआ है। वह

बहुत प्यारी लड़की है और उसका मनोबल काफी मजबूत है।

''सोमवार को हम लोग फिर कार्य आरंभ करने के लिए फपलू जा रहे हैं, जहाँ अस्पताल का निर्माण किया जा रहा है। जो कुछ हो चुका है, उसके बाद भी मेरा मानना है कि कार्य को पूरा किया जाना चाहिए। सारा और मिंगमा के साथ मैं वहाँ से खुंबू जाऊँगा और अपने मित्रों के साथ दिवंगत लुइस और बेलिंग को याद करूँगा। उसके बाद क्या होगा, मैं अभी स्वयं नहीं जानता। मैं सिर्फ वही उम्मीद रखता हूँ कि जिस कार्य को मैंने शुरू किया है, उसे जारी रखने के लिए मुझे साहस मिले। ईश्वर ही जानता है कि मुझे जिंदा रहने का हौसला मिल पाएगा या नहीं, आप सभी को मेरा प्यार। लुइस और मेरे लिए आप सबकी दोस्ती सदैव महत्त्वपूर्ण रही है—एडमंड।''

पीटर आखिरकार नेपाल पहुँच गए। ''काठमांडू पहुँचना किसी दु:स्वप्न से कम नहीं था। हम टैक्सी से बलुवातर पहुँचे। घर में सन्नाटा था। वहाँ कोई नहीं था। मैंने डैड का पता लगाने के लिए फोन किया। पंद्रह मिनट बाद हमारी हरी कार सड़क पर आती हुई दिखाई पड़ी। सारा कार चला रही थी। सामने की सीट पर फिल और पीछे की सीट पर जिम के साथ डैड बैठे हुए थे। कार रुक गई और हिलेरी परिवार के तीन अवशेष एक-दूसरे के करीब पहुँच गए। हम वहीं सड़क पर खड़े होकर रोने लगे।''

□

सागर से गगन तक

अवसाद की स्थिति से उबरने के लिए एडमंड को अभी काफी वक्त लगना था। लुइस और बेलिंडा की अंत्येष्टि काठमांडू की पवित्र नदी बागमती के किनारे संपन्न हुई थी। पीटर और सारा के साथ एडमंड रेक्स के साथ अस्पताल का काम जारी रखने के लिए फपलू आ गए। उनके लिए अपने आपको व्यस्त रखना जरूरी हो गया था और यह ऐसी परियोजना थी, जिसे लुइस बेहद पसंद करती थी।

एडमंड अकेले फपलू हवाई पट्टी पर घूमते हुए चारों तरफ की पर्वतमालाओं को निहारकर खुद को तसल्ली देने की कोशिश करते थे। मगर उनकी हताशा कम नहीं हो पा रही थी। रसोईघर में लुइस और बेलिंडा की तसवीर रख दी गई थी। रोज तसवीरों पर फूलों की माला पहनाई जाती थी और हमेशा दीया जलता रहता था। मैं उनकी तरफ नजरें उठाकर देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाता था।

रेक्स हिलेरी अब हर साल हिमालय क्षेत्र में आने लगे थे और हिमालय ट्रस्ट की परियोजनाओं पर आगामी दो दशकों तक कार्य करनेवाले थे। एडमंड ने उन्हें अस्पताल का दायित्व सौंप दिया और स्वयं पीटर तथा सारा के साथ कुंडे की तरफ चले गए। सोलू और खूंबू में अनुष्ठान आयोजित किए गए और मातम मनाया गया, फूलों के ढेर इकट्ठे हो गए। मगर 'बड़ा साहब' को बड़ा साहब की तरह ही बरताव करना था, भले ही उनका दिल टूट चुका था।

शेरपा लोगों के हितों के लिए कार्य करते हुए जिस तरह एडमंड को निजी जीवन में अपूरणीय क्षति का सामना करना पड़ा। उसे देखते हुए उनके मन में एडमंड के प्रति सम्मान का भाव और भी बढ़ता चला गया। कुंडे में अपने घर में ऊपर पहाड़ी ढलान पर मिंगमा और आंग डोली ने लुइस और बेलिंडा की स्मृति में पत्थरों से दो स्मृति-स्थलों का निर्माण किया। दूसरी तरफ एडमंड के आँसू सूख चुके थे। मगर अंदर-ही-अंदर अपनों को खोने का गम उन्हें बुरी तरह परेशान कर रहा था।

शुरुआती हफ्तों में पीटर और सारा से अपने पिता के करीब रहने की कोशिश की।

वे जेनेवा में अपने पुराने मित्रों के साथ ठहरे। फिर एडमंड के साथ उन्होंने लंदन की यात्रा की, जहाँ एडमंड ने हाल ही में प्रकाशित अपनी आत्मकथा 'नथिंग वेंचर नथिंग विन' के बारे में इंटरव्यू दिए। फिर वे कनाडा पहुँच गए।

''अपने सियर्स के दोस्तों के साथ हम अराकानसस की बफेलो नदी में नाव पर सवार होकर घूमते रहे। उनकी दोस्ती हमारे लिए वरदान की तरह थी। रात के वक्त शिविर में शांति महसूस होती थी और कुदरत का नजारा मनोरम नजर आता था। मैं अभी भी ठीक से नहीं सो पा रहा था, भले ही मैं ढेर सारी दवाएँ खा रहा था। मगर अब मुझे उस अभिशक्त दिन के डरावने सपने ज्यादा परेशान नहीं कर रहे थे।''

जून के मध्य में वे ऑकलैंड के अपने घर में लौट आए। लुइस की गर्मजोशी से भरपूर उपस्थिति और बेलिंडा के ठहाकों के बगैर हमारा घर खाली कब की तरह नजर आ रहा था और मैं भी उसी घर जैसा महसूस कर रहा था—खाली और मायूस। मैं वहाँ अधिक दिनों तक ठहर नहीं पाया।

बाद के वर्षों में एडमंड को इस बात का अफसोस हुआ कि लुइस और बेलिंडा की मौत के तुरंत बाद वह अपने बच्चों को ठीक से भावनात्मक सहारा नहीं दे पाए थे। असल में वे गहरे अवसाद में डूब गए थे और शाम के वक्त ह्विस्की पीकर और सोते वक्त नींद की गोलियाँ खाकर अपने गम को भुलाने की कोशिश कर रहे थे। सारा ने उन दिनों को याद करते हुए बताया, ''बहुत बुरे दिन थे। ऐसे हादसों के बाद कुछ परिवारों के सदस्य एक-दूसरे के करीब आ जाते हैं, जिससे गम बाँटने में मदद मिलती है। मगर हमारे परिवार की जो सदस्य हालात से बेहतर तरीके से निपटना जानती थी, उसकी

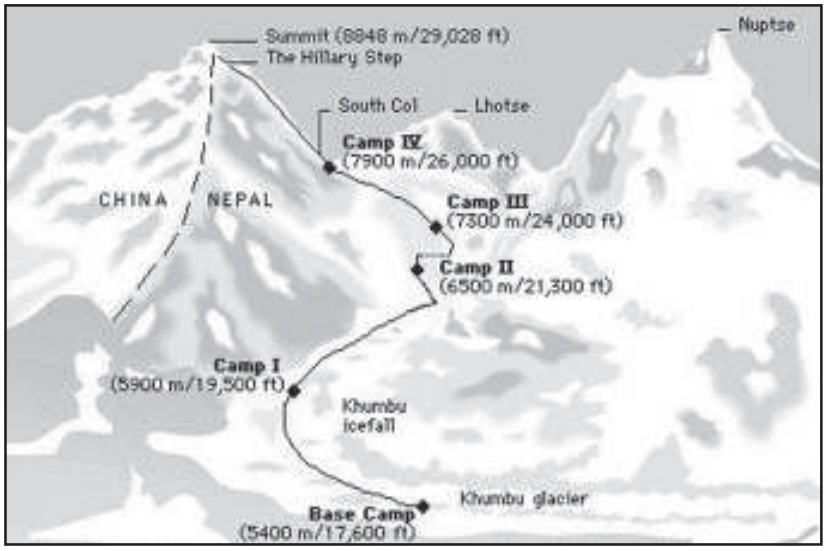

हादसे में मौत हो चुकी थी। जो सदस्य बच गए थे, उन्हें संकट से उबरना नहीं आता था। इस तरह हम अपनी-अपनी दुनिया में ही खोए रहे।''

एडमंड योजनाओं को क्रियान्वित करने में खुद को व्यस्त रखने की कोशिश कर रहे थे। अगस्त में वे टेक्स और जिम विलसन के साथ फपलू अस्पताल का निर्माण पूरा करवाने के लिए गए थे। काठमांडू में मैं जिम विलसन के साथ एक ही कमरे में ठहरा। डिनर के बाद हम दोनों स्कॉच ह्विस्की की बोतल लेकर कमरे में लौट आए। तभी मेरे धीरज का बाँध टूट गया—हम पीते रहे, बातें करते रहे और रोते रहे। उन उदास घड़ियों में जिम विलसन ने एक हमदर्द दोस्त के रूप में मुझे सहारा दिया।

मगर एडमंड के जीवन में सूनापन बना रहा। एक साल के बाद जॉर्ज लोवे यह सुनकर अचंभित रह गए, जब एडमंड ने उनसे कहा कि वह इस तरह जीवित रहना नहीं चाहते थे। बाद में पीटर ने भी बताया कि उन दिनों एडमंड में किसी भी कार्य को लेकर उत्साह नहीं रह गया था। जिस तरह का बदलाव एडमंड के व्यक्तित्व में आ गया था, उसे देखते हुए उनके दोस्त चिंतित हो उठे थे कि क्या हमेशा खुश रहनेवाले, पर्वतारोहण करनेवाले, चुनौतियों से टकरानेवाले, पुरुषार्थ करने में जुटे रहनेवाले एडमंड अवसाद की स्थिति से उबरकर नया जीवन शुरू कर पाएँगे?

उन दिनों को याद करते हुए जून मूलग्रियू ने कहा, ''सबको उनकी बड़ी चिंता हो रही थी। उनके दोस्त उन्हें खुश रखने की हर संभव कोशिश कर रहे थे। मगर वे हमेशा अपनी की धुन में खोए रहते थे।''

ऐसे कठिन वक्त में जिम और फल रोज ने पीटर और सारा को काफी सहारा दिया था। वहीं एडमंड उदासी की हालत में समय गुजार रहे थे। हार मान लेना उनका स्वभाव नहीं था। पर्वतारोहण के समय उन्होंने अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों का साहसपूर्वक सामना किया था और अब जीवन में भी उनको वैसी ही परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा था। वे अपने परिवार के सदस्यों और शेरपाओं को छोड़ नहीं सकते थे, जो पूरी तरह उनके ऊपर निर्भर कर रहे थे। दूसरों के प्रति कर्तव्यपालन की भावना उन्हें मुश्किल वक्त में भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही थी। उनके माता-पिता का देहांत 1965 में हो गया था। दोनों ने ही नेपाल में एडमंड के आरंभिक कार्यों की सराहना की थी। माता-पिता के आदर्श जीवन-मूल्य और सामाजिक चेतना से आज भी एडमंड प्रेरणा ग्रहण कर रहे थे।

एक दशक से अधिक समय से एडमंड कई सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरण से जुड़े उद्देश्यों के लिए सहायता उपलब्ध कराते रहे थे और उनकी प्रतिष्ठा दिनोदिन बढ़ती चली गई थी। जून 1967 में जब उन्होंने ऑकलैंड रोटरी क्लब में आयोजित माध्यमिक विद्यालयों के आचार्यों की बैठक को संबोधित किया था, तब उनके भाषण

को लेकर प्रचार माध्यमों में विवाद पैदा हो गया था। उन्होंने अपने भाषण में इस बात पर अफसोस जाहिर किया था कि संपन्न होने के बावजूद न्यूजीलैंड जरूरतमंद देशों की ठीक से सहायता नहीं कर रहा है। उन्होंने उम्मीद जाहिर की थी कि नेताओं की अगली पीढ़ी इस मामले में अधिक सूझ-बूझ और उदारता का परिचय दे सकती है।

अपने भाषण में एडमंड ने कहा था कि प्रत्येक जागरूक नागरिक को अपने जीवन के कुछ वर्ष जरूरतमंद देशों की भलाई के लिए लगाने चाहिए। उनके भाषण से जहाँ विदेशों में स्वैच्छिक सेवा की भावना झलकती थी, वहीं संयुक्त राष्ट्र का वह संकल्प भी झलकता था, जिसके तहत माना गया था कि आर्थिक दृष्टि से संपन्न देशों को अपने सफल घरेलू उत्पाद का एक प्रतिशत गरीब देशों की मदद के लिए मुहैया करवाना चाहिए। 'चैरिटी कोरसो' नामक संस्था न्यूजीलैंड में इस उद्देश्य को प्रचारित करने में जुटी हुई थी। मगर मीडिया ने उनके उस कथन को सबसे अधिक उछाला, जिसमें उन्होंने कहा था—'' भावी नेताओं को राजनीति और सरकारी तंत्र में नैतिकता की स्थापना करनी होगी, जिसमें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हालात को बदल पाना मुमकिन हो।'' उन्होंने कहा था कि यह कैसी विडंबना है कि सरकारें पहले तो किसी कारवाई से साफ मुकर जाती हैं और फिर कुछ दिनों के बाद वैसी कारवाई की सारी जिम्मेदारी भी अपने ऊपर लेने के लिए तैयार हो जाती हैं।

उस समय अंतरराष्ट्रीय मीडिया में वियतनाम पर अमेरिकी आक्रमण की खबरें छाई हुई थीं, वहीं न्यूजीलैंड में देहाती इलाकों में बाढ़ के खतरों को देखते हुए पनबिजली परियोजनाओं का तीव्र विरोध किया जा रहा था। एडमंड के भाषण से न्यूजीलैंड के कंजरवेटिव प्रधानमंत्री सर कीथ होलीओक और बिजली मंत्री नाराज हो गए थे। उन्हें एडमंड का भाषण अपमानजनक महसूस हुआ था और उन्होंने बयान वापस लेने या खंडन करने की माँग की थी। एडमंड ने ऐसा करने से इनकार कर दिया था और वीएसए की अगली बैठक में जब एडमंड का सामना प्रधानमंत्री से हुआ तो नाराज प्रधानमंत्री ने उनसे बात नहीं की थी।

दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद नीति को देखकर 1955 में एडमंड क्षुब्ध हो उठे थे और जब 1970 में न्यूजीलैंड से 'केवल गोरे खिलाड़ियों' की टीम रगबी मैच खेलने के लिए दक्षिण अफ्रीका जा रही थी, तो उन्होंने इसकी तीखी आलोचना की थी। हालाँकि उन्हें रगबी खेल बेहद पसंद था। कई रगबी समर्थकों को उनका विरोध करना पसंद नहीं आया था।

इसी तरह काफी लोगों को आश्चर्य हुआ था, जब उन्होंने एडमंड को परिवार नियोजन संस्था का समर्थन करते हुए और गर्भपात कानून संशोधन संस्था का मानक उपाध्यक्ष बनते हुए देखा था। मगर एडमंड की स्पष्ट राय थी कि विश्व की तेजी से

बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित किया जाना जरूरी है। चूँकि धरती पर अनियंत्रित आबादी के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद्य-पदार्थ उपलब्ध नहीं हैं। विकसित और विकासशील देशों में परिवार नियोजन की अहमियत को सभी स्वीकार कर रहे हैं। फंडे अस्पताल में एडमंड ने देखा कि शेरपा लोग भी अपनी मरजी से छोटे परिवार की अवधारणा को स्वीकार करने लगे थे। चालीस साल बाद माइकल किंग ने लिखा—''सर एडमंड हिलेरी संयुक्त राष्ट्र के कुछ कम लोकप्रिय, सरकार विरोधी सामाजिक आंदोलनों का समर्थन कर रहे हैं। उस समय वैसे अभियानों को लोकप्रियता नहीं मिली थी।''

वर्ष 1972 में न्यूजीलैंड में हुए आम चुनाव में नोरमन विर्क की अगुआई में लेबर पार्टी की जीत हुई। प्रशांत महासागर में देश के परमाणु परीक्षण को लेकर नागरिक अत्यंत उद्वेलित थे और मुरुरुवा द्वीप में प्रदर्शनकारियों ने पहुँचकर फ्रांस के परमाणु परीक्षण का विरोध जताना शुरू कर दिया था। 1966 के बाद इस तरह के 39 परीक्षण किए गए थे। न्यूजीलैंड की नई सरकार ने विरोध कर रहे प्रदर्शनकारियों का समर्थन करना शुरू किया, मगर नोरमन किर्क का अचानक देहांत हो गया और उनके उत्तराधिकारी बिल रोलिंग को 1975 के चुनाव में तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा।

नेशनल पार्टी के नए नेता रॉबर्ट मूलडून एक सख्त प्रचारक थे, जिनकी नीतियों से समाज में टकराव बढ़ने की आशंका थी। डेविड एक्सेल, जो एक ब्रॉडकास्टर और वाणिज्य सलाहकार थे, ने सिटीजंस फॉर रोलिंग अभियान की शुरुआत की। इस अभियान में न्यूजीलैंड के प्रमुख शिक्षा शास्त्री, चर्च नेता, वकील, व्यापारी और सर एडमंड हिलेरी शामिल थे।

एडमंड टेक्स के साथ फपलू अस्पताल में कार्य करने के लिए नेपाल चले गए थे, मगर अभियान के समर्थन में लिखा गया उनका पत्र प्रचार पुस्तिका में अक्तूबर 1975 में प्रकाशित हुआ था। ''मैं जब सबसे पहले बिल रोलिंग से मिला तो उनके व्यक्तित्व की अप्रत्याशित दृढ़ता से अत्यंत प्रभावित हुआ। वे ज्यादातर समय खामोश ही रहते थे, लेकिन हमेशा सजग रहते थे। जब जरूरत पड़ती थी, तब वे दृढ़ता के साथ अपना पक्ष रखना जानते थे। मैंने पाया कि बिल रोलिंग की पहचान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक शालीन और विशिष्ट नेता के रूप में थी। न्यूजीलैंड की ऐसी संतान पर गर्व होना स्वाभाविक ही है। विल रोलिंग ने हमें खोया हुआ आत्मविश्वास प्राप्त करने में सहायता की।''

यह ऐसा समय था, जब विश्व शांति की बात करनेवालों को कम्युनिस्ट घोषित कर दिया जाता था। मुलडून ने अभियान के सदस्यों को 'साथियों का झुंड' कहकर पुकारा था और नेशनल पार्टी चुनाव जीत गई थी। फिर 1984 में ही डेविड लेंज के नेतृत्व में न्यूजीलैंड की सत्ता में लेकर पार्टी की वापसी मुमकिन हो पाई और परमाणविक

पोतों को देश के बंदरगाहों से हटाया जा सका। व्यक्तिगत तकलीफ के समय भी सार्वजनिक हितों के प्रति एडमंड की ऐसी प्रतिबद्धता को देखकर उनके माता-पिता को जरूर उन पर गर्व हो सकता था।

प्रशांत क्षेत्र में परमाणु शस्त्रों की मौजूदगी ही केवल एडमंड की चिंता की वजह नहीं थी। वे जानते थे कि लुकला हवाई अड्डे के निर्माण में उन्होंने सहयोग कर सोलू और खुंबू में पर्यटकों की संख्या बढ़ाने में योगदान किया था और पर्यटकों की वजह से इलाके में आर्थिक प्रगति होने लगी थी, मगर पर्यटक अपने साथ कचरा भी ला रहे थे और काफी तादाद में जलावन का भी इस्तेमाल होने लगा था। शेरपा लोग परंपरागत रूप से ईंधन के तौर पर सूखी टहनियों का इस्तेमाल ही करते थे और इससे पेड़ों का संरक्षण होता था। अब पर्वतारोहियों और पर्यटकों की संख्या बढ़ने के साथ ही जंगल के वजूद पर खतरा मँडराने लगा था।

कुंडे अस्पताल में 1972 में हिमालय ट्रस्ट ने पानी गरम करने के लिए संयंत्र की स्थापना की। इसके अलावा दैनिक कार्यों के लिए पानी गरम करने की व्यवस्था किरासन स्टोव पर आधारित कर दी, ताकि लकड़ियों की खपत रोकी जा सके। टेंगबोचे के आसपास सफाई कार्य में दो दिनों तक जुटे रहने के अनुभव के बारे में लुइस ने लिखा है—''इस छोटे समुदाय के इर्दगिर्द जमा हुए कचरे को देखकर कोई पत्थर दिल पर्यटक ही तटस्थ बना रह सकता है। दुर्भाग्य की बात है कि ज्यादातर पर्यटक इस समस्या की तरफ ध्यान देना जरूरी नहीं समझते। वे टेंगबोचे के आसपास की झाड़ियों को काटकर जलावन के रूप में इस्तेमाल करते हैं और जहाँ भी कैंप बनाते हैं, वहाँ कचरा छोड़कर चले जाते हैं।...एवरेस्ट क्षेत्र को नेशनल पार्क घोषित करके तथा सुरक्षा बलों को तैनात करके बचाया जा सकता है।''

हिमालय ट्रस्ट के अलावा कई संगठनों की तरफ से एवरेस्ट क्षेत्र को नेशनल

पार्क बनाने की माँग की गई। 5 अक्तूबर, 1973 को नेपाल नरेश ने खुंबू में नेशनल पार्क बनाने की घोषणा कर दी। उस क्षेत्र में एडमंड के कार्यों को देखते हुए न्यूजीलैंड सरकार से सहायता मुहैया कराने का अनुरोध किया गया और 1975 में यह मदद मिलने भी लगी। एडमंड इस बात पर अड़े थे कि पार्क के दायरे में शेरपाओं को स्वाभाविक रूप से जीवनयापन करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए, और ऐसा संभव हुआ भी। 1979 में सागरमाथा नेशनल पार्क को यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल का दरजा प्रदान किया।

एडमंड के नियमित व्याख्यानों, उनकी पुस्तकों और निबंधों और खुंबू से पर्वतारोहियों के आगमन से शेरपाओं के हित में हिमालयन ट्रस्ट के कार्यों को लेकर जागरूकता पैदा हुई, लेकिन आर्थिक संसाधन जुटाने का काम एडमंड स्वयं ही करते रहे। लुइस के बिना इस अभियान को जारी रखना आसान नहीं था, मगर एडमंड की सहायता डॉ. मैक्स पर्ल एक मित्र और समर्पित कार्यकर्ता के रूप में कर रहे थे, जो ट्रस्ट के मेडिकल डायरेक्टर भी थे। मैक्स हर साल कुछ हफ्ते तक नेपाल में समय गुजारते थे।

सियर्स रोबुक के साथ एडमंड की जान-पहचान बढ़ने से वित्तीय मदद मिलने की उम्मीद बढ़ गई थी। 1972 में सियर्स के साथ यात्रा के दौरान एडमंड की मुलाकात जेक ओ कोनोर से हुई, जो टोरंटो अर्गोनोट्स फुटबॉल टीम के भूतपूर्व स्टार खिलाड़ी थे और जो सीयर्स वनाडा के खेल सामग्री डिवीजन के प्रभारी थे। 1973 में ब्रिटिश एवरेस्ट अभियान की यादगार समारोह में भाग लेने के लिए एडमंड ने ओकोनोर को एवरेस्ट बेस कैंप में आमंत्रित किया था, जहाँ से लौटकर ओ कोनोर ने हिमालय ट्रस्ट की वित्तीय सहायता करने का संकल्प लिया था। वे कनाडा में सर एडमंड हिलेरी फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष बन गए थे और हिमालय ट्रस्ट के कार्यों के लिए वित्त जुटाने लगे थे। मई 1975 में एडमंड और मैक्स पर्ल ने टोरंटो में ओ कोनोर से मिलकर कुंडे अस्पताल के लिए वित्तीय सहायता के संबंध में बातचीत की थी।

सन् 1977 के मध्य में एडमंड अवसाद ग्रस्त रहने लगे थे। वित्तीय मदद मिलने या भवन-निर्माण परियोजनाएँ पूरी होने पर भी उनका उत्साह वापस नहीं लौट पा रहा था। उनका यह खोया हुआ उत्साह उनके प्रिय विषय साहसिक कार्य के जरिए ही लौट पाया। एडमंड ने अपने इस साहसिक अभियान के बारे में बाद में लिखा—''पाँच साल से अधिक समय से मैं एक नए साहसिक अभियान की कल्पना कर रहा था, मैं अपने कुछ मित्रों के साथ गंगा के उद्‌गम स्थल की तरफ समुद्र के मिलन-स्थल से धारा के विपरीत दिशा में यात्रा करना चाहता था। मैं जेट बोट का इस्तेमाल करते हुए 1500 मील की दूरी तय करना चाहता था। मैं पवित्रतम नदी में यात्रा करते हुए भारत को करीब से देखना चाहता था। मैंने तय किया था कि जहाँ धारा में जेट बोट से सफर करना संभव नहीं होगा, वहाँ हम किनारे-किनारे पैदल ही चलेंगे और उस पर्वत तक पहुँचेंगे, जहाँ से

यह नदी निकलती है···इस तरह उस आसमान तक अपने आप पहुँच ही जाएँगे···और सागर से शुरू की गई अपनी लंबी यात्रा के दौरान हम भारत के हृदय की धड़कन को महसूस करेंगे, चूँकि लाखों-करोड़ों भारतीयों के लिए माता गंगा भारत के हृदय की तरह है। हमारी यात्रा महज साहसिक अभियान नहीं होगी, बल्कि एक सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा भी होगी। हम इस महान् देश के इतिहास और धर्म को अच्छी तरह समझ पाएँगे, अंत में मैं अपने प्रिय हिमालय से मिल पाऊँगा। यह यात्रा रोमांचक और विविध अनुभवों से भरपूर होगी, और इसके दौरान जोखिम का भी सामना करना पड़ेगा—मुझे तो ऐसे ही अभियान की जरूरत है!''

इस अभियान का वर्णन करते हुए एडमंड ने पंडित जवाहरलाल नेहरू का उल्लेख किया है— ''1953 में मेरी उनसे मुलाकात हुई, उन्होंने मुझे अत्यंत प्रभावित किया।''

अगस्त 1977 में 'सागर से आसमान तक' अभियान की तैयारी हो रही थी। न्यूजीलैंड की तरफ से इस अभियान में एडमंड, पीटर हिलेरी, माइक गिल, जिम विलसन, मैक्स पर्ल, मूरी जोंस, ग्रीम डिंगल और जेट ओट विशेषज्ञ जॉन और माइकल हैमिल्टन शामिल हुए थे। भारत की ओर से इंडियन माउंटेनीयरिंग फेडरेशन के अध्यक्ष हरीश सरीन, 1965 में एवरेस्ट अभियान के नेता कैप्टन मोहन कोहली और कमांडर जोगिंदर सेटिंग एडमंड के दाएँ हाथ के रूप में सरदार की भूमिका में थे, वहीं रसोइए के तौर पर वफादार पुराना साथी मेमा था। ''जब हम थककर किसी कैंप में अँधेरे में परेशान होकर बैठ जाते थे, तब हमें पता होता था कि एक घंटे के भीतर पेमा हमें गरम चाय पिला देगा और एक घंटे के बाद खाना भी खिला देगा।'' किसी भी अभियान की सफलता या विफलता में ऐसे लोगों की निर्णायक भूमिका होती है।

इस अभियान की शूटिंग माइक डिलोन, वाका एटवेल, प्रेम वैद्य और बी.जी. देवारी कर रहे थे। पुस्तकों, पत्रिकाओं और फिल्म के अधिकार को बेचकर अर्थ जुटाना संभव हो सकता था। अभियान दल का आकार बड़ा था, हालाँकि उनमें से कई सदस्य अभियान के बाद में शामिल हुए। किबी, गंगा और एयर इंडिया नामक जेट बोटों में 250 हॉर्सपावर की वी 8 इंजन से युक्त थी। सीयर्स रोबुक ने अभियान के लिए सारी सामग्री मुहैया करवाई थी। भारतीय अधिकारीगण हरेक स्तर पर जिस तरह सहयोग कर रहे थे। उसे देखकर एडमंड अभिभूत हो उठे थे। भारतीय तेल कंपनियों ने अभियान के लिए मुफ्त ईंधन मुहैया करवाया था।

24 अगस्त, 1977 को अभियान दल बंगाल की खाड़ी से होते हुए गंगासागर के मंदिर तक पहुँचा। ''भारत के लोगों के लिए पिछले 3000 वर्षों से गंगा सागर ऐसा स्थान रहा है, जहाँ गंगा सागर से जाकर मिलती है। यह ऐसी जगह है, जहाँ से कोई भी पवित्र यात्रा आरंभ की जा सकती है।···जेट बोटों और टीम के सदस्यों के लिए पूजा

अनुष्ठान का आयोजन किया गया और सबके माथे पर तिलक लगाया गया। फिर पुजारी ने ताँबे के एक छोटे पात्र में थोड़ा गंगाजल भरकर दिया, जिसे यात्रा के अंत में बर्फ पर छिड़कना था।''

जेट बोट काफी शोर करती है और इसे पवित्र यात्रा का आदर्श परिवहन नहीं माना जा सकता। मगर यह छिछले पानी में या धारा की विपरीत दिशा में तेजी से तैरना इसकी असाधारण खूबी है और गंगा में इसे बढ़ते हुए देखने के लिए भारी संख्या में लोगों की भीड़ एकत्र होने लगी थी। कलकत्ता में लगभग चालीस लाख लोग जेट बोटों का दर्शन करने के लिए नदी किनारे इकट्ठे हो गए थे। इसी तरह हर स्थान पर भारी संख्या में लोग अभियान दल का स्वागत करने के लिए उमड़ रहे थे। इस यात्रा को आम जनता एक तीर्थ यात्रा के रूप में देख रही थी, जिस यात्रा का नेतृत्व विश्व प्रसिद्ध पर्वतारोही सर एडमंड हिलेरी कर रहे थे, जो कभी तेनजिंग नोर्गे के साथ हिमालय की सबसे ऊँची चोटी तक पहुँच चुके थे।

इस अभियान का बीच का पड़ाव वाराणसी शहर था, जो भारत का पवित्रतम स्थान माना जाता है। 12 सितंबर को अभियान वाराणसी से रवाना हो गया। दो सप्ताह बाद ऋषिकेश और देवप्रयाग के बीच तीव्रधारा का सामना करते हुए दल को आगे की दिशा में बढ़ना पड़ा। स्थानीय लोग भौंचक होकर इस दृश्य को देख रहे थे। नंदप्रयाग में जलप्रपात की वजह से बोट के जरिए मार्ग-यात्रा जारी रखना संभव नहीं रह गया। दल के कुछ सदस्यों ने यहीं अपनी यात्रा का समापन किया। बोटों को नई दिल्ली भेज दिया गया और मैक्स पर्ल हिमालय ट्रस्ट की परियोजनाओं की देखरेख करने के लिए नेपाल रवाना हो गए। अभियान के शेष सदस्यों ने उन तीर्थ यात्रियों के साथ आगे बढ़ना जारी रखा, जो बदरीनाथ की तरफ जा रहे थे।

बदरीनाथ से दल के सदस्य यात्रा के अंतिम पड़ाव की तरफ बढ़े। उन्होंने 5500 मीटर ऊँचे बर्फीले दर्रे को पार किया और एक अनाम चोटी पर पहुँच गए, जिसका नाम उन्होंने 'आकाश पर्वत' रखा। उन्होंने पवित्र गंगाजल बर्फ पर बिखेर दिया। पीटर हिलेरी, जिम विलसन, ग्रीम डिंगल, मुरे जोंस और वाका एटेवेल 18 अक्तूबर को चोटी पर पहुँचे। एडमंड के लिए यह अभियान पाँच दिन पहले ही समाप्त हो गया था।

13 अक्तूबर को माइक गिल और मिंगमा बेस कैंप तक गए थे और वहाँ से सबके परिजनों के पत्र लेकर वापस लौटे थे। उनमें सारा हिलेरी के पुत्र आर्थर के जन्म की सूचना देनेवाला पत्र भी शामिल था। एडमंड अब नाना बन चुके थे। मगर जश्न मनाने में वे खुद को असमर्थ महसूस कर रहे थे। चूँकि उनकी तबीयत बिगड़ गई थी। पहाड़ी के ऊपर चढ़ना तकलीफदेह साबित हो रहा था, चूँकि अभी पीठ पर भारी सामान लादकर आगे बढ़ रहे थे और अगली सुबह एडमंड की तबीयत काफी बिगड़ गई थी।

माइक गिल ने उस समय का वर्णन करते हुए लिखा है, ''शायद ऊँचाई पर चढ़ने के कारण उनकी हालत बिगड़ने लगी थी और मुझे लगा कि उन्हें तत्काल मदद की जरूरत है। ऑक्सीजन के जरिए उनकी हालत में सुधार कर पाना संभव था। ऑक्सीजन हम साथ लेकर नहीं गए थे, इसीलिए उन्हें पहाड़ से नीचे ले जाना जरूरी था। कुछ हजार फीट नीचे ले जाने से भी उनकी दशा में सुधार हो सकता था। इसीलिए हमें तेजी से नीचे की ओर जाना था।''

मूरे जोंस मदद का प्रबंध करने के लिए नीचे चले गए। वह सवा घंटे में ही बदरीनाथ पहुँचने में सफल रहे थे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने न्यूजीलैंड उच्चायोग को सूचना दे दी और एक हेलीकॉप्टर का प्रबंध करने के बाद ऑक्सीजन की बोतल साथ में लेकर बेस कैंप तक वापस आ गए, दूसरी तरफ टेंट लगाकर एडमंड के विश्राम की व्यवस्था कर दी गई। माइक गिल ने लिखा है, ''हम उनके प्रति लगाव और स्नेह महसूस करने लगे। हम लोग एडमंड को सहारा देकर तेजी से आगे बढ़ने लगे। पीटर निराश होकर पहले रोने लगा था, मगर बाद में वह किसी घोड़े की तरह तेजी से बर्फ पर उतरने लगा।''

इस तरह वे लोग एक घंटे से भी कम समय में 450 मीटर नीचे आ गए। एडमंड के चेहरे पर पहले की तुलना में राहत का भाव नजर आने लगा था, मगर आगे बर्फ से ढके इलाके को पार करना था, जहाँ किसी भी वक्त हादसा होने का खतरा था। एडमंड के सहयोगी काफी सावधानी के साथ उनको 4900 मीटर नीचे लाने में सफल रहे। तीन घंटे पहले जहाँ एडमंड को साँस लेने में कठिनाई हो रही थी, वहीं अब उनकी हालत में तेजी से सुधार हो रहा था।

दुर्गम पहाड़ी रास्ते से उतरते हुए वे अपने बेस कैंप से सौ मीटर नीचे पहुँचे थे। उन्होंने हेलीकॉप्टर की आवाज सुनी थी, मगर बादल होने के कारण उसे उतारा नहीं जा सकता था। उन्होंने पहाड़ी ढलान पर रात गुजारने का फैसला किया। पीटर हिलेरी, मिंगमा, ग्रीम डिंगल, वाका एटेवेल और माइक डिलोन बेस कैंप की तरफ रवाना हो गए थे। पीटर टेंट और भोजन लेकर वापस लौट आए। अस्थायी टेंट में धीरे-धीरे एडमंड स्वयं को स्वाभाविक महसूस करने लगे थे।

अगली सुबह सभी बेस कैंप तक लौट आए थे। ग्रीम डिंगल ने उस अनुभव को याद करते हुए लिखा है—''अस्थायी कैंप में सभी काफी खुश थे। एडमंड की हालत में सुधार नजर आने लगा था। छोटे से कैंप के अंदर एडमंड, माइक, जिम, मिंगला, पीटर, वाका, मूरे के साथ मैं भी था। हम एक-दूसरे के हाथ को पकड़कर तब तक हँसी-मजाक करते रहे थे, जब तक सूर्योदय नहीं हो गया था।''

एडमंड को भारतीय वायुसेना के हेलीकॉप्टर में बिठाकर 2000 मीटर नीचे जोशीमठ

पहुँचाया गया। उनके साथ माइक गिल थे। वहाँ मीडिया ने उन्हें घेर लिया था। अखबारों में खबरें छप रही थीं कि नंदप्रयाग से आगे अभियान असफल हो गया था और जेट बोट के उड़ने की क्षमता के किस्से प्रचारित हो रहे थे। कुछ अखबारों का कहना था कि एडमंड जेट बोटों को बर्फीले पहाड़ों तक ले जाना चाहते थे। 'दैनिक हिमालय टाइम्स' के संपादकीय में लिखा गया था कि वर्ष के अनुपयुक्त समय में काफी ऊँचाई तक पहुँचने की कोशिश करते हुए एडमंड ने देवता को कुपित कर दिया था।

मेडिकल जाँच के लिए हेलीकॉप्टर में बिठाकर एडमंड को बरेली स्थित वायुसेना के बेस कैंप में लाया गया। मैदानी इलाके का तापमान काफी गरम था और एडमंड ने दिल्ली जाने से मना कर दिया था। ''मैं दिल्ली में मीडिया के शोर-शराबे का सामना करना नहीं चाहता। मैं तो वापस पहाड़ पर जाना चाहता हूँ।'' माइक गिल भी वैसा ही महसूस कर रहे थे।

एडमंड स्वस्थ हो गए और वापस लौट रहे अभियान दल के सदस्यों से मिलने के लिए बदरीनाथ पहुँच गए। पुजारी ने गंगा सागर में अभियान की सफलता और दल के सदस्यों की सुरक्षित वापसी के लिए जो पूजा की थी, वह सफल रही थी।

एडमंड का साहसिक अभियानों के प्रति लगाव कभी कम नहीं हुआ था, भले ही उनकी शारीरिक क्षमता पहले जैसी नहीं रह गई थी। अगले कुछ वर्षों तक वित्त का प्रबंध करने और नेपाल का दौरा करने का सिलसिला जारी रहा था। जैक ओ कोनोर का कनाडियाई फाउंडेशन अब कुंडे अस्पताल की सहायता करने लगा था और कनाडा के स्वयंसेवी डॉक्टरों को भी भेजने लगा था। वह फाउंडेशन पार्क में वृक्षारोपण अभियान चलाने में भी सहायता कर रहा था। नामचे बाजार के नीचे एक नर्सरी की स्थापना की गई। फिर ऐसी ही नर्सरियाँ तेसिंगा और तेंग बोचे के नीचे फोर्टर्स तथा फुर्ते में भी स्थापित की गईं।

एडमंड अभी भी अवसाद और मानसिक पीड़ा से उबरने के लिए संघर्ष कर रहे थे। नवंबर 1979 में अंटार्कटिका के माउंट एवरेस्ट क्षेत्र में हुई विमान दुर्घटना में पीटर मूलग्रीयू की मौत हो गई थी और अगले वर्ष ही एडमंड के गहरे दोस्त तथा पक्के समर्थक मैक्स पर्ल की भी मौत हो गई, टोंगारियो नदी में मछली पकड़ते समय मैक्स पानी में डूब गए थे। मगर इसी अवधि में पीटर मूलग्रियू की विधवा जून मूलग्रियू के साथ एडमंड की गहरी दोस्ती कायम हुई, जो अगले वर्ष तक अंतरंगता में बदल गई।

सन् 1981 में एक बार फिर एडमंड को साहसिक अभियान में जुड़ने का मौका मिला। अमेरिकी मर्चेंट बैंकर रिचर्ड ब्लम ने नेपाल में कई बार पर्वतारोहण किया था और शेरपा के बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने के संबंध में एडमंड से बातचीत की थी। ब्लम ने अमेरिकन हिमालयन फाउंडेशन की स्थापना की थी और इसके जरिए वे

जहाँ हिमालयन ट्रस्ट की वित्तीय सहायता कर रहे थे, वहीं धर्मशाला में दलाई लामा की परियोजनाओं के लिए भी धन मुहैया करवा रहे थे। ब्लम ने एवरेस्ट के पूर्वी हिस्से पर चढ़ने की योजना बनाई थी और इस अभियान में एडमंड पर्वतारोही के रूप में नहीं, बल्कि एक पर्यवेक्षक के रूप में शामिल हुए थे।

जब यह दल ल्हासा पहुँचा तो वहाँ तेनजिंग नोर्गे से मिलकर अपार प्रसन्नता हुई थी। तब तेनजिंग हिमालयन माउंटेनीयरिंग इंस्टीट्यूट से सेवानिवृत्त हो चुके थे। एडमंड और नोर्गे ने अतीत के अपने अनुभवों के बारे में बातचीत की। इतने वर्षों में एडमंड भले ही नेपाली बोलना नहीं सीख पाए थे, मगर तेनजिंग धड़ल्ले से अंग्रेजी बोलना सीख गए थे।

□

अंतिम चरण

एडमंड हिलेरी के पैंसठवें जन्म दिन से कुछ दिन पहले न्यूजीलैंड के मतदाताओं ने लेबर पार्टी के पक्ष में मतदान किया और डेविड लेंज नए प्रधानमंत्री चुने गए। लेंज विदेशी मामलों का प्रभार भी देख रहे थे। 1982 में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री रॉबर्ट मूलडून ने नई दिल्ली में न्यूजीलैंड के दूतावास को बंद कर देने का फैसला किया था, तब लेंज ने इस फैसले का विरोध किया था। 1983 में नई दिल्ली की यात्रा के दौरान लेंज दूतावास के पुराने कर्मचारियों से मिले और उन्होंने वादा किया था कि अगर लेबर पार्टी की सरकार बनी तो वह दूतावास को फिर से खोल देंगे। लेंज जानते थे कि उस समय के वादे पर अमल करने लायक जनादेश उनके पास नहीं था, मगर उनके मन में ऐसे एक व्यक्ति को भारत में दूतावास को नए सिरे से खोलने के लिए भेजने का विचार पनप चुका था, जो अपने कर्तव्य का बखूबी निर्वाह कर सकता था। उन्होंने समय आने पर अपने वादे को निभाया भी।

चुनाव के नतीजे घोषित होने के कुछ दिनों बाद ही लेंज ने एडमंड से मुलाकात कर उन्हें भारत में न्यूजीलैंड के उच्चायुक्त के रूप में कार्य करने का प्रस्ताव दिया। एडमंड इस कार्य के लिए तुरंत राजी हो गए, चूँकि इस तरह वे जहाँ चंदा जुटाने का काम जारी रख सकते थे, वहीं साल में कम-से-कम एक महीने का समय नेपाल में गुजार सकते थे। मुलाकात के बाद एडमंड ने लेंज को पत्र लिखकर बताया कि भारत में न्यूजीलैंड का प्रतिनिधित्व करते हुए वे गर्व का अनुभव करेंगे, लेकिन अपने दायित्व का अच्छी तरह पालन करने के लिए उन्हें कम- से-कम एक कार की सुविधा मिलनी चाहिए। लेंज ने उन्हें आश्वस्त किया कि उच्चायोग के पास कम-से-कम दो कारें होंगी और कई ड्राइवर भी होंगे। इस पत्र-व्यवहार की चर्चा न्यूजीलैंड के विदेश मंत्रालय में हुई, इसको लेकर हँसी-मजाक भी किया गया। इससे जहाँ एडमंड की व्यावहारिकता का पता चलता है, वहीं यह भी जाहिर होता है कि वह क्षमता के साथ अपने कर्तव्य का निर्वाह करना चाहते थे, मगर अपने पद के साथ जुड़ी सुविधाओं के बारे में नहीं जानते थे। नौ से पाँच बजे तक यह पहला कार्य था, जो वह करनेवाले थे और उनके साथ काम करनेवालों ने बाद में उनकी ऐसी ही खूबियों का उल्लेख भी किया।

हाल के वर्षों में जून मूलग्रियू के साथ दोस्ती एडमंड के लिए काफी महत्त्वपूर्ण हो चुकी थी। ''यह बात नहीं थी कि मैं लुइस और बलिंडा को भूल जानेवाला था, मैं उन्हें कभी नहीं भुला सकता था, मगर जून उनसे परिचित थी और मुझे जून की संगत में राहत और खुशी महसूस होने लगी थी।''

भारत में नए पद के साथ बड़ी जिम्मेदारी जुड़ी हुई थी और एडमंड को वहाँ अकेले जाते हुए हिचक महसूस हो रही थी। ''मैं इस बात को लेकर परेशान था कि जून कैसे रह सकती थी, जबकि उसके बगैर भारत में मैं उसकी कमी महसूस कर रहा था। मैं उसे अपने साथ चलने के लिए कहते हुए यह सोचकर हिचक रहा था कि कहीं वह जाने से इनकार न कर दे; चूँकि जून अपने परिवार से गहरा लगाव रखती है। आखिरकार निर्णय स्वयं जून ने ही लिया। उसने कहा, मैं भी तुम्हारे साथ क्यों नहीं चल सकती? इस तरह मेरी परेशानी हल हो गई।''

जून और एडमंड के स्वभाव में काफी समानता थी, जो उन्हें एक-दूसरे के करीब ले आई थी। दोनों एक-दूसरे से लगभग तीस वर्षों से परिचित थे और जब पीटर और लुइस जीवित थे, तब दोनों दंपतियों के बीच अच्छी दोस्ती हो गई थी। मूलग्रियू दंपती ने हिमालयन ट्रस्ट की सदस्यता शुरुआती दौर में ही ग्रहण की थी और जून ट्रस्ट की सचिव थी। वह एडमंड के कार्यों के बारे में नेपाल के बारे में अच्छी तरह परिचित थी। वह 1961 में लुइस हिलेरी के साथ खुंबू की यात्रा कर चुकी थी। 1975 में जून ने जून मूलग्रियू ट्रेकिंग नामक संस्था की स्थापना की। यह संस्था पर्वतारोहियों के दल

को हर साल मई में एवरेस्ट क्षेत्र में और जुलाई में कश्मीर लेकर जाती थी। एडमंड के बच्चों की तरह जून की बेटियाँ रोबिन और सूजी अब बड़ी हो चुकी थीं। एडमंड को जून का हास्यबोध पसंद था और वह जून के चरित्र की दृढ़ता की सराहना करते थे। मकालू में घायल होने के बाद जब पीटर मूलग्रियू का इलाज हो रहा था, तब एडमंड ने जून के साहस और प्रतिबद्धता को करीब से देखा था और प्रभावित हुए थे। जून तेजी से एडमंड की खुशी का अपरिहार्य अंग बनती जा रही थी और आनेवाले समय में नई दिल्ली में एडमंड को अपनी जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाने में जून की ऊर्जा और बौद्धिक क्षमता की मदद मिलनेवाली थी।

डेविड लेंज ने उच्चायुक्त के रूप में एडमंड को चुनकर बिलकुल सही निर्णय लिया था। एडमंड न्यूजीलैंड के ऐसे एकमात्र चर्चित व्यक्ति थे—क्रिकेटर रिचर्ड हेडली को छोड़कर—जिनका नाम समूचे उपमहाद्वीप में मशहूर था और एडमंड निश्चित रूप से न्यूजीलैंड के एकमात्र नागरिक थे, जिनका नाम भारत की पाठ्य- पुस्तकों में 1953 में दर्ज था। एडमंड ने लिखा था, ''मुझे लगता है कि जब मैं और तेनजिंग एवरेस्ट की चोटी पर खड़े हो गए तो सिद्ध हो गया कि पश्चिमी लोगों की तुलना में भारतीय लोग उन्नीस नहीं हैं।''

दूतावास में नए सिरे से नियुक्त की गई कर्मचारी उमा लाल ने बताया कि एडमंड हिलेरी की नियुक्ति जख्म पर मरहम की तरह थी। जो जख्म उस पद को खत्म किए जाने के कारण पैदा हो गया था। न्यूजीलैंड ने अपनी राष्ट्रीय निधि को भारत भेज दिया था। इस उदारता पर गौर किया गया और सराहना भी की गई।

अपना पद सँभालने से पहले एडमंड नवंबर 1984 में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की अंत्येष्टि में भाग लेने के लिए आए थे। श्रीमती गांधी की हत्या के बाद शहर में मातम और अराजकता का वातावरण था और डेविड लेंज को अंत्येष्टि स्थल तक एडमंड और दूसरे सहयोगियों के साथ पहुँचने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा था। लेंज ने गौर किया कि जहाँ कई विदेशी मेहमान दिल्ली में अपनी सुरक्षा को लेकर आशंकित थे, वहीं एडमंड को सुरक्षा की कोई चिंता नहीं थी। बाद में लेंज ने कहा भी था कि किसी भी विदेशी मेहमान को भारत के लोगों के साथ घुलने-मिलने में छह महीने का समय लग सकता है, मगर एडमंड हिलेरी भारत की भूमि पर कदम रखते ही लोगों के साथ घुल-मिल जाने का गुर जानते हैं। वे भारत को अच्छी तरह जानते हैं और उन्हें वहाँ घर जैसा माहौल मिल जाता है।

फरवरी 1985 में नई दिल्ली पहुँचने के तुरंत बाद एडमंड और जून ने नेपाल का दौरा किया। वे पाँच दिनों के लिए पूर्वी नेपाल के बंग नामक गाँव में पहुँचे। उस गाँव के निवासी शेरपा नहीं, बल्कि राई हैं। यह जातीय समूह पूर्वी नेपाल में बड़ी तादाद

में रहता है। हिमालयन ट्रस्ट ने गाँव में एक स्वास्थ्य केंद्र बनाने का फैसला किया। एडमंड को इस तरह के कार्य करते हुए काफी संतुष्टि मिलती थी।

18 अप्रैल, 1985 को सर एडमंड हिलेरी ने भारत के राष्ट्रपति को अपना नियुक्ति-पत्र प्रस्तुत किया। उन्हें सम्मानपूर्वक राष्ट्रपति भवन के भीतर ले जाया गया। ''मुझे लगता है कि जिस समय न्यूजीलैंड का राष्ट्रगान बजाया गया, मैं कुछ तनकर खड़ा हो गया था। मैं किसी भी रूप में झंडा लहरानेवाला व्यक्ति नहीं हूँ, मगर इस पल मुझे एहसास हो गया था कि मैं औपचारिक तौर पर न्यूजीलैंड का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ और मुझे अपने दायित्व का निर्वाह दक्षतापूर्वक करना था।'' अब एडमंड माननीय उच्चायुक्त बन गए थे। जून उनकी आधिकारिक सहयोगी (ओसी) के पद पर नियुक्त की गई थी।

लेकिन कार्य शुरू करने के लिए उनके पास न तो निवास स्थल था, न ही कार्यालय था। दूतावास का पुराना बुनियादी ढाँचा नहीं रह गया था, वहीं निवास, कर्मचारी क्वार्टर वगैरह की लीज की अवधि समाप्त हो चुकी थी। एडमंड और जून एक होटल में रह रहे थे, वहीं होटल से जुड़े एक कक्ष में कर्मचारी कार्य कर रहे थे और भारत में न्यूजीलैंड की राजनीतिक उपस्थिति की शुरुआत नए सिरे से हो रही थी।

24 पृथ्वीराज रोड पर स्थित दूतावास के भवन को जून नया रूप देने में जुट गई। पहले भव्य और शानदार नजर आनेवाली इमारत की दशा बदहाल थी। जून ने इमारत की साज-सज्जा की व्यवस्था की। इस तरह दूतावास का वजूद नए सिरे से सामने आ गया। एडमंड अपना कार्य करने में जुट गए। सहयोगी के रूप में जून के साथ होने के कारण एडमंड अपने आपको तनाव मुक्त महसूस कर रहे थे। उच्चायुक्त के रूप में मेहमानों की आवभगत करना एक महत्त्वपूर्ण काम था और इस मामले में जून एक सिद्धहस्त मेजबान की भूमिका निभा रही थी।

यह उच्चायुक्त का स्थायी निवास नहीं था। नई दिल्ली के प्रमुख राजनीतिक क्षेत्र चाणक्यपुरी में कुछ दूरी पर स्थित यह एक किराए की इमारत थी। भारत सरकार ने चाणक्यपुरी में न्यूजीलैंड का दूतावास बनाने के लिए एक भूखंड आवंटित किया था। उस भूखंड पर देखभाल करनेवाले एक कर्मचारी का छोटा सा निवास था। शेष भूखंड खाली पड़ा था। एडमंड और जून दूतावास निर्माण के बारे में विचार-विमर्श करने लगे थे। उच्चायुक्त के निवास, कार्यालय और कर्मचारियों के आवास का नक्शा न्यूजीलैंड के आर्किटेक्ट सर माइल्स वारेन ने तैयार किया था। उन्होंने एडमंड के सुझाव पर पृथ्वीराज रोडवाली इमारत की कुछ खूबियों को अपने नक्शे में शामिल किया था। जून को उल्लेखनीय सेवा के लिए 1987 में 'क्वींस सर्विस मेडल' प्रदान किया गया और नए दूतावास का उद्घाटन 1992 में किया गया।

एडमंड हिलेरी को अपने पद से जुड़े महत्त्वपूर्ण कार्यों को पूरा करना था, मगर अभी भी उनके मन में साहसिक कार्यों के प्रति लगाव बना हुआ था। जब उन्हें चाँद पर सबसे पहले कदम रखनेवाले अपोलो ग्यारह के कप्तान नील आर्मस्ट्रांग के साथ उत्तरी ध्रुव तक विमान यात्रा करने का निमंत्रण मिला तो वे साथ जाने के लिए तैयार हो गए। पीटर हिलेरी भी उनके साथ गए। वे विमान में सवार होकर कनाडा के एडमोंटोन तक पहुँचे और उसके बाद आर्कटिक सर्कल तक गए, जहाँ उनका विमान आइस रनवे पर उतरा। उन्होंने आगे की यात्रा छोटे विमान से जारी रखी। यात्रा के अंतिम चरण में वे एलेसमेट द्वीप पहुँचे। उस समय का वर्णन पीटर हिलेरी ने किया है—''मैं नील से चाँद पर पहुँचने के उनके अनुभव के बारे में पूछना चाहता था, मगर मैं अपने पिता को इस तरह के सवालों से परेशान होते हुए देख चुका था, 'एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचकर आप कैसा महसूस कर रहे थे?' मैं नील को परेशान नहीं करना चाहता था। मगर बर्फीले वातावरण में उन्होंने स्वयं ही अपने अनुभवों के बारे में बताना शुरू कर दिया था।''

जब एडमंड ने नील से पूछा कि चाँद की यात्रा करने के लिए उनका चुनाव किस तरह किया गया तो नील ने जवाब दिया—''किस्मत! सिर्फ किस्मत!'' मगर एडमंड जानते थे कि किस्मत के अलावा उनकी योग्यता को देखते हुए ही उनका चुनाव किया गया था।

अप्रैल 1985 को वे उत्तरी ध्रुव तक पहुँचे थे। उस समय तापमान माइनस 45 डिग्री सेल्सियस था। एडमंड ने कहा था, ''किसी ने शैंपेन की बोतल निकाली और नील तथा मेरे लिए दो गिलासों में उड़ेली। इससे पहले कि हम लोग गिलास को होंठों से लगा पाते, शैंपेन जमकर बर्फ बन गई।'' वे लोग चार मीटर मोटी बर्फ की सतह पर खड़े थे और दूर तक बर्फ की ढलान ही दिखाई दे रही थी। लगभग डेढ़ घंटे की चढ़ाई के बाद वे ट्विन ओटर विमान में सवार हो गए और दक्षिण की दिशा में बढ़ते गए।

यह एक रोमांचक अनुभव था, हालाँकि यह कोई महान् साहसिक कार्य नहीं था। मगर मैं काफी हद तक संतुष्टि महसूस कर रहा था, चूँकि यह बात मेरी समझ में आ गई थी कि मैं ही ऐसा पहला व्यक्ति था, जो दक्षिण और उत्तर, दोनों ध्रुवों तक और माउंट एवरेस्ट की चोटी पर भी पहुँचा था। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी में बदलाव आता गया, मेरी यात्रा के माध्यम में भी बदलाव आया। मैं एवरेस्ट तक पैदल ही पहुँचा, दक्षिण ध्रुव तक एक फार्म ट्रैक्टर में सवार होकर पहुँचा और आखिर में उत्तरी ध्रुव तक एक छोटे विमान में सवार होकर पहुँचा।

दूसरी तरफ नई दिल्ली में सर एडमंड हिलेरी की नियुक्ति की ओर सबका ध्यान

आकर्षित हुआ था और 105 राजनयिकों के पदोंवाले शहर में न्यूजीलैंड के लिए संभावनाओं के नए दरवाजे खुलने लगे थे। एडमंड के नाम पर प्रभाव पड़ता था और सकारात्मक पहल मुमकिन होने लगी थी। एडमंड के वाणिज्य आयुक्त टोनी मिल्डेनहाल ने इस सुनहरे मौके का भरपूर लाभ उठाना शुरू कर दिया था।

सहायक उच्चायुक्त ग्रीम वाटर्स ने बाद में एडमंड की लगन की सराहना करते हुए उनके अनौपचारिक स्वभाव और हास्य-बोध को याद किया। उन्होंने बताया कि एडमंड धैर्यपूर्वक एवरेस्ट संबंधी सवालों का जवाब देते थे। प्रत्येक बैठक के अंत में लोग उनसे एक जैसे सवाल ही पूछते थे। डिनर या संबोधन के बाद भी ऐसा ही होता था। शालीनता से सवाल का जवाब देते हुए एडमंड कभी यह जाहिर नहीं होने देते थे कि इस तरह के सवाल का उन्हें बार-बार जवाब देना पड़ रहा है। इसी तरह सार्वजनिक कार्यक्रमों के अंत में लोग उन्हें ऑटोग्राफ के लिए घेर लेते थे और वे मुसकराते हुए सभी को ऑटोग्राफ देते थे।

दूतावास के भारतीय कर्मचारियों को उनके साथ कार्य करते हुए आनंद आ रहा था। दूतावास परिसर के बगीचे में क्रिसमस पार्टी का आयोजन जून किया करती थी, जिसमें कर्मचारियों के बच्चे शामिल होते थे। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी लगातार एडमंड के संपर्क में रहते थे और जब वे 1987 में न्यूजीलैंड के दौरे पर गए, तब न्यूजीलैंड के एक टीवी कार्यक्रम में मेहमान के रूप में शामिल हुए। यह कार्यक्रम एडमंड पर आधारित था, जिसका शीर्षक था 'एडमंड हिलेरी दिस इज योर लाइफ'। एडमंड ने इस बात को लेकर गर्व महसूस किया कि उनके साथ कार्यक्रम में दो देशों के प्रधानमंत्री शामिल हुए थे। डेविड लेंज ने एडमंड को बताए बिना टीवी कार्यक्रम में शामिल होने की व्यवस्था की थी।

एडमंड की सफलता के पीछे इस तरह की भावना भी काम कर रही थी कि वे भारत के लिए कोई पराए इनसान नहीं थे। सभी मुझसे कहते थे—''हम जानते हैं कि आप न्यूजीलैंड के रहनेवाले हैं, लेकिन आप हमारे लिए भी अपने ही हैं। तेनजिंग नोर्गे और एवरेस्ट ने मुझे भारत के साथ अपनेपन की डोर से बाँध दिया था।''

हिमालयन ट्रस्ट के कार्यों के सिलसिले में जब एडमंड काठमांडू जाते थे तो काफी समय अपने साथी तेनजिंग के साथ गुजारते थे। तेनजिंग की पत्नी डकू नेपाल में ट्रैकिंग समूहों का संचालन कर रही थी। एडमंड और तेनजिंग इस बात की चर्चा करते थे कि किस तरह एवरेस्ट विजय ने दोनों के जीवन को बदलकर रख दिया था।

सन् 1985 में एडमंड को पता चला कि न्यूमोनिया से ग्रस्त तेनजिंग को इलाज के लिए दिल्ली के एक अस्पताल में भरती किया गया है। उन्होंने लिखा, ''मैं तेनजिंग से कई बार मिला और उसकी गिरती सेहत को देखकर मुझे बड़ी तकलीफ हुई। उसे

अभी भी इस बात पर गर्व होता है कि हम दोनों ने सबसे पहले माउंट एवरेस्ट की चोटी पर कदम रखा था। वह मेरी इस बात से सहमत था कि बाद के दिनों में पर्वत का व्यवसायीकरण चिंताजनक रूप से बढ़ता गया है।''

एडमंड अकसर इस बात पर चिंता व्यक्त करते थे कि भारी संख्या में लोग एवरेस्ट की चढ़ाई करने लगे थे। 1996 में एवरेस्ट पर चढ़ाई के दौरान मारे गए पर्वतारोहियों के बारे में उन्होंने कहा, ''जब पर्वतारोहियों की इतनी बड़ी संख्या एक साथ चढ़ाई करती है, तब कठिन हिस्सों में आगे बढ़ने के लिए कतार लग जाती है। कुछ लोग अपराह्न तीन बजे या उसके बाद चोटी तक पहुँच नहीं पाते। और दिन के दूसरे हिस्से का प्रतिकूल मौसम उनके लिए जानलेवा बन जाता है।''

एडमंड मानते थे कि तेनजिंग और उनकी किस्मत अच्छी थी। मैं समझता हूँ कि वास्तव में हम दोनों खुशकिस्मत थे। हमें सबकुछ खुद ही करना था। हमें मार्ग ढूँढ़ना था, सामान उठाना था, पहाड़ के ऊपरी हिस्से पर नजर रखनी थी। अब उस तरह की चुनौतियों का वजूद नहीं रह गया है।

मई 1986 में जब यह खबर आई कि अपने घर में तेनजिंग की मौत हो गई, तो एडमंड स्तब्ध रह गए। उस समय तेनजिंग की उम्र चौहत्तर साल थी। एडमंड और जून किसी भी हालत में अंत्येष्टि में शामिल होना चाहते थे। दूसरी तरफ इलाके में राजनीतिक अशांति फैली हुई थी और दार्जिलिंग तक पहुँचते समय रास्ते में कई स्थानों पर उग्र भीड़ ने उन्हें रोका था।

एडमंड की सुरक्षा के लिए साथ चल रहे सेना के कैप्टन ने बाद में बताया कि उसने उग्र भीड़ को बताया गया था कि हिलेरी साहब अपने दोस्त को श्रद्धांजलि देने के लिए जा रहे हैं। तेनजिंग के नाम से सभी परिचित थे और सभी उनका सम्मान करते थे। कैप्टन की बात सुनकर भीड़ ने रास्ता छोड़ दिया था। तेनजिंग के घर में हमारा गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया। उसके परिवारवालों ने हमारे सामने चाय के साथ बिस्कुट परोस दिए। फिर हमें ऊपरी कक्ष में ले जाया गया, जहाँ तेनजिंग का खूबसूरत निजी गोंपा था। वहीं उसके पार्थिव शरीर को रखा गया था। मैंने आखिरी बार अपने मित्र के शांत चेहरे की तरफ देखा, जिसने तैंतीस साल पहले एवरेस्ट की चोटी पर मेरे साथ कदम रखा था।

हिमालय माउंटेनीयरिंग इंस्टीट्यूट के परिसर में तेनजिंग की अंत्येष्टि संपन्न हुई, जहाँ कंचनजंघा का सौंदर्य बिलकुल सामने नजर आता है। इस अंत्येष्टि में एडमंड और जून के रूप में दो ही विदेशी मेहमान मौजूद थे, जो डकू और अन्य परिजनों के साथ बैठे हुए थे।

बौद्ध धर्म की परंपरा के अनुसार अंत्येष्टि क्रिया शुरू हुई। मंत्रोच्चारण शुरू हो

गया। सजाई गई चिता पर तेनजिंग के शरीर को रखा गया। शरीर को सफेद कुरता पहनाया गया था। ''कई तरह से यह एक खुशी का अवसर जैसा लग रहा था। हँसी-ठहाके गूँज रहे थे और सभी चाय पी रहे थे। वनभोज जैसा वातावरण था। बौद्ध होने के नाते उन लोगों को पुनर्जन्म पर विश्वास था और वे मान रहे थे कि तेनजिंग नया जन्म लेकर लौटनेवाला है, लेकिन अभी उन्हें एक महान् नायक के प्रस्थान का जश्न खुशी और उदासी के साथ मनाना चाहिए।'' बूँदाबाँदी शुरू होते ही तेनजिंग के बड़े बेटे नोरबू ने चिता में आग लगा दी। मंत्रोच्चारण जोर-जोर से शुरू हो गया, जो शरीर से आत्मा की मुक्ति का प्रतीक है।

एडमंड अप्रैल 1997 में हिमालय माउंटेनीयरिंग इंस्टीट्यूट में दोबारा उस समय पहुँचे, जब उन्हें तेनजिंग की संगमरमर से निर्मित विशाल प्रतिमा का उद्घाटन करने के लिए आमंत्रित किया गया। उन्होंने बताया, ''मैंने कभी भी अपने आपको एक हीरो नहीं समझा, मगर मुझे इस बात में जरा भी संदेह नहीं है कि तेनजिंग सच्चे अर्थों में एक हीरो था। सामान्य पृष्ठभूमि से निकलकर वह विश्व के शिखर तक पहुँचा। मुझे लगता है कि इस प्रतिमा को इसी तरह पर्वतमाला के सामने हमेशा रहना चाहिए, जिस पर्वतमाला से उसे इतना प्यार था और उसने अनेक युवा पर्वतारोहियों को पर्वतारोहण के गुर सिखलाए।''

19 जनवरी, 1989 को एडमंड और जून यह खबर सुनकर अत्यंत आहत हुए कि तेंगबोचे बौद्ध विहार में भयंकर आग लग गई है। एडमंड का उस विहार के साथ चालीस सालों से रिश्ता बना हुआ था और उनके साथ उनका गहरा लगाव हो गया था। जिस सुबह वह और तेनजिंग एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचे थे, उन्होंने नीचे झाँककर विहार को देखा था। तेंगबोचे विहार के लामा गवांग तेनजीन जंगबू के साथ उनकी दोस्ती हो गई थी।

एडमंड और जून तुरंत विमान के जरिए नेपाल पहुँचे। फिर वे हेलीकॉप्टर में सवार होकर लेंगबोचे पहुँच गए, जहाँ अभी भी मलबे से धुआँ निकल रहा था। अपने समुदाय के आध्यात्मिक केंद्र की तबाही से शेरपा लोगों को काफी तकलीफ पहुँची थी। एडमंड और जून ने तेंगबोचे का पुनर्निर्माण कराने का फैसला किया। राशि जुटाने के लिए एडमंड ने कनाडा में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रमों को संबोधित किया, वहीं अमेरिकन हिमालयन फाउंडेशन ने उदारता के साथ सहयोग किया। जापान, फ्रांस और ब्रिटेन से भी आर्थिक सहायता मिलने लगी। स्विट्जरलैंड की ओर से ताँबे की एक विशाल छत भेजी गई। कुल मिलाकर 4 लाख डॉलर की उनकी आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह बहुत बड़ी रकम थी। उसी साल ब्रिटेन में एडमंड के पुरान मित्र जॉर्ज लोए और उनकी पत्नी मेरी ने 'सर एडमंड हिलेरी फाउंडेशन यूके' की स्थापना की

थी और उन्होंने विहार के निर्माण के लिए वित्तीय मदद उपलब्ध कराई थी।

स्थानीय दक्ष कारीगरों ने चार सालों तक मेहनत कर तेंगबोचे का नए सिरे से निर्माण किया। 22 सितंबर, 1993 को एडमंड ने तेंगबोचे पहुँचकर नए भवन का उद्घाटन किया। जिस समय एडमंड नई दिल्ली के दूतावास से अपना कार्यकाल पूरा कर विदा हुए, उस समय तक उस पद की प्रतिष्ठा और गरिमा काफी बढ़ चुकी थी। उनके कार्यकाल में दोनों देशों के बीच वाणिज्य अैर आप्रवजन के क्षेत्र में संभावनाओं के नए दरवाजे खुले थे।

जब लैरी और जोआन विदरबी नई दिल्ली के दौरे पर आए तो उन्होंने एक नए एडमंड को देखा, जो काफी हद तक बदल चुका था। उनसे मिलनेवाले दूसरे दोस्तों का भी यही मानना था कि एडमंड के व्यक्तित्व से नए सिरे से जोश और उत्साह का संचार हुआ था। अपने पद से जुड़े दायित्वों को निभाने के लिए उनके अंदर नई ऊर्जा आ गई थी। भारत ने उन पर जादू जैसा असर किया था, वहीं जून की देखभाल में वे आत्मविश्वास के साथ अपना काम करते रहे थे।

जुलाई 1989 में उन्होंने भारत छोड़ दिया। हम ऑकलैंड वापस लौट आए। जून अपने घर में रहने के लिए चली गई और मैं अपने घर में आ गया। हालाँकि जून मुझसे केवल एक मील की दूरी पर रह रही थी, मगर मुझे अकेलेपन का एहसास सताने लगा था। हमारे बच्चों ने हमारी समस्या को हल करने का निश्चय किया। उन्होंने हमसे कहा, अब आप लोग घर लौट आए हैं तो शादी क्यों नहीं कर लेते? फिर उन्होंने हमारी शादी करवा दी।

30 नवंबर, 1989 को सर एडमंड हिलेरी और जून मूलग्रियू की शादी उनके मित्र मैथ रिजर्ड ने करवाई, जो ऑकलैंड के मेयर थे और जल्द ही न्यूजीलैंड के गवर्नर जनरल बननेवाले थे। यह एक यादगार अवसर था, जब वैवाहिक समारोह का आयोजन किया गया। दूल्हा-दुलहन को सजाया गया था। उनके बच्चे, नाती-पोते, रिश्तेदार और कई मित्र इस अवसर पर उपस्थित थे। उन्होंने खुशहाल माहौल में सर एडमंड हिलेरी और लेडी हिलेरी के रूप में जीवन का नया चरण शुरू किया।

अब मैं सत्तर साल का हो चुका था और जून मुझसे बारह साल छोटी थी। लुई और जून के बगैर मेरा जीवन काफी सूना हो सकता था। एवरेस्ट विजय के बाद बाईस सालों तक लुइस ने मेरे जीवन को खुशहाल बनाए रखा था और ये साल मेरे लिए सर्वाधिक सार्थक रहे। उसकी मौत के बाद पाँच सालों तक मैं गहरे अवसाद की स्थिति में रहा। फिर जब जून के साथ मेरी पुरानी दोस्ती अंतरंगता में बदल गई तो मैंने नए सिरे से जीना और प्यार करना सीखा।''

परवर्ती पंद्रह सालों तक एडमंड और जून को लगातार यात्राएँ करने, चंदा जुटाने,

नेपाल का दौरा करने और हिमालय ट्रस्ट का संचालन करने में अनवरत व्यस्त रहना पड़ा। हर साल ट्रस्ट की बैठक ऑकलैंड में उनके घर में होती थी और काठमांडू में आंग रीता शेरपा की अध्यक्षता में इसकी सलाहकार परिषद् की स्थापना की गई थी। जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थितियाँ आती रही थीं। किसी का जन्म होने पर जश्न मनाया जाता, वहीं किसी पुराने मित्र की मृत्यु को भी उत्सव का रूप दिया जाता। ऐसे मित्रों की उपलब्धियों को एडमंड संजीदगी के साथ याद करते थे। एडमंड और उनके बच्चों का खयाल रखनेवाले परिवारिक मित्र जिम रोज ने अपनी आँखों में एडमंड और जून को नए सिरे से गृहस्थी बसाते हुए देखा था, मगर अगले ही साल इक्यानबे साल की उम्र में उनका देहांत हो गया था।

उसी साल न्यूजीलैंड की स्वतंत्रता के 150 वर्ष पूरे होने पर समारोह का आयोजन किया जा रहा था। 150 वर्ष पहले माओरी नेताओं और ब्रिटिश शासक के बीच वेटांगी समझौते पर हस्ताक्षर हुए थे। न्यूजीलैंड के इतिहास को याद करने के लिए बैंक के नए नोट छापे गए। रिजर्व बैंक ने काफी सोच-विचार करने के बाद गिने-चुने महापुरुषों की तसवीरें नोट पर छापने का निश्चय किया। शासनाध्यक्ष के अलावा रानी एलिजाबेथ द्वितीय, रसायन शास्त्री नोबेल पुरस्कार विजेता लॉर्ड आर्नेस्ट रदरफोर्ड ऑफ नेल्सन (1871-1937), मशहूर माओरी नेता और सांसद सर एपीरना गाटा (1874-1950), लोकप्रिय नेता फेट शेफर्ड (1848-1934) के अलावा सर एडमंड हिलेरी की तसवीर को नोट पर अंकित करने का फैसला किया गया था।

पीटर हिलेरी ने बचपन में अपने पिता और मिंगमा सेरींग के साथ माउंट फॉग पर पर्वतारोहण का जो अनुभव प्राप्त किया था, उसकी वजह से पर्वतारोहण के प्रति उनका गहरा लगाव हो गया था। पीटर ने न्यूजीलैंड और हिमालय क्षेत्र में ऐसे कई अभियानों में भाग लिया था। मई 1990 में पीटर न्यूजीलैंड के राव हॉल और गेरी बॉल के साथ एवरेस्ट की चढ़ाई करने के लिए निकले थे।

10 मई को एडमंड अपने घर के अध्ययन-कक्ष में बैठे हुए थे, उसी समय फोन की घंटी बज उठी। पीटर ने एवरेस्ट की चोटी से अपने पिता को फोन किया था। पीटर के मन में अपने पिता के साहसिक कार्य के लिए सराहना का भाव था और एवरेस्ट पर सबसे पहले कदम रखनेवाले अपने पिता को लेकर वह गौरवान्वित भी महसूस करता था।

बाद में पीटर ने बताया, ''मैं जानता था कि ऐसा करना कठिन है, मगर मैं जानता था कि ऐसा कर पाना संभव है, चूँकि ऐसा पहले किया जा चुका था, मगर जब डैड अभियान पर निकले थे, तब तो इसकी सफलता को लेकर उनके मन में कोई निश्चित धारणा नहीं थी।''

एडमंड ने लिखा है, ''अगर आपने काफी साल पहले कोई कारनामा किया था

तो आप इस बात की अपेक्षा नहीं रख सकते कि आपका पुत्र उससे प्रभावित होगा ही, लेकिन मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मुझे अत्यंत प्रसन्नता का एहसास हुआ।'' तेनजिंग का पुत्र जेमलिंग तेनजिंग नोर्गे ने 1996 में एवरेस्ट की चढ़ाई की, तेनजिंग के पोते ताशी तेनजिंग ने 1997 में एवरेस्ट की चढ़ाई की, वहीं ताशी और पीटर ने एक साथ एक बार फिर 2002 में एवरेस्ट की चढ़ाई की।

सन् 1991 से एडमंड के लिए ऊँचाई पर चढ़ना कठिन होने लगा था, मगर वह कुछ और वर्षों तक विमान से सवार होकर पहाड़ों के ऊपर पहुँचते रहे थे। 1993 में उनके गहरे मित्र मिंगमा सेरींग का देहांत हो गया। दोनों के बीच चालीस वर्षों की दोस्ती थी। ''लगभग पूरी तरह निरक्षर होने के बावजूद मिंगमा की याददाश्त जबरदस्त थी और उनमें विलक्षण खूबियाँ थीं। हिमालयन ट्रस्ट में हम लोग मिंगमा की अचूक निर्णय क्षमता पर निर्भर करते थे। मिंगमा के बिना मैं इतने सारे काम नहीं कर सकता था।''

मिंगमा की मृत्यु से जिस तरह एडमंड के जीवन में खालीपन आया, उसी तरह खुंबू के शेरपा लोगों ने अपने सच्चे हितैषी को खो दिया। अब वे लोग 'बड़ा साहब' को मिंगमा के साथ पहाड़ी सड़कों पर चलते हुए कभी नहीं देख सकते थे। दोनों की दोस्ती काफी मशहूर थी। ''मिंगमा की अंग्रेजी टूटी-फूटी होती थी, फिर भी मैं उसकी बातों को अच्छी तरह समझ लेता था और वह भी आसानी से मेरी बातों को समझ जाता था। मैं यही कहना चाहता हूँ कि मैं मिंगमा को अपने दिल के करीब पाता था।''

आंग डूली ने मिंगमा की समाधि लुइस और बेलिंडा की समाधि के पास ही कुंडे ऊपर पहाड़ी ढलान पर बनाई। मई 1995 में एडमंड और जून जूनबेसी गाँव पहुँचे थे, जहाँ एक स्विस प्रतिष्ठान ने नए स्कूल भवन का निर्माण किया था। जूनबेसी गाँव में हाल ही में एक टेलीफोन कनेक्शन भी लग गया था। एक दिन दोपहर बाद एक संदेशवाहक यह कहने के लिए आया था कि किसी ने 'बड़ा साहब' को फोन किया था।

जहाँ टेलीफोन का बक्सा था, वह जगह काफी नीचे थी। मैंने हिचकते हुए जून से कहा कि क्या वह मेरी तरफ से फोन पर बात कर सकती है। वह तुरंत बात करने के लिए नीचे की तरफ रवाना हो गई। ब्रिटिश राजदूत ने फोन किया था। उन्होंने महारानी एलिजावेथ द्वितीय के सचिव का एक संदेश दिया था। मुझसे पूछा गया था कि क्या मैं 'ऑर्डर ऑफ द गार्टर' स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ?

जून ने इस बात की पुष्टि करने के लिए राजदूत को दोबारा फोन किया कि कहीं कोई मजाक तो नहीं किया गया है। फिर ऊपर पहुँचकर जून ने एडमंड को समाचार सुना दिया था। यह सूचना पाकर एडमंड को सुखद आश्चर्य हुआ था। ''मुझे महारानी की तरफ से अधिक निमंत्रण नहीं मिले थे और अब मुझे इतना बड़ा सम्मान दिया जा रहा था, इसीलिए मैंने इसे स्वीकार करने का फैसला किया।'' इस बार एडमंड और जून ने एक

साथ नीचे उतरकर राजदूत से फोन पर बात की। एडमंड हिलेरी को सबसे पुराने और सर्वोच्च ब्रिटिश सम्मान के लिए चुना गया था। इस सम्मान की शुरुआत 1348 में एडवर्ड तृतीय ने की थी।

9 जून को सम्मान समारोह था। जब हम विंडसर की तरफ रवाना हुए, तब सुबह सुहानी थी। वहाँ मेरी मुलाकात गण्यमान्य व्यक्तियों से हुई, जिन्हें विभिन्न पदवियों से सम्मानित किया गया था। उनमें ज्यादातर ड्यूक, अर्ल्स और लॉर्ड थे। सभी ने गर्मजोशी के साथ मेरा स्वागत किया। वहीं जॉन हंट भी थे, जिन्हें कुछ साल पहले ही 'नाइट ऑफ द गार्टर' सम्मान दिया जा चुका था और जो इस बात पर गर्व महसूस कर रहे थे कि उनके अभियान दल के दो सदस्यों को शाही सम्मान के योग्य समझा गया था।

सन् 1953 के अभियान दल के सदस्य अकसर नॉर्थ पेंस के पेनीगार्ड होटल में एकत्रित होते रहते थे और 1993 में चढ़ाई की चालीसवीं सालगिरह के अवसर पर सभी एवरेस्ट बेस कैंप में उपस्थित हुए थे। अभियान के सभी सदस्य आजीवन एक-दूसरे के मित्र बने रहे। 1997 में टेलीविजन न्यूजीलैंड ने एडमंड के जीवन पर आधारित एक डाक्यूमेंटरी शृंखला का निर्माण किया, जिसका शीर्षक था 'हिलेरी : ए व्यू फ्रॉम द टॉप', इसका लेखन और निर्देशन टॉम स्कॉट ने किया था, जो एक प्रतिभाशाली राजनीतिक टिप्पणीकार और कार्टूनिस्ट थे। जून के साथ जीवन की नई शुरुआत करने के साथ ही एडमंड नए सिरे से हँसना सीख गए थे। दोनों ही आदर्श जीवनसाथी साबित हुए थे। एडमंड ने जून के साथ दुनिया भर के विभिन्न स्थानों का दौरा डाक्यूमेंटरी की शूटिंग के सिलसिले में किया। इस धारावाहिक को दर्शकों ने बेहद पसंद किया।

इसी अवधि में निर्देशक माइकल डिलोन ने एडमंड के जीवन पर 'बियोंड एवरेस्ट' नामक फिल्म बनाई। इसमें सल्लेरी बौद्ध मठ के उद्घाटन कार्यक्रम को भी दरशाया गया। हिमालय ट्रस्ट ने स्थानीय लोगों के लिए धार्मिक-सांस्कृतिक केंद्र के रूप में इसका निर्माण करने के लिए वित्तीय सहायता मुहैया करवाई थी। उद्घाटन के बाद एडमंड को लामा की मानद पदवी दी गई। इस घोषणा का ठहाकों के साथ स्वागत किया गया। लामा की पोशाक पहनकर उन्होंने कहा, ''अब जून मेरी तरफ कुछ ज्यादा आकर्षित होगी।''

उद्घाटन समारोह में पीटर हिलेरी, जॉर्ज और मेरी लोवे भी उपस्थित थे, चूँकि उसी साल सल्लेरी में एक नई परियोजना की शुरुआत हो रही थी। वर्षों से ट्रस्ट स्कूल भवनों का निर्माण कर रहा था। पुस्तकें और शिक्षण-सामग्री मुहैया करवा रहा था और शिक्षकों को वेतन देता रहा था। मगर शिक्षण की गुणवत्ता को लेकर चिंता बनी हुई थी। प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों को केवल नेपाली स्कूलों से शिक्षा प्राप्त करने पर ही नियुक्ति मिल जाती थी और सही अर्थों में उन्हें शिक्षण के बारे में किसी तरह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए ग्रांड सर्किल फाउंडेशन (अमेरिका), यूनीसेफ और स्विस फाउंडेशन ने वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई, वहीं नेपाल सरकार के शिक्षा-विभाग ने इसके लिए जरूरी इजाजत दी। जेन स्ट्रांग, न्यूजीलैंड के एक शिक्षक और पर्वतारोही जो 1971 में एडमंड के साथ नेपाल आए थे, इस कार्यक्रम के समन्वयक थे और अगले छह सालों तक न्यूजीलैंड से पंद्रह शिक्षक अपने अवकाश के समय में प्रशिक्षण देने के लिए नेपाल आते रहे। उनमें जिम की पत्नी जेनेट भी शामिल थी। एडमंड ने कहा कि उन्होंने पहले प्रशिक्षण कार्यक्रम में तीस-चालीस शिक्षकों की भागीदारी की उम्मीद की थी। मगर उन्हें उस समय सुखद आश्चर्य हुआ, जब देखा कि सैंतालीस स्कूलों के 180 शिक्षक प्रशिक्षण लेने के लिए वहाँ आए।

जेन स्ट्रांग ने चार नेपाली शिक्षकों को भी प्रशिक्षण के तौर पर नियुक्त किया था, जो स्कूलों में शिक्षकों की सहायता करते थे और वे साल भर में कम-से-कम तीन बार स्कूलों का दौरा करते थे। इस तरह शिक्षकों को आत्मबल, पढ़ाई की गुणवत्ता, कक्षाओं के वातावरण और बच्चों की उपलब्धियों में नाटकीय रूप से सुधार नजर आने लगा। सोलू खुंबू प्राथमिक स्कूलों को नेपाल में आदर्श शिक्षण-संस्थान का दर्जा मिल गया।

माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों ने भी प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने का अनुरोध किया। जॉर्ज और मेरी जोवे समझ गए कि सभी शिक्षकों को प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। उनके प्रयत्नों से ब्रिटेन लॉहरीज बोर्ड और हिमालय ट्रस्ट यूके ने माध्यमिक शिक्षकों के तीन वर्ष के प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए वित्तीय सहायता दी, बाद में इस कार्यक्रम का विस्तार छह वर्षों तक कर दिया गया।

न्यूजीलैंड और काठमांडू के प्रशिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। पढ़ाई में सुधार हुआ और विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ बढ़ती गईं। स्कूल बोर्ड के सदस्यों के लिए प्रशिक्षण, सामुदायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई और आय के सृजन के लिए सहायता की गई। 300 से अधिक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षकों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया और सरकारी मान्यता देकर नेपाल सरकार ने कार्यक्रम को सम्मानित किया।

सन् 1987 में एडमंड ऐसे लोगों के प्रथम समूह में शामिल किए गए, जिन्हें न्यूजीलैंड का सर्वोच्च सम्मान 'ऑर्डर ऑफ न्यूजीलैंड' से विभूषित किया गया। यह सम्मान देश की सेवा करनेवाले असाधारण व्यक्तियों को दिया गया, जिनकी संख्या बीस तक सीमित रखी गई। इस सम्मान से विभूषित होनेवाले अन्य व्यक्तियों में माओरी राजवंश के प्रमुख टे अरीकीनुई और अग्रणी ट्रेड यूनियन नेता सोंजा डेवीस शामिल थे।

जुलाई 1999 में एडमंड का 80वाँ जन्मदिवस वेलिंगटन के गवर्नमेंट हाउस में

धूमधाम से मनाया गया और इस अवसर पर दावत का आयोजन किया गया। समारोह की मेजबानी गवर्नर जनरल सर माइकल हार्डी ब्यॉयज एवं लेडी हार्डी ब्यॉयज ने की।

सर माइकल ने कहा, ''ज्यादातर हीरो जवानी में ही मर जाते हैं या गुमनामी के अँधेरे में खो जाते हैं। मगर ये हीरो वैसे नहीं हैं। एडमंड हिलेरी की खूबियों ने उन्हें हमारे राष्ट्रीय इतिहास में विशिष्ट दरजा प्रदान किया है।''

उसी साल एडमंड की आत्मकथा 'सर एडमंड हिलेरी—व्यू फ्रॉम द समीट' का प्रकाशन हुआ। पुस्तक की समीक्षा करते हुए जेन मोरिस ने एडमंड को 'अपने समय का चमत्कारी व्यक्तित्व' बताया। मगर एडमंड के लिए सोलू खुंबू में स्कूलों में बच्चों की पढ़ाई वास्तविक उपलब्धि थी।

25 मार्च, 2000 को खुमजुंग स्कूल की स्थापना के चालीस साल पूरे हो गए, जहाँ आरंभ में टेम दोर्जी ने घास पर बैठकर बच्चों के एक छोटे समूह को पढ़ाना शुरू किया था। पुराने अल्युमिनियम से निर्मित भवन आज भी है, जिसके इर्दगिर्द दस नए भवन हैं, जहाँ 400 से अधिक बच्चे पढ़ते हैं।

खुमजुंग स्कूल के पूर्व विद्यार्थियों ने सर एडमंड हिलेरी, हिमालयन ट्रस्ट, स्कूल के प्रति समर्पित शिक्षकों एवं अन्य शुभचिंतकों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए एक स्मारिका का प्रकाशन किया। इसमें स्कूल के इतिहास का वर्णन करते हुए बच्चों की सफलताओं का ब्योरा दिया गया। इसके साथ ही छात्रों की तसवीरों का भी प्रकाशन किया गया था।

आभार व्यक्त करते हुए पूर्व विद्यार्थियों ने अंत में लिखा था—''शिक्षा ने हमें बेहतर किसान, प्रभावशाली व्यापार प्रबंधक और पेशेवर बनने में सहायता की। शिक्षा ने हमें अपने मूल्यों और अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को पहचानना सिखाया और दूसरों को समझना तथा सम्मान करना सिखाया। हमारी शिक्षा चाहे सीमित ही क्यों न रही हो, उसने हमें अपने समुदाय और देश के प्रति समर्पित होने में सहायता की। हम आपके सहयोग-समर्थन के लिए धन्यवाद देना चाहते हैं। हिमालय क्षेत्र में सर एडमंड हिलेरी स्कूलों की गाथा विभिन्न देशों के लोगों के बीच सद्भाव और सहयोग का उदाहरण

बनी रहेगी और दुनिया भर में लोगों को प्रेरित करती रहेगी।''

स्मारिका में डायना मेकीनोन ने अंग्रेजी शिक्षा की कक्षा के अनुभव के बारे में लिखा है—

ऐसे बच्चों को पढ़ाना कितनी खुशी की बात है, जो सही मायने में पढ़ना चाहते हैं, बच्चे ज्ञानपिपासु थे और हर नई बातों को तत्परता के साथ सीखना जानते थे। कुछ हद तक कई बच्चे न्यूजीलैंड के नागरिकों की शैली में अंग्रेजी बोलना सीख गए थे। ऐसे बच्चे जब बाद में आगे की पढ़ाई के लिए न्यूजीलैंड गए तो उन्हें वहाँ लोगों से घुलने-मिलने में आसानी हुई। डायना ने शुरुआती शिक्षक टेम दोर्जी और श्याम प्रधान, स्कूल की गतिविधियों का समर्थन करनेवाले माता-पिता और विद्यार्थियों को धन्यवाद दिया—''मैं उन्हें इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहती हूँ कि उन्होंने अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल किया। उनके साथ मैंने अपने जीवन के कमाल के वर्ष गुजारे। मैं उन्हें धन्यवाद देना चाहती हूँ कि उन्होंने अपने बाप-दादा के सपनों को सच कर दिखलाया।''

सर एडमंड हिलेरी के नाम लिखे गए संदेशों में से एक है, ''एवरेस्ट जीतकर आपने हमारा सम्मान जीत लिया। मगर खूमजुंग स्कूल बनाकर आपने हमारा दिल जीत लिया। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया, सर एडमंड हिलेरी!''

एवरेस्ट विजय की स्वर्ण जयंती 29 मई, 2003 को दुनिया भर में विभिन्न समारोहों, प्रकाशनों और प्रदर्शनियों के जरिए मनाई गई। नेपाल जाते समय एडमंड तीन दिनों तक दिल्ली में ठहरे। उन्हें कई कार्यक्रमों में भाग लेना था और पत्रकारों को इंटरव्यू देना था। जिस सड़क पर, न्यूजीलैंड दूतावास स्थित है, उसका नामकरण उनके नाम पर किया गया। दिल्ली नगर निगम ने इसका नाम 'सर एडमंड हिलेरी मार्ग' रखा और उससे जुड़ी सड़क का नाम 'तेनजिंग नोर्गे मार्ग' रख दिया।

काठमांडू हवाई अड्डे पर आनेवाले मेहमानों का स्वागत बड़े-बड़े पोस्टरों से किया जा रहा था, जिनके ऊपर लिखा था 'माउंट एवरेस्ट स्वर्ण जयंती समारोह—नेपाल : अंतिम निर्वाण'। पूरे शहर में बैनर लटकाए गए थे, जिनके ऊपर 'एवरेस्ट विजय' लिखा हुआ था।

एडमंड और जून ने एवरेस्ट पर चढ़नेवाले पर्वतारोहियों की एक शोभायात्रा का नेतृत्व किया, जिनमें जेमलिंग तेनजिंग नोर्गे, जुनको टाबेई, रेनहोल्ड मेसनर आदि शामिल थे। डॉ. हाकपा नोरबू ने तेनजिंग नोर्गे के जीवन और उपलब्धियों पर व्याख्यान किया तथा नेपाल नरेश ज्ञानेंद्र वीर विक्रम शाह देव ने सर एडमंड हिलेरी को नेपाल की नागरिकता प्रदान की।

एवरेस्ट विजय की स्वर्णजयंती पर कई पुस्तकों का प्रकाशन हुआ, उनमें एडमंड के प्रति नेपाल के शेरपाओं की कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए 'ट्रियूम्फ ऑन एवरेस्ट'

पुस्तक का प्रकाशन किया गया। इसका संपादन आंग रीता शेरपा और सूजन होइविक ने किया था। शेरपा लोगों के कल्याण के लिए किए गए एडमंड के कार्यों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया था। टेंगबोचे बौद्ध मठ के प्रमुख लामा एवं रिनपोचे ने इसकी भूमिका लिखी थी।

प्रमुख लामा ने उस प्रसंग को याद किया है, जब खुमजुंग में पहले स्कूल का उद्घाटन करने के लिए उन्हें सर एडमंड हिलेरी के साथ आमंत्रित किया गया था। उन्होंने लिखा है— ''हिलेरी ने जिस तरह सद्भाव के साथ जमीनी स्तर पर सहायता उपलब्ध कराई है, उससे हमें अपनी गृहभूमि में अपनी धरोहर को प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक तौर पर सुरक्षित रखने में सुविधा हुई है। हमें इस बात पर गर्व है कि इतनी अधिक व्यस्तता के बावजूद सर एडमंड हिलेरी ने एवरेस्ट विजय की स्वर्णजयंती नेपाल के शेरपा लोगों के बीच मनाने का फैसला किया। इस अवसर पर हम उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते हैं। हम एक विशेष प्रार्थना आयोजित कर रहे हैं, ताकि सबको सुख-शांति मिले, हिलेरी और उनके परिवार के सदस्य दीर्घायु हों और हम लोग मिलकर इस तरह की कई उपलब्धियों का जश्न मना सकें—ताशी डेलेक।''

टेंगबोचे मठ में आयोजित कार्यक्रम में प्रमुख लामा के सम्मानित अतिथि के रूप में पीटर हिलेरी अपनी बड़ी बेटी अमेलिया के साथ शामिल हुए थे। पीटर ने मठ के सामने ही स्वर्ण जयंती डिनर का आयोजन किया था और हिमालय ट्रस्ट के लिए चंदा जुटाया था। लंदन के लीसेस्टर स्क्वायर में स्थित ओडियन थिएटर में, जहाँ अक्तूबर 1953 में एवरेस्ट अभियान से संबंधित पुरस्कृत फिल्म का प्रीमियर शो आयोजित किया गया था, सर डेविड एटनवोरो ने 'इनडिएवर ऑन एवरेस्ट' पर व्याख्यान दिया, जिसमें अभियान के सदस्यों ने अपने-अपने अनुभवों के बारे में बताया था।

एडमंड और जून भी लंदन पहुँचे थे, जहाँ न्यूजीलैंड दूतावास की तरफ से 1953 के अभियान के सदस्यों के सम्मान में दावत का आयोजन किया गया था। वर्षगाँठ के अवसर पर कई पुस्तकों का प्रकाशन किया गया और विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियों का दुनिया भर में आयोजन किया गया। रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी ने सभी ब्रिटिश एवरेस्ट अभियानों की तसवीरों की एक प्रदर्शनी लगाई और विक्टोरिया के कैसलमेन में अल्फ्रेड ग्रेगरी के घर के पास 1953 के अभियान की चुनिंदा तसवीरों को प्रदर्शित किया गया।

वाशिंगटन में स्थित नेशनल ज्योग्राफिक संग्रहालय में 'सर एडमंड हिलेरी : एवरेस्ट ऐंड बियोंड' शीर्षक प्रदर्शनी लगाई गई। इसका आयोजन ऑकलैंड वार मेमोरियल म्यूजियम की तरफ से किया गया था। ऑकलैंड में पचास हजार दर्शकों ने इस प्रदर्शनी को देखा था, वहीं अमेरिका में अस्सी हजार दर्शकों ने इसे देखा, प्रदर्शनी के बैनर पर

लिखा था—''वे एवरेस्ट तक पैदल ही गए, दुनिया में उन्होंने धूम मचा दी, वे ट्रैक्टर में सवार होकर दक्षिणी ध्रुव तक गए।''

जब अक्तूबर 2002 में ऑकलैंड म्यूजियम प्रदर्शनी शुरू होनेवाली थी, तब उसका जायजा लेने के लिए एडमंड और जून पहुँचे। काँच के नौ केसों में सजे अपने पदकों, पुरस्कारों और प्रतीक-चिह्नों को देखकर एडमंड दंग रह गए। इस तरह के कई पुरस्कारों को एडमंड के घर में सजाया गया था और काफी पुरस्कारों को कार्टून में भरकर उनके अध्ययन-कक्ष में रखा गया था।

उन्हें दुनिया के विभिन्न हिस्सों में सम्मानित और पुरस्कृत किया गया था। उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधियाँ मिलीं और पर्वतारोहण एवं पर्यावरण से संबंधित ढेर सारे पुरस्कार प्राप्त हुए। 1953 में काठमांडू की टैक्सी ड्राइवर एसोसिएशन की तरफ से दिए गए एक पदक से लेकर देश-विदेश के कई प्रतिष्ठित सम्मान उन्हें मिल चुके थे। ब्रिटेन की नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी ने उन्हें 'हबर्ड मैडल' दिया था। यूनीसेफ, डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. सहित कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने उनका अभिनंदन किया था। पुरस्कारों की बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी।

17 जून, 2004 को एडमंड पोलैंड में थे, जो पर्वतारोहण की विशिष्ट परंपरा के लिए दुनिया भर में मशहूर है। वार्सा में स्थित राष्ट्रपति भवन में पोलैंड के राष्ट्रपति एलेक्जेंडर क्वासनीवस्की ने उन्हें 'कमांडर्स क्रॉस ऑफ द ऑर्डर ऑफ मेरीट' नामक सर्वोच्च सम्मान से विभूषित किया। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा, ''आप एक ऐसे प्रेरक व्यक्तित्व हैं, जो पोलैंड की नई पीढ़ी के पर्वतारोहियों और अन्वेषकों को प्रेरित करते रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि आपने काफी हद तक युवाओं की कल्पनाशीलता और विचारों को प्रभावित किया है। आपकी व्यक्तिगत उपलब्धियों और परोपकार से जुड़े कार्यों को हम सदैव याद रखेंगे। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया कि आप इस समय हमारे साथ वार्सा में उपस्थित हैं।''

पूरी दुनिया सर एडमंड हिलेरी को लेकर नाज करती रही है, जो एक निष्ठावान पर्वतारोही, साहसिक कार्य करनेवाले नायक, महान् मानवतावादी और सच्चे मित्र थे। लेकिन जीवन की संध्या-वेला में पचासी साल की उम्र में अपनी उपलब्धियों के बारे में उन्होंने केवल इतना ही कहा था—''मैं किस कदर खुशकिस्मत आदमी रहा हूँ।''

सर एडमंड हिलेरी का निधन हृदयरोग के चलते 11 जनवरी, 2008 को ऑकलैंड में हुआ।

□

सर एडमंड हिलेरी के अनमोल विचार

- हमने पर्वत शिखर पर नहीं, अपने आप पर विजय पाई।
- कोई भी व्यक्ति विज्ञान सम्मत कारणों से पहाड़ के ऊपर नहीं चढ़ता। विज्ञान का इस्तेमाल अभियान के लिए राशि जुटाने के लिए जरूर किया जाता है।
- मनुष्य स्वयं असाधारण बनने का निर्णय नहीं करते। वे असाधारण चीजें हासिल करने की तमन्ना जरूर करते हैं।
- 'सर' उपाधि प्राप्त करना शुरू-शुरू में असहज करता है; हालाँकि यह बहुत बड़ा सम्मान है। यह कमाल की बात है कि कुछ ही दिनों में लोग इसके आदी हो जाते हैं।
- मैं यह बात दावे के साथ कह सकता हूँ कि भय की अनुभूति, अगर आप उसका सार्थक उपयोग करना चाहें और उसके प्रवाह में बहने से इनकार कर दें, आपको अपनी क्षमता का विस्तार करने में मददगार साबित हो सकती है। जब आप घबरा उठते हैं तो धमनियों में रक्त-प्रवाह तेज हो जाता है और आप नवीनता को महसूस करते हैं।
- जब मैं एवरेस्ट के शिखर पर पहुँच गया तो घाटी को निहारते हुए मैंने मकालू की चोटी की तरफ देखा और मानसिक रूप से वहाँ तक पहुँचने के लिए मार्ग ढूँढ़ने पर विचार करने लगा। इससे मैं समझ गया था कि मैं भले ही दुनिया की चोटी पर खड़ा था, मगर मेरे लिए मंजिल खत्म नहीं हुई थी। मैं अभी भी दूसरी दिलचस्प चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार था।
- किसी पर्वत-शिखर पर पहुँचने की तुलना में मानव जीवन के और भी गहरे अर्थ हो सकते हैं।
- मैं खुद को 'आदर्श पुरुष' कहलाना पसंद नहीं करता। मुझे यह संबोधन पसंद नहीं है।
- मैं नहीं जानता कि मैं किसी बात के लिए अमर होना चाहता हूँ। मैं निजी तौर

पर ऐसा नहीं मानता कि मैं दुनिया के लिए कोई अनमोल उपहार हूँ। मैं अत्यंत सौभाग्यशाली जरूर रहा हूँ।

- मुझे लगता है कि हिमालय पर चढ़नेवाले ज्यादातर पर्वतारोहियों को परिपक्व होने में काफी वक्त लग जाता है। वैसे भी ज्यादातर कामयाब पर्वतारोहियों की उम्र 28 से 40 वर्ष के बीच रही है।
- मेरा मानना है कि एक बेहतरीन पर्वतारोही सामान्य तौर पर संवेदनशील पर्वतारोही भी होता है।
- जिंदगी भी पर्वतारोहण की तरह ही होती है, इसमें पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए।
- जब आपको धन खर्च करना पड़े तो उसे वास्तविक साहसिक कार्य नहीं कहा जा सकता।
- जब मैं कोई कार्य करने का निर्णय ले लेता हूँ, तब उसे अंजाम तक पहुँचाने तक चैन से नहीं बैठता।
- कई लोग एवरेस्ट की चढ़ाई को गंभीरता से नहीं लेते। मैं इसके खतरे के बारे में कई बार आगाह कर चुका हूँ।
- जब मैं पर्वतारोहण अभियानों में शेरपा अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और यह सच है कि उनमें से कई मेंड़ पर होकर शिखर तक सबसे आगे पहुँच जाते हैं।
- मानव सभ्यता में ऐसी कोई खूबी नहीं है कि वह हिममानव को आकर्षित कर पाए।
- मैं इतना कुछ देख चुका हूँ और मेरे पास इतने सारे अनुभव हैं, इसके बावजूद पर्वत पर बर्फ को देखकर आज भी मैं रोमांचित हो उठता हूँ और पहले की तरह मेरे मन में उनके ऊपर चढ़ने की इच्छा पैदा होती है।
- मैं मरने के बारे में सोचते हुए ज्यादा वक्त बरबाद नहीं करता, मगर मैं इतना जरूर सोचता हूँ कि जब मेरी मौत आए तो शांतिपूर्वक आए। इसको लेकर ज्यादा शोर-शराबा न हो।
- जब आप पर्वत शिखर पर चढ़ रहे होते हैं, तब जीवन अत्यंत पस्तहाल हो जाता है।
- मैं समझता हूँ कि एक अच्छा पर्वतारोही वह होता है, जिसके भीतर पेशेवर लोगों की तरह तकनीकी योग्यता और नौसिखिए की तरह उत्साह व ताजगी होती है।
- मुझे पर्वतारोहण का व्यवसायीकरण करना बिलकुल पसंद नहीं है। खासतौर

से माउंट एवरेस्ट का व्यवसायीकरण बिलकुल गलत है। आप 65 हजार डॉलर चुकाकर कुछ दक्ष गाइडों की सहायता से शिखर तक पहुँच सकते हैं।

- मैं मानता हूँ कि मैं पर्वतारोहण इसलिए करता हूँ, चूँकि ऐसा करने पर मुझे सच्ची खुशी हासिल होती है। मैंने इन बातों का गहराई के साथ विश्लेषण करने का कभी प्रयास नहीं किया, मगर मुझे लगता है कि सभी पर्वतारोहियों को कठिन चुनौतियों का सामना करने के बाद शांति मिलती है।
- मेरा सबसे महत्त्वपूर्ण काम रहा है—हिमालय क्षेत्र के अपने दोस्तों के लिए स्कूलों का निर्माण करना और उनका संचालन करना, चिकित्सा केंद्र बनाना और उनके खूबसूरत बौद्ध-मठों का पुनर्निर्माण करना।
- मैंने पाया है कि औसत प्रतिभा के लोग भी साहसिक कार्य कर सकते हैं और डरपोक किस्म के लोग भी उपलब्धि हासिल कर सकते हैं।
- महान् कार्य करने के लिए आपका हीरो होना जरूरी नहीं है। आप एक सामान्य मनुष्य होकर भी चुनौतीपूर्ण लक्ष्यों को हासिल करने की प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं।
- जब मैं छोटा था तो अकसर सपने देखता था। मैं साहसिक कार्यों के बारे में पुस्तकें पढ़ता था और अकेले ही मीलों भटकता फिरता था।
- मैं कई बार डर से घिरता रहा हूँ, मगर मैंने डर को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया, बल्कि उससे शक्ति हासिल करने की कोशिश की। मुझमें असाधारण योग्यताएँ नहीं हैं, मगर चुनौतियों का सामना करने के लिए मेरे अंदर दृढ़ता और इच्छाशक्ति रही है। उन्हीं गुणों के सहारे मैंने सफलता हासिल करने की कोशिश की है।
- किसी भी पर्वत शिखर पर चढ़ने से गहरी संतुष्टि महसूस होती है, मगर मेरे लिए एवरेस्ट पर चढ़ना अविस्मरणीय अनुभव था, क्योंकि इस अभियान के बाद मैंने शेरपा दोस्तों की भलाई के लिए काम करना शुरू किया।
- मुझे लगता है कि माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने की प्रवृत्ति अत्यंत ही डरावनी हो गई है। लोग सीधे शिखर पर पहुँच जाना चाहते हैं। उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं है कि पीछे कोई कैसे रह रहा है या मर रहा है।
- जब हम लोगों ने चढ़ाई की थी, उस समय अपने पीछे दल के किसी सदस्य को मरने के लिए छोड़ देने का सवाल ही नहीं पैदा होता था।
- मैं एक खुशकिस्मत इनसान हूँ। मेरा एक सपना था, जो सच हो गया। ऐसा लोगों के साथ अकसर नहीं होता।
- मुझे लगता है कि मैं एक आम न्यूजीलैंड के नागरिक की तरह हूँ। मेरे पास

थोड़ी योग्यताएँ थीं और दृढ़ इच्छाशक्ति। इनके सहारे ही मुझे सफलता मिल गई।

- हम नहीं जानते थे कि किसी इनसान के लिए माउंट एवरेस्ट तक पहुँच पाना संभव होनेवाला था। हम ऑक्सीजन का इस्तेमाल करते हुए जब चोटी पर पहुँच गए, उस समय भी हमें पता नहीं था कि हम जिंदा लौट पाएँगे या नहीं।
- मैं इस बात को लेकर पूरी तरह जागरूक था कि हमें सुरक्षित नीचे पहुँचना था। जब हम नीचे पहुँचने में सफल हो गए, तब मैं रोमांचित हो उठा।
- अतीत के पर्वतारोही महान् लोग थे और हमें उनके योगदान को नहीं भूलना चाहिए।
- जहाँ तक मैं जानता हूँ, तेनजिंग ने कभी कैमरे से तसवीर नहीं खींची थी और एवरेस्ट की चोटी ऐसी जगह नहीं थी, जहाँ मैं तसवीर खींचना सिखा सकता था।
- शांत होकर बैठना और पर्वत को निहारना किसी आराधना की तरह होता है।
- मशीन और उपकरण के क्षेत्र में आधुनिक प्रगति के साथ पर्वतारोहण के तौर-तरीके में भी भारी बदलाव आ गया है। कई मामले में पैदल चलने की जगह विमानों और वाहनों का उपयोग किया जाता है। हिमालय की ऊँचाई पर ऑक्सीजन बोतलों की मदद से आसानी से साँस ली जा सकती है। रेडियो संचार प्रणाली ने पर्वतारोहियों के अलग-अलग रहने की समस्या को भी हल कर दिया है। लेकिन इन सारी चीजों के बावजूद मेरा पक्का यकीन है कि अंत में मनुष्य के साहस की ही जीत होती है। जब हालात बिगड़ जाते हैं और चुनौतियों से होकर गुजरना पड़ता है। तब उन्हीं गुणों की जरूरत होती है, जिनकी जरूरत अतीत में होती थी, जैसे साहस, तत्परता, तकलीफ को सहन करने की क्षमता, उत्साह और दृढ़ इच्छाशक्ति।
- मैं दक्षिण-ध्रुव की तरफ बढ़ रहा हूँ। ईश्वर सहायता कर रहा है और हिम-दरारें अनुमति दे रही हैं।
- अगर आपके पास प्रचुर संपदा है, जरूरत से भी ज्यादा, और किसी के पास कुछ भी नहीं है तो आपको इसके बारे में जरूर विचार करना चाहिए।
- मैंने कभी पदवियों की परवाह नहीं की और कभी स्वयं पदवी से नवाजे जाने की कल्पना भी नहीं की।
- माउंट एवरेस्ट पर अब नीचे से लेकर ऊपर तक कचरा फैल गया है।
- मैं एक मामूली आदमी था, मगर मीडिया ने मेरी छवि किसी नायक जैसी बना दी। मैंने काफी कोशिश की, मगर इस नायकवाली छवि को तोड़ नहीं पाया।

लेकिन इतने सालों में मैंने एक बात सीखी है कि अगर आप अपने बारे में फैलाई जा रही अफवाहों पर ध्यान नहीं देते, तो आपका किसी तरह का नुकसान नहीं हो सकता।

- मैं मेलोरी की इज्जत हमेशा एक साहसी नायक के रूप में करता रहा हूँ।
- मेरे दादाजी ने रेस के कुछ घोड़े खरीदे थे, जिन्हें दौड़ाकर कुछ वर्षों तक उन्होंने काफी पैसे कमाए, मगर अपने जीवन के छठे दशक में वे लगभग दिवालिया हो गए।
- मेरी माँ का स्वभाव अनुकरणीय था। माँ से मुझे पर्याप्त प्यार और प्रोत्साहन मिलता रहा।
- चूँकि इतिहास की पुस्तकों में मेरे नाम को दर्ज किया गया है, इसीलिए ज्यादातर बच्चे यही सोचते हैं कि मैं मर चुका हूँ।

□

सर एडमंड हिलेरी से साक्षात्कार

(यह साक्षात्कार सर एडमंड हिलेरी की मृत्यु से एक वर्ष पहले 2007 में लिया गया था)।

सर एडमंड हिलेरी निस्संदेह 87 वर्षीय वृद्ध हो गए हैं, फिर भी उनका हौसला आज भी माउंट एवरेस्ट की तरह अडिग है। शेरपा तेनजिंग नोर्गे के साथ 1953 में एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करनेवाले न्यूजीलैंड निवासी एडमंड हिलेरी का कदम 8850 मीटर ऊँचे एवरेस्ट पर किसी भी मानव का पहला कदम माना जाता है। हिलेरी सारी दुनिया के हीरो हैं, परंतु वे स्वयं को किसी प्रकार से हीरो न मानकर एक साधारण व्यक्ति मानते हैं।

हिमालय जैसी ऊँची कद-काठी के हिलेरी का दिल भी हिमालय से कम विशाल नहीं है। हिमालय के लोगों की भलाई के लिए कई स्कूल, अस्पताल व हवाई अड्डे का निर्माण करवानेवाले हिलेरी अपनी दूसरी पत्नी लेडी जून हिलेरी के साथ ऑकलैंड में सादगी से रहते हैं।

हिमालय ने जहाँ हिलेरी को विश्वप्रसिद्ध बनाया, उसी हिमालय में हिलेरी ने अपनी पहली पत्नी और एक बेटी को खोया भी है। उनकी पहली पत्नी लुइस और बेटी बलिंडा का हेलीकॉप्टर दुर्घटना में 1975 में नेपाल में देहांत हो गया था। वे उस समय हेलीकॉप्टर से न्यूजीलैंड की सहायता से बनाए गए एक अस्पताल में काम करने के लिए उत्तरी नेपाल में स्थित लुकाना जा रही थीं।

हिमालय हिलेरी के सुख-दु:ख का भागीदार रहा है। हिमालय के बारे में सर एडमंड हिलेरी कहते हैं—''मैंने वहाँ बहुत सुखद क्षण बिताए हैं और दुखद भी। व्यक्ति को अपना संग्राम जारी रखना चाहिए।''

इन दिनों अपने स्वास्थ्य की वजह से सर हिलेरी ने बातचीत करना कुछ कम कर दिया है। हिमालय जैसे ऊँचे हिलेरी यद्यपि उम्र के इस पड़ाव पर शिथिल हो गए हैं तथापि उनके चेहरे का तेज, उनकी विनम्रता और उनकी सादगी आज भी उन्हें 'माउंट

एवरेस्ट' की ऊँचाई पर रखे हुए हैं।

सफेद पेंट, हलकी नीली कमीज पहने हुए सर हिलेरी अपनी बैठक, जहाँ हिमालय के अनेक चित्रों के अतिरिक्त बहुत से नेपाली शेरपाओं के छायाचित्र भी हैं, में बैठे हुए थे। हिलेरी और उनके बगल में टँगे हिमालय के चित्रों में कुछ समानता तो थी। उनकी सफेद पेंट धरातल, हलकी नीली कमीज नीले पहाड़ जैसे और उनका सादगी भरा, गर्वीला गौरवपूर्ण चेहरा हिमालय की हिमशिखा 'एवरेस्ट' जैसा दिखाई पड़ता है।

1953 में एवरेस्ट पर विजय प्राप्ति बड़ी रोमांचक रही होगी, पूरी धरती को अपने पाँव के नीचे रखते हुए, हिमालय को पराजित कर आप क्या सोच रहे थे?

एवरेस्ट से पहले मैं नयूजीलैंड के बड़े-बड़े पहाड़ों का पर्वतारोहण कर चुका था, पर हिमालय अनुपम था। शेरपा तेनजिंग नोर्गे मुझसे अधिक रोमांचित थे। शेरपा ने मुझे गले लगाकर बधाई दी। मैंने तेनजिंग की तसवीर खींची, पर हाँ, मैं अपनी तसवीर उतारना जैसे भूल ही गया।

आप एवरेस्ट के शिखर पर पहुँचकर लगभग 15-20 मिनट वहाँ ठहरे। इस बीच आपने और क्या किया?

तेनजिंग की फोटो लेने के अतिरिक्त मैंने एवरेस्ट के आसपास के अन्य पहाड़ों की भी तसवीरें लीं। इस बीच तेनजिंग ने माउंट एवरेस्ट पर बर्फ हटाते हुए थोड़ी सी खुदाई करके वहाँ कुछ मिठाई गाड़ दी और ईश्वर से प्रार्थना की। उसका विश्वास था कि एवरेस्ट के शिखर पर कई बार ईश्वर समय बिताने आते हैं और यह मिठाई उन्हीं को भेंट की गई थी।

आपको नीचे बेस से लेकर ऊपर एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचने में कई सप्ताह लगे। इस बीच आपका दैनिक जीवन कैसा था? सोते कैसे थे, खाते-पीते क्या थे?

हमें ऊपर एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचने में कई सप्ताह लगे, परंतु हमारे पास खाने-पीने और सोने के लिए स्लीपिंग बैग, टैंट इत्यादि का सुनियोजित प्रबंध था।

(एडमंड हिलेरी और उनके नेपाली पथप्रदर्शक तेनजिंग नोर्गे के 1953 में माउंट एवरेस्ट पर विजय पाने के पश्चात् आज तक अधिकारिक तौर पर लगभग 500 से अधिक लोग इस चोटी पर पहुँच चुके हैं। इस चोटी पर चढ़ने के क्रम में 190 लोग अपनी जान भी गँवा चुके हैं।)

एवरेस्ट का आपका सफर रोमाचंक तो था ही, परंतु खतरनाक भी रहा होगा, क्या कभी-कभी डर भी लगता था?

हाँ, मैं तो लगातार डरता रहा, विशेषकर जिन जगहों पर बर्फ खिसककर गिरती थी।

इस दौरान का अपना कोई विशेष अनुभव बताएँ?

इस समय मेरा ध्यान पूर्णतया पहाड़ों की चढ़ाई पर केंद्रित था और सबसे उपयुक्त रास्ता तलाशने में भी ध्यान लगा रहता था। सबसे कठिन काम शिखर चोटी के समीपवाले 40 फीट ऊँचे मार्ग को लाँघना (जिसे अब 'हिलेरी स्टेप' कहा जाता है) था। मैं तेनजिंग की भाँति शिखर पर, जहाँ तक हो सकेगा, चढ़ने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ था।

आपने नेपालियों के लिए बहुत से काम किए हैं, उनके बारे में बताएँ?

नेपाली लोगों को मैं बहुत पसंद करता हूँ। वर्तमान में वहाँ काफी राजनीतिक समस्याएँ भी रही हैं। मैंने वहाँ अस्पताल, स्कूल, पुलों के अतिरिक्त हवाई अड्डे का भी निर्माण करवाया। नेपालियों के लिए काम करके मुझे बहुत आनंद की अनुभूति हुई है।

जितना हिलेरी नेपालियों से स्नेह करते हैं, नेपाली भी उनसे उतना ही प्रेम करते हैं। नेपाली प्यार से उन्हें 'बुर्रा साहब' संबोधित करते हैं, जिसका मतलब होता है—बड़ा आदमी। आज नेपाल में खोले गए स्कूलों और अस्पतालों का प्रबंध स्वयं नेपाली शेरपा कर रहे हैं। हिलेरी कहते हैं, ''मैंने कभी उन्हें यह नहीं कहा कि तुम्हें स्कूल की आवश्यकता है या तुम्हें अस्पताल की आवश्यकता है तो इनका निर्माण करवा देते हैं, बल्कि उन्होंने मुझे जिस भी चीज की आवश्यकता व्यक्त की, मैंने उसी का निर्माण करवाया और मुझे इसका गर्व है।''

शेरपा तेनजिंग नोर्गे के बारे में पूछने पर वे कहते हैं कि वे पहले से तेनजिंग से परिचित नहीं थे और पहली बार उन्हें काठमांडू में एवरेस्ट पर्वतारोहण के समय ही मिले, जब तेनजिंग उनके दल में सम्मिलित हुए थे। तेनजिंग पूर्णतया हृष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली थे और मैं स्वयं भी बहुत सक्षम था। मैंने यह निर्णय किया कि मैं तेनजिंग के साथ जोड़ी बनाकर पर्वतारोहण करूँगा। दूसरी ओर तेनजिंग उस समय अच्छी तरह अंग्रेजी नहीं बोल सकते थे और मैं उनकी भाषा नहीं बोल सकता था। हमारा वार्त्तालाप केवल किस रास्ते से जाया जाए इत्यादि जैसे विषय तक ही सीमित था। हम गहन वार्त्तालाप जैसे जीवन के बारे में या अन्य प्रकार की बातें कर सकने में सक्षम नहीं थे। बाद में जब मैं भारत के उच्चायुक्त के रूप में दिल्ली में था तो मैंने तेनजिंग को काफी परिवर्तित पाया। तेनजिंग का भाषाओं पर अच्छा अधिकार हो गया था। वे बहुत अच्छी अंग्रेजी बोलने लगे थे। वास्तव में उनकी अंग्रेजी उतनी ही अच्छी कही जा सकती है, जितनी कि मेरी। अब हम पूर्ण रूप से वार्त्तालाप कर सकते थे और इसी समय मैंने तेनजिंग के बचपन और उनके अन्य पर्वतारोहण के अनुभवों के बारे में जाना। इन्हीं दिनों में हम घनिष्ठ मित्र भी बने।

सारी दुनिया जानती है कि आपका कदम 8850 मीटर ऊँचे एवरेस्ट पर किसी मानव का पहला कदम था और इसकी पुष्टि स्वयं तेनजिंग ने भी की थी,

परंतु फिर भी कुछ शेरपा ऐसा क्यों कहते हैं कि एवरेस्ट पर पहला कदम आपने नहीं, शेरपा तेनजिंग ने रखा था।

इसका यदि कोई कारण था तो वह राजनीतिक कारण था। काठमांडू में कुछ लोग यह चाहते थे कि तेनजिंग को एवरेस्ट पर पहुँचनेवाला पहला व्यक्ति होना चाहिए था। बहुत वर्षों तक हम (हिलेरी और तेनजिंग) इस बात पर सहमत थे कि हम यही कहेंगे कि हम दोनों लगभग एक साथ ही एवरेस्ट पर पहुँचे थे। परंतु तेनजिंग की मृत्यु के बाद में जो हुआ था, उसे बताने का निर्णय किया। मैं तेनजिंग से कुछ कदम आगे था, परंतु यह कहना कि मैं उससे पहले एवरेस्ट पर पहुँचा, यह कहना बड़ा कठिन है। एवरेस्ट के शिखर पर हम एकदल के रूप में पहुँचे।

एवरेस्ट मार्ग जिस प्रकार आज पर्वतारोहियों के लिए खुला हुआ है और वहाँ होनेवाली दुर्घटनाओं से हिलेरी आहत है। इसके लिए वे नेपाल सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए कहते हैं। ''मेरा विश्वास है कि हिमालय पर पर्वतारोहण करनेवालों की संख्या बहुत अधिक है। मैंने इस बारे में नेपाली सरकार से बातचीत भी की थी और यह सुझाव दिया था कि वे एवरेस्ट पर पर्वतारोहण करनेवालों की संख्या निर्धारित करके सीमित करें। उन्हें पर्वतारोहण से अच्छी आमदनी होती है, इसलिए वे अपनी नीति नहीं बदल पाएँगे। इसी कारण से वे पर्वतारोहण की अनुमति देते रहते हैं। अभी पिछले वर्ष एवरेस्ट पर कितनी तरह की आकस्मिक दुर्घटनाएँ हुई हैं। नौ से अधिक लोगों की इन पहाड़ों में मृत्यु हो गई। शायद इसका कुछ प्रभाव पड़े। एक बार में तीन या चार दल पर्वतारोहण करें तो उचित रहेगा।''

एवरेस्ट विजेता हिलेरी आज भी अपनी एवरेस्ट विजय को कोई अद्‌भुत या अनोखा काम नहीं मानते। वे कहते हैं, ''मैंने एवरेस्ट विजय को कभी बहुत गंभीरतापूर्वक नहीं लिया। मेरे लिए यह एक महत्त्वपूर्ण अनुभव था, लेकिन मैंने कभी ऐसा महसूस नहीं किया कि मैंने कुछ विशेष अनूठा कार्य किया है।''

सबसे अधिक आनंद उन्हें गंगा ने दिया है। ''गंगा में जेट बोटिंग सभी विजय यात्राओं में से सबसे अधिक आनंददायक था। जेट बोट बड़ी रोमांचक होती है, परंतु गंगा किनारे लोगों की सद्‌भावना ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया। लोगों का मैत्रीपूर्ण रवैया सचमुच आश्चर्यजनक था। मुझे याद है, एक दिन हम गंगा तट पर अपना शिविर लगाकर रुके। वहाँ एक छोटा सा गाँव था। गाँव के बाहर एक मकई का खेत था। हमने गाँव के मुखिया से शाम के खाने के लिए कुछ मक्का खरीदने की बात की। मुखिया ने अपने कुछ नौजवान लड़कों को जल्दी से मक्का लेकर आने को कहा। वे ढेर सारी मक्का लेकर अतिशीघ्र लौट आए। मैंने उनसे कीमत पूछी। उन्होंने कहा, कुछ नहीं। यह हमारी ओर से उपहार है। मैंने सोचा, हम सब उनसे अधिक धनवान हैं, पर

फिर भी वे लोग मुझसे यह कह रहे थे कि आपकी महान् यात्रा पर यह हमारी भेंट है। मेरे प्रति ऐसा भाव था गंगा के किनारे बसे लोगों का। मैं अभिभूत हो गया।

एवरेस्ट पर जानेवाले युवाओं को आप क्या कहना चाहेंगे?

बड़े लोगों के अनुभव को सुनें और समझें, पूर्व के पर्वतारोहियों के ज्ञान और अनुभव से लाभ उठाएँ।

□

पर्वतारोहण क्यों किया जाता है?

पर्वतारोहण खतरनाक खेल है और पर्वतारोहियों को उन खतरों को पहचानना, उन्हें कम-से-कम करने की कोशिश करना और उन्हें स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

इस प्रश्न का उत्तर आसानी से नहीं दिया जा सकता कि लोग पर्वत-शिखरों पर क्यों जाते हैं! प्रकृति के सौंदर्य का चरमोत्कर्ष पर्वत हैं और उनकी चोटियाँ मानव के लिए एक चुनौती हैं। बहुत से पर्वतारोही यह विश्वास करते हैं कि पर्वत शिखरों के माध्यम से ही ईश्वर तक पहुँचा जा सकता है।

लेकिन एवरेस्ट ही क्यों? शायद इसलिए कि यह सबसे ऊँची चोटी है। इस तक पहुँचने के लिए शरीर और मन की सारी शक्तियाँ केंद्रित करनी पड़ती हैं। एक बार चट्टानों और बर्फ के साथ संघर्ष प्रारंभ हो जाए तो चाहे जान ही क्यों न चली जाए, पर्वतारोही उस संघर्ष से पीछे नहीं हटता।

शिखर तक पहुँचकर सफलता की अनुभूति होती है। ऐसा लगता है कि जैसे कोई युद्ध जीत लिया हो और जो आनंद मिलता है, उसका वर्णन तो संभवत: किया ही नहीं जा सकता। जहाँ तक चोटी पर पैर रखने का संबंध है, वह सफलता की अनुभूति का एक अंगमात्र है।

उसमें भी यह भावना रहती है कि आपने अपनी महत्त्वाकांक्षा पूरी कर ली है और उस महत्त्वाकांक्षा के कारण ही मानव अपने परिवेश पर विजय प्राप्त करना चाहता है। वह सदा साहसिक कार्यों की खोज में रहता है और अज्ञात तथा खतरों से भरी प्रत्येक वस्तु की तह तक पहुँचना चाहता है। यह केवल शारीरिक अनुभूति ही नहीं, बल्कि भावनात्मक अनुभूति भी है। इसे असल में आध्यात्मिक अनुभूति कहा जा सकता है।

अमेरिकी पर्वतारोहियों का कहना है कि पर्वतारोहण में 90 प्रतिशत तो कठोर परिश्रम है और दस प्रतिशत सौंदर्य। जरा कल्पना कीजिए कि आप बहुत ऊँचाई पर हैं और चोटी कुछ ही दूर रह गई है। आपके साथ रस्से पर एक दूसरा पर्वतारोही है। आप

रस्से को कसकर खींच लेते हैं या उसे बाँध देते हैं। उसके बाद वह आपकी कमर में बँधे रस्से को खींचता है और आप एक-एक इंच करके ऊपर को सरकते हैं। चढ़ाई बहुत कठिन है और एक-एक कदम उठाने में शरीर की सारी शक्ति चुक जाती है।

समरवेल के साथ एवरेस्ट की चोटी की ओर जाने के अपने अनुभव के बारे में प्रसिद्ध पर्वतारोही नार्टन ने लिखा है—''मुझे पतली बर्फ पर से गुजरना था, जो ढालू चट्टानों पर पड़ी थी। वह हिस्सा न तो अधिक ढालू था और न ही कठिन। पीछे जो रस्सा छोड़ आया था। उसकी तुलना में तो वह कुछ भी नहीं था। लेकिन अचानक मैंने महसूस किया कि मैं किसी की मदद के बिना उसपर नहीं चढ़ पाऊँगा। मैंने चिल्लाकर समरवेल से कहा कि रस्सा मेरी तरफ फेंको। मुझे याद है कि मेरी आवाज में इतना दम नहीं था कि सौ गज तक भी पहुँचती। समरवेल ने मेरी सहायता की, लेकिन वह हैरान था कि मुझे ऐसे स्थान पर उसकी सहायता की आवश्यकता क्यों पड़ी?''

उस समय साँस लेने में बड़ी कठिनाई होती है और आदमी हाँफने लगता है। आप मन-ही-मन अपने को कोसते हैं और सोचते हैं कि मैं इस चढ़ाई के लिए क्यों आया। कई बार ऐसे क्षण भी आते हैं कि इच्छा होती है कि लौट चलूँ। फिर आप नीचे की ओर उतरने में आनेवाले आनंद की कल्पना में खो जाते हैं। लेकिन फिर शीघ्र ही, आप इस प्रकार के विचारों के चंगुल से निकल जाते हैं।

आप में कुछ ऐसी चीज है, जो आपको इस संघर्ष से पीछे नहीं हटने देती और आप आगे चल पड़ते हैं। तब सोचते हैं पचास फीट की ही तो बात है या शायद सौ फीट। लेकिन ढलान ऊपर-ही-ऊपर चली जाती है और आप सोचने लगते हैं—क्या अभी इसका अंत होगा? आप अपने साथी की ओर देखते हैं और वह आपकी ओर। और दोनों एक-दूसरे से प्रेरणा प्राप्त करते हैं। आप सोचते हैं कि अभी कुछ नहीं बिगड़ा, और धीरे-धीरे ऊपर की ओर सरकने लगते हैं। इतने में अचानक एवं धुँधली सी आकृति दिखाई देती है और जैसे-जैसे आप उसके पास पहुँचते हैं, उसकी रूपरेखा स्पष्ट होती जाती है। और फिर चोटी पर पहुँचकर कितने आनंद की प्राप्ति होती है। चढ़ाई में जितना कष्ट और परिश्रम हुआ, क्या चोटी पर पहुँचकर वह भूल नहीं जाता?

चोटी पर पहुँचकर आप चारों ओर देखते हैं। बादलों में से, बर्फ से ढकी दूसरी चोटियाँ दिखाई पड़ती हैं। अगर उस समय बादल न हों तो संभव है कि चमकती हुई धूप में दूसरी चोटियाँ उस चोटी के आसपास, जिस पर आप खड़े हैं, हीरों की माला के समान दिखाई दें। आपके नीचे बड़ी-बड़ी घाटियाँ और ढलान नीचे ही नीचे जाती दिखाई देती हैं। यह ऐसा अनुभव है, जो आपको बहुत ऊँचा उठा ले जाता है। आसपास के दृश्यों की सुंदरता और महानता आपको सम्मोहित कर लेती है और आप ईश्वर के प्रति नतमस्तक हो जाते हैं।

किसी पहाड़ की चोटी पर पहुँचना उससे प्यार करने के बराबर है। क्योंकि आप सदा यह सोचते हैं कि क्या वह चोटी आपको अपने समीप आने देगी, और जब आप चोटी पर पहुँच जाते हैं तो आनंदविभोर हो जाते हैं, लेकिन उसके साथ ही आपका मन उस पर्वत शिखर के प्रति आभार से भर जाता है। यह अनुभव आपको बिलकुल बदल देता है। जो व्यक्ति चोटी पर हो आया हो, वह एक नया और अधिक उदात्त व्यक्ति प्राप्त कर लेता है। उसे पता चलता है कि इतने बड़े ब्रह्मांड में वह कितना क्षुद्र और कितना अकेला है।

एवरेस्ट पर पहुँचने की ललक इस महान् पर्वत के समान ही अक्षय और अमर है। सूर्य और चंद्रमा के समान यह सारी मानवता की थाती है और इसके प्यार में राष्ट्रीय सीमाओं की कोई बाधा नहीं। महत्त्वाकांक्षी पर्वतारोही—वे युवा हों या वृद्ध—संसार की इस सबसे ऊँची चोटी के प्रति आकर्षित होते रहेंगे और यह सदा आकर्षण का केंद्र बनी रहेगी।

□

पर्वतारोहण संबंधी प्रचलित शब्द

आइस फाल : ग्लेशियर की जड़ में स्थित वह मैदान, जहाँ जमी हुई बर्फ के बड़े-बड़े टुकड़े पड़े रहते हैं। एवरेस्ट जानेवाले प्रत्येक अभियान को खुंबू ग्लेशियर के आइस फॉल से होकर जाना पड़ता है।

एवलांश : हिम-स्खलन अर्थात् एकाएक टूटकर गिरनेवाली हजारों टन बर्फ, जिसके नीचे दबकर मरनेवाले पर्वतारोहियों की संख्या हजारों में है। बर्फ के बड़े-बड़े ढेर पहाड़ों के कगारों और ढलानों पर जमा हो जाते हैं और कई बार धूप की गरमी या तेज हवा से उसकी निचली परत पिघल जाती है। उसके परिणामस्वरूप हजारों टन बर्फ नीचे को फिसल जाती है। एवरेस्ट के क्षेत्र में अकसर एवलांश आया करती है।

कैराबीना : लोहे का बना अंडाकार उपकरण, जिसमें स्प्रिंग लगा होता है और इसमें से वह रस्सा निकालकर चट्टानों से बाँध दिया जाता है, जो पर्वतारोहियों की कमर में बँधा रहता है।

कूम : वेल्ज की भाषा का शब्द। कूम बर्फ से ढकी पहाड़ी के रास्ते में बनी घाटी या खड्ड को कहते हैं। एवरेस्ट के रास्ते में ऐसी एक घाटी आती है, जिसे ब्रिटिश पर्वतारोहियों ने कूम की संज्ञा दी थी। यहाँ अकसर एवलांश आया करती है।

कोल : पहाड़ की मेंड़ से निचले हिस्से या उसमें बने दर्रे को कोल कहते हैं।

क्रैंपॉन : विशेष प्रकार के लोहे का बना ढाँचा, जो बूट के नीचे बाँध लिया जाता है। इसमें कीलें लगी होती हैं। बूटों के नीचे क्रैंपॉन बाँधकर ही जमी हुई बर्फ पर चलना संभव है। सामान्य जूते पहनकर चलना खतरे से खाली नहीं, क्योंकि पैर तुरंत रपट जाता है।

चिमनी : चट्टानों या जमी हुई बर्फ में से होकर ऊपर को जाने का रास्ता, जो चिमनी जैसा होता है। एवरेस्ट की चोटी के कुछ सौ फीट नीचे ऐसा ही रास्ता है, जिसे 'हिलेरी की चिमनी' कहा जाता है। सबसे पहले 1953 में हिलेरी इसी से होकर चोटी तक पहुँचे थे। इसी कारण इसका नाम 'हिलेरी की चिमनी' पड़ गया।

बेस कैंप : पर्वतारोहियों के उस शिविर को कहते हैं, जहाँ से सारा साज-सामान ऊपर ले जाया जाता है और वहीं से आगे का रास्ता बनाने का काम किया जाता है। एवरेस्ट जानेवाले पर्वतारोही बेस कैंप से आगे एक और कैंप लगाते हैं, जिसे अग्रिम बेस कैंप कहा जाता है।

पहलू : किसी पहाड़ का वह भाग, जो एक ओर से दिखाई दे, जैसे एवरेस्ट के दक्षिणी या पश्चिमी पहलू हैं।

मेंड़ : एवरेस्ट की चोटी से कुछ सौ फीट नीचे की मेंड़, जिसके दोनों ओर तीखे ढलान हैं। कई बार पर्वतारोहियों को उन पर पेट के बल रेंगना पड़ता है।

रेजर्स ऐज : उस्तरे की धार जैसी मेंड़, जिस पर सदा बर्फ जमी रहती है और जो एवरेस्ट की चोटी से कुछ सौ फीट नीचे है।

□

पर्वतारोहण से संबंधित शब्दावली

रेखाचित्र — Sketch
उद्धरण — Extract
फोटो चित्र — Photograph
अभियान — Expedition
सर्वेक्षण — Survey
वेधशाला — Observatory
वायु सेना — Air force
विदेश मामले — External Affairs
दूतावास — Embassy
संस्मरण — Memories
शिखर — Summit
बौद्ध विहार — Monastery
बेस शिविर — Base Camp
हिमनदी — Glacier
सीढ़ी — Ladder
आरोहण — Climbing
मानचित्र — Map
मार्ग — Route
मौसम — Weather
चोटी — Pinnacle
प्रशिक्षण — Training

पर्वतारोहण — Mountaineering
उपलब्धि — Achievement
संचार — Communication
खोज — Discovery
दुर्घटना — Casualty
मौसम संबंधी — Meteorological
विशेषाधिकार — Privilege
आख्यान — Saga
अभिलेखागार — Archives
साहसिक कार्य — Adventure
अक्षांश — Latitude
देशांतर रेखांश — Longitude
सूची-स्तंभ — Pyramid
पूर्वाधिकारी — Predeccessor
भौगोलिक — Geographical
हिम — Snow
अनुसंधान — Research
अन्वेषण, जाँच — Investigation
संप्रेक्षण — Observation
सौजन्य — Courtesy
योगदान — Contribution
अभिलेख — Record
घाटी — Valley
आश्रय-स्थल — Sanctuary
सचिव — Secretary
उपकरण — Instrument
कार्यशाला — Workshop
मुख्यालय — Headquarter
वंशज — Descendants

प्राधिकारी — Authorities
प्रदेश — Territory
माप, पैमाना — Scale
प्रायोजक, प्रवर्तक — Sponser
समिति — Committee
भूविज्ञानी — Geologist
पारदर्शी — Transparent
ऊँचाई — Altitude
परिवहन — Transport
शिविर — Camp
तंबू — Tent
साधित्र — Apparatus
हिम स्खलन — Avalanche
भारिक — Porters
यांत्रिक — Mechanical
प्रदर्शन — Display
विदेशी — Foreigner
ढाल — Slope
पदचिह्न — Footprints
नेतृत्व — Leadership
पर्वतारोही — Mountaineer, Climber
कूटनीति — Diplomacy
पूर्ति — Supply
रसद — Provisions
कौशल — Strategy
पठार — Plateau
अनुयायी — Follower
उत्कृष्ट — Outstanding
दुर्घटना — Tragedy

हिमपात — Icefall
व्यावसायिक — Professional
चढ़ाई, आरोहण — Ascent
हिम दरार — Crevasse
अवरोहण — Descend
अनुसूची — Shedule
क्षतिग्रस्त — Damaged
विस्फोट — Explosion
चट्टान — Rock
क्रूसमूर्ति — Crucibin
तकनीक — Technique
हिम प्राचीर — Icewall
हिम कोटर — Igloo
संपर्क अधिकारी — Liaison officer
शिखर योजना — Summit Plan
क्रियाकलाप — Activities
आंतरिक — Internal
उपस्कर — Equipment
चौकी — Post
सीमा चिह्न — Land Mark
संतुलन — Balance
हिम मानव — Snow Man
चित्रावली — Panorama
विभ्रम, दृष्टि भ्रम — Hallucinations
निर्जलीकरण — Dehydration
थकान — Exhaustion
पुश्ता, टेक — Buttress
रूपांतर — Modifications
संगठन — Organisation

चक्कर — Swird
मोटा ऊनी वस्त्र विशेष — Duffel
चरण-चिह्न — Trail
दस्ताना — Mitter
बर्फ की पपड़ी — Crust of Ice
बाधा — Setback
बलि का बकरा — Scapegoat
आलोचना — Criticism
कुंदा — Butt
उपद्रव — Fracas
स्थलाकृति — Topography
प्रति लेखन / लिप्यंतरण — Transcription
अपसरण — Defection
आँकड़े — Data
पूर्वानुमान — Forecast
उपहास — Derision
तोड़फोड़ — Sabotage
चरमराहट — Crunch
जोंक — Feeches
झूला, दलारा — Lammock
चोट, गुमरा — Bruise
शिलाखंड — Boulders
अनुवीक्षण यंत्र — Microscope
स्फतीय — Feldspar
महासर्वेक्षक — Surveyor General
पर्वतमाला — Range
टोह — Reconnaissance
मेंड़ — Ridge
भूगोल शास्त्री — Geographic

वास्तुकला — Architecture
हिम मानव — Yeti
शिखर दल — Assault Party
भूगर्म शास्त्री — Geologist
पश्चिमी कूम — Western Coomb
हिम पुंज / बर्फ के पुंज — Cornices
चट्टानी कगार — Rock precipices
कीलदार जूते — Crampons
बर्फ काटने की कुल्हाड़ी — Ice axe
तूफानी हवा — Gale
ढालू — Steep
सँकरी — Narrow
मार्गदर्शक — Guide
सलाहकार — Adviser
चुनौती — Challenge
आयुध कारखाना — Ordnance Factory
वृत्तचित्र — Documentary
हिम-खड्ड— Couloir
ऑक्सीजन मुखौटा — Oxygen Mark
दूरबीन — Bino Culars
सँकरी खड्ड — Gully
चट्टान पट्टी — Rock Band
मचान, मंच — Platform
दक्षिण-पश्चिम पहलू — South-west face
कारनामे — Feats
स्फटिक — Crystal
गुरुत्वाकर्षण —Gravity
जीवाश्म — Fossils

□

तेनजिंग नोर्गे : एक परिचय

धूप में चमकते ऊँचे-ऊँचे पहाड़। बर्फ की चादर लपेटे। उन्हीं पहाड़ों के बीच एक और पहाड़ है। लगता है, वह आसमान छू रहा है। कभी बादलों में घिरा, कभी धूप में चमकता।

एक बालक प्रतिदिन इस पहाड़ को देखता है। वह अचरज से भर जाता है। गाँववाले इस पहाड़ का आदर करते हैं। मन-ही-मन उसकी पूजा करते हैं। एक दिन वह अपनी माँ से पूछता है, ''माँ, इस पहाड़ का नाम क्या है?''

''बेटा, वह चोमो-लुंगमा है, सारे विश्व की जननी, देवी। वह पवित्र है। वहाँ देवता रहते हैं। वह बहुत ऊँचा है। इतना ऊँचा कि कोई पक्षी तक उसके ऊपर नहीं उड़ सकता।''

बेटे को और भी अचरज होता है। इतना ऊँचा पहाड़! कोई पक्षी तक उसके ऊपर उड़ नहीं सकता। भविष्य को कोई नहीं जान पाया है। उस बालक को भी अपने भविष्य का पता नहीं था। तब वह क्या जानता था—एक दिन वह उसी पहाड़ की चोटी पर चढ़ेगा। सारी दुनिया में उसका नाम हो जाएगा। लोग उससे प्रेरणा लेंगे। कहेंगे—उसने असंभव कर दिखाया। सबसे ऊँचे पर्वत पर चढ़नेवाला वह पहला आदमी बना।

चोमो-लुंगमा

चोमो-लुंगमा अर्थात् माउंट एवरेस्ट। इस पर्वत शिखर को सारी दुनिया इसी नाम से जानती है। पर कुछ लोगों के लिए वह चोमो-लुंगमा है। चोमो-लुंगमा यानी 'विश्व की जननी, देवी।' ये लोग इसी पहाड़ के आसपास रहते हैं। दुनिया उन्हें एक नाम से ही जानती है—शेरपा। लोग 'शेरपा' का मतलब कुली से लगाते हैं। शेरपा यानी कुली, शेरपा यानी गाइड। पहाड़ों पर रास्ता बतानेवाला। पर शेरपा का यह सही अर्थ नहीं है। शेरपा एक जाति का नाम है। एक समुदाय का नाम है। ये लोग पूर्वी हिमालय में ऊँचे स्थानों पर रहते हैं।

वह किशोर भी शेरपाओं में से एक था। तब उसका नाम गाँव के लोग ही जानते थे। पर आज सारी दुनिया उसका नाम जानती है। उनका नाम एवरेस्ट से जुड़ा हुआ है। एवरेस्ट का नाम लेते ही उसका नाम याद आता है। उसका नाम है—तेनजिंग नोर्गे।

एडमंड हिलेरी के साथ एवरेस्ट पर चढ़नेवाला विश्व का पहला व्यक्ति। सन् 1953 तक एवरेस्ट पर कोई नहीं चढ़ पाया था। कैसे, कई लोगों ने उस पर चढ़ने की कोशिश की थी। कई लोगों ने इस प्रयास में अपने प्राण भी गँवा दिए थे।

एवरेस्ट एक चुनौती बना हुआ था। मनुष्य के साहस के लिए एक चुनौती। लगता था, एवरेस्ट सदा अविजित ही रहेगा। कोई उसपर नहीं चढ़ पाएगा। पर मनुष्य में एक खूबी है, वह कभी हार नहीं मानता। हर असफलता उसे प्रेरणा देती है। वह असफलता को सफलता की सीढ़ी मानता है। वह अपनी गलतियाँ ढूँढ़ता है। उन्हें दूर करता है। फिर दुगुने उत्साह से नया प्रयत्न करता है। वह हार नहीं मानता। और एक दिन विजयी होता ही है।

तेनजिंग नोर्गे ने भी एवरेस्ट पर चढ़ने की कई बार कोशिश की। सफल नहीं हुए। पर वे निराश भी नहीं हुए। कोशिश करते ही रहे। और एक दिन वे सफल होकर रहे।

वह एक महत्त्वपूर्ण दिन है—इतिहास में सदा के लिए अमर। वह दिन था— 29 मई, 1953। इसी दिन मनुष्य ने एवरेस्ट पर विजय पाई थी।

आज तेनजिंग हमारे बीच नहीं हैं, पर उनका जीवन हमें प्रेरणा देता है पर्वतों पर चढ़ने की, बाधाओं से जूझने की, कभी निराश न होने की।

कैसा था तेनजिंग नोर्गे का जीवन?

सोलो-खुंबू : दो गाँव-एक नाम

नेपाल—हमारा पड़ोसी देश। हिमालय की पहाड़ियों के बीच बसा। उत्तर-पूर्वी नेपाल में कई गाँव हैं। पहाड़ों के बीच बसे इन्हीं गाँवों में दो गाँव हैं—सोलो और खुंबू। पर लोग उनका नाम एक साथ लेते हैं। मानो यह एक गाँव का नाम है। वास्तव में ये जिलों के भी नाम हैं। सोलो एक जिला है और खुंबू दूसरा। सोलो दक्षिण में है कम ऊँचाई पर, खुंबू ज्यादा ऊँचाई पर है। तेनजिंग नोर्गे इसी खुंबू के निवासी थे।

उनके पूर्वज तिब्बत के रहनेवाले थे। वे हिमालय के दर्रों से होकर नेपाल आए थे। वे खुंबू में ही बस गए। खुंबू बहुत ऊँचाई पर है। गगनचुंबी पहाड़ों के बहुत पास। बहुत कुछ तिब्बत के समान। तेनजिंग और उनके जैसे शेरपा खुंबू के इसी उत्तरी इलाके से आए थे। सोलो-खुंबू से दूधकोसी बहती है। दूधकोसी अर्थात् दूध की नदी। यह नदी कहाँ से आती है? एवरेस्ट के आसपास पहाड़ हैं। बर्फ से ढके। दूधकोसी इसी बर्फीले प्रदेश से आती है। कई धाराओं में गहरी घाटियाँ खतरनाक खाई। कहीं सीधी-सपाट,

कहीं आड़ी-तिरछी पगडंडियाँ। सँकरे-झूलते पुल। उन पर कष्टों से भरा सफर। हर पग पर खतरा। काठमांडू है नेपाल की राजधानी। वहाँ तक जाने का यही एक मार्ग।

तेनजिंग ने अपनी आत्मकथा में लिखा है—''मेरा प्रदेश कठोर और पथरीला है। जलवायु तीखी है, फिर भी हमारी खेती है, चरागाह है। आठ से दस हजार फीट की ऊँचाई पर आलू पैदा होता है। जौ भी होता है। आलू हमारी सबसे बड़ी उपज है। आलू ही हमारा मुख्य खाद्य-पदार्थ है। कुछ जमीन पर सबका अधिकार है। कुछ जमीन निजी है। कई परिवारों की जमीन अलग-अलग जगहों पर है।

''बुवाई और कटाई के लिए वे ऊपर से नीचे आते हैं। लोग अपने मवेशियों के साथ सफर करते हैं। इन मवेशियों में होते हैं—भेड़, बकरियाँ और याक। इनमें याक का बड़ा महत्त्व है। उनसे हमें वस्त्रों के लिए ऊन मिलती है। जूतों के लिए चमड़ा, ईंधन के लिए गोबर। भोजन के लिए दूध, मक्खन और पनीर। सभी हिमालयी लोगों के लिए याक जीवन का बड़ा आधार है। उसे जिंदा रहने के लिए याक से सारी चीजें मिल जाती हैं।''

सोलो-खुंबू में कोई नगर नहीं है। कस्बा तक नहीं है। खुंबू में सबसे बड़ा एक गाँव है। उसका नाम है—नामचे बाजार। घाटियों में कई गाँव बसे हैं। इनके नाम हैं—खुंमजुंग, पांडाबोचे, दायदंग, शाक-सुम : शिमबुंग और थामे। इन गाँवों में घर पत्थरों के बने हैं। इनकी छतें लकड़ी की हैं। दरवाजे और खिड़कियाँ भी लकड़ियों की हैं। खिड़कियों में काँच के पल्ले नहीं होते। अधिकांश घर दोमंजिला हैं। निचली मंजिल में मवेशी रखे जाते हैं। स्टोर होता है। भीतर-ही-भीतर सीढ़ियाँ होती हैं। इनसे ऊपर की मंजिल में जाने का रास्ता होता है। ऊपर की मंजिल में लोग रहते हैं।

जन्म : कब और कहाँ?

सोलो-खुंबू में ही एक गाँव है थामे। तेनजिंग नोर्गे का परिवार यहीं रहता था। थामे में ही तेनजिंग पले-बढ़े। पर उनका जन्म थामे में नहीं हुआ था। उनका जन्म त्सा-चू-नामक स्थान पर हुआ था। यह महान् पर्वत मकालू के पास है। एवरेस्ट का वहाँ से केवल एक दिन का रास्ता है। त्सा-चू का अर्थ है—उष्ण निर्भर। गरम पानी का झरना। यह एक पवित्र स्थान है।

कहानियों में इतिहास भी छिपा होता है। त्सा-चू और चांग-ला के बारे में भी कई कहानियाँ हैं। ऐसी ही एक कहानी है—

पुराने जमाने की बात है। दो राजा थे। एक का नाम था—ग्यालबो वांग। दूसरे का ग्यालबो खुंग। किसी बात पर दोनों में विवाद हो गया। युद्ध ठन गया। यह युद्ध त्सा-चू और चांग के पास हुआ। इस युद्ध में ग्यालबो खुंग की विजय हुई। उसने अपने सिपाहियों और सरदारों में जमीन बाँटी। एक योद्धा को चांग-ला के पास जमीन मिली। उस योद्धा

के वंशजों ने अपने पूर्वज का नाम अपना लिया। इसी वंश में तेनजिंग नोर्गे का जन्म हुआ।

तेनजिंग का जन्म कब हुआ—बतलाना जरा कठिन है। इसका एक कारण है। सोलो-खुंबू में तिब्बती पंचांग चलता है। उसी से काल गणना की जाती है। उसमें वर्षों के लिए संख्या नहीं होती। उसमें वर्षों के नाम होते हैं। ये नाम पशु-पक्षियों के नामों पर होते हैं। जैसे अश्व-वर्ष, वृषभ-वर्ष, सर्प-वर्ष, पक्षी-वर्ष। ऐसे कुल बारह वर्ष होते हैं। इनमें छह वर्ष नर-वर्ष हैं। शेष छह मादा-वर्ष हैं। जब एक क्रम पूरा हो जाता है तो फिर दूसरा शुरू होता है।

कई बरसों तक तेनजिंग को अपनी उम्र का पता नहीं था। बस एक ही बात मालूम थी। वे चोआ-वर्ष में पैदा हुए थे। चोआ यानी खरगोश। यह चक्र चलता रहता है। इसीलिए ईस्वी के साथ उसकी तुलना कठिन है। तेनजिंग के अनुसार उनका जन्म शायद 1914 में हुआ था। ईस्वी सन् बताना भले कठिन हो, पर तेनजिंग को अपने जन्म की ऋतु याद थी। उनका जन्म मई के दूसरे पखवाड़े में हुआ था। यह समय उनके लिए सदैव शुभ रहा।

सन् 1952 की बात है। मई का दूसरा पखवाड़ा था। उस वर्ष भी एवरेस्ट पर एक अभियान दल गया था। उनमें प्रसिद्ध पर्वतारोही लैंबर्ट थे। उनके साथ तेनजिंग भी थे। 28 मई की बात है। वे लोग एवरेस्ट पर लगभग चढ़ गए थे। पर शिखर तक नहीं चढ़ पाए। लेकिन पहली बार कोई मनुष्य उस ऊँचाई तक पहुँचा था। अंततः उन्हें लौटना पड़ा। पर वे निराश नहीं थे। एक आशा थी, मन में एक संकल्प था—''हम फिर आएँगे।''

और ठीक एक वर्ष, एक दिन बाद वे एडमंड हिलेरी के साथ एवरेस्ट पर थे।

29 मई—एक ऐतिहासिक दिन।

हर साल 29 मई को एवरेस्ट विजय की वर्षगाँठ मनाई जाती है। इसलिए तेनजिंग ने भी 29 मई को ही अपना जन्मदिन मान लिया। तेनजिंग नोर्गे की माँ का नाम किन जोम और पिता का नाम चांग-ला मिंगमा था। उनकी तेरह संतानें हुईं। सात पुत्र, छह पुत्रियाँ। तेनजिंग माता-पिता की ग्यारहवीं संतान थे।

सोलो-खुंबू में जीवन बहुत कष्टकर था। तेनजिंग के अनुसार, ''वहाँ मौत हमेशा मँडराती रहती थी। मेरे भाई-बहनों में केवल चार बचे। एक मैं। तीन बहनें।'' सोलो-खुंबू दुर्गम प्रदेश में है। वहाँ के लोग मैदानों में बहुत कम आते हैं। कारण, रास्ता खतरनाक है। कठिनाइयों से भरा। जो लोग मैदानों में आते, वे बहुत कम वापस लौट पाते। मैदानों में ही बस जाते। काठमांडू में रहने लगे या फिर दार्जिलिंग चले आते।

तेनजिंग के माता-पिता ने कभी बाहर की दुनिया नहीं देखी। ज्यादा-से-ज्यादा वे काठमांडू तक गए। या फिर तिब्बत में रोंगबुक मठ में गए। रोंगबुक मठ में तेनजिंग के मामा मुख्य लामा थे।

तेनजिंग अर्थात् 'भाग्यवान धर्मसमर्थक'

हर नाम का एक अर्थ होता है। कुछ नाम देवी-देवताओं के नाम पर रखे जाते हैं। कुछ गुणों या विशेषणों के नाम पर। तिब्बत में लामा बच्चे का नाम रखते हैं।

तेनजिंग के माता-पिता भी लामा के पास गए। पहले वे अपने बच्चे को और नाम से पुकारते थे। यह नाम था—नामग्याल वांग्डी। वे एक दिन नामग्याल वांग्डी को रोंगबुक मठ लेकर गए। वहाँ एक महान् लामा थे। नामग्याल वांग्डी को उनके दर्शन कराए गए। महान् लामा ने पवित्र ग्रंथों को देखा। फिर बताया :

''सोलो-खुंबू में हाल ही में एक धनी व्यक्ति के प्राण गए हैं। यह बच्चा उसी का अवतार है। इसीलिए इसका नाम जरूर बदला जाना चाहिए।''

''अब आप ही बताइए नया नाम।'' माता-पिता ने अनुरोध किया।

महान् लामा ने फिर पवित्र ग्रंथों को देखा। कुछ देर विचार किया। फिर बोले, ''इस बच्चे का नाम तेनजिंग नोर्गे रखा जाए।''

फिर उन्होंने बच्चे का भविष्य बताया, ''यह बच्चा संसार भर में प्रसिद्ध होगा। बड़ा आदमी बनेगा।''

माता-पिता बेहद खुश हुए। उन्हें यह बात एक और लामा ने बताई थी, जो त्सी-चू मठ के थे। तेनजिंग का अर्थ है—'धर्मसमर्थक' यानी धर्म को माननेवाला। उसकी रक्षा करनेवाला। और नोर्गे का अर्थ है—धनी, भाग्यवान। इस तरह तेनजिंग नोर्गे का अर्थ हुआ—'धर्मसमर्थक, जो धनी है, भाग्यवान है।' या 'धनी, भाग्यवान धर्मसमर्थक।'

यह नाम बेहद पवित्र और शुभ माना जाता है।

रोंगबुक मठ के उन महान् लामा का नाम भी तेनजिंग था। इस तरह उन्होंने नामग्याल वांग्डी को अपना ही नाम दे दिया था। अपने नए नाम के बारे में तेनजिंग ने लिखा है—''धनी, भाग्यवान, धर्मसमर्थक नाम अच्छा था। इसलिए मेरे माता-पिता ने मेरा नाम बदल दिया, उन्हें आशा थी, इससे भला ही होगा।''

तेनजिंग लामा बनते-बनते रह गए

तेनजिंग नोर्गे का प्यार से लालन-पालन होने लगा। उनके माता-पिता उन्हें लामा बनाना चाहते थे। तेनजिंग थोड़े बड़े हुए तो उन्हें एक मठ में भेजा गया। उनका मुंडन कराया गया। उन्हें भिक्षुओं के वस्त्र पहनाए गए। वे अब मठ में ही रहने लगे।

मठ में एक घटना घट गई। उसने तेनजिंग के जीवन की धारा ही बदल दी। हुआ यह कि एक दिन एक लामा तेनजिंग पर नाराज हो गए। क्रोध में उन्होंने एक लकड़ी की पट्टी उठाई, उसे तेनजिंग के मुँड़े सिर पर मार दिया। तेनजिंग दर्द से बिल-बिला उठे। वे सीधे घर की ओर भागे। उन्होंने माता-पिता को सारी बात बताई। कहा, ''अब मैं मठ में कभी नहीं जाऊँगा।'' उनके माता-पिता ने उनकी बात मान ली। तेनजिंग नोर्गे ने

लिखा है—''आज मैं अकसर सोचता हूँ, मेरे माता-पिता मेरी बात न मानते तो? मुझे दोबारा मठ में भेज देते तो? तब क्या होता? तब क्या मुझे लामा बन जाना चाहिए था? मैं नहीं जानता, कभी-कभी मित्रों से इस घटना का उल्लेख करता हूँ तो वे हँसकर कहते हैं, ''ओह! तो सिर पर पड़ी चोट ने ही तुम्हें पर्वतों के पीछे पागल बना दिया?''

तब सोलो-खुंबू में कोई स्कूल नहीं था। मठ में भी शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं था। केवल लामा ही एक भाषा सीखते थे। यह उत्तरी बौद्धधर्म की शास्त्रीय तिब्बती भाषा थी। वह भी केवल मौखिक रूप में पढ़ाई जाती थी।

बौद्ध मठ से भागकर तेनजिंग ने शिक्षा पाने का एक अवसर गँवा दिया। अब घर में वे अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेला करते। घर के काम किया करते। अपने एक बड़े भाई की पीठ पर सवारी किया करते। उनके घर में मवेशियों का झुंड था। उन्हें सर्दियों में घर की निचली मंजिल में बाँध दिया जाता। जब मवेशी ठंड में बाहर निकाले जाते, तब उनसे अजीब सी गंध आती थी।

सर्दियों में परिवार के लोग ऊपरी मंजिल में दुबककर रहते थे। जरा सी भी जगह नहीं बचती। तब बड़ा शोर मचता था। रसोई का धुआँ उठा करता था। चारों ओर एक गंध समाई रहती। पर वे सब प्रसन्न रहते, संतुष्ट रहते। चूँकि उन्हें जीवन का कोई दूसरा तरीका मालूम नहीं था।

वे खाते-पीते-खेलते या घर का काम करते। कुछ शेरपा बेहद कठोर होते थे। बच्चों को मारते-पीटते, डाँटते-फटकारते रहते। तेनजिंग बताते हैं, उनके पिता कठोर नहीं थे। वे उन्हें बहुत चाहते थे। तेनजिंग भी पिता को प्यार करते थे।

तेनजिंग की एक बड़ी बहन थी, उनका नाम था—लाहमू कीपा। वह भी अपने छोटे भाई को बेहद चाहती थी। वह याक का दूध दुहती तो तेनजिंग उसके पास बैठ जाते। लहमू उन्हें पीने के लिए याक का ताजा दूध देती। तेनजिंग कहते थे, ''लहमू कीपा मेरे लिए दूसरी माँ के समान थी।'' बाद में लहमू कीपा भिक्षुणी बन गई।

ध्यांगबोचे का बौद्ध मठ प्रसिद्ध है। इसी मठ में वे 'अबे-ला' बनीं। अबे-लाएँ यानी बौद्ध-भिक्षुणी। वे सात वर्षों तक वहाँ रहीं। उनके लिए तेनजिंग घर से भोजन ले जाया करते थे।

बचपन में तेनजिंग की नजर एवरेस्ट पर सदा पड़ती थी। तब उन्होंने एवरेस्ट का नाम तक नहीं सुना था। उत्तर दिशा में अनेक पर्वत-शिखर थे। उन्हीं के मध्य एक शिखर आकाश में ऊँचा उठा हुआ था। उसे उन्होंने कई बार देखा था, पर तब उनके लिए उसका नाम एवरेस्ट नहीं, चोमो-लुंगमा था।

छोटी दुनिया, बड़े सपने

अपने बचपन के बारे में तेनजिंग ने लिखा है—''दूसरे बच्चों की तरह मेरी दुनिया

भी बहुत छोटी थी। इस दुनिया में पिता थे, माँ थी, भाई-बहन थे, घर था, गाँव था, खेत, चरागाह और चरक थे। उत्तर में महान् पर्वत थे। पूर्व तथा पश्चिम में भी ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे। तीन दिशाओं में ऊँचे-ऊँचे पर्वत। चौथी दिशा दक्षिण थी। इस दिशा में दूधकोसी थी, जो जंगलों में गायब हो जाती थी। उसके पास क्या था, मैं नहीं जानता था।

''जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, बाहरी दुनिया के बारे में थोड़ा-बहुत ज्ञान होने लगा। सबसे पहले मैंने तिब्बत के बारे में जाना। फिर उसके पुण्यतीर्थ ल्हासा नगर के बारे में पता लगा। ल्हासा के बारे में सभी लोग बातें करते। मेरे माता-पिता और लामा कई बार ल्हासा के बारे में चर्चा किया करते थे। मेरे माता-पिता धार्मिक प्रवृत्ति के थे। वे ल्हासा की तीर्थ-यात्रा करना चाहते थे। पर यह यात्रा बेहद लंबी थी, खर्चीली भी थी। इसलिए वे कभी वहाँ नहीं जा पाए।''

बचपन में तेनजिंग स्वभाव से शरमीले थे। वे सबसे अलग-थलग रहा करते थे। और बच्चे एक-दूसरे का पीछा करते हुए खेला करते थे। पर वे चुपचाप अकेले बैठे रहते। सुदूर स्थानों की, बड़ी-बड़ी यात्राओं की कल्पना किया करते। इसी में खोए रहते। कभी ऐसा दिखलाते, मानो ल्हासा के किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को पत्र लिख रहे हैं। एक दिन वह व्यक्ति आकर उन्हें ल्हासा ले जाएगा।

कभी-कभी वे सोचते कि वे सेनापति हैं। एक सेना का नेतृत्व कर रहे हैं। कभी-कभी वे यात्रा करने के लिए पिता से घोड़े की माँग करते। तब पिता हँस पड़ते। धीरे-धीरे उन्हें अन्य स्थानों के बारे में पता चला। उन्होंने काठमांडू के बारे में सुना। उन्हें दार्जिलिंग का नाम मालूम पड़ा। अब वे इन स्थानों के बारे में भी सोचने लगे।

उन दिनों शेरपा काम की तलाश में सोलो-खुंबू से निकल जाते थे। वे पर्वतों-जंगलों को एक बार काठमांडू जाते। कुछ साहसी शेरपा दार्जिलिंग तक पहुँच जाते। वहाँ वे चाय बागानों में काम करते। फिर वे अपने परिवार से मिलने सोलो-खुंबू भी आते। वे गाँववालों को बाहरी दुनिया के बारे में बताते।

शेरपाओं के लिए नया काम

पहले शेरपा चाय बागानों में काम करते थे। दार्जिलिंग में रिक्शा चलाते या बोझा उठाते थे। शीघ्र ही उन्हें एक नया काम मिल गया। वह काम था, पर्वतों पर जाने का। डॉ. केल्वास नामक एक साहसी पर्वतारोही हिमालय में खोज करना चाहते थे। उन्होंने अनुभव किया, शेरपा इस काम में उनकी मदद कर सकते हैं। उन्होंने शेरपाओं को एक नया काम दिया। पर्वतों में मार्गदर्शन करने का, बोझा उठाने का।

शेरपा तो हिमालय के बेटे थे। उनके लिए यह काम कठिन नहीं था। डॉ. केल्वास की उन्होंने अच्छी सहायता की। उनके काम की प्रशंसा भी हुई। अब तो जो पर्वतारोही हिमालय में जाता, शेरपाओं को जरूर साथ लेता। इनमें से एक पर्वतारोही थे—जनरल

ब्रूस। वे भारतीय सेना में थे। शेरपाओं ने उनकी भी खूब मदद की।

शीघ्र ही दार्जिलिंग के शेरपा प्रसिद्ध हो गए। वे पर्वतारोहियों का मार्गदर्शन करते, उनका सामान उठाते। 1921, 1922 और 1924 में तीन प्रसिद्ध अभियान हुए। इन अभियानों में मंजिल थी—एवरेस्ट। संसार का सबसे ऊँचा पर्वत-शिखर। इन अभियानों में दार्जिलिंग के कई शेरपा शामिल हुए। सोलो-खुंबू से भी कई शेरपा गए।

शेरपाओं ने विदेशी पर्वतारोहियों को एक नया नाम भी दिया। वह था—चिलिंनाग्ना। ये पर्वतारोही बड़े-बड़े जूते पहनते थे। उनके कपड़े भी खास तरह के होते थे। शेरपाओं ने अपने जीवन में ऐसे जूते, ऐसे कपड़े कभी नहीं देखे थे।

तेनजिंग ने भी विदेशी पर्वतारोही देखे। उनके जूते, उनके कपड़े देखकर उनका मन ललचा गया। एक जोड़ी जूतों के लिए उन्होंने पैसे भी दिए। पर वे बहुत बड़े थे। भारी भी बहुत थे। उनको पहनकर वे चल ही नहीं सकते थे। उन दिनों बस एक ही नाम की धूम थी—एवरेस्ट! वे सब हमेशा एवरेस्ट की बात किया करते।

एक दिन तेनजिंग ने शेरपाओं से पूछा, ''यह एवरेस्ट क्या है?''

''वही चोमो-लुंगमा।'' उन्होंने उत्तर दिया।

प्रकृति की विचित्र लीला, हिमालय—किन्नरों और गंधर्वों का प्रदेश।

कालिदास एक महान् कवि थे। उन्होंने हिमालय को 'नगाधिराज' कहा है। 'नगाधिराज' अर्थात् पर्वतों का राजा।

यह अत्यंत अचरज की बात है कि आज जहाँ हिमालय है, वहाँ पहले कभी सागर था। उसका नाम था—टेथिस सागर।

हिमालय का जन्म कब हुआ था?

अनुमान है—आज से पाँच-छह करोड़ वर्ष पूर्व हिमालय की रचना हुई थी। भू विज्ञानी बताते हैं—प्राचीनकाल में धरती दो खंडों में बँटी थी। उत्तरी भूखंड और दक्षिणी भूखंड। उत्तरी भूखंड से क्षेत्र बने—उत्तरी महाद्वीप, यूरेशिया। और दक्षिणी भूखंड से क्षेत्र बने—गोंडवाना, दक्षिणी भारत, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया। इन दोनों भूखंडों के बीच ही टेथिस सागर था। भूमध्य सागर इसी का अवशेष है। प्रकृति की लीला विचित्र है। इसी के कारण जहाँ सागर था, वहाँ पर्वत बन गया।

हिमालय पर्वतमाला ढाई हजार किलोमीटर लंबी है। उसका क्षेत्रफल पाँच लाख वर्ग किलोमीटर है। प्राचीनकाल में इस पर्वतमाला के कई नाम थे, जैसे—इमस, हिमस या हीमोड। सिकंदर के साथ आए यूनानियों ने इसे 'भारतीय काकेशस' नाम से पुकारा। हिमालय को कई भागों में बाँटा गया, जैसे—बृहत् हिमालय, लघु हिमालय और बाह्य हिमालय।

भारत के लिए हिमालय का बड़ा महत्त्व है। उत्तर भारत के निर्माण में उसका बड़ा

हाथ है। उसके कारण जलवायु पर भी असर पड़ा है।

अगर हिमालय न होता तो?

तो सिंधु और गंगा का उपजाऊ मैदान विशाल रेगिस्तान होता। हिमालय के कारण ही उत्तर भारत में वर्षा होती है। गरमी के दिनों में दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी हवाएँ आती हैं। हिमालय उन्हें आगे नहीं बढ़ने देता, रोक लेता है, फलस्वरूप वर्षा होती है। वर्षा का पानी नदी बनकर निकलता है। ये नदियाँ अपने साथ उपजाऊ मिट्टी भी लाती हैं।

हिमालय एक और काम करता है। शीतकाल में उत्तरी ध्रुव से ठंडी हवाएँ चलती हैं। उनके कारण मध्य एशिया का अधिकांश भाग जम जाता है। हिमालय इन ठंडी हवाओं को उधर ही रोक लेता है।

हिमालय में अनेक ऊँचे शिखर हैं। एवरेस्ट भी इनमें से एक है। संसार का सर्वोच्च पर्वत शिखर। इसकी वर्तमान ऊँचाई 29,028 फीट है, यानी 8848 मीटर। इसी शिखर को नेपाल में 'सागरमाथा' कहते हैं।

सन् 1841 में भारत के सर्वेयर जनरल सर जॉर्ज एवरेस्ट थे। उन्होंने ही सबसे पहले इस शिखर का सर्वेक्षण किया था। इसलिए इस शिखर का नामकरण उनके नाम पर किया गया। एवरेस्ट सन् 1953 तक अविजित रहा। सबसे पहले 1922 में एवरेस्ट पर चढ़ाई की गई। इसके बाद 1924, 1933, 1935, 1936, 1937, 1938, 1951 और 1952 में प्रयास किए गए । अंत में 1953 में एवरेस्ट पर विजय पाई गई।

शिखर पर चढ़ने की वजह

विश्व प्रसिद्ध पर्वतारोही कैप्टन मेलोरी ने अपने एक साथी को लेकर एवरेस्ट पर चढ़ने की कोशिश की थी। साथी का नाम था—इरविन। उनके साथ कोई शेरपा नहीं था। उनके पास विशेष उपकरण भी नहीं थे। पर उनके पास एक बहुत बड़ी चीज थी। यह था—मन में उत्साह, दृढ़ इच्छाशक्ति, कभी हार न मानने का संकल्प।

क्या मेलोरी और इरविन शिखर तक, एवरेस्ट तक पहुँच पाए थे? यह रहस्य ही बना हुआ है। क्यों? इसलिए कि मेलोरी और इरविन कभी लौटकर नहीं आ पाए। उनके शवों का भी पता नहीं चला। इन्हीं मेलोरी से किसी ने पूछा था—

''आप क्यों चढ़ते हैं शिखर पर?''

''क्योंकि वह सामने है।'' मेलोरी का उत्तर था।

क्या अर्थ है इस उत्तर का? यही कि शिखर एक चुनौती देता है और साहसी व्यक्ति चुनौती से पीछे नहीं हटते। वे आगे बढ़कर उसे स्वीकार करते हैं। मेलोरी और इरविन ने भी यही चुनौती स्वीकार की थी।

जोखिम से जूझना मनुष्य की आदत है। अज्ञात को जानना उसका स्वभाव है। इसलिए तो आदमी इतनी तरक्की कर सका है। कहाँ आदिम मानव और कहाँ अंतरिक्ष

तक पहुँचनेवाला मानव! मनुष्य में जोखिम से जूझने की भावना नहीं होती, अज्ञात को जानने की जिज्ञासा नहीं होती तो क्या मनुष्य इतनी प्रगति कर सकता था? शायद नहीं। तब शायद वह आज भी गुफाओं में ही रहा होता।

लेकिन मनुष्य का स्वभाव ऐसा नहीं है। वह सदा जोखिम से जूझता है। चुनौती स्वीकार करता है। अज्ञात के रहस्य खोलता है। उसके मन में एक जिज्ञासा होती है। इसी जिज्ञासा के कारण वह प्रकृति के नियम जान पाया है। सूर्य, चंद्रमा, ग्रहों की गति जान पाया है।

इसके लिए मनुष्य ने खतरे भी बहुत उठाए हैं। जाने कितने लोगों के प्राण गए हैं, पर क्या मनुष्य पीछे हटा है? नहीं। पीछे हटना तो उसका स्वभाव ही नहीं है। एवरेस्ट अभियान में भी कई लोगों के प्राण गए हैं। मेलोरी और इरविन को भी अपने प्राण गँवाने पड़े। पर क्या इससे लोग हिम्मत हार गए? नहीं। उन्हें लगा, अब तो एवरेस्ट पर चढ़ना और जरूरी है।

वर्ष 1922 में एक पर्वतारोही दल एवरेस्ट गया था। राह में हिम-स्खलन हो गया। उसमें सात शेरपाओं की मृत्यु हो गई। सोलो-खुंबू दुःख के सागर में डूब गया। चारों ओर शोक छा गया। पर दो वर्ष बाद फिर एक पर्वतारोही दल आया। उनके साथ भी शेरपा गए। उस वर्ष तो और ज्यादा शेरपा दल के साथ थे। उसी वर्ष यानी 1924 में मेलोरी और इरविन लापता हुए। वे हिमालय में जैसे कहीं खो गए।

शेरपा लौटे तो उन्होंने गाँववालों को उनके बारे में बताया। तेनजिंग नोर्गे ने भी उनका नाम सुना। वे रोमांचित हो उठे। शुरू-शुरू में पर्वतारोहण अभियानों में तेनजिंग के परिवार से कोई नहीं गया। पर ऐसे अभियानों में जाने के लिए वे कुछ भी करने को तैयार थे। कुछ भी देने को तैयार थे। पर तब वे बहुत छोटे थे। इस तरह बचपन से तेनजिंग के मन में पर्वतों पर चढ़ाई करने की एक चाह जगी।

तेनजिंग घर के काम-काज में हाथ बँटाया करते। उनके खेतों में आलू के अलावा जौ भी उगाया जाता था। भेड़ों और याकों की देखभाल का भी काम था। तेनजिंग बताते थे कि शुरू-शुरू में उनका परिवार बहुत गरीब था। पर उन्हें भाग्यशाली समझा जाता था। परिवार के लोगों का खयाल था कि उनके जन्म के बाद उनके दिन फिर गए हैं। कारण, जिस वर्ष वे पैदा हुए, उसी वर्ष सौ नन्हे याक भी पैदा हुए। इसके बाद तो उनके घर में कभी-कभी तीन-तीन सौ, चार-चार सौ तक याक हो जाया करते।

इस तरह तेनजिंग का बचपन याकों के साथ ही बीता। उन्हें याकों के साथ पहाड़ों पर जाना अच्छा लगता था। वे याकों के साथ अठारह हजार फीट की ऊँचाई तक चले जाते। इस ऊँचाई तक याकों के लिए घास मिल जाती थी। पर ये स्थान खतरनाक भी माने जाते थे। लोगों का विश्वास था, वहाँ हिममानव (येती) रहते हैं।

तेनजिंग ने भी हिम मानव के बारे में सुना था। लामा अकसर उनकी कहानियाँ सुनाया करते थे। वे अन्य खतरनाक जीवों की भी कहानियाँ सुनाया करते। ये जीव दैत्यों से भी खतरनाक थे। येती से भी भयानक थे। तेनजिंग भी इन खतरनाक जीवों की कहानियाँ सुनते। पर वे स्वयं एक दिन इन जीवों को देखना चाहते थे। उन्हें मालूम था कि कई लोग चोनो-लुंगमा पर चढ़े हैं। इसमें उनके इलाके के भी लोग थे। उनमें कुछ मारे गए थे, पर कई जीवित भी लौट आए थे।

तेनजिंग बड़े हुए तो उन्हें सोलो-खुंबू छोटा लगने लगा। वे सोचते, संसार कितना बड़ा है और सोलो-खुंबू कितना छोटा। उनके मन में एक विचार आता कि सोलो-खुंबू से बाहर निकलना चाहिए। बाहर की दुनिया देखनी चाहिए। और एक दिन वे काठमांडू के लिए चल पड़े। तब उनकी उम्र तेरह साल थी।

संघर्षों की सीप, सफलता के मोती

तेनजिंग किशोर थे। जानते थे, माता-पिता घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं देंगे। इसीलिए एक दिन वे चुपचाप घर से निकल पड़े। उन्हें पैदल ही यात्रा करनी थी— उनका कोई साथी भी नहीं था। पर जहाँ चाह, वहाँ राह। पहाड़ी रास्ता, चक्करदार, खतरनाक, कहीं नदी, कहीं नाले, पर तेनजिंग चल पड़े। काफी दूर तक वे अकेले चले। फिर उन्हें कुछ यात्री मिल गए। दो सप्ताह बाद वे काठमांडू में थे।

तेनजिंग ने इतनी भीड़, ऐसे लोग, पहले कभी नहीं देखे थे। वहाँ उनका कोई परिचित नहीं था। कहाँ ठहरते! लेकिन वे घबराए नहीं। उन्होंने एक बौद्ध मठ का पता लगाया। वहाँ अजनबी लोगों की सहायता की जाती थी। वे इसी बौद्ध मठ में ठहर गए।

दो सप्ताहों तक वे काठमांडू की सड़कों पर घूमते रहे। उन्होंने बाजार देखा, बड़े-बड़े मंदिर देखे, मठ देखे। पर वे अपने माता-पिता को भूले नहीं। उन्हें घर की याद सताने लगी। एक दिन उनकी भेंट कुछ लोगों से हुई। वे सोलो-खुंबू के थे। वे घर वापस लौट रहे थे। तेनजिंग भी उनके साथ हो लिये।

कुछ दिन बाद वे घर पहुँचे। उन्हें देखकर माता-पिता बेहद खुश हुए। उन्होंने उन्हें गले से लगा लिया। फिर बिना बोले घर छोड़कर जाने की बात पर फटकारा भी।

इसके बाद पाँच वर्ष तक तेनजिंग घर पर ही रहे। पर एक बात वे जानते थे। वे कभी सोलो-खुंबू में नहीं रह सकते। जीवन में वे किसान नहीं बनेंगे। अब वे अठारह वर्ष के थे। बड़े हो गए थे। बाहर की दुनिया में जा सकते थे। खतरों का सामना करने की ताकत पा गए थे। एक दिन तेनजिंग फिर घर से निकल पड़े।

माँ का स्नेह : एवरेस्ट का आकर्षण

दार्जिलिंग—जहाँ चाय-बागान थे, जहाँ शेरपा थे। कुली का काम करनेवाले शेरपा।

पर्वतों पर जानेवाले शेरपा। दार्जिलिंग जाने का एक और कारण था। शायद प्रमुख कारण। उन्हें पता चला था कि पर्वतों पर एक अभियान दल जानेवाला है। तेनजिंग इसी अभियान दल में शामिल होना चाहते थे। पर दार्जिलिंग जाने में कई दिक्कतें थीं। इससे बड़ी दिक्कत थी—माता-पिता की अनुमति की। तेनजिंग जानते थे कि माता-पिता कभी नहीं जाने देंगे।

एक बार फिर वे अपने माता-पिता को बिना बताए निकल पड़े। इस कारण उन्हें दुःख भी हुआ था। माता-पिता उन्हें बेहद चाहते थे। माता-पिता सीधे-सादे थे। पवित्र जिंदगी बितानेवाले, खासकर उनकी माँ। वे बहुत दयालु थीं। उन्होंने सादगी भरा जीवन गुजारा। तेनजिंग अपनी माँ का बेहद आदर करते थे। वे कहते थे—''मेरी सफलता में मेरी माँ के विश्वास, उसकी भक्ति, उसके आशीर्वादों, उसकी प्रार्थनाओं का बहुत बड़ा योग रहा है।''

ऐसी माँ को छोड़कर जाना कठिन था। एक ओर माँ का स्नेह, दूसरी ओर एवरेस्ट का आकर्षण। पर एवरेस्ट की जीत हुई।

घर से निकलना इतना आसान नहीं था। उसके लिए तैयारी करनी थी, योजना बनानी थी। वह भी चुपचाप। गाँव छोड़नेवाले अकेले तेनजिंग नहीं थे। ऐसे बारह लोग थे। इनमें लड़के भी थे, लड़कियाँ भी थीं। ये सब एक महीने तक गुप्त बैठकें करते रहे। रास्ते के लिए भोजन तथा दूसरी जरूरत की चीजें जुटाते रहे। तेनजिंग अपने साथ केवल कंबल ला पाए। पैसे तो थे ही नहीं। औरों का भी उनके जैसा ही हाल था। फिर भी उनके मन में उत्साह था। एक दिन ये बारह लोग गाँव से निकल पड़े।

तेनजिंग का एक पुराना शेरपा मित्र था। उसका नाम दावा धोंडुप था। वह भी दार्जिलिंग नहीं गया था। पर उसके बारे में उसे काफी जानकारी थी। उसी ने तेनजिंग को बताया था कि एवरेस्ट पर अभियान दल जानेवाला है। उसमें हम सबको काम जरूर मिल जाएगा। इस तरह सबके मन में उम्मीद थी।

बारह लोगों का यह दल जब भारत-नेपाल की सीमा पर पहुँचा तो किसी बात पर उनके बीच मनमुटाव हो गया। दल के लोग तेनजिंग को अकेला छोड़कर चल पड़े। तेनजिंग परेशान हो उठे। नई जगह, पास में एक पैसा नहीं। क्या करें, कहाँ जाएँ? पता चला, पास में एक कस्बा है। नाम है सिमाना। तेनजिंग उसी की ओर चल पड़े। वहाँ एक धनी व्यक्ति रहता था। नाम था टिंगा नामा। तेनजिंग की उसी से भेंट हो गई। तेनजिंग को अपनी भाषा ही आती थी। वे नेपाली तक नहीं जानते थे। पर टिंगा नामा को शेरपा बोली की थोड़ी जानकारी थी।

टिंगा नामा ने मुसीबत में फँसे तेनजिंग को अपने घर में रखा। उनके लिए भोजन का इंतजाम किया। उन्हें पहनने के लिए नेपाली कपड़े दिए गए। बदले में तेनजिंग उनका काम कर दिया करते। जंगल से लकड़ी काटकर ला देते। धीरे-धीरे सिमाना की

जिंदगी से तेनजिंग ऊब गए। उन्होंने एक दिन टिंगा नामा से कहा, ''मैं दार्जिलिंग जाना चाहता हूँ।''

''ठीक है, मैं व्यापार के सिलसिले में वहाँ जा रहा हूँ। तुमको भी ले चलूँगा।'' टिंगा नामा ने कहा।

और एक दिन तेनजिंग दार्जिलिंग के लिए चल पड़े। पर यह सफर कठिनाइयों से भरा नहीं था। तेनजिंग एक कार में यात्रा कर रहे थे। तेनजिंग ने जीवन में पहले कभी कार नहीं देखी थी। आखिर वे दार्जिलिंग पहुँच ही गए।

नए अवसर, नए आकर्षण

तेनजिंग को लगा, दार्जिलिंग काठमांडू जैसा बड़ा नहीं है। पर कई बातों में वह काठमांडू से बड़ा था। वहाँ तेनजिंग ने जीवन में पहली बार नई-नई चीजें देखीं—रेलगाड़ी, इंजन और बहुत सारे विदेशी।

टिंगा नामा तेनजिंग को बहुत चाहता था। वह जानता था कि नए शहर में उस युवक को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। वह तेनजिंग को दार्जिलिंग के पास स्थित गाँव आलूबारी ले गया। वहाँ टिंगा नामा का चचेरा भाई रहता था। उसका नाम पौरी था। टिंगा नामा ने उसी के घर तेनजिंग के ठहरने का इंतजाम कर दिया। पौरी उन्हें देखकर खुश हुआ। उसके पास पंद्रह गाय थीं। उसने तेनजिंग से कहा, ''तुम इन गायों की देखभाल करो। घर के कामकाज में हाथ बँटाओ और आराम से यहाँ रहो।''

तेनजिंग पौरी के घर में रहने लगे। वे गायों की देखभाल करते और घर के कामकाज में हाथ बँटाते। धीरे-धीरे उन्होंने नेपाली सीख ली। नेपाली के अलावा वहाँ की एक और बोली 'मालमो' थी। तेनजिंग ने उसे भी सीख लिया।

यहीं तेनजिंग की भेंट एक घसियारे से हुई। उसका नाम था—मनबहादुर तमंग। वे मनबहादुर को अपना गुरु मानते थे। वह उनके साथ गायों के लिए घास काटता। उन्हें दुनियादारी की बातें समझाता।

पौरी तेनजिंग को दार्जिलिंग भी भेजा करता था। तब उनका काम था, वहाँ ले जाकर दूध बेचना। दार्जिलिंग जाने के लिए तेनजिंग बहुत आतुर रहते। वहाँ से उन्हें हिमालय की पूर्वी श्रेणियाँ दिखाई देतीं। अनेक छोटी-बड़ी चोटियाँ। इनमें एक पर्वत को देखकर उन्हें अच्छा लगता। यह पर्वत था कंचनजंघा। धूप में चमकती उसकी चोटी उन्हें जैसे हिम्मत बँधाती। उन्हें लगता, वे हिमालय से दूर नहीं हैं। हिमालय, जिसे वे बेहद प्यार करते हैं।

विपरीत परिस्थितियाँ

वर्ष 1933 में एवरेस्ट पर फिर चढ़ाई की जानेवाली थी। इंग्लैंड से पर्वतारोही आ

पहुँचे थे। पूरे शहर में हलचल थी। दार्जिलिंग में एक प्लांटर्स क्लब था। इसमें अभियान दल के नेता ह्यू रटलेज आकर बैठते थे। उनसे मिलने कई लोग जाते। शेरपा भी उनसे मिला करते। तेनजिंग सोचते, मुझे भी साहब से मिलना चाहिए।

तब दूध बेचने की बात उनके दिमाग से बिलकुल निकल गई। वे हर समय सोचते, मुझे जाना चाहिए, साहब से मिलना चाहिए। पहले-पहल प्लांटर्स क्लब जाने में वे डरते थे। उन्होंने दावा थोंडूप से मदद लेनी चाही। दावा थोंडूप उनका दोस्त था। उसे साहब ने नियुक्त कर लिया था। तेनजिंग से दावा थोंडूप से कहा, ''मेरे बारे में साहब से बात करो न।''

''नहीं, तुम अभी बहुत छोटे हो।'' दावा थोंडूप ने कहा।

तेनजिंग को अपनी उम्मीदों पर पानी फिरता नजर आया। उन्होंने एक और कोशिश की। बोले, ''मैं किसी भी वयस्क आदमी की तरह ताकतवर हूँ।'' पर दावा थोंडूप अपनी राय पर अड़ा रहा। तब तेनजिंग ने अन्य शेरपाओं से भी कहा, पर वे भी यही कहते रहे—''तुम अभी छोटे हो। बहुत छोटे···।''

इन सब बातों से तेनजिंग थोड़े निराश हुए, पर उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने तय किया कि खुद साहब से बात करेंगे। लेकिन तब परिस्थितियाँ ही विपरीत थीं। साहब लोगों ने उनके कटे हुए बाल और नेपाली पोशाक देखकर उन्हें शेरपा नहीं समझा। एक बात और थी। तेनजिंग के पास किसी अभियान दल का प्रमाण-पत्र भी नहीं था। इस तरह उन्हें काम नहीं मिला।

एक दिन अभियान दल दार्जिलिंग से रवाना हुआ। तेनजिंग बुझे मन से उसका जाना देखते रहे। उनका मन खिन्न हो गया। फिर उन्होंने अपने आपको सँभाला। काम में मन लगाया। वे पौरी की गायों की देखभाल करते रहे और दूध बेचते रहे। यहीं उनका परिचय एक लड़की से हुआ। तेनजिंग और उसके बीच भाव-ताव को लेकर रोज तकरार हुआ करती। इस लड़की का नाम अंग लहमू था। बाद में तेनजिंग ने उसी से विवाह किया।

दिन गुजर रहे थे। दार्जिलिंग में तेनजिंग को रहते हुए एक वर्ष हो चला था।

सोलो-खुंबू की यात्रा

इसी बीच सोलो-खुंबू से कुछ लोग दार्जिलिंग आए। उन्होंने तेनजिंग को देखा तो उन्हें अचरज हुआ। सोलो-खुंबू में तो खबर थी कि वे नहीं रहे। इन लोगों ने तेनजिंग को उनके माता-पिता के बारे में बताया। कहा कि वे लोग बहुत दु:खी हैं। उन्हें खबर मिली है कि तुम्हारी मृत्यु हो गई है।

तेनजिंग पौरी से छुट्टी लेकर माता-पिता से मिलने सोलो-खुंबू चले गए। माता-पिता को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। फिर वे रोने लगे। इतने दिनों बाद बेटा

घर वापस आया था। वह बेटा, जिसे उन्होंने मृत समझ लिया था। अब वे खुश थे। बेटा मिल गया था। इस बार उन्होंने बेटे को डाँटा-डपटा नहीं। बेटा बड़ा हो गया था।

सोलो-खुंबू में नमक की किल्लत रहती थी। पिता के आदेश पर तेनजिंग नमक लेकर आए थे। दिन इसी तरह बीतने लगे। शीघ्र ही तेनजिंग का मन ऊब गया। जब एक बार फिर पिता ने नमक लाने के लिए उन्हें तिब्बत भेजा तो तिब्बत न जाकर वे दार्जिलिंग पहुँच गए।

शेरपाओं के बीच

दार्जिलिंग में दो बस्तियाँ थीं—एक का नाम था तूंग-सूंग बस्ती और दूसरी का नाम था भूटिया बस्ती। दार्जिलिंग पहुँचकर तेनजिंग तूंग-सूंग बस्ती में रहने लगे। वहाँ एक अनुभवी शेरपा पर्वतारोही अंग नश्त्वे रहते थे। तेनजिंग उन्हीं के घर के किरायेदार के रूप में रहने लगे।

सन् 1935 में दार्जिलिंग में एक खबर फैली थी कि एक अभियान दल पहाड़ों पर जानेवाला है। उसके नेता इरीक शिप्टन थे। इस दल का उद्देश्य शिखर पर चढ़ाई करना नहीं था। उनका लक्ष्य था खोज करना। उसके कई लोग थे। पर्वतारोहियों को उम्मीद थी कि शायद एवरेस्ट के लिए कोई नया रास्ता मिल जाए। वे इस बार तिब्बत की ओर से जाना चाहते थे। वहाँ नॉर्थ पोल नामक जगह है। उन्हें उम्मीद थी, शायद वहीं से रास्ता मिल जाए।

अभियान दल के नेता शिप्टन योग्य शेरपाओं की तलाश में थे। दार्जिलिंग में एक हिमालय क्लब भी था। उसके सेक्रेटरी डब्ल्यू.जे. किड थे। वे भी शिप्टन की मदद कर रहे थे। वे अनुभवी शेरपा चाहते थे और उनकी कोई कमी नहीं थी। ये सब एक शेरपा सरदार की सिफारिश पर चुने गए थे। सरदार का नाम था करमा पाल। वह एक व्यापारी भी था, पर तेनजिंग का उससे कोई परिचय नहीं था। तेनजिंग के पास पूर्व अनुभव का प्रमाण-पत्र भी नहीं था। अत: वे नहीं चुने गए। थोड़ी देर के लिए उन्हें निराशा ने घेर लिया।

तभी पता चला कि दो लोगों की और जरूरत है। जगह दो लोगों की, उम्मीदवार पहुँचे बीस। इस बार तेनजिंग को चुन लिया गया। इसके बारे में तेनजिंग ने कहा, ''मैं बहुत खुश था। इतना कि मेरे चयन से नाराज अनुभवी शेरपा मिलकर मुझे पीटते भी तो मैं बुरा नहीं मानता।''

अभियान दल की मजदूरी तय थी। बारह आना प्रतिदिन। बर्फीले प्रदेश में चार आने और बढ़ाए जानेवाले थे। तेनजिंग को लगा कि अच्छा काम करके वे ज्यादा पैसा कमा सकेंगे, उनका सपना पूरा होने जा रहा था। वे पर्वतारोही बनने जा रहे थे। तेनजिंग के पिता खबर पाकर उनसे मिलने आ गए। तेनजिंग ने पिता को बताया, हम चोमो-

लुंगमा की ओर जाएँगे।

अभियान के दौरान तेनजिंग ने कई नई बातें सीखीं, उन्हें कई नई चीजों की जानकारी हुई। पर अभी बहुत कुछ सीखना बाकी था। पर्वतारोहण की तकनीक समझनी थी। रस्सी का उपयोग, कुल्हाड़ी से बर्फ पर सीढ़ियाँ बनाना, शिविर खड़ा करना, उसे खोलना, अच्छे रास्ते ढूँढ़ना। अभियान दल 22 हजार फीट की ऊँचाई पर नॉर्थ पोल तक गया और फिर यह दल लौट आया।

पर्वतों पर फिर अभियान होने लगे। तेनजिंग भी दो अभियानों में शामिल हुए। इनमें से एक एवरेस्ट के लिए था। अभियान दल को चोटी पर पहुँचने की उम्मीद थी, मगर मौसम बिगड़ जाने के कारण नॉर्थ पोल से आगे बढ़ने का निर्णय नहीं लिया गया।

गढ़वाल की ओर

तेनजिंग का मन बेचैन था। वे खाली नहीं बैठना चाहते थे। शीघ्र ही उन्हें एक अवसर मिल गया। शिप्टन ने मध्य हिमालय में जाने का निश्चय किया। उन्होंने तेनजिंग को भी चलने के लिए कहा। वे तो इसी की प्रतीक्षा में थे। फौरन तैयार हो गए। इस अभियान में तेनजिंग ने कई नई चीजें देखीं। वे पहली बार ट्रेन पर चढ़े। पहली बार उन्होंने बड़े-बड़े शहर देखे—कलकत्ता, दिल्ली और दूसरे शहर। सर्वेक्षण का काम समाप्त हुआ। तेनजिंग फिर दार्जिलिंग लौट आए।

सन् 1937 में एवरेस्ट के लिए कोई अभियान दल नहीं जा रहा था। अत: तेनजिंग फिर गढ़वाल चले गए। वहाँ उन्हें दो शिक्षकों के साथ पर्वतारोहण करना था। बेकार बैठने से तो यह अच्छा था। इस अभियान में तेनजिंग को तरह-तरह के अनुभव हुए। उनके साहस की भी परीक्षा हुई। बाद में उन्होंने तिब्बत की ओर यात्रा की। यह यात्रा लंबी थी। पर यात्रा सफल रही। इस यात्रा में तेनजिंग बनी दर्रे तक पहुँचे। बनी दर्रा काफी ऊँचाई पर है। वे बदरीनाथ भी गए। उसके बाद के दार्जिलिंग लौट आए।

एक और अभियान

वर्ष 1938 का वसंत। एवरेस्ट के लिए एक और अभियान। उसके नेता प्रसिद्ध पर्वतारोही टिलमैन थे। यह छोटा सा दल था, इसमें शेरपा भी थे, तेनजिंग भी थे। यात्रा जानी-पहचानी थी। अप्रैल में वे रोंगबुक मठ के पार आधार शिविर तक पहुँच गए। एवरेस्ट के लिए आसान मार्ग की खोज की जाने लगी। टिलमैन ने तेनजिंग को साथ लिया। दो शेरपा और थे। वे ल्होता के दर्रे तक गए।

तेनजिंग बेहद खुश थे। वे एवरेस्ट के दोनों बाजुओं को देख सकते थे। वहाँ से उन्हें थामे का अपना पुराना घर भी दिखाई पड़ता था। नीचे खुंबू ग्लेशियर था। वहाँ याक चर रहे थे। कैप्टन मैलोरी इसी ल्होता दर्रे तक आए थे। टिलमैन और अन्य

शेरपाओं ने दर्रे को पार किया। वहाँ कोई ठीक रास्ता नहीं मिला। इस अभियान के दौरान दल 27 हजार फीट की ऊँचाई तक पहुँचने में भले ही सफल रहा, मगर एवरेस्ट तक पहुँचना संभव नहीं हुआ।

छोटे-छोटे अभियान और एक खतरनाक सपना

अब तेनजिंग का जीवन दार्जिलिंग में बीतने लगा। बीच-बीच में वे छोटे-छोटे अभियानों पर जाते रहे। भारत भी आजादी की राह पर बढ़ने लगा। 1947 में दार्जिलिंग में डेनमान नामक एक साहसी पर्वतारोही आए। उनका जन्म कनाडा में हुआ था। वे इंग्लैंड में पढ़े थे, फिर अफ्रीका में बस गए थे।

डेनमान का एक खतरनाक सपना था। वे एवरेस्ट पर अकेले चढ़ना चाहते थे। उन्होंने तेनजिंग को साथ लेकर अभियान शुरू किया, मगर उन्हें पराजय का मुँह देखना पड़ा।

प्रेरणा के स्रोत

आखिरकार एवरेस्ट की सातवीं यात्रा सफल हुई, जब एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे सारी बाधाओं को पार कर एवरेस्ट शिखर पर पहुँचने में सफल हुए। एवरेस्ट विजय एक दल के प्रयत्नों की विजय थी। इसमें सबका योगदान था। किसी का कम, किसी का ज्यादा। पर एक बात अवश्य थी। तेनजिंग की विजय से साधारण जनता बेहद खुश थी। उन्हें लगता था, जैसे तेनजिंग नहीं, वे स्वयं एवरेस्ट पर चढ़े हैं।

इसलिए कि तेनजिंग पहले एक साधारण शेरपा थे। उन्हें कोई जानता तक न था। एडमंड हिलेरी प्रशिक्षित पर्वतारोही थे। तेनजिंग तो साधारण आदमी थे। इसीलिए उनकी सफलता से साधारण-से-साधारण व्यक्ति तक प्रसन्न था।

तेनजिंग अब देश के लाड़ले हीरो थे। लोग दिल खोलकर उनका स्वागत कर रहे थे। वे तेनजिंग की सहायता भी करना चाहते थे। तेनजिंग सरल थे, साहसी थे, छल-प्रपंच से दूर थे। बचपन से उन्होंने एक सपना देखा था। पर वे केवल सपना देखकर ही संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने उसे साकार करने का प्रयत्न किया। तेनजिंग ने अपनी सफलता से अपनी जन्मभूमि का गौरव बढ़ाया। पर तब शायद कोई विश्वास भी नहीं करता कि सोलो-खुंबू का यह किशोर एक दिन एक नया इतिहास रचेगा। सबकी प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

तेनजिंग ने कितने कष्ट झेले। कितनी बाधाओं का सामना किया। पर वे निराश नहीं हुए। वे एवरेस्ट पर चढ़ना चाहते थे। यह उनकी बचपन की आकांक्षा थी, जो जीवन के 37वें वर्ष में जाकर पूरी हुई। कोई और होता तो दुनियादारी में उलझ जाता। पर्वतारोहण के खतरों से भयभीत हो जाता। अपना सपना भूल जाता। एक उक्ति है—

''जहाँ चाह वहाँ राह।''

दार्जिलिंग में हिमालयन माउंटीनियरिंग इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई और तेनजिंग को उसका निदेशक बनाया गया। इस इंस्टीट्यूट में उन्होंने अनेक वर्षों तक कार्य किया। सरकारी नियमों के कारण उम्र होने पर उन्हें निदेशक पद से सेवा-निवृत्त होना पड़ा। लेकिन सरकार उनके अनुभव का लाभ उठाना चाहती थी। उन्हें इंस्टीट्यूट का सलाहकार बना दिया गया। इस पद पर वे अंत तक कार्य करते रहे।

निरंतर यात्रा, निरंतर कार्य, उधर बढ़ती उम्र। तेनजिंग का स्वरूप धीरे-धीरे बिगड़ने लगा।

8 मई, 1986 को सारे देश ने एक दुखद समाचार सुना।

'एवरेस्ट विजेता तेनजिंग नोर्गे नहीं रहे।'

उनके निधन से सबको दु:ख हुआ। वे व्यक्ति नहीं, संस्था थे। तेनजिंग बौधधर्म को मानते थे। उसी के अनुरूप उनकी अंत्येष्टि की गई।

तेनजिंग हमारे बीच नहीं हैं, पर वे अमर हैं। एवरेस्ट के साथ उनका नाम सदैव जुड़ा रहेगा। उस एवरेस्ट के साथ, जिसे वे चोमो-लुंगमा के नाम से जानते थे। जिसका वे आदर करते थे।

□

सर एडमंड हिलेरी के जीवन का घटनाक्रम

1919

20 जुलाई को सर एडमंड हिलेरी का जन्म हुआ। वे अपने माता-पिता की तीन संतानों में दूसरे थे। उनका बचपन न्यूजीलैंड के शहर ऑकलैंड से दक्षिण में टुआकाउ नामक स्थान पर व्यतीत हुआ।

1939

एडमंड पहली बार पर्वत पर चढ़े। उस पर्वत का नाम माउंट ओलीवियर था, जो दक्षिणी आल्प्स में स्थित था।

1943

एडमंड ने वायु सेना में भरती होने का फैसला किया और नेवीगेटर के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया। बीच में जब भी मौका मिलता, वे पर्वतारोहण करते थे। उन्होंने निश्चय किया कि युद्ध समाप्त होने पर वे पर्वतारोही बन जाएँगे।

1945

युद्ध के दौरान पैसिफिक क्षेत्र में एडमंड केटलिना फ्लाइंग बोट के नेवीगेटर के रूप में काम कर रहे थे। फीजी में हुई एक दुर्घटना में बुरी तरह झुलस जाने के कारण उन्हें घर लौटना पड़ा। अगले कुछ वर्षों तक वे दक्षिणी आल्प्स क्षेत्र में चढ़ाई करते रहे। इस दौरान न्यूजीलैंड के सबसे ऊँचे पर्वत माउंट कूक (3764 मीटर) की चोटी तक भी पहुँचे।

1947

पहली बार एडमंड माउंट कूक की चोटी पर पहुँचे।

1949

एडमंड ने यूरोप की यात्रा की और आस्ट्रियाई एवं स्विज आल्प्स पर्वत पर चढ़ाई की।

1953

29 मई को एडमंड ने शेरपा तेनजिंग नोर्गे के साथ एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की। 16 जुलाई को एवरेस्ट विजय को देखते हुए एडमंड को 'नाइटहुड' की उपाधि प्रदान की गई। न्यूजीलैंड लौटकर एडमंड ने लुइस रोज से शादी की और मधुमक्खी पालन का अपना काम करते रहे।

1954

एडमंड के पुत्र पीटर का जन्म हुआ।

1955

एडमंड की पुत्री सारा का जन्म हुआ।

'हाई एडवेंचर' पुस्तक प्रकाशित हुई।

1956

जॉर्ज लोवे के साथ लिखी गई उनकी पुस्तक 'ईस्ट ऑफ एवरेस्ट' प्रकाशित हुई।

1956

4 जनवरी को एक टीम के साथ एडमंड फर्ग्युसन ट्रैक्टर पर सवार होकर दक्षिण ध्रुव पहुँचे। इस साहसिक अभियान के दौरान एडमंड 18 महीने तक घर से दूर रहे।

1959

पुत्री बेलिंडा का जन्म हुआ।

1961

एडमंड ने ऑक्सीजन के बगैर हिमालय क्षेत्र में माउंट मकालू तक चढ़ने का प्रयास किया।

खूमजुंग में बच्चों के लिए स्कूल भवनों के निर्माण के साथ ही लोक हितैषी कार्यों के लिए वित्तीय सहायता जुटाने का अभियान शुरू कर दिया।

'नो जेटीट्यूट फॉर इटर' पुस्तक का प्रकाशन हुआ।

1963

'हाई इन द थीन कोल्ड एयर' पुस्तक का प्रकाशन हुआ।

1965

'स्कूल हाउस इन द क्लाउड' पुस्तक का प्रकाशन।

1975

मार्च में एडमंड की पत्नी लुइस और पुत्री बेलिंडा (16 वर्ष) की करुण मृत्यु नेपाल में विमान हादसे में हो गई। स्कूल के निर्माण के सिलसिले में हिलेरी परिवार ने साल भर नेपाल में रहने की योजना बनाई थी और यही सोचकर उनकी पत्नी और पुत्री नेपाल पहुँची थीं। इस त्रासदी की वजह से एडमंड बुरी तरह प्रभावित हुए।

इसी वर्ष एडमंड की पुस्तक 'नथिंग वेंचर, नथिंग विन' प्रकाशित हुई।

1977

एडमंड ने पुत्र पीटर के साथ जेट बोट में सवार होकर गंगा की यात्रा की।

1979

एडमंड के घनिष्ठ मित्र पीटर मूलग्रियू की मौत माउंट एरेबस हादसे में हो गई। उस अंटार्कटिका की उड़ान पर पहले एडमंड कमेंटेटर के रूप में जानेवाले थे, मगर अन्यत्र व्यस्त होने की वजह से जा नहीं सके थे और उनके स्थान पर मूलग्रियू गए थे।

'फ्रॉम द ओशियन टू द स्काई' पुस्तक का प्रकाशन हुआ।

1984

'टू जेनरेशंस' पुस्तक का प्रकाशन हुआ।

1985

जब न्यूजीलैंड के नव निर्वाचित प्रधानमंत्री डेविड लेंज ने भारत के साथ कूटनीतिज्ञ रिश्तों को नए सिरे से बहाल करने का फैसला किया तो उन्होंने सर एडमंड हिलेरी को भारत में न्यूजीलैंड का उच्चायुक्त नियुक्त किया। 1989 तक एडमंड इस पद पर कार्य करते रहे।

1986

23 अक्तूबर को न्यूजीलैंड के टी वी चैनल ने एडमंड के सम्मान में 'दिस इज योर लाइफ' शीर्षक कार्यक्रम प्रसारित किया।

1987

शेरपा तेनजिंग नोर्गे का देहांत हो गया। मृत्यु से पहले प्रकाशित अपनी आत्मकथा में तेनजिंग ने खुलासा किया कि एवरेस्ट की चोटी पर सबसे पहले एडमंड हिलेरी ने कदम रखा था।

एडमंड को 'ऑर्डर ऑफ न्यूजीलैंड' की सदस्यता प्रदान की गई।

1989

पीटर मूलग्रियू की विधवा जून से एडमंड ने शादी की।

1990

एडमंड के पुत्र पीटर सफलतापूर्वक एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचे।

1999

'ए व्यू फ्रॉम द समीट' पुस्तक का प्रकाशन हुआ।

2002

सर एडमंड के हिमालयन ट्रस्ट का नियंत्रण शेरपाओं के हाथों में सौंपा गया।

2008

11 जनवरी को ऑकलैंड में सर एडमंड हिलेरी का देहांत हो गया।

□

संदर्भ ग्रंथ

1. हाई एडवेंचर : एडमंड हिलेरी
2. सर एडमंड हिलेरी : सैम्युअल विलार्ड कॉम्पटोन
3. सर एडमंड हिलेरी एंड द पीपुल ऑफ एवरेस्ट : सिंकिया रूस रामसे
4. सर एडमंड हिलेरी एन एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी लाइफ : एलेक्सा जॉनसन
5. सर एडमंड हिलेरी : मॉडर्न डे एक्सप्ओरा : क्रिस्टिन ब्रेनन
6. टीचिंग द समिट : सर एडमंड हिलेरीज स्टोरी : एलेक्सा जॉनसन, डेविड लार्सेन
7. एडमंड हिलेरी : फर्स्ट टू द टॉप : डेन एलीश

□□□